TAJHEEZO TAKFEEN KA TARIQA (HINDI)

नज़्अ़ से ले कर तदफ़ीन तक के मराहि़ल और अह़काम सीखने के लिये बेहतरीन किताब

तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

DAWAT-E-ISLAMI

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

www.dawateislami.net

“तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा” का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस “**अल मदीनतुल इल्मिय्या**” ने येह किताब **‘उर्दू’** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **‘हिन्दी’ रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआदत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को किसी भी त़रह़ से राबित़ा करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

नज़्अ़ से ले कर तदफ़ीन तक के
मराह़िल और अह़काम सीखने के लिये बेहतरीन किताब

तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा

पेशकश

मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन
और
मजलिसे अल मदीनतुल ड़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

नाम किताब : तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा

पेशकश : मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन और अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

पहली बार : ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1437 हिजरी, अगस्त 2016 ईसवी

ता'दाद : 2100 (इक्कीस सौ)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 10 रबीउ़ल अव्वल 1437 हि. ह़वाला नम्बर : 206

الحمد لله رب العلمين و الصلوٰة و السلام علٰى سيد المرسلين وعلى اٰله و اصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
22-12-2015

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net
www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	7	सच्ची निय्यत की बरकत	34
पेशे लफ़्ज़	11	तजहीज़ो तक्फ़ीन सिखाने की निय्यतें	35
रुख़े पुर अन्वार पर ख़ुशी के आसार	16	तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखने की निय्यतें	36
सब से पहला क़ातिल व मक़्तूल	17	तजहीज़ो तक्फ़ीन में हिस्सा लेने की निय्यतें	37
सब से पहले तदफ़ीन हज़रते हाबील की हुई	18	मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के 26 मदनी फूल	38
तजहीज़ो तक्फ़ीन से क्या मुराद है ?	19	इस्लामी बहनों की मजलिसे तजहीज़ो	
शरई हुक्म, फ़र्ज़े किफ़ाया	19	तक्फ़ीन के 26 मदनी फूल	50
तजहीज़ो तक्फ़ीन की ज़बरदस्त फ़ज़ीलत	20	**इयादत का बयान**	65
अमीरे अहले सुन्नत का शौक़ और तरग़ीब	20	बुख़ार को बुरा न कहो, ख़ुश ख़बरी सुन लो	65
जब आ़शिक़ाने रसूल ने तजहीज़ो तक्फ़ीन में		इयादत की निय्यतें	66
शिर्कत की....	22	इयादत के मदनी फूल	67
ग़म ख़्वारी की बरकत	23	बिग़ैर ऑपरेशन शिफ़ा मिल गई	72
ग़म ख़्वारी की फ़ज़ीलत	24	**नज़्अ़ का बयान**	73
मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की		मौत की याद	73
फ़ज़ीलत	24	अ़क़्लमन्द मोमिन	74
तजहीज़ो तक्फ़ीन और दा'वते इस्लामी	25	मोमिन और काफ़िर की मौत	74
मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की वेब साइट	28	नज़्अ़ की सख़्तियां, कांटेदार टहनी	75
क़ब्र की रौशनी का सामान	30	शैत़ान का वार	75
मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَ اللّٰہ जगमगाएंगी	30	क़रीबुल मर्ग के पास वालों के लिये	
अच्छी अच्छी निय्यतें	31	मदनी फूल	77

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा
मोमिन की मौत की अ़लामात	77
मरने वाले को कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन करना सुन्नत है	77
तल्क़ीन के मदनी फूल	78
अ़त्तार का प्यारा	79
मुर्शिदे करीम ने तल्क़ीन फ़रमाई	81
दुआ़ए अ़त्तार	83
रूह़ क़ब्ज़ होने के बा'द इन मदनी फूलों पर अ़मल कीजिये	83
ग़ुस्ले मय्यित का बयान	85
मय्यित नहलाने की फ़ज़ीलत	85
चालीस कबीरा गुनाहों की बख़्शिश का नुस्ख़ा	85
ग़ुस्ले मय्यित की निय्यतें	85
ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा	86
इस्लामी बहन के ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा	87
ग़ुस्ले मय्यित के मदनी फूल	89
नहलाने वाले के लिये मदनी फूल	89
मुर्दा अगर पानी में गिर जाए	90
अगर मय्यित के बदन की खाल झड़ती हो	91
मय्यित के बाल व नाख़ुन काटना	91
मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल	92
इस्लामी बहनों के लिये मदनी फूल	94
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ग़ुस्ले मय्यित	95

उ़नवान	सफ़्हा
ना'त ख़्वानी के दौरान होंटों की जुम्बिश	97
कफ़न का बयान	98
कफ़न पहनाने की फ़ज़ीलत	98
जन्नती लिबास, कफ़न के दरजे	98
बच्चों को कौन सा कफ़न दिया जाए	100
कफ़न की तफ़्सील	100
कफ़न पहनाने की निय्यतें	101
मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा	101
औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा	102
कफ़न कैसा होना चाहिये ?	103
मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल	103
कफ़न के लिये तीन अनमोल तोह़्फ़े	105
नमाज़े जनाज़ा का बयान	108
मय्यित के तअ़ल्लुक़ से नमाज़े जनाज़ा की 7 शर्तें	108
इन शराइत़ की कुछ तफ़्सील	109
ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़ का हुक्म	110
जनाज़े की निय्यतें	110
नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाए	111
नमाज़े जनाज़ा के अरकान और सुन्नतें	111
नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा	112
बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़	113
ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ़	114
ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ़	114

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
जनाज़े की पूरी जमाअ़त न मिले तो ?	115	तदफ़ीन की निय्यतें	133
जूते पर खड़े हो कर जनाज़ा पढ़ना	115	तदफ़ीन का त़रीक़ा	134
जनाज़े में कितनी सफ़ें हों	116	मिट्टी डालने का त़रीक़ा	136
जनाज़े से मुतअ़ल्लिक़ मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल	116	बा'दे तदफ़ीन क़ब्र ढाल वाली बनाएं	137
जनाज़े के 15 मदनी फूल	118	क़ब्र पर पानी छिड़कना कैसा ?	137
जनाज़े का साथ देने का सवाब	119	क़ब्र में तबर्रुकात रखना बाइसे बरकत है	138
जनाज़ा देख कर पढ़ने का विर्द	119	क़ब्र में राहतें नसीब हुईं	139
जनाज़े को कन्धा देने का सवाब	120	फ़ातिह़ा ख़्वानी और ईसाले सवाब	140
जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा	121	बा'दे तदफ़ीन तल्क़ीन का बयान	141
बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा	122	मज़ार शरीफ़ पर बारह घन्टे ज़िक्रो अज़्कार का सिलसिला	145
क्या शोहर बीवी के जनाज़े को कन्धा दे सकता है	122	किसी की क़ब्र बाग़ और किसी की क़ब्र में आग	146
		मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली	147
क़ब्र व दफ़्न का बयान	123	**ता'ज़ियत का बयान**	151
इस के लिये तय्यारी करो	123	एक क़ीरात़ जितना सवाब	151
क़ब्र में मेरे साथ कोई भी न होगा	124	जन्नत में दाख़िला	151
क़ब्र का मय्यित से ख़िताब	125	ता'ज़ियत की निय्यतें	152
तू ने इब्रत क्यूं न ह़ासिल की ?	125	ता'ज़ियत के मदनी फूल	152
तदफ़ीन में शिर्कत की फ़ज़ीलत	127	मक्तूबे ता'ज़ियत अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم	157
तीन क़ीरात़ का सवाब, क़ब्र की क़िस्में	127	**नौह़ा का बयान**	159
जन्नतुल बक़ीअ़ में लह़्द पाने वाले मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी	128	नौह़ा से मुतअ़ल्लिक़ पांच पैरे	159
		जहन्नम वालों पर भोंकने वालियां	159
क़ब्र की लम्बाई चौड़ाई कितनी हो ?	132	**ज़ियारते क़ुबूर**	161
क़ब्र अन्दर से कैसी हो ?	133	आख़िरत की याद	161

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़्ह़ा	उनवान	सफ़्ह़ा
ज़ियारते क़ुबूर के मदनी फूल	161	बयान नम्बर 1 : ईमान की ह़िफ़ाज़त	227
क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा	162	बयान नम्बर 2 : सोह़बत का असर	241
ज़ियारते क़ुबूर के अफ़्ज़ल औक़ात	163	बयान नम्बर 3 : दुन्या की मज़म्मत	260
क़ब्र पर अगरबत्ती जलाना	163	**ईसाले सवाब की तरग़ीब के बयानात**	275
क़ब्र पर मोमबत्ती रखना	164	बयान नम्बर 1 : तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब	275
जिस क़ब्र का पता न हो कि मुसलमान की है या काफ़िर की	164	बयान नम्बर 2 : मस्जिद, मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना की ता'मीर	281
मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल	165	मदनी अ़त़िय्यात के मदनी फूल	289
ईसाले सवाब का बयान	168	मजलिसे ईसाले सवाब मद्रसतुल मदीना के मदनी फूल	290
दुआए मग़फ़िरत की बरकत	168	तजहीज़ो तक्फ़ीन से मुतअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब	292
ह़ज़रते मुह़म्मद तूसी मुअ़ल्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	168	लवाह़िक़ीन के लिये मदनी फूल	305
ईसाले सवाब	169	तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के मदनी फूल	307
ईसाले सवाब के मदनी फूल	170	तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के लिये तरग़ीबी ए'लान	312
ईसाले सवाब की मदनी बहार	176	मुख़्तलिफ़ सत़ह़ के कारकर्दगी फ़ॉर्मज़	315
अमीरे अहले सुन्नत का मदनी वसिय्यत नामा	177	सूरतुल बक़रह का इब्तिदाई रुकूअ़	330
फ़ातिह़ा व ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा	186	सूरतुल बक़रह का आख़िरी रुकूअ़	331
ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का त़रीक़ा	191	सूरए यासीन और इस के फ़ज़ाइल	332
मर्ह़ूम वालिदैन के साथ एह़सान	192	सूरतुल मुल्क और इस के फ़ज़ाइल	343
नमाज़ के फ़िद्ये का बयान	199	बेनर का नमूना	349
इ़द्दत व सोग का बयान	207	कलाम : आह ! हर लम्ह़ा गुनह की कसरत और भरमार है	351
मुतफ़र्रिक़ बयानात	213	सलाम : का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद	352
बयान नम्बर 1 : ग़ुस्ले मय्यित से क़ब्ल का बयान	213	मुतफ़र्रिक़ ए'लानात	353
बयान नम्बर 2 : जनाज़े की गाड़ी में बयान	220	माख़ज़ो मराजेअ़	356
इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब के बयानात	227		

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"तजहीज़ो तक्फ़ीन कोर्स कीजिये" (उर्दू) के बीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "20 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(جامع صغير للسيوطى، ص٥٥٧، حديث٩٣٢٦)

दो मदनी फूल :-

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां '**अल्लाह**' का नामे पाक आएगा वहां "عَزَّوَجَلَّ" और ﴾11﴿ जहां जहां 'सरकार' का इस्मे मुबारक आएगा वहां "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" पढ़ूंगा। ﴾12﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۙ (پ ١٤،النحل:٤٣) "तो ऐ लोगो ! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।" पर अ़मल करते हुवे उ़लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्खे़ पर) "याद दाश्त" वाले सफ़्ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾14﴿ (अपने ज़ाती नुस्खे़ पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर <u>अन्डर लाइन</u> करूंगा ﴾15﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾16﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوۡا تَحَابُّوۡا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ١٧٣١، ج٢، ص٤٠٧) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴾17﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 41) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾19﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾20﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप का मुरत्तब कर्दा रिसाला "**सवाब बढ़ाने के नुस्खे़**" मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल,* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी*** *रज़वी, ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **'दा'वते इस्लामी' नेकी की दा'वत**, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस '**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**' भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज[1]

---

[1]....तादमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने क़ुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबिय्यात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

‘अल मदीनतुल इल्मिय्या’ की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ’ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है । तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **‘दा’वते इस्लामी’** की तमाम मजालिस ब शुमूल **‘अल मदीनतुल इल्मिय्या’** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

पेशे लफ़्ज़

मौत एक ऐसी ह़क़ीक़त है जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता कोई कितना ही जी ले आख़िर मरना ही पड़ेगा, ख़ुश नसीब हैं वोह जो मरने से पहले अपनी मौत और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहते हैं और रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुर्ख़रूई पाते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपनी मौत और आख़िरत की फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **आमीन**

जब मरने वाला इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो जाता है तो अब लवाह़िक़ीन और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन या'नी ग़ुस्ल और कफ़न दफ़्न की ज़िम्मेदारी आन पड़ती है लेकिन मुशाहदा येही है कि तजहीज़ो तक्फ़ीन के शरई अह़काम और सह़ीह़ त़रीक़ए कार से ना बलद होने की वज्ह से लोग परेशान हो जाते हैं जिस की वज्ह से बा'ज़ तो यूं करते हैं कि अपनी बरादरी व ख़ानदानी रस्मो रवाज के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल और कफ़न दफ़्न का अपने तईं इन्तिज़ाम कर लेते हैं, बा'ज़ किसी पेशावर ग़स्साल से बत़ौरे उजरत तजहीज़ो तक्फ़ीन की ख़िदमत ले लेते हैं नीज़ बा'ज़ों को तो इस मौक़अ़ पर कुछ सूझाई नहीं देता एक दूसरे को ग़ुस्ले मय्यित का कह रहे होते हैं क्यूंकि उन्हों ने न तो कभी किसी मुर्दे को ग़ुस्ल दिया होता है और न ही उन्हें कफ़न दफ़्न का त़रीक़ा आता है बल्कि उन में ऐसे भी होते हैं जिन्हें मय्यित नहलाना तो दरकिनार उस के क़रीब जाने में भी एक वह़शत सी मह़सूस होती है। ऐसी तमाम सूरते ह़ाल में नतीजा येह निकलता है कि बेचारे मुर्दे को बड़ी बे दर्दी के साथ जैसे तैसे ग़ुस्ल दे कर जान छुड़ा ली जाती है।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसा करने में मय्यित की शदीद ह़क़ तलफ़ी और ईज़ा रसानी है याद रखिये जिन चीज़ों से ज़िन्दा को तक्लीफ़ होती है उन्ही से मुर्दे को भी तक्लीफ़ होती है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले मुर्दे की बे बसी में शर्हुस्सुदूर के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि मरने वाला हर चीज़ को जानता है ह़त्ता कि ग़ुस्ल देने वाले से कहता है कि तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम है तू ग़ुस्ल में मेरे साथ नर्मी कर। (شرح الصدور،باب معرفة الميت...الخ،ص٩٥)

लिहाज़ा अपने अ़ज़ीज़ों और दीगर मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही कीजिये और उन की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरकीब कीजिये। इस के लिये बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि आप तजहीज़ो तक्फ़ीन और इस से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल सीख लीजिये इस त़रह़ किसी अ़ज़ीज़ वग़ैरा के इन्तिक़ाल हो जाने पर आप ख़ुद आगे बढ़ कर उन की तजहीज़ो तक्फ़ीन के मुआ़मलात सुन्नत के मुत़ाबिक़ कर सकेंगे। क्या आप तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखना चाहते हैं ? बल्कि क्या आप चाहते हैं कि मरने के बा'द आप की तजहीज़ो तक्फ़ीन के मुआ़मलात सुन्नत के मुत़ाबिक़ हों ? तो आइये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात को अपना लीजिये और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेक लोगों और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़ेह्न बनेगा और मरने के बा'द उन्ही आ़शिक़ाने रसूल के हाथों सुन्नत के मुत़ाबिक़ तजहीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत भी ह़ासिल होगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने नेकी की दा'वत और ख़ैर ख़्वाहिये उम्मत के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त 92 से ज़ाइद मजालिस और शो'बाजात क़ाइम किये हैं इन्ही में एक मजलिस तजहीज़ो तक्फ़ीन भी है जो न सिर्फ़ आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तजहीज़ो तक्फ़ीन के लिये कोशां है बल्कि तजहीज़ो तक्फ़ीन सिखाने के लिये भी मसरूफ़े अ़मल है और इस के लिये (मुल्क और बैरूने मुल्क में) बा क़ाइदा "तजहीज़ो तक्फ़ीन कोर्स" की तरकीब है। इस कोर्स में नज़्अ़ से ले कर तदफ़ीन तक के मराह़िल और उन से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मसाइल सिखाने की कोशिश की जाती है मसलन ۞ जब नज़्अ़ का आ़लम त़ारी हो तो क्या किया जाए ? ۞ तल्क़ीन कैसे की जाए ? ۞ रूह़ निकलने के बा'द क्या उमूर सर अन्जाम दिये जाएं ? ۞ ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा, इस के फ़ज़ाइल और मसाइल ۞ कफ़न की क़िस्में ۞ मर्द व औ़रत और बच्चे के कफ़न की तफ़्सील ۞ नमाज़े जनाज़ा और जनाज़े की दुआ़एं ۞ क़ब्र की क़िस्में ۞ क़ब्र व दफ़्न का बयान ۞ नौह़ा का बयान, नीज़ ۞ इ़यादत ۞ ता'ज़ियत ۞ ईसाले सवाब ۞ फ़ातिह़ा का त़रीक़ा वग़ैरा।

इसी त़रह़ इस्लामी बहनों की मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के तह़्त इस्लामी बहनों में भी तजहीज़ो तक्फ़ीन और कोर्स की तरकीब है।

ज़ेरे नज़र किताब "**तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा**" इसी कोर्स का निसाब है जिसे पहले मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की त़रफ़ से मुरत्तब किया गया था फिर मजलिस के ज़िम्मेदार मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा ह़ाजी अबू ज़ियाद मुह़म्मद इम्माद अ़त्त़ारिय्युल मदनी ने इसे किताबी सूरत में लाने के लिये **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

को पेश कर दिया लिहाज़ा अब तरमीम व इज़ाफ़ा और तख़रीज के साथ येह निसाब किताब की सूरत में आप के हाथों में है, इस का तवज्जोह के साथ मुत़ालआ कीजिये उम्मीद है इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों में तजहीज़ो तक्फ़ीन में हिस्सा लेने और "तजहीज़ो तक्फ़ीन कोर्स" करने करवाने का जज़्बा बेदार होगा और जो इस में फ़अ़आल हैं उन के जज़्बे को मज़ीद तक़विय्यत मिलेगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिसे "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" येह किताब दरजे ज़ैल ख़ुसूसिय्यात से मुज़य्यन कर के पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है :

۞......."**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ इस किताब को भी ज़ेवरे तख़रीज से आरास्ता करते हुवे अह़ादीस और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा की मक़्दूर भर तख़रीज का एहतिमाम किया गया है।

۞.......जिन कुतुब से तख़रीज की गई है आख़िर में उन तमाम की फ़ेहरिस्त "माख़ज़ो मराजेअ़" के नाम से बनाई गई है और उस फ़ेहरिस्त में मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नाम मअ़ सिने वफ़ात, मत़ाबेअ़ और सिन्ने त़बाअ़त भी ज़िक्र कर दिये गए हैं।

۞.......जा बजा मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं।

۞.......आयात में क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ (ख़त़्ते उ़स्मानी) बर क़रार रखने के लिये तमाम आयात एक मख़्सूस क़ुरआनी सॉफ़्टवेर से (Corel Draw के ज़रीए) पेस्ट की गई हैं।

۞.......आयाते क़ुरआनी का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान से पेश किया गया है।

۞.......आयात व तराजुम का तक़ाबुल "**कन्ज़ुल ईमान**"(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) से दो मरतबा किया गया है।

www.dawateislami.net

۞.......अ़लामाते तरक़ीम (Punctuation Marks) या'नी कोमा, फुल स्टोप, कोलोन, इन्वर्टेड कोमाज़ (Inverted commas) वग़ैरा का ज़रूरतन एहतिमाम किया गया है।

۞.......किताब को ख़ूब सूरत बनाने के लिये हेडिंग्ज़ (Headings), कुरआनी आयात, बा'ज़ इबारात, नम्बरिंग और बोर्डर वग़ैरा की तरकीब डीज़ाइनिंग सोफ़्टवेर Corel Draw के ज़रीए़ की गई है।

۞.......दो मरतबा पूरी किताब की प्रुफ़ रीडिंग की गई है।

इस काम में आप को जो ख़ूबियां नज़र आएं यक़ीनन वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायत से हैं और उ़लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام बिल ख़ुसूस अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی के फ़ैज़ान का सदक़ा हैं और बा वुजूद एह़तियात़ के जो ख़ामियां रह गईं उन्हें हमारी त़रफ़ से नादानिस्ता कोताही पर मह़मूल किया जाए। क़ारिईन ख़ुसूसन उ़लमाए किराम دَامَتْ فُیُوْضُھُمْ से गुज़ारिश है अगर कोई ख़ामी आप मह़सूस फ़रमाएं या अपनी क़ीमती आरा और तजावीज़ देना चाहें तो हमें तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ फ़रमाइये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा के लिये काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस **'अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'** और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ बयानाते अ़त्तारिय्या (ह़िस्सए अव्वल) सफ़ह़ा 62 पर दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे "अल क़ौलुल बदीअ़" के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं :

रुख़े पुर अन्वार पर ख़ुशी के आसार

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक रोज़ सरकारे नामदार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए, इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों आज चेहरए मुबारक पर ख़ुशी के आसार मा'लूम हो रहे हैं !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"बेशक अभी जिब्राईले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) मेरे पास आए थे और उन्हों ने कहा : "ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) जिस ने आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के नामए आ'माल में दस नेकियां सब्त फ़रमाएगा और दस गुनाह मिटा देगा और दस दरजात बढ़ा देगा ।" (القول البدیع، ص ۱۰۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सब से पहला क़ातिल व मक़्तूल

अ़जाइबुल क़ुरआन में ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तह़रीर फ़रमाते हैं : रूए ज़मीन पर सब से पहला क़ातिल "क़ाबील" और सब से पहला मक़्तूल "हाबील" है । येह दोनों ह़ज़रते आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रज़न्द हैं । इन दोनों का वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते ह़व्वा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हर ह़म्ल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे और एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की से निकाह़ किया जाता था । इस दस्तूर के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ाबील का निकाह़ "लियूज़ा" से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा मगर क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा क्यूंकि इक़्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये वोह उस का त़लबगार हुवा । ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को समझाया कि इक़्लीमा तेरे साथ पैदा हुई है इस लिये वोह तेरी बहन है इस के साथ तेरा निकाह़ नहीं हो सकता मगर क़ाबील अपनी ज़िद पर अड़ा रहा । बिल आख़िर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने येह हुक्म दिया कि तुम दोनों अपनी अपनी क़ुरबानियां ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ के दरबार में पेश करो जिस की क़ुरबानी मक़्बूल होगी वोही इक़्लीमा का ह़क़दार होगा ।

उस ज़माने में क़ुरबानी की मक़्बूलिय्यत की येह निशानी थी कि आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी ।

www.dawateislami.net

चुनान्चे, क़ाबील ने गेहूं की कुछ बालें और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की। आस्मानी आग ने हाबील की कुरबानी को खा लिया और क़ाबील के गेहूं को छोड़ दिया। इस बात पर क़ाबील के दिल में बुग़्ज़ो ह़सद पैदा हो गया और उस ने हाबील को क़त्ल कर देने की ठान ली और हाबील से कह दिया कि मैं तुझ को क़त्ल कर दूंगा। हाबील ने कहा कि कुरबानी क़बूल करना अल्लाह तआ़ला का काम है और वोह मुत्तक़ी बन्दों ही की कुरबानी क़बूल करता है। अगर तू मुत्तक़ी होता तो ज़रूर तेरी कुरबानी क़बूल होती। आख़िर क़ाबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल कर दिया।

सब से पहले तदफ़ीन ह़ज़रते हाबील की हुई

जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो चूंकि इस से पहले कोई आदमी मरा ही नहीं था इस लिये क़ाबील हैरान था कि भाई की लाश को क्या करूं ? चुनान्चे कई दिनों तक वोह लाश को अपनी पीठ पर लादे फिरा। फिर उस ने देखा कि दो कव्वे आपस में लड़े और एक ने दूसरे को मार डाला। फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी चोंच और पन्जों से ज़मीन कुरैद कर एक घड़ा खोदा और उस में मरे हुवे कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया। येह मन्ज़र देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को ज़मीन में दफ़्न करना चाहिये। चुनान्चे, उस ने क़ब्र खोद कर उस में भाई की लाश को दफ़्न कर दिया।

(مدارك التنزيل،المائدة،تحت الآية:٣١،ص٤٨٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किसी का इन्तिक़ाल हो जाए तो शरई हुक्म येही है कि उस की तदफ़ीन की जाए और मुसलमान है तो तदफ़ीन से पहले शरीअ़त के बताए हुवे त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन का एहतिमाम किया जाए।

तजहीज़ो तक्फ़ीन से क्या मुराद है ?

तजहीज़ के लुग़वी मा'ना हैं : सामाने ज़रूरत मुहय्या करना, आरास्ता करना और तक्फ़ीन के मा'ना हैं : कफ़न देना। मरने के बा'द इन्सान को जो लिबास पहनाया जाता है उसे कफ़न कहते हैं और तजहीज़ो तक्फ़ीन से मुराद है मौत से ले कर दफ़्न तक मय्यित के लिये जिन उमूर की ह़ाजत होती है वोह तमाम उमूर बजा लाना। इस में मय्यित का ग़ुस्ल, कफ़न, नमाज़े जनाज़ा, क़ब्र की खुदाई सब शामिल हैं।

शरई हुक्म

मुसलमान की तजहीज़ो तक्फ़ीन फ़र्ज़े किफ़ाया है।

फ़र्ज़े किफ़ाया

फ़र्ज़े किफ़ाया वोह है जिस का करना हर एक पर ज़रूरी नहीं बल्कि जिन जिन को पता चला उन में से कुछ लोगों ने कर लिया तो सब की त़रफ़ से अदा हो गया और अगर उन में से जिन को इत्तिलाअ़ हुई किसी एक ने भी न किया तो सब गुनाहगार होंगे।

(वक़ारुल फ़तावा, किताबुस्सलात, 2/57 मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तजहीज़ो तक्फ़ीन में शिर्कत सआ़दत और बाइसे अज्रो सवाब है,

ह़दीसे मुबारका में इस की ज़बरदस्त फ़ज़ीलत आई है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

तजहीज़ो तक्फ़ीन की ज़बरदस्त फ़ज़ीलत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم)से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न पहनाए, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह गुनाहों से ऐसे ही पाक हो जाता है जैसे पैदाइश के दिन था।

(ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فى غسل الميت، ٢/٢٠١،حديث ١٤٦٢)

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कैसी प्यारी फ़ज़ीलत है ! तजहीज़ो तक्फ़ीन करने वालों के तो गोया वारे ही न्यारे हो जाते हैं लिहाज़ा जब किसी मुसलमान के इन्तिक़ाल की ख़बर मिले और मुमकिन हो तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन में ज़रूर शामिल हों।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शौक़ और तरग़ीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बरसहा बरस से येह मा'मूल रहा है कि आप आ़शिक़ाने रसूल की तजहीज़ो तक्फ़ीन में ब शौक़ व रग़बत ह़िस्सा लेते और ग़ुस्ले मय्यित से ले कर तदफ़ीन, फ़ातिह़ा ख़्वानी और दुआ़ वग़ैरा तमाम मुआ़मलात में अपने मख़्सूस दिल नवाज़ अन्दाज़ में पेश पेश रहते, मय्यित के अहले ख़ाना से ता'ज़ियत व ग़म ख़्वारी फ़रमाते उन को सब्रो हिम्मत की तल्क़ीन करते, उन्हें अपने अ़ज़ीज़ के ईसाले सवाब के लिये नेकियों की तरग़ीब दिलाते। ग़म की इन घड़ियों में आप की शिर्कत

www.dawateislami.net

और दिल आवेज़ अन्दाज़ में इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से न जाने कितने ही इस्लामी भाइयों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई और वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सुन्नतों की ख़िदमत और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने लगे। आप دامت برکاتہم العالیہ येह चाहते हैं कि सब दा'वते इस्लामी वाले और दा'वते इस्लामी वालियां तजहीज़ो तक्फ़ीन में ह़िस्सा लें, ग़म ख़्वारी करे और मदनी मक़्सद **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** के तह़्त ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश कर के नए नए इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मदनी माह़ोल से वाबस्ता करें। आप دامت برکاتہم العالیہ मौक़अ़ ब मौक़अ़ अपने मदनी फूलों में तजहीज़ो तक्फ़ीन की अहम्मिय्यत और इस में ह़िस्सा लेने की तरग़ीब भी दिलाते हैं चुनान्चे, एक दफ़्अ़ा मदनी मुज़ाकरे में इरशाद फ़रमाया :

"भले आप जानते न हों तब भी शिर्कत करें जब मस्जिद में ए'लान हो तो रुक जाएं, जनाज़े की नमाज़ पढ़ें फिर ढूंडें कि उन का अ़ज़ीज़ कौन है उन से ता'ज़ियत करें"........येह भी इरशाद फ़रमाया : "अगर हम तजहीज़ो तक्फ़ीन में ह़िस्सा लेंगे तो उन के ग़मज़दा रिश्तेदारों के दिलों में एक गूना (थोड़ी सी) ख़ुशी दाख़िल होगी, उन को ढारस मिलेगी, तसल्ली मिलेगी, ग़म सहना आसान होगा और अगर उन्हें कोई न पूछे, तजहीज़ो तक्फ़ीन में ह़िस्सा ही न ले तो कितना सदमा होगा !"......फिर आप ने अपने बारे में तरग़ीबन येह भी इरशाद फ़रमाया कि मुझे जब पता चलता कि फ़ुलां के वालिद फ़ौत हो गए हैं तो मैं ख़ुद ही चला जाता था उस वक़्त लाश पड़ी होती और लोग कनफ़्यूज़ (परेशान, घबराए हुवे) होते थे ऐसे में अगर कोई उन पर तसल्ली का हाथ रखे तो उस का असर बहुत देर पा होता

www.dawateislami.net

है और ग़म धुल जाते हैं, तरकीब मदीना मदीना हो जाती है। फिर आप ने इस्लामी भाइयों की तरग़ीबो तह़रीस के लिये एक मदनी बहार कुछ यूं बयान फ़रमाई :

जब आ़शिक़ाने रसूल ने तजहीज़ो तक्फ़ीन में शिर्कत की....

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल की बरकतें पाने से क़ब्ल फ़ेशन परस्त और मोडर्न कल्चर का दिलदादा था, मदनी माह़ोल से मेरी वाबस्तगी और तौबा का सबब यूं बना कि मेरे वालिद साह़िब के इन्तिक़ाल पर कुछ आ़शिक़ाने रसूल हमदर्दी और ग़म ख़्वारी का जज़्बा ले कर हमारे घर तशरीफ़ लाए। अपनाइय्यत का इज़्हार करते हुवे मुझे हिम्मत दिलाई और सब्र की तल्क़ीन की। जब वालिद साह़िब को ग़ुस्ल देने का वक़्त आया तो इस्लामी भाइयों ने आगे बढ़ कर ख़ुद अपने हाथों से सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल दिया, कफ़न पहनाया और रिक़्क़त के साथ तमाम मुआ़मलात किये। जब नमाज़े जनाज़ा हुई तो उस में शिर्कत की, क़ब्रिस्तान भी आए और तदफ़ीन में भी ह़िस्सा लिया। वालिद साह़िब को सिपुर्दे ख़ाक करने के बा'द दोस्त अह़बाब, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब सब वापस चल दिये लेकिन येह आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाई जो हमारे रिश्तेदार नहीं थे, वालिद साह़िब की क़ब्र के पास बैठ गए और ना'त शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। ख़ैर ख़्वाही और ग़म ख़्वारी के जज़्बे से सरशार उन आ़शिक़ाने रसूल का येह अन्दाज़ देख कर मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा और यूं दा'वते इस्लामी की मह़ब्बत मेरे दिल में घर कर गई। मैं ने उन आ़शिक़ाने रसूल का शुक्रिय्या अदा किया, उन्हों ने मेरी क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी और मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**

www.dawateislami.net

करनी है'' के तहत मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे अ़लाक़े की क़रीबी मस्जिद में दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने का ज़ेहन दिया। मैं अपने ग़म ख़्वार इस्लामी भाइयों की नेकी की दा'वत को रद न कर सका और हाथों हाथ शिर्कत की निय्यत कर ली, मद्रसतुल मदीना में मुझे मख़ारिज से क़ुरआने पाक पढ़ने की सआ़दत मिलने लगी, इस्लामी भाई बड़ी महब्बत से पढ़ाते, फ़िक्रे आख़िरत दिलाते और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब दिलाते, जिस की बरकत से मुझे भी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल हुवा, यूं मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल के क़रीब आने लगा, मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने लगा और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान पाकिस्तान सत़्ह़ पर मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद के निगरान की ह़ैसिय्यत से मस्जिदों की ख़िदमत के लिये कोशां हूं।

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल — न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माह़ोल — बचे बद नज़र से सदा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़म ख़्वारी की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि चन्द इस्लामी भाइयों की ग़म ख़्वारी और तजहीज़ो तक्फ़ीन में शिर्कत ने एक मॉडर्न और फ़ेशन परस्त नौजवान की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया और वोह मदनी कामों में तरक़्क़ी करते करते दा'वते इस्लामी की मजलिस ख़ुद्दामुल मसाजिद का निगरान बन कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाने लगा आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से

www.dawateislami.net

वाबस्ता रहिये, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये, ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश कीजिये, ग़म ख़्वारी भी कीजिये और नेकी की दा'वत को आ़म कीजिये आइये ग़मज़दा मुसलमान की ग़म ख़्वारी करने और किसी मुसलमान के दिल में खुशी दाख़िल करने की फ़ज़ीलत भी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

ग़म ख़्वारी की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आक़ाए दो जहां, सरवरे कौनो मकां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत (ग़म ख़्वारी) करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा। (معجم اوسط للطبرانی، ٦/٤٢٩، حدیث ٩٢٩٢)

मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की फ़ज़ीलत

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और ज़िक्र में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : क्या तू मुझे नहीं पहचानता ? वोह कहता है : तू कौन है ? तो वोह फ़िरिश्ता जवाब देता है : मैं वोह ख़ुशी हूं जिसे तू ने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था, आज मैं तेरी वह़शत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और तुझे रोज़े क़ियामत के मनाज़िर दिखाऊंगा

www.dawateislami.net

और तेरे लिये तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।

(الترغیب و الترھیب، کتاب البر والصلۃ،باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین،۳/۲۹۹، حدیث۲۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तजहीज़ो तक्फ़ीन और दा'वते इस्लामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुद ग़र्ज़ी और नफ़्सा नफ़्सी के इस गए गुज़रे दौर में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की इस्लाह़ और सुन्नतों की ख़िदमत में सरगर्मे अ़मल है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता हाल (मुह़र्रमुल ह़राम 1437 हिजरी) दा'वते इस्लामी का पैग़ाम दुन्या के कमो बेश 200 मुमालिक में पहुंच चुका है और येह सफ़र जारी है। मदनी कामों में तरक़्क़ी के लिये दा'वते इस्लामी के 92 से ज़ाइद शो'बाजात और मजालिस बनाई जा चुकी हैं जो मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ भरपूर अन्दाज़ में नेकी की दा'वत और इह़याए सुन्नत में मसरूफ़े अ़मल हैं। इन्ही में एक मजलिस तजहीज़ो तक्फ़ीन भी है जो आ़शिक़ाने रसूल की तजहीज़ो तक्फ़ीन के मराह़िल सुन्नत व शरीअ़त के मुत़ाबिक़ सर अन्जाम देने और इन में ख़िलाफ़े शरअ़ और बद रुसूमात को दूर करने की ख़्वाहां है और बुन्यादी त़ौर पर इन दो उमूर के लिये कोशां है :

﴾1﴿.......आ़शिक़ाने रसूल को तजहीज़ो तक्फ़ीन सिखाना, और

﴾2﴿.......आ़शिक़ाने रसूल की तजहीज़ो तक्फ़ीन करना

आ़शिक़ाने रसूल को तजहीज़ो तक्फ़ीन सिखाने के लिये मजलिस की त़रफ़ से अब तक मुतअ़द्दिद तरबिय्यती इजतिमाआ़त और मदनी चैनल

www.dawateislami.net

पर मुख़्तलिफ़ सिलसिले पेश किये जा चुके हैं जिन में न सिर्फ़ ज़बानी बल्कि अ़मली त़रीक़ा भी सिखाया गया है। इसी त़रह़ मदनी मुज़ाकरों, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के सिलसिलों, मजलिस की त़रफ़ से तजहीज़ो तक्फ़ीन की तफ़्सील और मसाइल पर मुश्तमिल DVD आ़लमी मदनी मर्कज़ में होने वाले फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स की DVD और मेमरी कार्ड बनाम, "फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स" के ज़रीए़ भी तरबिय्यत का सिलसिला है। मज़ीद एक ज़बर दस्त और क़ाबिले तह़सीन कारनामा येह है कि मजलिस की त़रफ़ से एक वेबसाइट बनाई गई है (tajheezotakfeen.dawateislami.net) जहां तजहीज़ो तक्फ़ीन का मुकम्मल त़रीक़ा और बहुत से मसाइल जम्अ़ किये गए हैं और उन्हें अलग अलग उ़नवानात के तह़्त तरतीब दिया गया है लिहाज़ा दुन्या भर में तजहीज़ो तक्फ़ीन और इस के मसाइल सीखने का ज़ौक़ो शौक़ रखने वालों के लिये आसानी है कि वोह जब चाहें इस वेबसाइट से इस्तिफ़ादा कर सकते हैं और पेश आमदा मसाइल में शरई रहनुमाई ह़ासिल कर सकते हैं।

सीखने सिखाने के इस सिलसिले को आ़म करने और ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाइयों को मुस्तफ़ीद करने की ग़रज़ से दा'वते इस्लामी के दीगर शो'बाजात मसलन जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना, नीज़ मदनी तरबिय्यत कोर्स, मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स, नमाज़ कोर्स के इस्लामी भाइयों और दा'वते इस्लामी के अइम्मए किराम, मुबल्लिग़ीन नीज़ ग़ुस्साल और गोरकनों में भी तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत का सिलसिला है और अब तक उन की एक ख़ातिर ख़्वाह ता'दाद तरबिय्यत ह़ासिल कर चुकी है और येह सिलसिला जारी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तरबिय्यत पाने वाले कई इस्लामी भाइयों ने अपने तअस्सुरात का भी इज़्हार किया, चुनान्चे, एक ग़ुस्साल का बयान है कि "दा'वते इस्लामी के तरबिय्यती इजतिमाअ़ की

www.dawateislami.net

बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी काफ़ी इस्लाह़ हुई।" इसी त़रह़ एक इस्लामी भाई पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और उन्हों ने रोते हुवे कहा कि "काश ! मुझे येह तरबिय्यत पहले मिल जाती।"

इस्लामी भाइयों की त़रह़ इस्लामी बहनों में भी तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत का सिलसिला है जिन में दा'वते इस्लामी की मुबल्लिग़ात और ज़िम्मेदार इस्लामी बहनें तरबिय्यत फ़रमाती हैं, मुल्क भर में मद्रसतुल मदीना लिल बनात और जामिअ़तुल मदीना लिल बनात समेत उन के भी मुतअ़द्दिद तरबिय्यती इजतिमाआ़त हो चुके हैं और तरबिय्यत पा कर इस्लामी बहनें तजहीज़ो तक्फ़ीन में मसरूफ़े अ़मल हैं और येह सिलसिला भी जारी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

मजलिस की त़रफ़ से तरबिय्यत पाने वाले इस्लामी भाइयों के इम्तिह़ान (Test) का सिलसिला भी होता है जिस में तजहीज़ो तक्फ़ीन और तदफ़ीन का त़रीक़ा, नमाज़े जनाज़ा की इमामत और फ़ातिह़ा का त़रीक़ा शामिल हैं। (इस्लामी बहनों में भी इम्तिह़ान की तरकीब है और ता हाल तीन सौ से ज़ाइद इस्लामी बहनें इम्तिह़ान देने की सआ़दत ह़ासिल कर चुकी हैं।)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पाकिस्तान के इ़लावा दीगर मुमालिक में भी तजहीज़ो तक्फ़ीन और इस की तरबिय्यत का सिलसिला है बल्कि बा'ज़ मुमालिक में बा क़ाइ़दा मजालिस का क़ियाम भी है। मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के अहदाफ़ में है कि दुन्या भर में इस शो'बे से मुतअ़ल्लिक़ ज़िम्मेदारान मुक़र्रर किये जाएं, सिर्फ़ पाकिस्तान में 15000 ज़िम्मेदारान के तक़र्रुर का हदफ़ है जिस के ह़ुसूल के लिये मजलिस सर गर्मे अ़मल है। जिन मक़ामात पर तरबिय्यत और टेस्ट के बा'द इस्लामी भाइयों का तक़र्रुर हो चुका है वहां मजलिस की त़रफ़ से नुमायां मक़ामात

www.dawateislami.net

पर बेनर्ज़ लगाने का भी सिलसिला है ताकि तजहीज़ो तक्फ़ीन के लिये इस्लामी भाई बा आसानी राबित़ा फ़रमा सकें। इन बेनर्ज़ पर ज़िम्मेदारान के राबित़ा नम्बर भी मौजूद होते हैं। (इसी त़रह़ इस्लामी बहनों से राबित़े के लिये उन के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में "ग़ुस्ले मय्यित ज़िम्मेदार" और उन के राबित़ा नम्बर के ए'लान की तरकीब होती है। नीज़ उन के मह़ारिम के राबित़ा नम्बर मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की वेब साइट से ह़ासिल किये जा सकते हैं।)

मज़ीद तफ़्सीलात के लिये (tajheezotakfeen.dawateislami.net) विज़िट कीजिये और जिन मक़ामात पर ज़िम्मेदारान का तक़र्रुर हो चुका है उन की तफ़्सील और राबित़ा नम्बर भी ह़ासिल कीजिये। इस के इ़लावा इस वेब साइट पर आ कर आप क्या क्या मा'लूमात ले सकते हैं।

आइये इस के बारे में कुछ तफ़्सील मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की वेब साइट

वेब साइट खुलते ही आप के सामने होम पेज (Home Page) होगा जिस पर दरमियान में कुछ आईकोन्ज़ (icons) नज़र आएंगे और उन पर जुदा जुदा येह उ़नवानात होंगे।

(1) मौत आने का बयान
(2) तजहीज़ो तक्फ़ीन
(3) ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा
(4) कफ़न का बयान
(5) नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा
(6) क़ब्र व दफ़्न का बयान
(7) फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

आप जिस उ़नवान के तह़त मा'लूमात ह़ासिल करना चाहते हैं उस पर क्लिक करें तो एक पेज खुलेगा जिस पर टेक्स्ट फ़ोर्म या'नी तह़रीर

www.dawateislami.net

की सूरत में इस उ़नवान के तह़त तफ़्सीलात मौजूद होंगी, इसी त़रह़ दीगर उ़नवानात भी आप मुलाह़ज़ा फ़रमा सकते हैं।

होम पेज पर दाईं जानिब (सीधी त़रफ़) एक आईकोन पर "तजहीज़ो तक्फ़ीन कोर्स" तह़रीर है जिस के नीचे इस्लामी भाई और इस्लामी बहन लिखा है, यहां आप अपने मत़्लूबा आईकोन पर क्लिक कर के mp3 या mp4 में डाऊन लोड कर के सुनने और देखने की सहूलत ह़ासिल कर सकते हैं। इसी त़रह़ होम पेज पर ही इब्तिदा में मेनूबार (Menubar) है जिस में होम, मीडिया बॉक्स, गेलेरी, ज़िम्मेदारान, कॉन्टेक्ट अज़् (Contact us), डिपार्टमेन्ट्स वग़ैरा मुख़्तलिफ़ ऑपशन्ज़ (Options) मौजूद हैं इन के ज़रीए आप अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और निगराने शूरा के बयानात, मदनी गुलदस्ते, मदनी मुज़ाकरे, फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, पुरसोज़ कलाम, ना'त, मुनाजात, निय्यतें, दुआ़एं, वॉल पेपर्ज़, मक्तबतुल मदीना के रसाइल, मुख़्तलिफ़ मदनी फूल, पाकिस्तान सत़ह़ पर मुख़्तलिफ़ शहरों और दुन्या भर के मुमालिक में मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के ज़िम्मेदारान के नाम और नम्बर्ज़, कारकर्दगी व दीगर फ़ोर्मज़, बेनर वग़ैरा मुलाह़ज़ा फ़रमा सकते हैं और डाऊन लोड भी कर सकते हैं। इसी त़रह़ होमपेज पर नीचे की त़रफ़ आएंगे तो आप येह लिखा हुवा पाएंगे : उम्मते मुस्त़फ़ा की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के पेशे नज़र दा'वते इस्लामी की मजलिस तजहीज़ो तक्फ़ीन के लिये अपनी ख़िदमात पेश करने के लिये यहां क्लिक कीजिये। क्लिक करने पर एक फ़ोर्म ओपन होगा, इसे तवज्जोह से पुर कर के आख़िर में सबमिट (Submit) पर क्लिक करेंगे तो मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार तक वोह तफ़्सील आ जाएगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखने और सिखाने के लिये राबित़ा

www.dawateislami.net

कीजिये, ज़िन्दा मुसलमानों की त़रह़ मरने वालों से भी ख़ैर ख़्वाही करते हुवे उन की तजहीज़ो तक्फ़ीन में ह़िस्सा लीजिये, उन के अहले ख़ाना से ता'ज़ियत व ग़म ख़्वारी कीजिये, उन पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता कीजिये إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ढेरों ढेर सवाब हाथ आएगा और बे शुमार बरकतें नसीब होंगी।

आइये इस ज़िम्न में फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द 2 के बाब **नेकी की दा'वत** से एक रिवायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

क़ब्र की रौशनी का सामान

अल्लाह تَبارَکَ وَتَعَالٰی ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रौशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़शत न हो।

(حلیۃ الاولیاء،٦/٥،حدیث٧٦٢٢)

येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं :

मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जग मगाएंगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ मह़सूस नहीं होगा। इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे नेकी की दा'वत देने वालों, सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और फ़िक्रे

www.dawateislami.net

मदीना कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब देने वालों और सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ मुबल्लिग़ीन की नेकी की दा'वत सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, हि़स्सए अव्वल, स. 152)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छी अच्छी निय्यतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखने सिखाने और किसी मुसलमान की तजहीज़ो तक्फ़ीन में हि़स्सा लेने से मुतअ़ल्लिक़ अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब में ढेरों इज़ाफ़ा हो जाएगा क्यूंकि एक तो बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता दूसरे जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा होगा। निय्यत दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं ख़्वाह किसी चीज़ का हो और शरीअ़त में निय्यत इ़बादत के इरादे को कहते हैं। (नुज़हतुल क़ारी, 1/169) बहुत सारे मुबाह़ काम या'नी ऐसे काम जिन के करने से न सवाब मिले न गुनाह (मसलन खाना, पीना, सोना टहलना वग़ैरा), अगर उन पर सवाब की निय्यत कर ली जाए तो वोह इ़बादत बन जाते हैं और अगर बुरी निय्यत से किये जाएं तो बुरे हो जाएंगे और कुछ भी निय्यत न की जाए तो मुबाह़ रहते हैं। निय्यत का येह भी फ़ाइदा है कि निय्यत करने

www.dawateislami.net

के बा'द अगर वोह काम न कर सका तब भी निय्यत का सवाब मिल जाएगा। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द दुवुम, बाब नेकी की दा'वत, स. 109 ता 111 माख़ूज़न) नीज़ दूसरों की मौजूदगी में निय्यत का इज़्हार करते हुवे एह़तियात़ फ़रमाइये। दिल में निय्यत न होने के बा वुजूद जान बूझ कर इस लिये हाथ उठाना कि दूसरों पर असर क़ाइम हो कि येह निय्यत कर रहा है, येह झूट और धोका है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो भी काम करना हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये कीजिये और उस में रियाकारी और दिखलावे को न आने दीजिये ! रियाकारी से मुराद है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इ़बादत करना" मसलन तजहीज़ो तक्फ़ीन में इस लिये ह़िस्सा लेना कि लोग ता'रीफ़ करें कि इसे मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का बड़ा जज़्बा है। मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम के बाब "नेकी की दा'वत" के इब्तिदाई सफ़ह़ात का मुत़ालआ़ फ़रमाइये जिस में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रियाकारी के नुक़्सानात और इस की 80 मिसालें बयान फ़रमाई हैं, यहां उन में से दो मिसालें पेश की जाती हैं :

"मौत-मय्यित के मौक़अ़ पर भाग दौड़ करना नीज़ जनाज़े के जुलूस और तदफ़ीन वग़ैरा में आगे आगे रहना ताकि लोगों में नुमायां हो, अहले मय्यित मुतअस्सिर हों, उन की नज़र में अच्छा इन्सान बने।"

"किसी की मुसीबत का सुन कर इस लिये मुंह बनाना या हमदर्दाना जुम्ले कहना कि लोग रह़्म दिल कहें। (अलबत्ता दुख्यारे मुसलमान की दिलजूई की निय्यत से रिज़ाए इलाही के लिये उस के सामने ऐसा करना इबादत और बाइसे सवाबे आख़िरत है)"

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का वुजूदे मसऊ़द बिलाशुबा हमारे लिये एक बहुत बड़ी ने'मत है येह आप की मुख़्लिसाना कोशिशों का नतीजा है कि आज हमें तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा प्यारा प्यारा मदनी माह़ोल मुयस्सर है जिस की बदौलत बिला मुबालग़ा लाखों लाख मुसलमानों की इस्लाह़ हुई और वोह ताइब हो कर सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गए बल्कि सेंकड़ों ग़ैर मुस्लिमों को जो कुफ़्रो शिर्क की अन्धेरी वादियों में भटक रहे थे आप की और इसी मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी की बरकत से ईमान की ला ज़वाल दौलत नसीब हुई और उन के दिलों में भी इ़श्के़ रसूल का समन्दर मौजें मारने लगा और वोह आ़शिक़ाने रसूल कहलाने लगे और उन्हों ने भी इस मदनी मक़्सद को अपना लिया कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ही की बारगाह से हमें फ़िक्रे मदीना, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र, नेकी की दा'वत, इनफ़िरादी कोशिश और दीगर मदनी कामों के साथ साथ हर काम से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने का ज़ेह्न मिला । निय्यत से मुतअ़ल्लिक़ हमारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم का फ़रमाने आ़लीशान है : मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है (معجم کبیر،٦/١٨٥، حدیث ٥٩٤٢) निय्यत की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत के पेशे नज़र अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ अपने बयानात, मदनी मुज़ाकरों, कुतुबो रसाइल और दीगर तह़रीरों में निय्यतें करने की तरग़ीब दिलाते रहते हैं बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतें भी इरशाद फ़रमाते हैं ताकि

www.dawateislami.net

निय्यतें करने में आसानी हो और सवाब में इज़ाफ़ा हो । इस सिलसिले में निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप का ऑडियो बयान "निय्यत का फल" और रिसाला "सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े" मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब किये जा सकते हैं । हमें भी चाहिये कि हर काम से पहले कुछ न कुछ अच्छी निय्यतें कर लिया करें । निय्यत की अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे पाक में है : सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है । (جامع صغیر،ص ۸۱، حدیث۱۲۸۴) सच्ची निय्यतों का जज़्बा पाने, सवाब बढ़ाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें सीखने और सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और हर माह कम अज़् कम तीन दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये नीज़ मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये, आप की तरग़ीबो तह़रीस के लिये एक मदनी बहार गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे,

सच्ची निय्यत की बरकत

एक इस्लामी भाई का बयान है : येह उन दिनों की बात है जब बाबुल मदीना (कराची) में होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की तय्यारियां अपने उ़रूज पर थीं, मुख़्तलिफ़ शहरों से मदनी क़ाफ़िले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक होने के लिये धूम धाम से तय्यारियों में मश्ग़ूल थे, मुतअ़द्दिद शहरों से बाबुल मदीना कराची के लिये ख़ुसूसी ट्रेनों का सिलसिला था । इन्हीं दिनों हमारे एक अ़ज़ीज़ वफ़ात पा गए, उन के इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द घर के किसी फ़र्द ने मर्हूम को ख़्वाब में देख कर जब ह़ाल पूछा तो कुछ यूं कहने लगे : मैं ने कराची में होने वाले दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत से ख़ुसूसी ट्रेन में सीट बुक करवाई थी लेकिन मैं इजतिमाअ़ में शिर्कत न कर सका अब मरने के बा'द पता चला कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसी सच्ची निय्यत के सबब मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी है।

رحمتِ حق ''بہا'' نمی جوید   رحمتِ حق ''بہانہ'' می جوید

*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत "**बहा**" या'नी क़ीमत नहीं मांगती*

*अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो "**बहाना**" ढूंडती है*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? अच्छी निय्यत का किस क़दर बुलन्द रुत्बा है कि अ़मल करने का मौक़अ़ न मिलने के बा वुजूद इजतिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत करने वाले ख़ुश नसीब की मग़्फ़िरत कर दी गई। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : इन्सान को चन्द रोज़ के अ़मल से नहीं, अच्छी निय्यत से जन्नत ह़ासिल होगी।

(दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें, स. 208 कीमियाए सआ़दत, स. 2/861)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! तजहीज़ो तक्फ़ीन से मुतअ़ल्लिक़ कुछ निय्यतें फ़रमा लीजिये।

तजहीज़ो तक्फ़ीन सिखाने की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल को तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा सिखाऊंगा ❁ ता'ज़ीमे इल्मे दीन के लिये साफ़ सुथरे कपड़े पहनूंगा ❁ ख़ुश्बू लगाऊंगा ❁ मुक़र्ररा वक़्त की पाबन्दी करूंगा ❁ इब्तिदा में.......

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

www.dawateislami.net

पढ़ कर ह़म्द, दुरूदो सलाम, तअ़व्वुज़ और तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा ❁ मौक़अ़ की मुनासबत से عَزَّوَجَلَّ, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा ❁ दीनी कुतुब का अदब करूंगा ❁ आसान अन्दाज़ में समझाने की कोशिश करूंगा ❁ अगर किसी को कोई बात समझ न आई तो बार बार समझाने में सुस्ती नहीं करूंगा ❁ तमाम सीखने वालों पर यक्सां तवज्जोह दूंगा ❁ झिड़कने और डांटने से बचूंगा ❁ मौक़अ़ ब मौक़अ़ सीखने वालों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करूंगा ❁ मौत और इस के बा'द के मराह़िल से गुज़रने को याद कर के ख़ुद को और दूसरों को फ़िक्रे आख़िरत दिलाऊंगा ।

तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखने की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा सीखूंगा ❁ ता'ज़ीमे इ़ल्मे दीन के लिये साफ़ सुथरे कपड़े पहनूंगा ❁ ख़ुश्बू लगाऊंगा ❁ मुक़र्ररा वक़्त की पाबन्दी करूंगा ❁ बिला वज्ह कपड़े, बदन, सर या दाढ़ी के बाल सहलाने से बचूंगा ❁ दरियों से धागे नोचने, उंगलियों से फ़र्श पर खेलने, इधर उधर देखने, बातें करने और टेक लगाने से बचूंगा ❁ पर्दे में पर्दा न होने की सूरत में घुटने खड़े कर के दूसरों के लिये बद निगाही का बाइ़स बनने से बचूंगा ❁ घुटनों में सर रखने, दूसरे को इशारे करने, उठ कर चल पड़ने वग़ैरा से इजतिनाब करूंगा ❁ इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठ कर इ़ल्मे दीन समझने के लिये निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर सुनूंगा ❁ ज़रूरतन सिमट, सरक कर दूसरों के लिये जगह कुशादा करूंगा ❁ मोबाइल फ़ोन बन्द रखूंगा

www.dawateislami.net

❁ आपस में बात चीत से बचने की कोशिश करूंगा ❁ दूसरों की दिल आज़ारी से बचूंगा ❁ ख़िलाफ़े मिज़ाज मुआ़मले पर सब्र कर के अज्र का ह़क़दार बनूंगा ❁ कोई बात समझ में न आई तो मुअद्दबाना दोबारा समझाने की दरख़्वास्त करूंगा ❁ दीनी कुतुब और असातिज़ा का अदब करूंगा ❁ जो सीखूंगा वोह दूसरे को सिखाने में बुख़्ल नहीं करूंगा ❁ आ़शिक़ाने रसूल की तजहीज़ो तक्फ़ीन के लिये अपनी मसरूफ़िय्यात में से वक़्त मख़्सूस कर के (मसलन दो या तीन घन्टे) अपने आप को मजलिस की ख़िदमत में पेश करूंगा।

तजहीज़ो तक्फ़ीन में ह़िस्सा लेने की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की तजहीज़ो तक्फ़ीन में ह़िस्सा लूंगा ❁ फ़र्ज़े किफ़ाया अदा करूंगा ❁ ह़क़्क़े मुस्लिम की अदाएगी करूंगा ❁ तमाम उमूर में सुन्नतों और शरई अह़काम को पेशे नज़र रखूंगा ❁ मर्ह़ूम के अहले ख़ाना के साथ हमदर्दी और उन की ग़म ख़्वारी करूंगा ❁ ह़त्तल मक़्दूर बा वुज़ू रहूंगा ❁ मौक़अ़ मिला तो नर्मी के साथ मर्ह़ूम के अहले ख़ाना व दीगर रिश्तेदारों पर इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ❁ अपने लिये, मर्ह़ूम और उन के अहले ख़ाना और उम्मते मुस्लिमा के लिये दुआ़ए ख़ैर करूंगा ❁ ख़िलाफ़े शरअ़ काम से ह़स्बे इस्तिता़अ़त रोकने की कोशिश करूंगा ❁ मर्ह़ूम के लिये ईसाले सवाब करूंगा और उन के अहले ख़ाना को ईसाले सवाब के लिये रसाइल तक़्सीम करने और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाऊंगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"ऐ इन्सान ! एक दिन मरना है आख़िर मौत है" (उर्दू) के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के 26 मदनी फूल

﴾1﴿.......**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر للطبراني، ٦/١٨٥، حديث: ٥٩٤٢) इस लिये मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन का हर ज़िम्मेदार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा "72 मदनी इन्आ़मात" में से "मदनी इन्आ़म नम्बर 1" पर अ़मल करते हुवे येह निय्यत करता रहे कि "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये दा'वते इस्लामी के शो'बे "मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" का मदनी काम मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾2﴿.......मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन का काम, शरीअ़त और मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार (जो शरीअ़त के मुनाफ़ी न हो) के मुत़ाबिक़ मुसलमान मय्यितों के कफ़न दफ़्न और लवाह़िक़ीन की ग़म गुसारी के तमाम मुआ़मलात सर अन्जाम दे कर सवाब कमाना है ।

﴾3﴿.......मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के तमाम इस्लामी भाई कफ़न दफ़्न और ता'ज़ियत व नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा के मसाइल सीखें, इस के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा" का मुत़ालआ़ लाज़िमी है जिस में ۞ मदनी वसिय्यत नामा ۞ नमाज़े

www.dawateislami.net

जनाज़ा का त़रीक़ा ۞ शैत़ान के बा'ज़ हथयार ۞ फ़ातिह़ा का त़रीक़ा ۞ क़ब्र वालों की 25 हिकायात ۞ बहारे शरीअ़त हिस्सा 4 जिल्द अव्वल से किताबुल जनाइज़ सफ़ह़ा 799 ता 857 (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची) और फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9 से इस्तिफ़ादा किया गया है नीज़ "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" से ज़रूरतन शरई रहनुमाई लेते रहे। इस शो'बे से मुतअ़ल्लिक़ ज़िम्मेदारान को चाहिये कि वोह तजहीज़ो तक्फ़ीन के ह़वाले से मुकम्मल तरबिय्यत ह़ासिल करें, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाली DVD बनाम "तजहीज़ो तक्फ़ीन तरबिय्यती इजतिमाअ़" ह़ासिल करें नीज़ इस शो'बे की वेब साइट tajheezotakfeen.dawateislami.net से इस DVD को देखा और सुना जा सकता है।

۞ तजहीज़ो तक्फ़ीन के हर ज़िम्मेदार को चाहिये कि हर साल माहे मुह़र्रमुल ह़राम में किताब "तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा "का मुत़ालआ़ कर ले और "तजहीज़ो तक्फ़ीन तरबिय्यती इजतिमाअ़" की DVD देख ले, माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के हर सत़्ह़ के मदनी मश्वरे में इस की कारकर्दगी हर सत़्ह़ के ज़िम्मेदार से ली जाएगी।

﴾4﴿.......निगराने मजलिस (मुल्क सत़्ह़) वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर तरबिय्यती इजतिमाअ़ का इनइक़ाद करें और हर अ़लाक़े / शहर में इस काम का तजरिबा रखने वाले इस्लामी भाइयों को ज़ेह्न दे कर इस काम के लिये तय्यार करें। इन के नाम, मोबाइल नम्बर ले लें ताकि ज़रूरतन राबित़ा करने में आसानी हो। अगर मुमकिन हो तो तरबिय्यती इजतिमाअ़ में गोरकन इस्लामी भाइयों को ज़रूर शिर्कत करवाएं ताकि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ उन की भी तरबिय्यत हो।

www.dawateislami.net

﴾5﴿.......हफ़्तावार इजतिमाअ़ की मसाजिद में शरई़ रहनुमाई के साथ बेनर लगाया जाए जिस का उ़नवान येह हो : "इस्लामी भाइयों के ग़ुस्ले मय्यित के लिये इस नम्बर पर राबित़ा करें (मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन, दा'वते इस्लामी)" इसी त़रह़ इस्लामी बहनों के इजतिमाअ़ात के मक़ाम पर, "इस्लामी बहनों के ग़ुस्ले मय्यित के लिये इस नम्बर पर राबित़ा करें (मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन, दा'वते इस्लामी)"[1] अ़लाक़े की मसाजिद में भी ज़िम्मेदार का राबित़ा नम्बर और राबित़े के लिये मख़्सूस इ़बारत मस्जिद के बोर्ड वग़ैरा पर लिख कर लगा दी जाए ताकि ज़रूरत पड़ने पर लोग राबित़ा कर सकें। (जो नम्बर दिया जाए वोह मजलिस की मुशावरत से दिया जाए)

﴾6﴿.......जहां किसी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़शिक़े रसूल की वफ़ात हो गई हो, मजलिस के इस्लामी भाई अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अव्वल ता आख़िर (ग़ुस्ले मय्यित ता तदफ़ीन) शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करें नीज़ ईसाले सवाब इजतिमाअ़ात का भी इनइ़क़ाद करें।

﴾7﴿.......ग़ुस्ले मय्यित ता तदफ़ीन तमाम तर मुआ़मलात "मदनी वसिय्यत नामा मअ़ कफ़न दफ़्न के अह़कामात" में दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ ही करने की कोशिश करें। ग़स्साल (मय्यित को ग़ुस्ल देने वाले) इस्लामी भाइयों के पास मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ "तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा" हर वक़्त मौजूद होनी चाहिये।

﴾8﴿.......ग़ुस्ले मय्यित के बा'द से तदफ़ीन तक बा'ज़ औक़ात मय्यित के अ़ज़ीज़ो अक़रिबा के पहुंचने का इन्तिज़ार किया जाता है, उस वक़्त दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "मुर्दे के

1.....बेनर का अन्दाज़ आख़िरी सफ़ह़ात पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

सदमे'' और किताब ''तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा'' से नेकी की दा'वत दें। इस के इलावा इस दौरान भी इस बात का ज़ेह्न दिया जाए कि इस वक़्त भी कुरआन ख़्वानी, दुरूद शरीफ़, इस्तिग़फ़ार और दीगर तस्बीह़ात का विर्द करते रहें।

《9》.......कफ़न तय्यार करने, मय्यित को ग़ुस्ल देने, नमाज़े जनाज़ा की अदाएगी के इन्तिज़ार और क़ब्रिस्तान में तदफ़ीन के दौरान इनफ़िरादी कोशिश के बहुत मवाक़ेअ़ मुयस्सर आते हैं, ऐसे मौक़अ़ पर बिल ख़ुसूस मय्यित के लवाहिक़ीन पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करने की कोशिश की जाए नीज़ मुमकिना सूरत में क़ब्रिस्तान जाने के दौरान ''क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात'' और ''तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा'' से मदनी फूल बयान करें।

《10》.......बा'ज़ अ़लाक़ों में तदफ़ीन के फ़ौरन बा'द क़ब्र पर या अगले दिन मय्यित के ईसाले सवाब के लिये ''कुरआन ख़्वानी'' का सिलसिला होता है ऐसे मौक़अ़ पर भी मजलिसे मद्रसतुल मदीना (लिल बनीन) की इजाज़त से क़रीबी मद्रसतुल मदीना (लिल बनीन) के मदनी मुन्नों के ज़रीए़ कुरआन ख़्वानी की तरकीब की जाए। (मजलिसे मद्रसतुल मदीना (लिल बनीन) के तै शुदा मदनी फूलों की रौशनी में ही तरकीब की जाए)

《11》.......जिस त़रह़ हर मुआ़मले में हर अ़लाक़े के रस्मो रवाज (उ़र्फ़) अलग अलग होते हैं इसी त़रह़ मय्यित को ग़ुस्ल, कफ़न ह़त्ता कि तदफ़ीन तक के कई मुआ़मलात में भी रस्मो रवाज मुख़्तलिफ़ होते हैं, बल्कि कोई बई़द नहीं कि इ़ल्मे दीन से दूरी और जहालत के सबब ग़ैर शरई मुआ़मलात भी होते हों। उम्मते मुस्लिमा की ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से, जहां ग़ैर शरई

www.dawateislami.net

मुआ़मलात होते देखें/सुनें वहां दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से हाथों हाथ राबित़ा कर के लवाहिक़ीन को अच्छी अच्छी निय्यतों, नर्मी व हिक्मते अ़मली के साथ नेकी की दा'वत पेश करें।

﴾12﴿.......ग़ैर शरई मुआ़मलात (मसलन नौह़ा करना, सीना पीटना, सर के बाल नोचना, मुसीबत के वक़्त कुफ़्रिय्या कलिमात बोलना, मर्द व औ़रत का इख़्तिलात़ वग़ैरा) की मा'लूमात मिलने पर उन की निशानदेही व शरई रहनुमाई बताते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखा जाए कि फ़ितना व फ़साद का अन्देशा न हो (जहां ज़न्ने ग़ालिब हो कि समझाने से मान जाएगा, वहीं तरकीब की जाए) और मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "28 कलिमाते कुफ़्र" पेश किया जाए।

﴾13﴿.......इस मौक़अ़ पर उ़मूमन दिल नर्म हो जाता है, इन्सान नेकी की त़रफ़ क़दरे जल्दी माइल होता है, इस मौक़अ़ पर मय्यित के ईसाले सवाब के लिये मस्जिद, मदारिसुल मदीना व जामिआ़तुल मदीना वग़ैरा की ता'मीर के लिये भी ज़ेह्न दिया जा सकता है। (मुतअ़ल्लिक़ा शो'बाजात के ज़िम्मेदारान की बाहमी मुशावरत व इजाज़त से हो तो ज़ियादा बेहतर है)

﴾14﴿.......सिवुम, चहलुम और बरसी के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम करें, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के बयान की तरकीब की जाए और मक्तबतुल मदीना के रसाइल वग़ैरा तक़्सीम करने की भरपूर तरकीब करें। "तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा" में इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब के बयानात मौजूद हैं।

﴾15﴿.......दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "शैत़ान के बा'ज़ हथयार" के सफ़ह़ा नम्बर 10 ता 12 का ज़रूर ज़रूर ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब का जदवल

(ज़ियादा से ज़ियादा 92 मिनट)

तिलावत व ना'त शरीफ़	25 मिनट
सुन्नतों भरा बयान	40 मिनट
ज़िक्रुल्लाह	5 मिनट
रिक़्क़त अंगेज़ दुआ	12 मिनट
सलातो सलाम (3 अश्आर) मअ़ इख़्तितामी दुआ	3 मिनट

मदीना : जो वक़्त तै हो जाए उस की पाबन्दी कीजिये "बा'द नमाज़े इशा होगा" कहने के बजाए घड़ी के वक़्त के मुताबिक़ वक़्त तै कीजिये, मसलन रात 9 बजे का तै हुवा है तो लोगों का इन्तिज़ार किये बिग़ैर ठीक वक़्त पर तिलावत से आग़ाज़ कर दीजिये।

मदीना : कोशिश कर के ईसाले सवाब के लिये वहां से हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाइये।

﴾16﴿.......तक़्सीमे रसाइल में बिल ख़ुसूस मौक़अ़ की मुनासबत से रसाइल की तरकीब की जाए मसलन क़ब्र की पहली रात, मुर्दे के सदमे, मुर्दे की बे बसी, चार सनसनी ख़ैज़ ख़्वाब, बादशाहों की हड्डियां, फ़ातिहा का त़रीक़ा, फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़, फ़ैज़ाने नमाज़ वग़ैरा।

﴾17﴿.......मय्यित के लवाहिक़ीन से बा'द में भी राबित़ा रखा जाए, मय्यित के ईसाले सवाब के लिये मुसलसल कम से कम 12 हफ़्तावार इजतिमाअ़ में ह़ाज़िरी और हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरकीब हो तो मदीना मदीना।

www.dawateislami.net

﴾18﴿.......ज़िम्मेदारान की तक़र्रुरी की तरकीब :

#	सत़्ह	ज़िम्मेदार	#	सत़्ह	ज़िम्मेदार
1	अ़लाक़ा	अ़लाक़ा सत़्ह पर 3 रुक्नी मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	4	काबीनात	काबीनात ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन
2	डिवीज़न	डिवीज़न सत़्ह पर 3 रुक्नी मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	5	मुल्क	निगराने मजिलसे तजहीज़ो तक्फ़ीन
3	काबीना	काबीना सत़्ह पर 3 रुक्नी मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	6	रुक्ने शूरा	मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

۞ अ़लाक़ा ता काबीना सत़्ह पर 3 रुक्नी मजलिस होगी, काबीना सत़्ह की मजलिस का निगरान रुक्ने काबीना होगा ۞ काबीनात ज़िम्मेदारान पाकिस्तान सत़्ह की मजलिस के रुक्न हैं, इसी मजलिस में से एक मदनी इन्आ़मात, एक मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार और एक कारकर्दगी ज़िम्मेदार होंगे ۞ मुख़्तलिफ़ मुमालिक में मुल्की सत़्ह पर मजलिस होगी, जो रुक्ने शूरा के तह़्त होगी। (बैरूने मुल्क वाले ज़िम्मेदारान, मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा की इजाज़त के बिग़ैर ज़िम्मेदार न बनाएं) ۞ याद रहे ! किसी भी सत़्ह के अराकीन व निगरान की तक़र्रुरी के लिये मुतअ़ल्लिक़ा सत़्ह के निगरान की इजाज़त ज़रूरी है। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हर मजलिस में मदनी इस्लामी भाई के होने को पसन्द फ़रमाते हैं।)

www.dawateislami.net

﴾19﴿.......**मदनी मश्वरे की तारीख़ व मदनी फूल :**

#	तारीख़	मदनी मश्वरा लेने वाले	सत़्ह	शुरका	मदनी फूल
1	1	निगराने डिवीज़न मुशावरत/ डिवीज़न जिम्मेदार	डिवीज़न	अ़लाक़ा ता डिवीज़न 3 रुक्नी मजलिस	इनफ़िरादी कारकर्दगी, पेशगी जदवल व जदवल कारकर्दगी, जिम्मेदारान के तक़र्रुर, तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली का जाइज़ा, अगले माह के अहदाफ़ वग़ैरा
2	2	निगराने काबीना/ काबीना ज़िम्मेदार	काबीना	डिवीज़न ता काबीना 3 रुक्नी मजलिस	//
3	4	निगराने काबीनात / काबीनात ज़िम्मेदार	काबीनात	काबीना ज़िम्मेदारान (बेहतर येह है कि हर काबीना की 3 रुक्नी मजलिस शिर्कत करे)	//
4	6	रुक्ने शूरा/ निगराने मजलिस	मुल्क	काबीनात ज़िम्मेदारान	//

वज़ाहत : रुक्ने शूरा / निगराने मजलिस, पाकिस्तान सत़्ह की मजलिस का हर माह मदनी मश्वरा फ़रमाएं, एक माह ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट और एक माह बिल मुशाफ़ा ।

❁ **कारकर्दगी जम्अ़ करवाने की तारीख़ें :**

❁ अ़लाक़ा : 2 ❁ डिवीज़न : 3 ❁ काबीना : 5 ❁ काबीनात : 6

❁ मुल्क : 7

www.dawateislami.net

﴾20﴿.......मदनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिये मुक़र्रर कर्दा सत़्ह़ के इलावा किसी और सत़्ह़ का मदनी मश्वरा लेने के लिये मुतअ़ल्लिक़ा निगरान से इजाज़त ज़रूरी है ۞ जब बड़ी सत़्ह़ के ज़िम्मेदार दीगर सत़्ह़ के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना मदनी मश्वरा नहीं होगा ۞ इसी त़रह़ जिस माह निगराने काबीना / मुशावरत शो'बे के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा फ़रमाएंगे, उस माह भी शो'बा ज़िम्मेदारान माहाना मदनी मश्वरा नहीं करेंगे। (शो'बे के मदनी काम को मज़बूत़ और मुनज़्ज़म करने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन अपने निगराने मुशावरत से शो'बे के इस्लामी भाइयों का मदनी मश्वरा करवाना मुफ़ीद है)

﴾21﴿.......पाकिस्तान / बैरूने मुल्क सत़्ह़ के ज़िम्मेदार हर मदनी माह की 7 तारीख़ तक कारकर्दगी पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना / मजलिसे बैरूने मुल्क मक्तब और मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा को मेल कर दें। (याद रहे ! कारकर्दगी मदनी मश्वरे से मश्रूत़ नहीं, अगर किसी वज्ह से मदनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपने निगरान को कारकर्दगी पेश कर दें)

﴾22﴿.......हर ज़िम्मेदार हर माह का पेशगी जदवल ईसवी माह की 19 तारीख़ तक अपने निगरान (निगराने मुशावरत / निगराने मजलिस) से मन्ज़ूर करवाए, फिर इस के मुत़ाबिक़ पेशगी इत्त़िलाअ़ के साथ अपने जदवल पर अ़मल करे और महीना मुकम्मल होने के बा'द 3 तारीख़ तक कारकर्दगी जदवल अपने निगरान (निगराने मुशावरत / निगराने मजलिस) को पेश करे।

﴾23﴿.......मुतअ़ल्लिक़ा निगरान की मुशावरत से शो'बा ज़िम्मेदारान मंगल के रोज़ तह़रीरी काम की तरकीब बनाएं।

www.dawateislami.net

﴾24﴿.......मुतअ़ल्लिक़ा निगराने मुशावरत से मरबूत़ रहें। उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करते रहें। जो निगरान से जितना ज़ियादा मरबूत़ रहेगा वोह उतना ही मज़बूत़ होता जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾25﴿.......मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा और निगराने काबीना की इजाज़त से वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी मजलिस के तरबिय्यती इजतिमाअ़ की तरकीब करते रहें ताकि पुराने इस्लामी भाइयों की याद दिहानी और नए इस्लामी भाइयों की तरबिय्यत का सामान होता रहे।

﴾26﴿.......याद रहे कि मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा / मजलिसे बैरूने मुल्क ज़रूरतन इन मदनी फूलों में तब्दीली कर सकते हैं।

❁ ज़िम्मेदारान अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिये मुन्दरिजए ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं :

❁ फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की कोशिश करते रहें। फ़र्ज़ उ़लूम सीखने के लिये कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा रज़विय्या, इह़याउल उ़लूम वग़ैरा के मुत़ालए़ की आ़दत बनाएं।

❁ मदनी हुल्ये (दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो) कली वाला सफ़ेद कुर्ता सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिन्डली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुवे कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना) की पाबन्दी करें।

❁ अ़मली त़ौर पर मदनी कामों में शरीक हों, रोज़ाना कम अज़ कम 2 घन्टे मदनी कामों में सर्फ़ कीजिये मसलन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना का ज़ेह्न देने के लिये कम अज़ कम 2 इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश, अ़लाक़ाई दौरा

www.dawateislami.net

बराए नेकी की दा'वत, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान, बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा, सदाए मदीना, चौक दर्स, पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त में शिर्कत वग़ैरा।

❁ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ कुफ़्ले मदीना तह़रीक में शुमूलिय्यत और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये उ़म्र भर में यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और हर माह कम अज़ कम 3 दिन जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरकीब बनाते रहें।

❁ बिला नाग़ा फ़िक्रे मदीना करते हुवे अ़त्त़ार का दोस्त, प्यारा, मन्ज़ूरे नज़र और मह़बूब बनने की सअ़्य जारी रखें। इस्तिक़ामत पाने के लिये हर माह कम अज़ कम 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये नीज़ ज़रूरी गुफ़्त्गू कम लफ़्ज़ों में कुछ इशारे में और कुछ लिख कर करने की कोशिश के साथ साथ निगाहें झुका कर रखने की तरकीब बनाते हुवे कुफ़्ले मदीना के दरजा मुनासिब, बेहतर और मुमताज़ के लिये कोशां रहें।

❁ मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शो'बे के मदनी मश्वरों के मिलने वाले मदनी फूलों का ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिये और मुतअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मेदारान तक बर वक़्त पहुंचाने की तरकीब बनाइये।

❁ अराकीने मजलिस, मदनी इन्आ़म नम्बर 47 पर अ़मल करते हुवे रोज़ाना कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखने की तरकीब बनाएं नीज़ हफ़्तावार बराहे रास्त मदनी मुज़ाकरा देखने के साथ साथ दीगर रेकोर्डेड मदनी मुज़ाकरों और मदनी चैनल के सिलसिलों को एहतिमाम के साथ देखने की मदनी इल्तिजा है।

www.dawateislami.net

(www.ameer-e-ahlesunnat.net और www.dawateislami.net का भी Visit करने की तरग़ीब दिलाएं)

❁ दौराने मदनी काम व मुलाक़ात, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ज़रीए़ सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्त़ारिय्या में मुरीद / त़ालिब बनाने की कोशिश करते रहें। मुरीद / त़ालिब हो जाएं तो मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या से मक्तूब की तरकीब और शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्त़ारिय्या ह़ासिल करने और रोज़ाना पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाएं।

❁ मदनी काम इस्तिक़ामत के साथ करने के लिये बिल ख़ुसूस मदनी इन्आ़म नम्बर 24 और 26 के आ़मिल बन जाएं ❁ मदनी इन्आ़म नम्बर 24 : क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशावरतें व दीगर तमाम मजालिस जिस के भी आप मा तह़्त हैं, उन की (शरीअ़त के दाइरे में रह कर) इत़ाअ़त फ़रमाई। ❁ मदनी इन्आ़म नम्बर 26 : किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी भाई) से बुराई सादिर हो जाए और इस्लाह़ की ज़रूरत मह़सूस हो तो तह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सुरतों में नर्मी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बिला इजाज़ते शरई किसी और पर इज़्हार कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठे ? हां ख़ुद समझाने की जुरअत न हो या नाकामी की सूरत में तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मस्अला ह़ल करने में मुज़ाइक़ा नहीं।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

तारीख़े इजरा : 20 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हिजरी, 13 दिसम्बर 2014 ईसवी

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"ऐ इन्सान ! एक दिन मरना है आख़िर मौत है" (उर्दू) के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों की मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के 26 मदनी फूल

(आ़लमी मजलिसे मुशावरत दा'वते इस्लामी)

❁ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم كبير للطبراني،٦/١٨٥،حديث:٥٩٤٢) इस लिये मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की हर ज़िम्मेदार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा "63 मदनी इन्आ़मात" में से "मदनी इन्आ़म नम्बर 1" पर अ़मल करते हुवे येह निय्यत करती रहे कि "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये दा'वते इस्लामी के शो'बे "मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" का मदनी काम मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ करूंगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾1﴿.......मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन का काम शरीअ़त और मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार (जो शरीअ़त के मुनाफ़ी न हो) के मुत़ाबिक़ मुसलमान मय्यितों के कफ़न दफ़्न और लवाहिक़ीन की ग़म गुसारी के तमाम मुआ़मलात सर अन्जाम दे कर सवाब कमाना है ।

﴾2﴿.......मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की हर सत़्ह़ की इस्लामी बहन तजहीज़ो तक्फ़ीन और ता'ज़ियत वग़ैरा के मसाइल सीखें, इस के लिये मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है मसलन :

www.dawateislami.net

❁ मदनी वसिय्यत नामा ❁ नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा ❁ फ़ातिह़ा का त़रीक़ा ❁ क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात ❁ बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 4 जिल्द अव्वल से किताबुल जनाइज़ सफ़ह़ा 799 ता 857 (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची) और फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9 नीज़ "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" से ज़रूरतन शरई रहनुमाई लेती रहें । इस शो'बे की मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदारान को चाहिये कि वोह तजहीज़ो तक्फ़ीन के ह़वाले से मुकम्मल तरबिय्यत ह़ासिल करें, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाली DVD बनाम "तजहीज़ो तक्फ़ीन तरबिय्यती इजतिमाअ़" ह़ासिल करें नीज़ इस शो'बे की वेब साइट tajheezotakfeen.dawateislami.net से इस DVD को देखा और सुना जा सकता है।

﴾3﴿.......हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के मक़ाम पर बेनर आवेज़ां किया जाए जिस का येह उ़नवान हो : "इस्लामी बहनों के ग़ुस्ले मय्यित के लिये इस नम्बर पर राबित़ा करें (मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन, दा'वते इस्लामी)" ग़ुस्ले मय्यित ज़िम्मेदार (ज़ैली सत़ह़) का नम्बर दिया जाए, बेहतर है कि 2 राबित़ा नम्बर्ज़ हों जो डबल बारह घन्टे on रहते हों।

﴾4﴿.......जहां किसी सह़ीहु़ल अ़क़ीदा सुन्नी आ़शिक़ए रसूल इस्लामी बहन की वफ़ात हो गई हो, मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन की इस्लामी बहनें अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अव्वल ता आख़िर (ग़ुस्ले मय्यित में) शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करें नीज़ ईसाले सवाब इजतिमाआ़त का भी इनइ़क़ाद करें।

﴾5﴿.......ग़ुस्ले मय्यित के बा'द से तदफ़ीन तक बा'ज़ औक़ात मय्यित के अ़ज़ीज़ो अक़रिबा के पहुंचने का इन्तिज़ार किया जाता है, उस वक़्त दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "मुर्दे के सदमे" वग़ैरा से नेकी की दा'वत दें। इस के इ़लावा इस दौरान

www.dawateislami.net

भी इस बात का ज़ेह्न दिया जाए कि इस वक़्त भी कुरआन ख़्वानी, दुरूद शरीफ़ और दीगर तस्बीह़ात का विर्द करती रहें।

﴾6﴿.......कफ़न तय्यार करने और मय्यित को ग़ुस्ल देने के दौरान इनफ़िरादी कोशिश के बहुत मवाक़ेअ़ मुयस्सर आते हैं, ऐसे मौक़अ़ पर बिल ख़ुसूस मय्यित के लवाह़िक़ीन पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करने की कोशिश की जाए।

﴾7﴿.......बा'ज़ अ़लाक़ों में तदफ़ीन के बा'द या अगले दिन मय्यित के ईसाले सवाब के लिये "कुरआन ख़्वानी" का सिलसिला होता है ऐसे मौक़अ़ पर भी मजलिसे मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) की इजाज़त से क़रीबी मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) की मदनी मुन्नियों के ज़रीए़ कुरआन ख़्वानी की तरकीब की जाए। (मजलिसे मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) के तै शुदा मदनी फूलों की रौशनी में ही तरकीब की जाए)

﴾8﴿.......जिस त़रह़ हर मुआ़मले में हर अ़लाक़े के रस्मो रवाज (उ़र्फ़) अलग अलग होते हैं, इसी त़रह़ मय्यित को ग़ुस्ल, कफ़न ह़त्ता कि तदफ़ीन तक के कई मुआ़मलात में भी रस्मो रवाज मुख़्तलिफ़ होते हैं, बल्कि कोई बईद नहीं कि इल्मे दीन से दूरी और जहालत के सबब ग़ैर शरई मुआ़मलात भी होते हों। उम्मते मुस्लिमा की ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से, जहां ग़ैर शरई मुआ़मलात होते देखें / सुनें वहां दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से हाथों हाथ राबित़ा कर के लवाह़िक़ीन को अच्छी अच्छी निय्यतों, नर्मी व ह़िक्मते अ़मली के साथ नेकी की दा'वत पेश करें।

❁ ग़ैर शरई मुआ़मलात (मसलन नौह़ा करना, सीना पीटना, सर के बाल नोचना, मुसीबत के वक़्त कुफ़्रिय्या कलिमात बोलना, मर्द व औ़रत का इख़्तिलात़ वग़ैरा) की मा'लूमात मिलने पर निशानदेही व शरई रहनुमाई बताते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखा जाए कि फ़ितना व फ़साद का

www.dawateislami.net

अन्देशा न हो (जहां ज़न्ने ग़ालिब हो कि समझाने से मान जाएगी, वहीं तरकीब की जाए) और मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "28 कलिमाते कुफ़्र" पेश किया जाए।

﴾9﴿.......इस मौक़अ़ पर उ़मूमन दिल नर्म हो जाता है, इन्सान नेकी की त़रफ़ क़दरे जल्दी माइल होता है, इस मौक़अ़ पर मय्यित के ईसाले सवाब के लिये मस्जिद, मदारिसुल मदीना व जामिआ़तुल मदीना वग़ैरा की ता'मीर के लिये भी ज़ेह्न दिया जा सकता है।

﴾10﴿.......सिवुम, चहलुम और बरसी के मौक़अ़ पर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम करें, इस के लिये मदनी फूल बराए इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त के मुत़ाबिक़ इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनाई जाए और मक्तबतुल मदीना के रसाइल वग़ैरा के तक़्सीम की भरपूर तरकीब करें।

۞ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "शैत़ान के बा'ज़ हथयार" के सफ़ह़ा नम्बर 10 ता 12 का ज़रूर ज़रूर मुत़ालआ़ करें।

﴾11﴿.......तक़्सीमे रसाइल में बिल ख़ुसूस मौक़अ़ की मुनासबत से रसाइल की तरकीब की जाए मसलन क़ब्र की पहली रात, मुर्दे के सदमे, मुर्दे की बे बसी, चार सनसनी ख़ेज़ ख़्वाब, बादशाहों की हड्डियां, फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़, फ़ैज़ाने नमाज़ वग़ैरा।

۞ मय्यित के लवाह़िक़ीन से बा'द में भी राबित़ा रखा जाए, मय्यित के ईसाले सवाब के लिये मुसलसल कम से कम 12 हफ़्तावार इजतिमाअ़ में ह़ाज़िरी की निय्यत करवाई जाए।

﴾12﴿.......हर माह अ़लाक़ा सत़्ह़ पर मुन्अ़क़िद होने वाली तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत की मुकम्मल तरकीब "तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के मदनी फूल" के मुत़ाबिक़ ही बनाई जाए।

www.dawateislami.net

﴾13﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान को दरजे ज़ैल मदनी फूल बताए जाएं। ۞ गुस्ले मय्यित के लिये बा'दे मग़रिब जा सकते हैं। ۞ गुस्ले मय्यित के लिये जाने वालियों की ता'दाद कम अज़ कम 2 और ज़ियादा से ज़ियादा 4 हो ۞ इन के कम अज़ कम 2 राबित़ा नम्बर्ज़ हों जो डबल 12 घन्टे on रहते हों ۞ गुस्ले मय्यित के लिये इस्लामी बहनों की अपने अ़लाक़े ही में जाने की तरकीब बनाई जाए ۞ एक अ़लाक़े से दूसरे अ़लाक़े में गुस्ले मय्यित के लिये इस्लामी बहनों को जाने की इजाज़त नहीं ۞ किसी अ़लाक़े में गुस्ले मय्यित के लिये एक भी इस्लामी बहन मौजूद न हो ऐसा नहीं होना चाहिये, इस सिलसिले में इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ इस की ऐसी मज़बूत़ तरकीब हो कि दूसरे अ़लाक़े से तरकीब न बनानी पड़े, अलबत्ता अगर कभी मजलिस की जानिब से किसी अ़लाक़े में गुस्ले मय्यित की तरकीब बनाने का कहा जाए तो नोइय्यत के पेशे नज़र दूसरे अ़लाक़े से तरकीब बनाई जा सकती है ۞ अगर कोई ज़िम्मेदार इस्लामी बहन अपने त़ौर पर मुख़्तलिफ़ इदारों मसलन किसी भी रिफ़ाही इदारे या अस्पताल वग़ैरा में गुस्ले मय्यित के लिये जाए और पर्दे की पाबन्दी के साथ तरकीब बनाए तो ह़रज नहीं लेकिन मजलिस की त़रफ़ से बा क़ाइदा इस की इजाज़त नहीं।

﴾14﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन के इस अहम दीनी फ़रीज़े को पूरा करने की इजाज़त तरबिय्यत याफ़्ता ही को दी जाए, तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़ह़) और तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत करने वाली हर ज़िम्मेदार इस्लामी बहन की, तजहीज़ो तक्फ़ीन तफ़्तीशी मजलिस के ज़रीए़ टेस्ट दिलवाने की लाज़िमी तरकीब बनाई जाए इस के लिये tajhizotakfin.majlis@gmail.com और इस tajhizotakfin.majlis,

www.dawateislami.net

skype i.d पर राबित़ा किया जाए। ۞ येह टेस्ट इतवार से शुरूअ़ होंगे रोज़ाना ब वक़्त 11:00 ता 01:00 ۞ फिर हर माह तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के बा'द उन इस्लामी बहनों की मज़्कूरा मजलिस के ज़रीए़ टेस्ट दिलवाने की तरकीब बनाई जाए जो ग़ुस्ले मय्यित के लिये बा क़ाइदा वक़्त दे सकती हों ۞ जो टेस्ट में कामयाब न होंगी उन की तरकीब टेस्ट मजलिस करेगी। (याद रहे ! टेस्ट में कामयाब होने वाली इस्लामी बहनों को ही तजहीज़ो तक्फ़ीन की इजाज़त होगी)

﴾15﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (काबीना व काबीनात सत़ह़) के पास ज़ेरे हुदूद तमाम अ़लाक़ों के नाम की लिस्ट के साथ साथ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (अ़लाक़ा सत़ह़) के नाम और राबित़ा नम्बर भी मौजूद होने चाहियें।

﴾16﴿.......ज़िम्मेदारान की तक़र्रुरी की तरकीब

۞ मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के मदनी काम के लिये ज़िम्मेदारान का तक़र्रुर ज़ैली ता मुल्क सत़ह़ है ۞ हर सत़ह़ की तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन बुर्दबार, इत़ाअ़त गुज़ार, मिलनसार, वफ़ादार, बा किरदार, बा अख़्लाक़, सुलझी हुई, सन्जीदा, ता'लीम याफ़्ता, ख़ुद ए'तिमाद, एह़सासे ज़िम्मेदारी रखने वाली, शरई पर्दा करने वाली, ज़ाती दोस्तियों से बचने वाली, मदनी इन्आ़मात की आ़मिला, दा'वते इस्लामी के मदनी उसूलों की आईनादार, इस्त़िलाह़ाते दा'वते इस्लामी से वाक़िफ़, मदनी मश्वरों और तरबिय्यती ह़ल्क़े की पाबन्द अल ग़रज़ सरापा तरग़ीब हो या'नी अ़मली त़ौर पर मदनी कामों में शरीक हो और मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की मुद्दत कम अज़ कम 26 माह हो, बेहतर है कि ग़ुस्ले मय्यित के मदनी काम में दिलचस्पी रखने वाली हो और अधेड़ उम्र हो तो मदीना मदीना।

www.dawateislami.net

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार (ज़ैली सत़ह) को फ़ोन करने और निकलने में आसानी ज़रूर हो और डबल बारा घन्टे तरकीब बना सकती हो ❁ कोई भी इस्लामी बहन तजहीज़ो तक्फ़ीन के लिये किसी से भी राबित़ा करें तो उन्हें मुतअ़ल्लिक़ा तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार (ज़ैली सत़ह) से राबित़ा करने का कह दिया जाए। ❁ किसी भी सत़ह पर और किसी भी शो'बे पर इस्लामी बहन का तक़र्रुर सिर्फ़ इस बिना पर न किया जाए कि उन के मह़रम (इस्लामी भाई) उस शो'बे के ज़िम्मेदार हैं बल्कि येह देखा जाए कि क्या वोह इस्लामी बहन इस मदनी काम की अहल हैं?

नम्बर	सत़ह	ज़िम्मेदार इस्लामी बहन
1	ज़ैली ह़ल्क़ा	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ैली सत़ह)
2	ह़ल्क़ा	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत़ह)
3	अ़लाक़ा	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत़ह)
4	डिवीज़न	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत़ह)
5	काबीना	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत़ह)
6	काबीनात	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीनात सत़ह)
7	मुल्क	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (मुल्क सत़ह)

﴾17﴿.......माहाना अहदाफ़

❁ एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ 2015 ईसवी में, पाकिस्तान में शर्हे अमवात फ़ी दिन 700 मर्द और 700 औरतें है या'नी औसत़न फ़ी घन्टा 30 मर्द और 30 औरतें। इस के मुत़ाबिक़ हर माह के अहदाफ़ तै़ किये जाएं कि हम कहां तक पहुंचे हैं। ❁ हमारा हदफ़ आ़शिक़ाए रसूल को "ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा" सिखाना है।

www.dawateislami.net

﴾18﴿.......माहाना कारकर्दगी फ़ॉर्म

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ज़ैली सत़्ह़) "ज़ैली ह़ल्क़ा कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर हर ईसवी माह की पहली तारीख़ को तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत़्ह़) को जम्अ़ करवाएं।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत़्ह़) "ह़ल्क़ा कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर हर ईसवी माह की 2 तारीख़ तक तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत़्ह़) को जम्अ़ करवाएं।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत़्ह़) "अ़लाक़ा कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर हर ईसवी माह की 3 तारीख़ तक तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत़्ह़) को जम्अ़ करवाएं।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत़्ह़) "डिवीज़न कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर हर ईसवी माह की 5 तारीख़ तक तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत़्ह़) को जम्अ़ करवाएं।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत़्ह़) "काबीना कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर हर ईसवी माह की 7 तारीख़ तक काबीना मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के ज़रीए़ काबीनात ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को और मजलिसे मदनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मेदार (काबीना सत़्ह़) को जम्अ़ करवाएं।

www.dawateislami.net

۞ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीनात सत़ह़) ईसवी माह की 9 तारीख़ तक "काबीनात कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (मुल्क सत़ह़) और मजलिसे मदनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मेदार (काबीनात सत़ह़) को जम्अ़ करवाएं।

۞ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (मुल्क सत़ह़) हर ईसवी माह की 11 तारीख़ तक मुल्क कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर मुल्क सत़ह़ की ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को और वोह मजलिसे मदनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मेदार (मुल्क सत़ह़) को जम्अ़ करवाने के साथ साथ मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने आ़लमी मजलिसे मुशावरत को ब ज़रीअ़ए E-mail जम्अ़ करवाएं।

۞ रुक्ने आ़लमी मजलिसे मुशावरत हर ईसवी माह की 15 तारीख़ तक "मुमालिक कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर आ़लमी मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को ब ज़रीअ़ए E-mail जम्अ़ करवाएं।

۞ आ़लमी मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार इस्लामी बहन हर ईसवी माह की 17 तारीख़ तक "आ़लमी कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन" पुर फ़रमा कर निगराने मजलिस मदनी काम बराए इस्लामी बहनें (रुक्ने शूरा) को ब ज़रीअ़ए E-mail जम्अ़ करवाएं।

۞ अगर मर्ह़ूमा की मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की वज्ह से ब वक़्ते इन्तिक़ाल / ग़ुस्ल के वक़्त / कफ़न पहनाते वक़्त कोई मदनी बहार सामने आए मसलन ज़बान पर कलिमा जारी हो जाना, चेहरा चमक उठना, तख़्ताए ग़ुस्ल पर मय्यित का मुस्कुराना वग़ैरा तो हाथों हाथ "मदनी बहार फ़ोर्म" पुर कर के मजलिसे मदनी बहार ज़िम्मेदार (अ़लाक़ा सत़ह़) को जम्अ़ करवा दिया जाए।

www.dawateislami.net

﴾19﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) मुतअ़ल्लिक़ा कारकर्दगी फ़ॉर्म शो'बा मुशावरत को जम्अ़ करवाने के साथ साथ मुतअ़ल्लिक़ा मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को भी जम्अ़ करवाएं।

۞ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़), ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क कारकर्दगी बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन अपनी मा तह़्त ज़िम्मेदारान की कारकर्दगियों को मद्दे नज़र रख कर पुर फ़रमाएं।

(याद रहे ! कारकर्दगी मदनी मश्वरे से मशरूत़ नहीं अगर किसी वज्ह से मदनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को कारकर्दगी पेश कर दें)

﴾20﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) माहाना मदनी मश्वरे में अपनी मा तह़्त ज़िम्मेदारान की बेहतर कारकर्दगी मसलन सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व मदनी मश्वरे की पाबन्दी, ग़ुस्ले मय्यित की कारकर्दगी बेहतर होने, मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदारान की ता'दाद में इज़ाफ़ा होने और हर माह कारकर्दगी मुक़र्ररा वक़्त पर जम्अ़ करवाने की सूरत में हौसला अफ़्ज़ाई करते हुवे मदनी तोह़्फ़ा (कुतुबो रसाइल / D.V.Ds / Memory Cards) देने की तरकीब बनाएं। (याद रहे ! मदनी अ़तिय्यात में से तोह़्फ़ा देने की इजाज़त नहीं) ۞ जिस किताब / D.V.D / Memory Card का तोह़्फ़ा दिया जाए, तोह़्फ़ा देते वक़्त येह निय्यत भी करवाई जाए कि कितने दिन तक पढ़/सुन या देख लेंगी ?

﴾21﴿ माहाना मदनी मश्वरे की तारीख़ व मदनी फूल

तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) दर्जे ज़ैल तरकीब के मुत़ाबिक़ माहाना मदनी मश्वरे व मदनी फूल की तरकीब बनाएं।

www.dawateislami.net

तारीख़	मदनी मश्वरा लेने वाली	सत़्ह	शुरका	मदनी फूल
3	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत़्ह)	अ़लाक़ा	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (अ़लाक़ा सत़्ह)	इनफ़िरादी कारकर्दगी, पेशगी जदवल व जदवल कारकर्दगी, तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली का जाइज़ा, अगले माह के अहदाफ़ वग़ैरा
6	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत़्ह)	डिवीज़न	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (डिवीज़न सत़्ह)	इनफ़िरादी कारकर्दगी, पेशगी जदवल व जदवल कारकर्दगी, तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली का जाइज़ा, अगले माह के अहदाफ़ वग़ैरा
8	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीनात सत़्ह)	काबीना	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (काबीना सत़्ह)	इनफ़िरादी कारकर्दगी, पेशगी जदवल व जदवल कारकर्दगी वग़ैरा
10	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (मुल्क सत़्ह)	काबीनात	तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (काबीनात सत़्ह)	इनफ़िरादी कारकर्दगी, पेशगी जदवल व जदवल कारकर्दगी वग़ैरा

❁ मदनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिये मुक़र्रर कर्दा सत़्ह के इलावा किसी और सत़्ह का मदनी मश्वरा लेने के लिये मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार इस्लामी बहन से इजाज़त ज़रूरी है।

❁ जब बड़ी सत़्ह की ज़िम्मेदार दीगर सत़्ह की ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना मदनी मश्वरा नहीं होगा।

❁ इसी त़रह जिस माह मुतअ़ल्लिक़ा मजलिस ज़िम्मेदार/मुशावरत शो'बे

www.dawateislami.net

की ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा फ़रमाएंगी उस माह भी शो'बा ज़िम्मेदारान माहाना मदनी मश्वरा नहीं करेंगी। (शो'बे के मदनी काम को मज़्बूत़ और मुनज़्ज़म करने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी मजलिसे मुशावरत से शो'बे की इस्लामी बहनों का मश्वरा करवाना मुफ़ीद है)

﴾22﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (जै़ली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन से मरबूत़ रहें। उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करती रहें। जो ज़िम्मेदार से जितनी ज़ियादा मरबूत़ रहेगी वोह उतनी ही मज़्बूत़ होती जाएगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾23﴿.......अगर कहीं तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (जै़ली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) मुक़र्रर नहीं या अगर मुक़र्रर तो हैं मगर शदीद उ़ज़्र की बिना पर मदनी काम नहीं कर पा रही हों तो उस की मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदार के ज़रीए़ कारकर्दगी तय्यार करवाई जाए।

﴾24﴿.......अगर किसी मुल्क में तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (जै़ली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) में से किसी भी सत़्ह़ की ज़िम्मेदार इस्लामी बहन का तक़र्रुर हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मुतअ़ल्लिक़ा तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को "मदनी फूल बराए तजहीज़ो तक्फ़ीन" अच्छी त़रह़ समझा कर देने की तरकीब बनाएं।

﴾25﴿.......तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (जै़ली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़्ह़) अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिये मुन्दरिजए ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं।

(1)...फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की कोशिश करती रहें। फ़र्ज़ उ़लूम सीखने के लिये कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा रज़विय्या, इह़्याउल उ़लूम वग़ैरा के मुत़ालए़ की आ़दत बनाएं।

(2)...मदनी बुर्क़अ़ की पाबन्दी करे और दीदाह ज़ैब बुर्क़अ़ पहनने से इजतिनाब करें।

www.dawateislami.net

(3)...रोज़ाना कम अज़् कम 2 घन्टे मदनी कामों में सर्फ़ कीजिये मसलन पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार इजतिमाआ़त और तरबिय्यती ह़ल्क़े में शिर्कत वग़ैरा।

(4)...अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना तह़रीक में शुमूलिय्यत और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को उ़म्र भर में यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और हर माह कम अज़् कम 3 दिन जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाती रहें।

(5)...रिज़ाए रब्बुल अनाम के मदनी कामों पर अ़मल करते हुवे अ़त्तार की अजमेरी, बग़दादी, मक्की और मदनी बेटी बनने की सअ़्य जारी रखें। नीज़ ज़रूरी गुफ़्त्गू कम लफ़्ज़ों में कुछ इशारे में और कुछ लिख कर करने की कोशिश के साथ साथ निगाहें झुका कर रखने की तरकीब बनाएं।

(6)...मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शो'बे के मदनी मश्वरों के मिलने वाले मदनी फूलों का खुद भी मुत़ालआ़ करें और मुतअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मेदारान तक बर वक़्त पहुंचाने की तरकीब बनाएं।

۞ मदनी इन्आ़म नम्बर 47 पर अ़मल करते हुवे रोज़ाना कम अज़् कम 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखने की तरकीब बनाएं नीज़ हफ़्तावार बराहे रास्त मदनी मुज़ाकरा देखने के साथ साथ दीगर रेकॉर्डेड मदनी मुज़ाकरों और मदनी चैनल के सिलसिलों को एहतिमाम के साथ देखने की मदनी इल्तिजा है। www.ameer-e-ahlesunnat.net और www.dawateislami.net का भी Visit करने की तरग़ीब दिलाएं)

www.dawateislami.net

❁ दौराने मदनी काम व मुलाक़ात, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्त़ारिय्या में मुरीद / त़ालिब बनाने की कोशिश करती रहें। मुरीद / त़ालिब हो जाएं तो मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या से मक्तूब की तरकीब और शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्त़ारिय्या ह़ासिल करने और रोज़ाना पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाएं।

❁ **मदनी इन्आ़म नम्बर 21 :** क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशावरतें व दीगर तमाम मजालिस जिस के भी आप मा तह़त हैं, उन की (शरीअ़त के दाइरे में रह कर) इत़ाअ़त फ़रमाई ?

❁ **मदनी इन्आ़म नम्बर 24 :** किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी बहन) से बुराई सादिर होने की सूरत में तह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नर्मी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ बिला इजाज़ते शरई किसी और पर इज़्हार कर के आप ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठीं ?

﴾26﴿ पूछगछ

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **:**

पूछगछ मदनी कामों की जान है।

(मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े, स. 9)

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़ह़) "मदनी फूल बराए तजहीज़ो तक्फ़ीन" में मौजूद मदनी काम अपने पास डाइरी में बत़ौरे याददाश्त तह़रीर फ़रमा लें या हाई लाइट कर लें ताकि बर वक़्त हर मदनी फूल पर अ़मल हो सके।

www.dawateislami.net

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (अ़लाक़ा ता मुल्क सत़ह़) अपनी मा तह़्त ज़िम्मेदारान से माहाना मदनी मश्वरे में भी पूछगछ फ़रमाएं कि इन मदनी फूलों पर कहां तक अ़मल हुवा ?

❁ कमज़ोरी होने पर मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदारान की तफ़्हीम और आइन्दा बेहतरी के लिये लाइह़ए अ़मल तय्यार करें।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़ह़)

"मदनी फूल बराए तजहीज़ो तक्फ़ीन" मअ़ तमाम रेकोर्ड पेपर्ज़ Display File में तरतीब वार रख कर मह़फ़ूज़ फ़रमा लें।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (ह़ल्क़ा ता मुल्क सत़ह़) अपनी मा तह़्त ज़िम्मेदारान के पुरशुदा "जदवल" और पुरशुदा "कारकर्दगी फ़ोर्मज़" Display File में तरतीब वार रख कर मह़फ़ूज़ फ़रमा लें।

❁ "मदनी फूल बराए तजहीज़ो तक्फ़ीन" से मुतअ़ल्लिक़ अगर कोई मस्अला दर पेश हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन तक पहुंचाएं।

❁ "मदनी फूल बराए तजहीज़ो तक्फ़ीन" से मुतअ़ल्लिक़ अगर कोई मदनी मश्वरा हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन तक पहुंचाएं।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (काबीना सत़ह़) शरई सफ़र में होने की सूरत में ब ह़ालते मजबूरी टेलीफ़ोनिक मश्वरे के ज़रीए़ भी मदनी फूल समझा सकती हैं।

❁ अपने मुल्क के ह़ालात व नोइय्यत के मुत़ाबिक़ अपने मुल्की काबीना के निगरान या मजलिसे मदनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मेदार (काबीना सत़ह़) और मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने आ़लमी मजलिसे मुशावरत की इजाज़त से इन मदनी फूलों में ह़स्बे ज़रूरत तरमीम की जा सकती है।

www.dawateislami.net

इयादत का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शफ़ीए़ रोजे़ शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे नूरबार है : तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोजे़ क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (جامع صغیر للسیوطی، ص ۲۸۰، حدیث ۴۵۸۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुख़ार को बुरा न कहो !

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है हु़जूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुस्साइब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया : तुम्हें क्या हुवा है जो कांप रही हो ? अ़र्ज़ की : बुख़ार है, ख़ुदा इस में बरकत न करे। फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कहो कि वोह आदमी की ख़त़ाओं को इस त़रह़ दूर करता है जैसे भट्टी लोहे के मैल को।

(مسلم، کتاب البر...الخ، باب ثواب المؤمن...الخ، ص ۱۳۹۲، حدیث ۲۵۷۵)

ख़ुश ख़बरी सुन लो !

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की फूफी और दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बैअ़त करने वाली

www.dawateislami.net

औ़रतों में से हैं, फ़रमाती हैं कि जब मैं बीमार हुई तो मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी इ़यादत फ़रमाई और मुझ से फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़ला ! ख़ुश ख़बरी सुन लो कि मुसलमान की बीमारी उस से गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देती है जैसे आग लोहे और चांदी के मैल को दूर कर देती है।(1)

(ابوداود، کتاب الجنائز، باب عیادة النساء، ۳/۲۴۶، حدیث ۳۰۹۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बीमारी बाइ़से रह़मत व मग़्फ़िरत है लिहाज़ा अगर कभी बीमार हो जाएं तो ग़मगीन न हों बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कीजिये और सब्र कर के मज़ीद सवाब के ह़क़दार बनिये और जब कोई बीमार हो जाए तो उस की तसल्ली और दिलजूई के लिये इ़यादत भी कीजिये कि इ़यादत करना हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है और इस में ढेरों सवाब भी है।

आइये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "नहर की सदाएं" से इ़यादत के कुछ मदनी फूल चुन कर इन्हें दिल के मदनी गुलदस्ते में सजाएं लेकिन पहले कुछ अच्छी अच्छी निय्यतें कर लें।

इ़यादत की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की इ़यादत करूंगा ❁ इ़यादत की सुन्नत अदा करूंगा ❁ सुन्नत

---

(1)....मज़ीद बीमारी के फ़ज़ाइल, आदाब और इ़लाज जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**बीमार आ़बिद**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

के मुत़ाबिक़ मरीज़ की पेशानी पर हाथ रख कर येह दुआ पढ़ूंगा : لَا بَاْسَ طُهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰه ۞ बीमारी के फ़ज़ाइल बता कर उसे तसल्ली दूंगा ۞ सब्र के फ़ज़ाइल बता कर सब्र की तल्क़ीन करूंगा ۞ शिक्वे की सूरत में मुमकिन हुवा तो नर्मी से समझा कर शुक्र की तरग़ीब दिलाऊंगा ۞ उस से दुआ के लिये कहूंगा ۞ इलाज और मरज़ की ग़ैर ज़रूरी पूछगछ नहीं करूंगा ۞ ह़स्बे ह़ाल ता'वीज़ाते अ़त़्त़ारिय्या की बरकतें बता कर रूह़ानी इलाज का मश्वरा दूंगा ۞ तोह़्फ़तन फल वग़ैरा के साथ मक्तबतुल मदीना के रसाइल पेश कर के (मुमकिना सूरत में) उन्हें पढ़ने और इ़यादत के लिये आने वालों को पढ़ाने की तरग़ीब दिलाऊंगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"इ़यादत करना रसूले मोह़तरम की सुन्नते मुबारका है" (उर्दू) के इक्तीस हुरूफ़ की निस्बत से इ़यादत के 31 मदनी फूल

8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿ عُوْدُوا الْمَرِیْضَ या'नी मरीज़ की इ़यादत करो।

(الادب المفرد، بـاب عيادة المرضى، ص١٣٧، حديث٥١٨)

﴾2﴿ जो शख़्स किसी मरीज़ की इ़यादत के लिये जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार (75000) फ़िरिश्तों का साया करता है और उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखता है और हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटाता है और एक दरजा बुलन्द फ़रमाता है यहां तक कि वोह अपनी जगह पर बैठ जाए, जब वोह बैठ जाता है तो रह़मत उसे ढांप लेती है और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रहेगी (معجم اوسط،باب العین،٣/٢٢٢،حدیث ٤٣٩٦)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ जो शख़्स किसी मरीज़ की इयादत को जाता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है : तुझे बशारत (या'नी ख़ुश ख़बरी) हो तेरा चलना अच्छा है और तू ने जन्नत की एक मन्ज़िल को अपना ठिकाना बना लिया

(ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عاد مریضاً،٢/١٩٢،حدیث١٤٤٣)

﴾4﴿ जो मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ होगा (ترمذی، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی عیادۃ المریض،٢/٢٩٠، حدیث ٩٧١)

﴾5﴿ जिस ने अच्छे त़रीक़े से वुज़ू किया फिर अपने मुसलमान भाई की सवाब की निय्यत से इयादत की तो उसे जहन्नम से 70 साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा। (ابوداود،کتاب الجنائز،باب فی فضل العیادۃ (علی الوضوء)،٣/٢٤٨،حدیث٣٠٩٧)

﴾6﴿ जब तू मरीज़ के पास जाए तो उस से कह कि तेरे लिये दुआ़ करे कि उस की दुआ़ फ़िरिश्तों की दुआ़ की मानिन्द है।

(ابن ماجه، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی عیادۃ المریض،٢/١٩١، حدیث ١٤٤١)

﴾7﴿ मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ़ रद नहीं होती (الترغیب و الترھیب، کتاب الجنائز و مایتقدمھا، الترغیب فی عیادۃ المرضی و تاکیدھا والترغیب فی دعاء المریض، ٤/١٦٥،حدیث٥٣٤٤)

﴾8﴿ जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत को जाए तो 7 बार येह दुआ़ पढ़े اَسْاَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ (मैं अ़ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं) अगर मौत नहीं आई है तो उसे शिफ़ा हो जाएगी (ابوداود،کتاب الجنائز،باب الدعاء للمریض عند العیادۃ،٣/٢٥١،حدیث٣١٠٦) ❁ मरीज़ की इयादत करना सुन्नत है अगर मा'लूम है कि इयादत के लिये जाने से उस बीमार पर

www.dawateislami.net

गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रेगा, ऐसी ह़ालत में इ़यादत के लिये मत जाइये (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3/505) ❁ अगर मरीज़ से आप के दिल में रन्जिश या त़बीअ़त को उस से मुनासबत नहीं फिर भी इ़यादत कीजिये ❁ इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत से इ़यादत कीजिये अगर मह़्ज़ इस लिये बीमार पुर्सी की, कि जब मैं बीमार पड़ूं तो वोह भी मेरी तीमार दारी के लिये आए तो सवाब नहीं मिलेगा ❁ किसी की इ़यादत के लिये जाएं और मरज़ की सख़्ती देखें तो उस को डराने वाली बातें न करें मसलन तुम्हारी ह़ालत ख़राब है और न ही इस अन्दाज़ पर सर हिलाएं जिस से ह़ालत का ख़राब होना समझा जाता है ❁ इ़यादत के मौक़अ़ पर मरीज़ या दुखी शख़्स के सामने अपने चेहरे पर रन्जो ग़म की कैफ़िय्यत नुमायां कीजिये ❁ बात चीत का अन्दाज़ हरगिज़ ऐसा न हो कि मरीज़ या उस के अ़ज़ीज़ को वस्वसा आए कि येह हमारी परेशानी पर खुश हो रहा है ❁ मरीज़ के घर वालों से भी इज़्हारे हमदर्दी कीजिये और जो ख़िदमत या तआ़वुन कर सकते हों कीजिये ❁ मरीज़ के पास जा कर उस की त़बीअ़त पूछिये और उस के लिये सिह़ह़तो आ़फ़िय्यत की दुआ़ कीजिये ❁ नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा येह थी कि जब किसी मरीज़ की इ़यादत को तशरीफ़ ले जाते तो येह फ़रमाते : لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰى (कोई ह़रज की बात नहीं अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो येह मरज़ (गुनाहों से) पाक करने वाला है (بخاري، كتاب المناقب، باب علامات النبوة فى الاسلام، ٢/٥٠٥، حديث ٣٦١٦) ❁ मरीज़ से अपने लिये दुआ़ करवाइये कि मरीज़ की दुआ़ रद नहीं होती ❁ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मरीज़ की पूरी इ़यादत येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछिये कि मिज़ाज कैसा है ?

(ترمذى، كتاب الاستئذان والآداب، باب ماجاء فى المعانقه والقبلة، ٤/٣٣٥، حديث ٢٧٤٠)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जब कोई शख़्स किसी बीमार की मिज़ाज पुर्सी करने जावे तो अपना हाथ उस की पेशानी पर रखे फिर ज़बान से येह (या'नी आप की त़बीअ़त कैसी है) कहे, इस से बीमार को तसल्ली होती है, मगर बहुत देर तक हाथ न रखे रहे, येह हाथ रखना इज़्हारे मह़ब्बत के लिये है (मिरआतुल मनाजीह़, मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा का बयान, 6/358 बित्तसर्रुफ़ क़लील) ❁ मरीज़ के सामने ऐसी बातें करनी चाहियें जो उस के दिल को भली मा'लूम हों, बीमारी के फ़ज़ाइल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के तज़्किरे कीजिये ताकि उस का ज़ेह्न सवाबे आख़िरत की त़रफ़ माइल हो और वोह शिक्वा व शिकायत के अल्फ़ाज़ ज़बान पर न लाए ❁ इ़यादत करते हुवे मौक़अ़ की मुनासबत से मरीज़ को नेकी की दा'वत भी पेश कीजिये ख़ुसूसन नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेह्न दीजिये कि बीमारियों में कई नमाज़ी भी नमाज़ों से ग़ाफ़िल हो जाते हैं ❁ मरीज़ को मदनी चैनल देखने की रग़बत दिलाइये और उस की बरकतों से आगाह कीजिये ❁ मरीज़ को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की और ख़ुद सफ़र के क़ाबिल न हो तो अपनी त़रफ़ से घर के किसी फ़र्द को सफ़र करवाने की तरग़ीब दिलाइये और मदनी क़ाफ़िलों की वोह मदनी बहारें सुनाइये जिन में दुआ़ओं की बरकतों से मरीज़ को शिफ़ाएं मिली हैं ❁ मरीज़ के पास ज़ियादा देर तक न बैठिये और न शोरो गुल कीजिये हां अगर बीमार ख़ुद ही देर तक बिठाए रखने का ख़्वाहिश मन्द हो तो मुमकिना सूरत में आप उस के जज़्बात का एह़तिराम कीजिये ❁ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि मरीज़ या उस के नुमाइन्दे से मिलते हैं तो कुछ न कुछ इलाज बताते हैं और बा'ज़ तो मरीज़ से इसरार करते हैं कि मैं जो इलाज बता रहा हूं वोह कर लो, फ़ुलां दवा ले लो, ठीक हो जाओगे ! मरीज़ को चाहिये कि "जिस तिस" (या'नी हर

www.dawateislami.net

किसी) का बताया हुवा इलाज न करे, कि "नीम ह़कीम ख़त़रए जान" किसी का बताया हुवा इलाज करने से पहले अपने त़बीब से मश्वरा कर ले। ख़बरदार ! जो त़बीब न होने के बा वुजूद इलाज बताते रहते हैं वोह इस से बाज़ रहें ۞ मरीज़ की इयादत के मौक़अ़ पर तोह़्फ़े लाना उ़म्दा काम है मगर न लाने की सूरत में इयादत ही न करना और दिल में येह ख़याल करना कि अगर कुछ न ले कर जाएगा तो वोह क्या सोचेंगे कि ख़ाली हाथ इयादत के लिये आ गए, ख़ाली हाथ भी इयादत कर ही लेनी चाहिये, न करना सवाब से मह़रूमी का बाइ़स है ۞ आप इयादत के लिये जाते हुवे अगर फल और बिस्कुट वग़ैरा तह़ाइफ़ ले जाने लगें तो मश्वरा है कि मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ कुछ मदनी रसाइल भी ले जा कर मरीज़ को पेश कीजिये ताकि वोह मुलाक़ातियों, (और अगर अस्पताल में हो तो) पड़ोसी मरीज़ों और उन के अ़ज़ीज़ों को तोह़्फ़तन दे सकें बल्कि ज़हे नसीब ! मरीज़ ख़ुद भी कुछ मदनी रसाइल हदिय्यतन मंगवा कर इस ग़रज़ से अपने पास रख कर सवाब कमाए ۞ फ़ासिक़ की इयादत भी जाइज़ है क्यूंकि इयादत हुक़ूक़े इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है (बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3/505) ۞ मुर्तद और काफ़िरे ह़र्बी की इयादत जाइज़ नहीं (फ़ी ज़माना दुन्या में सारे काफ़िर ह़र्बी हैं) ۞ बद मज़्हब (ग़ैर मुर्तद) की इयादत करना भी मन्अ़ और शरअ़न इस की इजाज़त नहीं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इयादत के आदाब और फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल मदनी फूल आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाए लिहाज़ा ढेरों ढेर सवाब कमाने के लिये जब जब मौक़अ़ मिले इन मदनी फूलों को पेशे नज़र रखते हुवे मरीज़ की इयादत कीजिये बिल ख़ुसूस सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत की दुआ़ वाले मदनी फूल पर ज़रूर अ़मल कीजिये कि क्या मा'लूम क़बूलिय्यत

www.dawateislami.net

की घड़ी हो, आप की दुआ़ क़बूल हो जाए और दुख्यारा मरीज़ शिफ़ा पा जाए। आइये : इस ज़िम्न में महबूबे अ़त्तार मर्हूम रुक्ने शूरा ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का वाक़िआ़ सुनिये चुनान्चे,

बिग़ैर ऑपरेशन शिफ़ा मिल गई

वकीलों और जजों में दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने के लिये बनाई गई मजलिसे वुकला, फ़ारूक़ नगर (लाड़काना बाबुल इस्लाम सिन्ध) के रुक्न इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि मेरा डेढ़ सालह बेटा 13 मई 2012 को गर्मी की शिद्दत से शदीद बीमार हो गया उस के फेफड़ों में पानी भर गया था जिस की वज्ह से अस्पताल में दाख़िल करवाना पड़ा जहां वोह 14 दिन ज़ेरे इलाज रहा मगर ह़ालत मज़ीद ख़राब हो गई। चुनान्चे, 27 मई 2012 को हम उसे बाबुल मदीना (कराची) के एक अच्छे अस्पताल में ले गए जहां वोह मज़ीद 15 दिन ज़ेरे इलाज रहा। बिल आख़िर डॉक्टरों ने कहा के बच्चे के फेफड़ों का बड़ा ऑपरेशन होगा येह सुन कर हम बहुत परेशान हुवे लेकिन उन्ही दिनों महबूबे अ़त्तार ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى मेरे बेटे की इयादत के लिये अस्पताल तशरीफ़ लाए। दुआ़ करने के बा'द मेरे बेटे को दम किया और मुझे तसल्ली दी कि हिम्मत रखिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दवाओं से ही फ़ाइदा हो जाएगा, ऑपरेशन नहीं करना पड़ेगा। दूसरे दिन ऑपरेशन से पहले जो टेस्ट करवाए तो डॉक्टर उन की रिपोर्ट देख कर ह़ैरान रह गए और कहने लगे कि अब ऑपरेशन की ज़रूरत नहीं बच्चा दवाओं से ही सिह़ह़त याब हो जाएगा। यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा बेटा दवाओं और ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की दुआ़ओं की बरकत से सिह़ह़त याब हो गया। (महबूबे अ़त्तार की 122 ह़िकायात, स. 80)

www.dawateislami.net

नज़्अ़ का बयान

नज़्अ़ के लुग़वी मा'ना हैं खींचना और इस से मुराद रूह़ का जिस्म से निकलना है इसी को जान निकलना और मौत आना भी कहते हैं। जो इस दुन्या में पैदा हुवा उसे एक न एक दिन ज़रूर मरना पड़ेगा इसी त़रह़ हमें भी मरना और इस के बा'द के मराह़िल से गुज़रना पड़ेगा, याद रखिये ! गुज़रने वाला एक एक लम्ह़ा हमें मौत से क़रीब कर रहा है लेकिन हम अपनी मौत को भुलाए न जाने कौन से कल का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिस में तौबा और नेक आ'माल करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने एक नौजवान को नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : ऐ नौजवान ! तुझे तेरी जवानी धोके में न डाले कितने ही नौजवान ऐसे थे जिन्हों ने तौबा में ताख़ीर की और लम्बी लम्बी उम्मीदें बांध लीं मौत को भुला कर येह कहते रहे कि कल तौबा कर लेंगे परसों तौबा कर लेंगे यहां तक कि इसी ग़फ़्लत की ह़ालत में उन्हें मौत आ गई और वोह अन्धेरी क़ब्र में जा पड़े। (مکاشفۃ القلوب، باب فی العشق، ص ٣٤)

मौत की याद

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : लज़्ज़तों को मिटाने वाली (या'नी मौत) को ब कसरत याद करो।

(ترمذی، کتاب الزھد،باب ماجاء فی ذکرالموت،٤/١٣٨،حدیث٢٣١٤)

एक और ह़दीस में है : जो दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करता हो उसे शहीदों के साथ उठाया जाएगा।

(شرح الصدور، ص ٢٠ و التذکرۃ للقرطبی، باب ذکر الموت و فضلہ، ص ١٢)

www.dawateislami.net

अ़क़्लमन्द मोमिन

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक अन्सारी शख़्स ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से अ़क़्लमन्द मोमिन कौन है ? तो इरशाद फ़रमाया : जो मौत को ज़ियादा याद करता हो और इस के बा'द के लिये अच्छी त़रह़ तय्यारी करता हो।

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الموت والاستعداد لہ، ٤/٤٩٦، حدیث ٤٢٥٩ ماخوذاً)

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि मौत और आख़िरत की तय्यारी का ज़ेहन बनाएं, अपने गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा करें और येह अ़ज़्म कर लें कि आइन्दा सुन्नतों पर अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी बसर करेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मोमिन और काफ़िर की मौत

हज़रते ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब किसी मोमिन पर ऐसे गुनाह रह जाते हैं जिन के बदले में नेक आ'माल नहीं होते तो उस पर मौत की सख़्तियां मुसल्लत़ कर दी जाती हैं ताकि येह सख़्तियां उन गुनाहों का बदल हो जाएं और मोमिन की तकालीफ़ जन्नत में उस के दरजात बुलन्द होने का सबब हैं जब कि काफ़िर दुन्या में कोई अच्छा काम करे तो उस पर मौत आसान कर दी जाती है ताकि उसे इस काम का बदला दुन्या ही में पूरा पूरा मिल जाए फिर यक़ीनन उसे दोज़ख़ की त़रफ़ जाना है।

(شرح الصدور، ص٢٩ و معجم کبیر للطبرانی، ١٠/٧٩، حدیث ١٠٠١٥)

www.dawateislami.net

नज़्अ़ की सख़्तियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नज़्अ़ की सख़्तियों का तज़्किरा फ़रमाते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ शर्हुस्सुदूर में फ़रमाते हैं : "मौत दुन्या व आख़िरत की हौलनाकियों में सब से ज़ियादा हौलनाक है, येह आरों से चीरने, क़ैंचियों से काटने और हांडियों में उबालने से भी सख़्त तर है । अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर शदाइदे मौत लोगों पर ज़ाहिर कर दे तो उन की नींद उड़ जाए और सारा ऐ़शो आराम तल्ख़ हो जाए ।"

(شرح الصدور، ص۳۳وموسوعة ابن ابی الدنیا،کتاب ذکر الموت،باب الخوف من اللّٰہ،٥/٤٤٦،حدیث ١٧٠)

कांटेदार टहनी

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से फ़रमाया : हमें मौत की शिद्दत के मुतअ़ल्लिक़ बताओ, ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने कहा : अमीरल मोमिनीन ! मौत ऐसी टहनी की त़रह़ है जिस में बहुत ज़ियादा कांटे हों और वोह इन्सान के जिस्म में दाख़िल हो गई हो और उस के हर हर कांटे ने हर रग में जगह पकड़ ली हो फिर उसे एक आदमी इन्तिहाई सख़्ती से खींचे, तो कुछ बाहर आ जाए और बाक़ी जिस्म में बाक़ी रह जाए ।

(مکاشفة القلوب،باب فی بیان شدة الموت،ص١٦٨ و مصنف ابن ابی شیبة،کتاب الزھد، باب ما قال فی البکاء من خشیة اللّٰہ،٨/٣١٢،حدیث ١٢٢)

शैत़ान का वार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नज़्अ़ का मुआ़मला वाक़ेई नाज़ुक है एक त़रफ़ मौत की सख़्तियां तो दूसरी त़रफ़ ईमान छीनने के

www.dawateislami.net

लिये शैत़ान के भरपूर ह़म्ले, क्यूंकि मौत के वक़्त शैत़ान त़रह़ त़रह़ के हथकन्डे इस्ति'माल करता है कि किसी त़रह़ मरने वाले का ईमान बरबाद हो जाए। इमाम इब्नुल ह़ाज मक्की قُدِّسَ سِرُّهٗ "मदख़ल" में लिखते हैं कि दमे नज़्अ़ दो शैत़ान आदमी के दोनों पहलू पर आ कर बैठते हैं एक उस के बाप की शक्ल बन कर दूसरा मां की, एक कहता है वोह शख़्स यहूदी हो कर मरा तू भी यहूदी हो जा कि यहूद वहां बड़े चैन से हैं, दूसरा कहता है वोह शख़्स नसरानी हो कर दुन्या से गया तू भी नसरानी हो जा कि नसारा वहां बड़े आराम से हैं। (المدخل لابن الحاج، ۳/۱۸۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम व एह़सान होगा उसी का ईमान सलामत रहेगा हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करते हैं कि अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़ा व तुफ़ैल नज़्अ़ के वक़्त हमारा ईमान सलामत रखे, हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर करे, दमे नज़्अ़ शैत़ान हमारे पास न आए बल्कि मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم करम फ़रमाएं और आक़ा के जल्वों में हमें मौत आए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या इलाही भूल जाऊं नज़्अ़ की तक्लीफ़ को
शादिये दीदार हुस्ने मुस्त़फ़ा का साथ हो

अब कुछ मदनी फूल पेश किये जाते हैं कि जब किसी पर नज़्अ़ का वक़्त त़ारी हो तो रिज़ाए इलाही, ह़ुसूले सवाब, ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इन मदनी फूलों पर अ़मल कर के क़रीबुल मर्ग की ख़ैर ख़्वाही कीजिये।

www.dawateislami.net

क़रीबुल मर्ग के पास वालों के लिये मदनी फूल

जब मौत का वक़्त क़रीब आए और अ़लामतें पाई जाएं तो सुन्नत येह है कि

❁ मरने वाले को दाहिनी करवट पर लिटा कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर दें या

❁ येह भी जाइज़ है कि चित लिटाएं और क़िब्ला को पाउं करें कि इस सूरत में भी क़िब्ले को मुंह हो जाएगा लेकिन इस सूरत में सर को थोड़ा ऊंचा रखें।

❁ अगर क़िब्ले को मुंह करना दुश्वार हो कि इस को तक्लीफ़ होती हो तो जिस हालत पर है छोड़ दें।

(درالمختار معه رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۹۱/۳)

मोमिन की मौत की अ़लामात

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : मरने वालों में तीन अ़लामतें देखो अगर उस की पेशानी पर पसीना आए, आंखों में आंसू आएं और नथने फैल जाएं तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है।

(نوادر الاصول للحکیم الترمذی،الاصل السادس و الثمانون، ۲۷۲/۱)

मरने वाले को कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन करना सुन्नत है

जो क़रीबुल मर्ग (मरने के क़रीब) हो उसे कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन करना सुन्नत है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए

www.dawateislami.net

गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : अपने मरने वालों को कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करो ।

(مسلم، کتاب الجنائز، باب تلقین الموت...الخ، ص ۸۲۱، حدیث ۲۱۲۳)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपने क़रीबुल मर्ग लोगों के पास ब वक़्ते मौत मौजूद रहो, उन्हें कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करो और उन के सामने कलिमए त़य्यिबा का ज़िक्र करो क्यूंकि येह मरने वाले वोह देख रहे होते हैं जो तुम नहीं देखते ।

(التذکرۃ للقرطبی، باب تلقین المیت لا الہ الا اللّٰہ، ص ۳۵)

तल्क़ीन के मदनी फूल

۞ जांकनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आए उसे तल्क़ीन करें या'नी उस के पास बुलन्द आवाज़ से पढ़ें

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

मगर उसे इस के कहने का हुक्म न करें ।

(جوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۰)

۞ जब उस ने कलिमा पढ़ लिया तो तल्क़ीन मौक़ूफ़ कर दें, हां अगर कलिमा पढ़ने के बा'द उस ने कोई बात की तो फिर तल्क़ीन करें कि उस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ हो । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है कि जिस का आख़िरी कलाम لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ हो वोह जन्नत में दाख़िल होगा । (ابوداود، کتاب الجنائز، باب فی التلقین، ۳/۲۵۵، حدیث ۳۱۱۶ وعالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الاول فی المحتضر، ۱/۱۵۷)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक की रू से जिस का आख़िरी कलाम कलिमए त़य्यिबा हो वोह जन्नती है लिहाज़ा कितने ख़ुश नसीब और क़ाबिले रश्क हैं वोह जो कलिमए त़य्यिबा पढ़ते पढ़ते दाइये अजल को लब्बैक कहते हैं अल्लाह तआला हमें भी येह सआदत नसीब फ़रमाए कि दमे नज़्अ़ हमारी ज़बान पर भी कलिमए त़य्यिबा जारी हो जाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आइये इसी ज़िम्न में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतों से माला माल एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

अ़त्तार का प्यारा

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی कुछ अ़र्से बीमार रहे और उसी बीमारी में आप ने इन्तिक़ाल फ़रमाया। आख़िरी वक़्त में जो इस्लामी भाई उन के पास मौजूद थे उन का कहना है कि रात के वक़्त ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की त़बीअ़त बिगड़ने और ह़ालत ग़ैर होने लगी तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया कि मेरा रुख़ क़िब्ले की सम्त कर दो, चुनान्चे, आप के हुक्म के मुत़ाबिक़ आप का रुख़ क़िब्ले की जानिब कर दिया गया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आंखें बन्द किये दुरूदो सलाम और कलिमए त़य्यिबा का विर्द करने लगे। काफ़ी देर तक आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इसी त़रह़ ज़िक्रो दुरूद में मसरूफ़ रहे। फिर बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ते पढ़ते आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी हुवा और कुछ देर बा'द आप की रूह़ इस फ़ानी दुन्या से आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(मुर्दा बोल उठा, स. 14)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वक़्ते नज़्अ़ तल्क़ीन के बारे में मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : कलिमए त़य्यिबा सिखाने का येह हुक्म इस्तिह़बाबी है और येही जुमहूर उ़लमा का मज़्हब है । ख़याल रहे कि अगर मोमिन ब वक़्ते मौत कलिमा न पढ़ सके जैसे बेहोश या शहीद वग़ैरा तो वोह ईमान पर ही मरा कि ज़िन्दगी में मोमिन था लिहाज़ा अब भी मोमिन बल्कि अगर नज़्अ़ की ग़शी में उस के मुंह से कलिमए कुफ़्र सुना जाए तब भी वोह मोमिन ही होगा उस का कफ़न दफ़्न नमाज़ सब कुछ होगी क्यूंकि ग़शी की ह़ालत का इरतिदाद मो'तबर नहीं । (मिरआतुल मनाजीह़, जनाज़ों की किताब, 2/444)

۞ तल्क़ीन करने वाला कोई नेक शख़्स हो, ऐसा न हो जिस को उस के मरने की ख़ुशी हो और उस के पास उस वक़्त नेक और परहेज़गार लोगों का होना बहुत अच्छी बात है और उस वक़्त वहां यासीन शरीफ़[1] की तिलावत और ख़ुश्बू होना मुस्तह़ब, मसलन लूबान या अगरबत्तियां सुलगा दें ।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ،الباب الحادی و العشرون،الفصل الاول فی المحتضر، ۱/۱۵۷)

۞ मौत के वक़्त हैज़ो निफ़ास वाली औ़रतें उस के पास ह़ाज़िर हो सकती हैं मगर जिस का हैज़ो निफ़ास मुन्क़तेअ़ हो गया और अभी ग़ुस्ल नहीं किया उसे और जुनुब (जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) को आना न चाहिये और कोशिश

---

1 .....सूरए यासीन और इस के कुछ फ़ज़ाइल आख़िरी सफ़ह़ात पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

करे कि मकान में कोई तस्वीर या कुत्ता न हो, अगर येह चीज़ें हों तो फ़ौरन निकाल दी जाएं कि जहां येह होती हैं मलाइकए रह़मत नहीं आते।

۞ उस की नज़्अ़ के वक़्त अपने और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करते रहें, कोई बुरा कलिमा ज़बान से न निकालें कि उस वक़्त जो कुछ कहा जाता है मलाइका उस पर आमीन कहते हैं।

۞ नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो सूरए यासीन और सूरए रा'द पढ़ें (बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4. 1/808) कि इस से मौत में आसानी होती है।

मुर्शिदे करीम ने तल्क़ीन फ़रमाई

टन्डो जाम (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी इफ़्तिख़ार अह़मद अ़त्तारी मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से पहले बहुत ज़ियादा मॉर्डन थे, ख़ुश नसीबी से दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर आ गया, सुन्नतों के आ़मिल मुबल्लिग़ीन की सोह़बत और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से निस्बत की बरकत से नेकी की दा'वत की धूमें मचाने लगे। मदनी माह़ोल से वाबस्तगी के कुछ ही अ़र्से बा'द शव्वालुल मुकर्रम में एक रात नमाज़े इशा पढ़ कर फ़ारिग़ हुवे तो अचानक सीने में दर्द मह़सूस हुवा जो बढ़ता ही चला गया, डॉक्टर के पास ले जाया गया, दवा से कुछ इफ़ाक़ा हुवा, मगर फिर अचानक बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه का विर्द शुरूअ़ कर दिया, उन के बेटे मुह़म्मद उ़मैर अ़त्तारी ने इस त़रह़ अचानक कलिमए त़य्यिबा का विर्द शुरूअ़ करने की वज्ह दरयाफ़्त की, उन्हों ने फ़रमाया : बेटा सामने देखो मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं। येह कह कर दोबारा बुलन्द

www.dawateislami.net

आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और इसी त़रह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه का विर्द करते करते उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । उन के बेटे का बयान है कि वफ़ात से पहले बा'द नमाज़े मग़रिब अब्बाजान ने फ़िक्रे मदीना करते हुवे मदनी इन्आ़मात का कार्ड भी पुर किया था । (बे क़ुसूर की मदद, स. 19)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।* اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता ख़ुश नसीब इस्लामी भाई की मदनी बहार आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाई कि उन के नज़्अ़ के वक़्त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन्हें कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन की । येह इस्लामी भाई नेकी की दा'वत की धूमें मचाने, मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हुवे फ़िक्रे मदीना करने और दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में मसरूफ़ रहने वाले मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा आप भी अपने दिल में मह़ब्बते औलियाए किराम की शम्अ़ जलाने, फ़ैज़ाने औलिया पाने और दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर मदनी कामों में मश्ग़ूल हो जाइये और मदनी मक़्सद **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** के तह़त मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । आप का जज़्बा व शौक़ बढ़ाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दुआ़इय्या कलिमात जिन से आप ने मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वालों को नवाज़ा है पेश किये जाते हैं :

www.dawateislami.net

चुनान्चे, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

दुआ़ए अ़त्त़ार

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को मदीनए मुनव्वरा के सदा बहार फूलों की त़रह़ मुस्कुराता रखे कभी भी आप की खुशियां ख़त्म न हों, ह़यात व ममात (मौत), बरज़ख़ व सकरात (ह़ालते नज़्अ़) और क़ियामत के जां सोज़ लम्ह़ात में हर जगह मसर्रतें और शाद मानियां नसीब हों, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की और तमाम क़बीले की मग़्फ़िरत करे, जन्नतुल फ़िरदौस में आप को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जवार अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلَّى الله تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

(जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता, स. 33)

रूह़ क़ब्ज़ होने के बा'द इन मदनी फूलों पर अ़मल कीजिये !

۞ जब रूह़ निकल जाए तो एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जा कर गिरह दे दें कि मुंह खुला न रहे और आंखें बन्द कर दी जाएं और उंगलियां और हाथ पाउं सीधे कर दिये जाएं, येह काम उस के घरवालों में जो ज़ियादा नर्मी के साथ कर सकता हो बाप या बेटा वोह करे।

(جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣١)

۞ आंखें बन्द करते वक़्त येह दुआ़ पढ़िये

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ (صلى الله تعالى عليه واٰله وسلم)

तर्जमा : अल्लाह के नाम के साथ और रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मिल्लत पर।

www.dawateislami.net

येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये :

اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ عَلَيْهِ اَمْرَهٗ وَسَهِّلْ عَلَيْهِ مَا بَعْدَهٗ وَاَسْعِدْهُ بِلِقَائِكَ وَاجْعَلْ مَا خَرَجَ اِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ

(در المختار معه رد المحتار، كتاب الصلاة،باب صلاة الجنازة،٣/٩٧)

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू इस का मुआ़मला इस पर आसान कर दे और इस के बा'द वाले मुआ़मलात को भी इस पर आसान कर दे और अपनी मुलाक़ात से तू इसे नेकबख़्त कर और इस की आख़िरत को इस की दुन्या से बेहतर कर दे ।

۞ उस के पेट पर लोहा या गीली मिट्टी या और कोई भारी चीज़ रख दें कि पेट फूल न जाए मगर ज़रूरत से ज़ियादा वज़्नी न हो कि बाइ़से तक्लीफ़ है ।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی و العشرون فی الجنائز، الفصل الاول فی المحتضر،١/١٥٧)

۞ मय्यित के पास तिलावते कुरआने मजीद जाइज़ है जब कि उस का तमाम बदन कपड़े से छुपा हो और तस्बीह़ व दीगर अज़्कार में मुत़लक़न ह़रज नहीं ।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ،مطلب: فی القراء ۃ عند المیت، ٣ / ٩٨)

मदीना : पड़ोसियों और दोस्त अह़बाब वग़ैरा की इत्तिलाअ़ के लिये मय्यित का ए'लान करवाइये(1) ताकि नमाज़ियों की कसरत हो और वोह उस के लिये दुआ़ करें क्यूंकि उन पर ह़क़ है कि उस की नमाज़ पढ़ें और दुआ़ करें ।

(عالمگیری،کتاب الصلوۃ ، باب الحادی و العشرون فی الجنائز،الفصل الاول،١/١٥٧)

1 ....मय्यित का ए'लान और दीगर ए'लानात किताब के आख़िर में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

ग़ुस्ले मय्यित का बयान

मय्यित को ग़ुस्ल देना जहां फ़र्ज़े किफ़ाया है वहीं बहुत सी फ़ज़ीलतों और अज्रो सवाब के ह़ुसूल का ज़रीआ़ भी है और जो ख़ुलूस दिल से ह़ुसूले सवाब के लिये मय्यित को ग़ुस्ल दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से गुनाहों की बख़्शिश का ह़क़दार बन जाता है। चुनान्चे,

मय्यित नहलाने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी मय्यित को ग़ुस्ल दिया वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।

(معجم اوسط للطبرانی،باب الھاء،٦/٤٢٩،حدیث٩٢٩٢)

चालीस कबीरा गुनाहों की बख़्शिश का नुस्ख़ा

ह़दीसे पाक में है : जिस ने किसी मय्यित को ग़ुस्ल दिया और उस के ऐ़ब को छुपाया ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ऐसे शख़्स के चालीस कबीरा गुनाह बख़्श देता है। (معجم کبیر للطبرانی، باب الالف،١/٣١٥،حدیث٩٢٩)

अब ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा बयान किया जाएगा लेकिन पहले कुछ निय्यतें कर लीजिये।

ग़ुस्ले मय्यित की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये मय्यित को ग़ुस्ल दूंगा ۞ फ़र्ज़े किफ़ाया अदा करूंगा ۞ ह़त्तल मक्दूर बा वुज़ू रहूंगा

www.dawateislami.net

❁ ज़रूरतन ग़ुस्ल से क़ब्ल मुआ़विनीन को ग़ुस्ल का त़रीक़ा और सुन्नतें बताऊंगा ❁ मय्यित की सत्रपोशी का ख़ुसूसी ख़याल रखूंगा ❁ आ'ज़ा हिलाते वक़्त नर्मी और आहिस्तगी से ह़रकत दूंगा ❁ पानी के इस्राफ़ से बचूंगा ❁ मुर्दे की बे बसी देख कर इ़ब्रत ह़ासिल करने की कोशिश करूंगा ❁ मस्अला दर पेश हुवा तो दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से शरई रहनुमाई ह़ासिल करूंगा ❁ ख़ुदा न ख़्वास्ता मय्यित का चेहरा सियाह हो गया या कोई और तग़य्युर हुवा तो ब हुक्मे शरअ़ उसे छुपाऊंगा और मुआ़विनीन को भी छुपाने की तरग़ीब दूंगा ❁ अच्छी अ़लामत ज़ाहिर हुई मसलन ख़ुश्बू आना, चेहरे पर मुस्कुराहट फैलना वग़ैरा तो दूसरों को भी बताऊंगा।

इस्लामी भाई के ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा

अगरबत्तियां या लूबान जला कर तीन या पांच या सात बार ग़ुस्ल के तख़्ते को धूनी दें या'नी इतनी बार तख़्ते के गिर्द फिराएं, तख़्ते पर मय्यित को इस त़रह़ लिटाएं जैसे क़ब्र में लिटाते हैं, नाफ़ से घुटनों समेत कपड़े से छुपा दें, (आज कल ग़ुस्ल के दौरान सफ़ेद कपड़ा उढ़ाते हैं और इस पर पानी लगने से मय्यित के सत्र की बे पर्दगी होती है लिहाज़ा कथ्थई या गहरे रंग का इतना मोटा कपड़ा हो कि पानी पड़ने से सत्र न चमके, कपड़े की दो तहें कर लें तो ज़ियादा बेहतर) पर्दे की तमाम तर एह़तियात़ और नर्मी से मय्यित का लिबास उतार लें। **अब** नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले दोनों त़रफ़ इस्तिन्जा करवाए (या'नी पानी से धोए) फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करवाएं या'नी मुंह फिर कोहनियों समेत दोनों हाथ तीन तीन बार धुलाएं, फिर सर का मस्ह़ करें, फिर तीन बार दोनों पाउं धुलाएं, मय्यित के वुज़ू में पहले गिट्टों तक हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में

www.dawateislami.net

पानी डालना नहीं है, अलबत्ता कपड़े या रूई की फुरैरी भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दे। फिर सर या दाढ़ी के बाल हों तो धोएं, साबुन या शेम्पू इस्ति'माल कर सकते हैं। अब बाईं (या'नी उल्टी) करवट पर लिटा कर बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा (जो अब नीम गर्म रह गया हो) और येह न हो तो ख़ालिस नीम गर्म पानी सर से पाउं तक बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए फिर सीधी करवट लिटा कर इसी त़रह करें फिर टेक लगा कर बिठाएं और नर्मी के साथ नीचे को पेट के नीचले हिस्से पर हाथ फेरें और कुछ निकले तो धो डालें दोबारा वुज़ू और ग़ुस्ल की ह़ाजत नहीं फिर आख़िर में सर से पाउं तक काफ़ूर का पानी बहाएं फिर किसी पाक कपड़े से बदन आहिस्ता से पोंछ दें। **एक मरतबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़** है और **तीन मरतबा सुन्नत**। ग़ुस्ले मय्यित में बे तह़ाशा पानी न बहाएं आख़िरत में एक एक क़त़रे का ह़िसाब है येह याद रखें।(1)

(मदनी वसिय्यत नामा, स. 12 माख़ूज़न)

इस्लामी बहन के ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा

ग़ुस्ल व कफ़न के लिये इन चीज़ों का इन्तिज़ाम फ़रमा लें।

﴾1﴿ ग़ुस्ल का तख़्ता ﴾2﴿ अगरबत्ती ﴾3﴿ माचिस ﴾4﴿ दो मोटी चादरें (कथ्थई हों तो बेहतर है) ﴾5﴿ रूई ﴾6﴿ बड़े रूमाल की त़रह के दो कपड़ों के पीस (इस्तिन्जा वग़ैरा के लिये) ﴾7﴿ दो बाल्टियां ﴾8﴿ दो मग ﴾9﴿ साबुन ﴾10﴿ बेरी के पत्ते ﴾11﴿ दो तोलिये ﴾12﴿ कफ़न का बिग़ैर सिला हुवा बड़े अ़र्ज़ का कपड़ा ﴾13﴿ कैंची ﴾14﴿ सूई-धागा ﴾15﴿ काफ़ूर ﴾16﴿ ख़ुश्बू

---

(1)......पानी के इस्राफ़ और माए मुस्ता'मल के बारे में अहम मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का रिसाला "**वुज़ू का त़रीक़ा**" मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

अगरबत्तियां या लूबान जला कर तीन या पांच या सात बार ग़ुस्ल के तख़्ते को धूनी दें या'नी इतनी बार तख़्ते के गिर्द फिराएं, तख़्ते पर मय्यित को इस त़रह़ लिटाएं जैसे क़ब्र में लिटाते हैं, सीने से घुटनों समेत कपड़े से छुपा दें (आज कल ग़ुस्ल के दौरान सफ़ेद कपड़ा उढ़ाया जाता है और इस पर पानी लगने से मय्यित के सत्र की बे पर्दगी होती है लिहाज़ा कथ्थई या गहरे रंग का इतना मोटा कपड़ा हो कि पानी पड़ने से सत्र न चमके, कपड़े की दो तहें कर लें तो ज़ियादा बेहतर) पर्दे की तमाम तर एह़तियात़ और नर्मी से मय्यित का लिबास उतारें। इसी त़रह़ कील, बुन्दे या कोई और ज़ेवर भी नर्मी से उतार लें, अब नहलाने वाली अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले दोनों त़रफ़ इस्तिन्जा करवाए (या'नी पानी से धोए) फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करवाएं या'नी मुंह फिर कोहनियों समेत दोनों हाथ तीन तीन बार धुलाएं, फिर सर का मस्ह़ करें, फिर तीन बार दोनों पाउं धुलाएं, मय्यित के वुज़ू में पहले गिट्टों तक हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है, अलबत्ता कपड़े या रूई की फुरैरी भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दें। फिर सर धोएं, साबुन या शेम्पू या दोनों इस्ति'माल किये जा सकते हैं (लेकिन इन के ज़ियादा इस्ति'माल से बालों में उलझाव पैदा होता है लिहाज़ा बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा पानी काफ़ी है) अब बाईं (या'नी उल्टी) करवट पर लिटा कर बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा (जो अब नीम गर्म रह गया हो) और येह न हो तो ख़ालिस नीम गर्म पानी सर से पाउं तक बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए फिर सीधी करवट लिटा कर इसी त़रह़ करें फिर टेक लगा कर बिठाएं और नर्मी के साथ नीचे को पेट के निचले हिस्से पर हाथ फेरें और कुछ निकले तो धो डालें। दोबारा वुज़ू और

www.dawateislami.net

गुस्ल की ह़ाजत नहीं फिर आख़िर में सर से पाउं तक काफ़ूर का पानी बहाएं फिर किसी पाक कपड़े से बदन आहिस्ता से पोंछ दें। गुस्ले मय्यित में बे तह़ाशा पानी न बहाएं आख़िरत में एक एक क़त़रे का ह़िसाब है येह याद रखें। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 12 माख़ूज़न)

गुस्ले मय्यित के मदनी फूल

❁ मय्यित के गुस्ल व कफ़न और दफ़्न में जल्दी चाहिये कि ह़दीस में इस की बहुत ताकीद आई है। (جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ۱۳۱) मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ह़त्तल इमकान दफ़्न में जल्दी की जाए, बिला ज़रूरत देर लगाना सख़्त नाजाइज़ है कि इस में मय्यित के फूलने फटने और उस की बे हुरमती का अन्देशा है। (मिरआतुल मनाजीह़, जनाज़ों की किताब, 2/447)

❁ एक मरतबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन मरतबा सुन्नत, जहां गुस्ल दें मुस्तह़ब येह है कि पर्दा कर लें कि सिवा नहलाने वालों और मददगारों के दूसरा न देखे, नहलाते वक़्त ख़्वाह इस त़रह़ लिटाए जैसे क़ब्र में रखते हैं या क़िब्ला की त़रफ़ पाउं कर के या जो आसान हो करें।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۸)

नहलाने वाले के लिये मदनी फूल

❁ नहलाने वाला बा त़हारत हो। अगर जुनुबी शख़्स (जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो चुका हो) ने गुस्ल दिया तो कराहत है मगर गुस्ल हो जाएगा।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹)

www.dawateislami.net

❁ अगर बे वुज़ू ने नहलाया तो कराहत नहीं ।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل،۱/۱۵۹)

❁ बेहतर येह है कि नहलाने वाला मय्यित का सब से ज़ियादा क़रीबी रिश्तेदार हो, वोह न हो या नहलाना न जानता हो तो कोई और शख़्स जो अमानत दार और परहेज़गार हो ।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹)

❁ नहलाने वाले के पास ख़ुश्बू सुलगाना मुस्तह़ब है कि अगर मय्यित के बदन से बू आए तो उसे पता न चले वरना घबराएगा, नीज़ उसे चाहिये कि ब क़दरे ज़रूरत आ'ज़ाए मय्यित की त़रफ़ नज़र करे, बिला ज़रूरत किसी उ़ज़्व की त़रफ़ न देखे कि मुमकिन है उस के बदन में कोई ऐ़ब हो जिसे वोह छुपाता था । (جوهرة نیرة، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۱)

❁ मर्द को मर्द नहलाए और औ़रत को औ़रत, मय्यित छोटा लड़का है तो उसे औ़रत भी नहला सकती है और छोटी लड़की को मर्द भी, छोटे से येह मुराद कि ह़द्दे शहवत को न पहुंचे हों ।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل،۱/۱۶۰)

❁ गुस्ले मय्यित के बा'द ग़स्साल (गुस्ल देने वाले को गुस्ल करना मुस्तह़ब है । (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

मुर्दा अगर पानी में गिर जाए

❁ मुर्दा अगर पानी में गिर गया या उस पर मींह बरसा कि सारे बदन पर पानी बह गया गुस्ल हो गया, मगर ज़िन्दों पर जो गुस्ले मय्यित वाजिब है येह उस वक़्त बरियुज़्ज़िम्मा होंगे कि नहलाएं, लिहाज़ा अगर मुर्दा पानी में मिला तो ब निय्यते गुस्ल उसे तीन बार पानी में ह़रकत दे दें कि गुस्ले

www.dawateislami.net

मस्नून अदा हो जाए और एक बार ह़रकत दी तो वाजिब अदा हो गया, मगर सुन्नत का मुत़ालबा रहा।

(ردالمحتار،کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی حدیث کل سبب و نسب منقطع الا سببی و نسبی، ۱۰۹/۳)

अगर मय्यित के बदन की खाल झड़ती हो

❁ अगर मय्यित के जिस्म के किसी ह़िस्से की खाल ख़ुद ब ख़ुद झड़ रही हो तो उस पर पानी न डाला जाए और उस खाल को मय्यित के साथ दफ़्ना दिया जाए। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ मय्यित का बदन अगर ऐसा हो गया कि हाथ लगाने से खाल उधड़ेगी तो हाथ न लगाएं सिर्फ़ पानी बहा दें।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی و العشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱۵۸/۱)

मय्यित के बाल व नाख़ुन काटना

❁ मय्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघा करना या नाख़ुन तराशना या किसी जगह के बाल मूंडना या कतरना या उखाड़ना, नाजाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है बल्कि हुक्म येह है कि जिस ह़ालत पर है उसी ह़ालत में दफ़्न कर दें, हां अगर नाख़ुन टूटा हो तो ले सकते हैं और अगर नाख़ुन या बाल तराश लिये तो कफ़न में रख दें।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی القراءۃ عند المیت، ۱۰۴/۳)

❁ मय्यित के जिस्म का जो उ़ज़्व बीमारी वग़ैरा की वज्ह से निकाला गया हो उन सब को दफ़्नाना होगा। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

www.dawateislami.net

मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल

❁ अगर मय्यित के जिस्म के ज़ख़्म पर पट्टी लगी हो, न उखेड़ें।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ केन्यूला लगाने के बा'द जो पट्टी लगाई गई है नीम गर्म पानी डालने से अगर बा आसानी निकल जाए तो निकाल दें वरना छोड़ दें।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ गुस्ले मय्यित के बा'द अगर ख़ून जारी हो जाए और इस सबब से कफ़न नापाक हो जाए तो न ग़ुस्ल (दोबारा) दिया जाएगा और न ही कफ़न तब्दील किया जाए। बल्कि इस त़रह़ का कोई भी मुआ़मला हो जाए तो ग़ुस्ल और तक्फ़ीन में से कुछ भी दोबारा न किया जाए अलबत्ता बेहतर है कि जहां से ख़ून बह रहा हो वहां ज़ियादा रूई रख दें कि कफ़न ख़राब न हो।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ नहलाने के बा'द अगर नाक कान मुंह और दीगर सूराख़ों में रूई रख दें तो ह़रज नहीं मगर बेहतर येह है कि न रखें।

(درالمختار معه رد المحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ۱۰۴/۳)

❁ मय्यित के इस्तिन्जा की जगह को ढेलों से साफ़ करने में ह़रज नहीं मगर बेहतर है कि हर उस चीज़ के इस्ति'माल से बचा जाए जिस से मय्यित को मा'मूली सी भी तक्लीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ बग़लें और दीगर आ'ज़ा जहां पानी बा आसानी नहीं पहुंचता वहां तवज्जोह से पानी बहाया जाए।

❁ ग़ुस्ल के दौरान पानी डालते वक़्त दुआएं या कलिमा वग़ैरा पढ़ना ज़रूरी नहीं, पानी से पाकी ह़ासिल हो जाएगी। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

www.dawateislami.net

❁ चारपाई पर भी ग़ुस्ल दिया जा सकता है मगर बेहतर है कि उस के लिये कोई चारपाई मख़्सूस कर ली जाए फिर तमाम ग़ुस्ल उसी चारपाई पर दिये जाएं लेकिन अगर किसी ने ऐसा नहीं किया और इस्ति'माली चारपाई पर भी ग़ुस्ल दिया तो ह़रज नहीं लेकिन बा'द में भी उस चारपाई को इस्ति'माल किया जाए यूंही छोड़ देना इस्राफ़ है। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ बा'ज़ जगह दस्तूर है कि उ़मूमन मय्यित के ग़ुस्ल के लिये कोरे घड़े बुधने (मिट्टी के नए मटके और लोटे) लाते हैं इस की कुछ ज़रूरत नहीं, घर के इस्ति'माली घड़े लोटे से भी ग़ुस्ल दे सकते हैं और बा'ज़ येह जहालत करते हैं कि ग़ुस्ल के बा'द तोड़ डालते हैं, येह नाजाइज़ व ह़राम है कि माल ज़ाएअ़ करना है और अगर येह ख़याल हो कि नजिस हो गए तो येह भी फ़ुज़ूल बात है कि अव्वलन तो उस पर छींटें नहीं पड़तें और पड़ें भी तो राजेह़ येह है कि मय्यित का ग़ुस्ल नजासते हुक्मिया दूर करने के लिये है तो मुस्ता'मल पानी की छींटें पड़ीं और मुस्ता'मल पानी नजिस नहीं, जिस त़रह़ ज़िन्दों के वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी और अगर फ़र्ज़ किया जाए कि नजिस पानी की छींटें पड़ीं तो धो डालें, धोने से पाक हो जाएंगे और अक्सर जगह वोह घड़े बुधने मस्जिदों में रख देते हैं अगर निय्यत येह हो कि नमाज़ियों को आराम पहुंचेगा और उस का मुर्दे को सवाब, तो येह अच्छी निय्यत है और रखना बेहतर और अगर येह ख़याल हो कि घर में रखना नुहूसत है तो येह निरी ह़माक़त और बा'ज़ लोग घड़े का पानी फेंक देते हैं येह भी ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 4, 1/816)

❁ ग़ुस्ले मय्यित के बा'द मय्यित की आंखों में सुरमा लगाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ मय्यित के मुंह में बत्तीसी लगी हो और अगर बा आसानी निकल सके

www.dawateislami.net

कि मुर्दे को तक्लीफ़ न हो तो निकाल दी जाए और अगर तक्लीफ़ का अन्देशा हो तो न निकाली जाए। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ बद मज़्हब की मय्यित को किसी ने ग़ुस्ल देने के लिये कहा तो न जाना चाहिये क्यूंकि बद मज़्हब के साथ इस त़रह़ का एह़सान करने की शरअ़न इजाज़त नहीं। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ औ़रत अपने शोहर को ग़ुस्ल दे सकती है।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۶۰)

इस्लामी बहनों के लिये मदनी फूल

❁ हैज़ या निफ़ास वाली या जुनुबिया का इन्तिक़ाल हुवा तो एक ही ग़ुस्ल काफ़ी है कि ग़ुस्ल वाजिब होने के कितने ही अस्बाब हों सब एक ग़ुस्ल से अदा हो जाते हैं। (درمختار معہ رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۰۲)

❁ बेहतर है कि मर्हूमा के क़रीबी रिश्तेदार मसलन मां, बेटी, बहन, बहू वग़ैरा अगर हों तो उन्हें भी ग़ुस्ल में शामिल कर लिया जाए क्यूंकि घर वाले नर्मी से ग़ुस्ल देंगे।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹ بتغیر)

❁ ह़ामिला (Pregnant) भी ग़ुस्ल दे सकती है

❁ नहलाने वाली बा त़हारत हो और अगर जुनुबिया (जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) ने ग़ुस्ल दिया तो कराहत है मगर ग़ुस्ल हो जाएगा।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹)

❁ अगर मय्यित के नाख़ुनों पर नेल पॉलिश लगी हो और मय्यित को तक्लीफ़ न हो तो जिस क़दर मुमकिन हो सके छुड़ाएं, उस के लिये रीमूवर (Remover) इस्ति'माल कर सकते हैं। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

www.dawateislami.net

❁ ग़ुस्ल देते वक़्त जो चादर वग़ैरा मय्यित को उढ़ाई जाती है जब तक उस के नापाक होने का यक़ीन न हो उसे नापाक नहीं कहेंगे लिहाज़ा उसे इस्ति'माल किया जा सकता है। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ मरने के बा'द ज़ीनत करना (मेक अप व मेहंदी लगाना वग़ैरा) नाजाइज़ है। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ अ़वाम में येह मश्हूर है कि ग़ुस्ले मय्यित के लिये जाने वाली इस्लामी बहनों के साथ रूह़ानी मसाइल हो जाते हैं इस की कोई अस्ल नहीं येह मह़्ज़ एक वह्म है, इसी त़रह़ येह भी कहा जाता है कि ग़ैर शादीशुदा को मय्यित के क़रीब नहीं आना चाहिये इस की भी कोई अस्ल नहीं।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ शोहर अपनी बीवी के जनाज़े को कन्धा भी दे सकता है, क़ब्र में भी उतार सकता है और मुंह भी देख सकता है सिर्फ़ ग़ुस्ल देने और बिला ह़ाइल बदन को छूने की मुमानअ़त है।

(درالمختار معه رد المحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ۳/۱۰۵)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ग़ुस्ले मय्यित

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे दुन्या के बे वफ़ा होने का एह़सास हो, हर दम मौत का तसव्वुर बंधा हो, तिलावत व इ़बादत उस का मश्ग़ला हो, ज़िक्रो दुरूद का सिलसिला हो तो दोनों जहां में उस का बेड़ा पार हो जाए। आइये ऐसी ही सिफ़ात से मुत्तसिफ़ एक बा किरदार मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की मदनी बहार सुनिये :

www.dawateislami.net

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न और **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अलह़ाज ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल मदनी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى दीने इस्लाम के मुख़्लिस और पुरजोश मुबल्लिग़ थे। ज़ोह्दो वरअ़ और तक़्वा व परहेज़गारी में अपनी मिसाल आप थे रोज़ाना कुरआने पाक की एक मन्ज़िल की तिलावत फ़रमाते यूं सात दिन में एक ख़त्मे कुरआन की सआ़दत पाते। ज़बान का कुफ़्ले मदीना बहुत मज़बूत़ था, जब कोई आप से कलाम करता तो गुफ़्त्गू फ़रमाते वरना अक्सर ख़ामोश रहते। कभी क़ह्क़हा लगाते नहीं देखा गया अलबत्ता उन के लबों पर मुस्कुराहट ज़रूर देखी जाती। ख़ुश अख़्लाक़, सन्जीदा और मिलनसार थे। दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में बहुत मुतह़र्रिक थे ख़ास तौर पर मदनी इन्आ़मात और मदनी क़ाफ़िलों के बहुत पाबन्द थे। इसी त़रह़ एक अच्छे उस्ताज़ और मुफ़्ती भी थे, अपने त़लबा को बड़ी तवज्जोह से सहल अन्दाज़ में पढ़ाते और सुवाल करने वाले की तशफ़्फ़ी फ़रमाते। दारुल इफ़्ता में भी साइल की बात को तवज्जोह से सुनते और आसान व आ़म फ़ह्म अन्दाज़ में जवाब देते। आप ने तक़रीबन 4000 फ़तावा तह़रीर फ़रमाए। तफ़्सीरे जलालैन का तक़रीबन 1200 सफ़ह़ात का ह़ाशिय्या लिखा और तफ़्सीरे कुरआन सिरात़ुल जिनान के 6 पारों पर भी काम मुकम्मल कर चुके थे। आप ने एक बा मक़्सद ज़िन्दगी गुज़ारी और दीने इस्लाम की ख़िदमत में कोशां रहते हुवे दाइये अजल को

www.dawateislami.net

लब्बैक कहा। 18 मुहर्रमुल हराम 1427 हिजरी ब मुताबिक़ 17 फ़रवरी 2006 ईसवी बरोज़ जुमुअतुल मुबारक बाबुल मदीना कराची में विसाल हुवा। रात तक़रीबन 10:00 बजे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ग़ुस्ल दिया गया। ग़ुस्ल देने वाले इस्लामी भाइयों का बयान है कि हम ने जागती आंखों से देखा कि मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दौराने ग़ुस्ल मुस्कुरा रहे थे। इस की गवाही वहां पर मौजूद दीगर इस्लामी भाइयों ने भी दी है, गोया कि आप सय्यिदुना शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस शे'र के मिस्दाक़ थे :

یاد داری کہ وقت زادن تو　　ہمہ خنداں بدند تو گریاں

آنچناں زی کہ وقت مُردن تو　　ہمہ گریاں شوند تو خنداں

याद रख ! तू जब दुन्या में आया था तो रो रहा था और लोग मुस्कुरा रहे थे, ऐसी ज़िन्दगी बसर कर कि तेरी मौत के वक़्त लोग रो रहे हों और तू मुस्कुरा रहा हो।

ना'त ख़्वानी के दौरान होंटों की जुम्बिश

गुस्ल दिये जाने के बा'द इस्लामी भाइयों ने मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के गिर्द जम्अ़ हो कर ना'त ख़्वानी शुरूअ़ कर दी। तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) के साले दुवुम के एक ता़लिबे इ़ल्म का बयान है कि मैं ने देखा कि ना'त ख़्वानी के दौरान उस्ताज़े मोह़तरम मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहा़ज मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی के लबहाए मुबारका भी जुम्बिश कर रहे थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

कफ़न का बयान

मरने के बा'द इन्सान को जो लिबास पहनाया जाता है उसे कफ़न कहते हैं, येह फ़र्ज़े किफ़ाया है।

कफ़न पहनाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मय्यित को कफ़न पहनाना कारे सवाब है और कई अह़ादीसे मुबारका में कफ़न पहनाने वाले के लिये जन्नती हुल्लों और नफ़ीस रेशमी लिबासों की बशारत दी गई है चुनान्चे, एक ह़दीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

जन्नती लिबास

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी मय्यित को कफ़नाया (या'नी कफ़न पहनाया) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे सुन्दुस का लिबास (जन्नत का इन्तिहाई नफ़ीस रेशमी लिबास) पहनाएगा। (معجم کبیر للطبرانی،۸/۲۸۱،حدیث۸۰۷۸)

कफ़न के दरजे

कफ़न के तीन दरजे हैं :

﴿1﴾ ज़रूरत ﴿2﴾ किफ़ायत ﴿3﴾ सुन्नत

कफ़ने ज़रूरत

कफ़ने ज़रूरत मर्द व औरत दोनों के लिये येह कि जो मुयस्सर आए और कम अज़् कम इतना हो कि सारा बदन छुपा दे।

(درالمختار معہ ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ،۳/۱۱۵)

www.dawateislami.net

कफ़ने किफ़ायत

कफ़ने किफ़ायत मर्द के लिये दो कपड़े हैं :

﴾1﴿ लिफ़ाफ़ा ﴾2﴿ इज़ार

कफ़ने किफ़ायत औ़रत के लिये तीन कपड़े हैं :

﴾1﴿ लिफ़ाफ़ा ﴾2﴿ इज़ार ﴾3﴿ ओढ़नी

या

﴾1﴿ लिफ़ाफ़ा ﴾2﴿ क़मीस ﴾3﴿ ओढ़नी

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4,1 /817)

कफ़ने सुन्नत

मर्द के लिये कफ़ने सुन्नत तीन कपड़े हैं

﴾1﴿ लिफ़ाफ़ा ﴾2﴿ इज़ार ﴾3﴿ क़मीस

औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत पांच कपड़े हैं :

﴾1﴿ लिफ़ाफ़ा ﴾2﴿ इज़ार ﴾3﴿ क़मीस

﴾4﴿ सीनाबन्द ﴾5﴿ ओढ़नी (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4,1 /817)

۞ ख़ुन्शा मुश्किल (या'नी जिस में मर्द व औ़रत दोनों की अ़लामात हों और येह साबित न हो कि मर्द है या औ़रत) को औ़रत की त़रह़ पांच कपड़े दिये जाएं मगर कुसुम या ज़ा'फ़रान का रंगा हुवा और रेशमी कफ़न उसे नाजाइज़ है ।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثالث فی التکفین، ۱/۱٦۱)

www.dawateislami.net

बच्चों को कौन सा कफ़न दिया जाए ?

जो ना बालिग़ ह़द्दे शहवत को पहुंच गया वोह बालिग़ के हुक्म में है या'नी बालिग़ को कफ़न में जितने कपड़े दिये जाते हैं उसे भी दिये जाएं और इस से छोटे लड़के को एक कपड़ा (इज़ार) और छोटी लड़की को दो कपड़े (लिफ़ाफ़ा और इज़ार) दे सकते हैं और लड़के को भी दो कपड़े (लिफ़ाफ़ा और इज़ार) दिये जाएं तो अच्छा है और बेहतर येह है कि दोनों को पूरा कफ़न दें अगर्चे एक दिन का बच्चा हो।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی الکفن، ۱۱۷/۳)

कफ़न की तफ़्सील

﴾1﴿ **लिफ़ाफ़ा :** या'नी चादर मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों त़रफ़ से बांध सकें।

﴾2﴿ **इज़ार :** (या'नी तहबन्द) चोटी (या'नी सर के सिरे) से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़े से इतना छोटा जो बन्दिश के लिये ज़ाइद था।

﴾3﴿ **क़मीस :** (या'नी कफ़नी) गर्दन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों। मर्द की कफ़नी कन्धों पर चीरें और औ़रत के लिये सीने की त़रफ़।

﴾4﴿ **सीनाबन्द :** पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो।

﴾5﴿ **ओढ़नी :** तीन हाथ होनी चाहिये या'नी डेढ़ गज़।

(मदनी वसिय्यत नामा, स. 11 व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1 / 818)

www.dawateislami.net

उ़मूमन तय्यार कफ़न ख़रीद लिया जाता है उस का मय्यित के क़द के मुत़ाबिक़ मस्नून साइज़ का होना ज़रूरी नहीं, येह भी हो सकता है कि इतना ज़ियादा हो कि इस्राफ़ में दाख़िल हो जाए, लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि थान में से ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा काटा जाए।

(मदनी वसिय्यत नामा, स. 11, ह़ाशिय्या, 1)

कफ़न पहनाने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये मय्यित को कफ़न पहनाऊंगा ۞ फ़र्ज़े किफ़ाया अदा करूंगा ۞ ज़रूरतन तक्फ़ीन से क़ब्ल मुआ़विनीन को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा और सुन्नतें बताऊंगा ۞ तख़्ताए ग़ुस्ल से कफ़न पर रखते हुवे इन्तिहाई एह़तियात़ और नर्मी बरतूंगा और उस वक़्त सत्रपोशी का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखूंगा ۞ मय्यित की पेशानी पर अंगुश्ते शहादत से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم लिखूंगा ۞ इसी त़रह़ सीने पर لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखूंगा ۞ इ़त्र या ख़ुश्बू लगाऊंगा ۞ ख़ाके मदीना और आबे ज़मज़म मुयस्सर होने की सूरत में कफ़न और चेहरे पर छिड़कूंगा ۞ इसी त़रह़ ग़िलाफ़े का'बा और दीगर तबर्रुकात भी कफ़न में सीने पर रखूंगा।

मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

कफ़न को तीन या पांच या सात बार धूनी दे दें। फिर इस त़रह़ बिछाएं कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर उस पर तहबन्द और उस के ऊपर कफ़नी रखें। अब मय्यित को उस पर लिटाएं और कफ़नी पहनाएं, अब दाढ़ी पर (न हो तो ठोड़ी पर) और तमाम जिस्म पर ख़ुश्बू मलें, वोह आ'ज़ा जिन पर सजदा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक, हाथों, घुटनों

www.dawateislami.net

और क़दमों पर काफ़ूर लगाएं। फिर तहबन्द उल्टी जानिब से, फिर सीधी जानिब से लपेटें। अब आख़िर में लिफ़ाफ़ा भी इसी त़रह़ पहले उल्टी जानिब से, फिर सीधी जानिब से लपेटें ताकि सीधा ऊपर रहे। सर और पाउं की त़रफ़ बांध दें। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 13)

औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

कफ़न को तीन या पांच या सात बार धूनी दे दें। फिर इस त़रह़ बिछाएं कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर उस पर तहबन्द और उस के ऊपर कफ़नी रखें। अब मय्यित को उस पर लिटाएं और कफ़नी पहनाएं अब उस के बालों के दो हिस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दें और ओढ़नी को आधी पीठ के नीचे बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर निक़ाब की त़रह़ डाल दें कि सीने पर रहे। इस का तूल आधी पुश्त से नीचे तक और अ़र्ज़ एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हो। बा'ज़ लोग ओढ़नी इस त़रह़ उढ़ाते हैं जिस त़रह़ औ़रतें ज़िन्दगी में सर पर ओढ़ती हैं येह ख़िलाफ़े सुन्नत है। अब तमाम जिस्म पर ख़ुश्बू मलें, वोह आ'ज़ा जिन पर सजदा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक, हाथों, घुटनों और क़दमों पर काफ़ूर लगाएं। फिर तहबन्द उल्टी जानिब से, फिर सीधी जानिब से लपेटें। अब आख़िर में लिफ़ाफ़ा भी इसी त़रह़ पहले उल्टी जानिब से, फिर सीधी जानिब से लपेटें ताकि सीधा ऊपर रहे। सर और पाउं की त़रफ़ बांध दें। फिर आख़िर में सीनाबन्द पिस्तान के ऊपर वाले हिस्से से रान तक ला कर किसी डोरी से बांधें। (आज कल औ़रतों के कफ़न में भी लिफ़ाफ़ा ही आख़िर में रखा जाता है तो अगर कफ़नी के बा'द सीनाबन्द रखा जाए तो भी कोई मुज़ाइक़ा नहीं मगर अफ़्ज़ल है कि सीनाबन्द सब से आख़िर में हो) (मदनी वसिय्यत नामा, स. 13)

www.dawateislami.net

कफ़न कैसा होना चाहिये ?

❁ कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ईदैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मैके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये । ह़दीस में है, मुर्दों को अच्छा कफ़न दो कि वोह बाहम मुलाक़ात करते और अच्छे कफ़न से तफ़ाख़ुर करते या'नी ख़ुश होते हैं ।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی الکفن، ۱۱۲/۳)

❁ सफ़ेद कफ़न बेहतर है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपन मुर्दे सफ़ेद कपड़ों में कफ़नाओ ।

(ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء ما یستحب من الاکفان، ۲/ ۳۰۱،حدیث۹۹۶)

❁ पुराने कपड़े का भी कफ़न हो सकता है, मगर पुराना हो तो धुला हुवा हो कि कफ़न सुथरा होना मरग़ूब है । (جوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ ، باب الجنائز، ص۱۳۵)

❁ कफ़न अगर आबे ज़म ज़म या आबे मदीना बल्कि दोनों से तर किया हुवा हो तो सआ़दत है । (मदनी वसिय्यत नामा, स. 4)

मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल

❁ मय्यित के दोनों हाथ करवटों में रखें, सीने पर न रखें कि येह कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है । (درمختار معہ رد المحتار ، کتاب الصلاۃ ، باب صلاۃ الجنازۃ،۱۰۵/۳)

बा'ज़ जगह नाफ़ के नीचे इस त़रह़ रखते हैं जैसे नमाज़ के क़ियाम में, येह भी न करें । (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 4, 1/816)

❁ मय्यित ने अगर कुछ माल छोड़ा तो कफ़न उसी के माल से होना चाहिये । (ردالمحتار، کتاب الصلوۃ ، باب صلوۃ الجنازۃ ، مطلب: فی الکفن ،۱۱٤/۳)

www.dawateislami.net

❁ किसी ने वसिय्यत की, कि कफ़न में उसे दो कपड़े दिये जाएं तो येह वसिय्यत जारी न की जाए, तीन कपड़े दिये जाएं और अगर येह वसिय्यत की, कि हज़ार रूपे का कफ़न दिया जाए तो येह भी नाफ़िज़ न होगी मुतवस्सित़ दरजे का दिया जाए।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی الکفن، ۳/۱۱۲)

❁ उ़लमा व मशाइख़ को बा इमामा दफ़्न किया जा सकता है, आ़म लोगों की मय्यित को मअ़ इमामा दफ़्नाना मन्अ़ है। अलबत्ता आ़म लोगों में से भी अगर किसी ने वसिय्यत की, कि मुझे बा इमामा दफ़्न किया जाए तो उस की वसिय्यत पर अ़मल करते हुवे उसे भी बा इमामा दफ़्न किया जाए।

❁ बा'दे ग़ुस्ले मय्यित, कफ़न में चेहरा छुपाने से क़ब्ल, पहले पेशानी पर अंगुश्ते शहादत से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखिये। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 4)

❁ इसी त़रह़ सीने पर لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(मदनी वसिय्यत नामा, स. 5)

❁ दिल की जगह पर **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(मदनी वसिय्यत नामा, स. 5)

❁ नाफ़ और सीने के दरमियानी ह़िस्सए कफ़न पर : **या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ, **या इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ, **या इमाम अह़मद रज़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ, **या शैख़ ज़ियाउद्दीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शहादत की उंगली से लिखें। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 5)

अपने पीर साह़िब का नाम भी लिख सकते हैं। जैसे :

या अ़त्तार

www.dawateislami.net

❁ नीज़ नाफ़ के ऊपर से ले कर सर तक तमाम हिस्सए कफ़न पर (इलावा पुश्त के) "मदीना मदीना" लिखा जाए। याद रहे ! येह सब कुछ रोशनाई से नहीं सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से लिखना है और कोई सय्यिद साहिब या आ़लिमे दीन लिखें तो सआ़दत है।

❁ दोनों आंखों पर मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की खजूर की घुटलियां रख दी जाएं। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 5)

❁ अगर किसी इस्लामी बहन के मख़्सूस अय्याम हों या ह़ामिला हो तो वोह मय्यित को देख सकती है इस में कोई ह़रज नहीं।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ कफ़न के कपड़े को सिलाई मशीन (या हाथ) से सिलाई लगा सकते हैं। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

कफ़न के लिये तीन अनमोल तोह़फ़े

﴾1﴿ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो हर नमाज़ (या'नी फ़र्ज़ सुन्नतें वग़ैरा पढ़ने) के बा'द अ़ह्द नामा पढ़े, फ़िरिश्ते उसे लिख कर मोहर लगा कर क़ियामत के लिये उठा रखे, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे को क़ब्र से उठाए, फ़िरिश्ते वोह नविश्ता (या'नी दस्तावेज़) साथ लाए और निदा की जाए : अ़ह्द वाले कहां हैं ? उन्हें अ़ह्द नामा दिया जाए। इमाम ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इसे रिवायत कर के फ़रमाया : "इमाम त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वसिय्यत से येह अ़ह्द नामा उन के कफ़न में लिखा गया।" (درمنثور، پ٦، مریم، تحت الآیۃ ٨٧، ٥/ ٥٤٢)

www.dawateislami.net

इमाम फ़क़ीह इब्ने उ़जैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इसी दुआ़ए अ़ह्द नामा की निस्बत फ़रमाया : जब येह अ़ह्द नामा लिख कर मय्यित के साथ क़ब्र में रख दें तो **अल्लाह** तआ़ला उसे सुवाले नकीरैन व अ़ज़ाबे क़ब्र से अमान दे, (फ़तावा रज़विय्या, 9/109) अ़ह्द नामा येह है :

اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَةِ
الرَّحْمٰنَ الرَّحِیْمَ اِنِّیْۤ اَعْھَدُ اِلَیْکَ فِیْ ھٰذِہِ الْحَیٰوةِ
الدُّنْیَا بِاَنَّکَ اَنْتَ اللهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ وَحْدَکَ
لَاشَرِیْکَ لَکَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ
فَلَا تَکِلْنِیْۤ اِلٰی نَفْسِیْ فَاِنَّکَ اِنْ تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ
تُقَرِّبْنِیْ مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدْنِیْ مِنَ الْخَیْرِ وَاِنِّیْ لَاۤ اَثِقُ
اِلَّا بِرَحْمَتِکَ فَاجْعَلْ رَحْمَتَکَ لِیْ عَھْدًا عِنْدَکَ
تُؤَدِّیْهِ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ.

(در منثور، پ٦، مریم، تحت الآیة٨٧، ٥/ ٥٤٢)

﴾2﴿ जो येह दुआ़ मय्यित के कफ़न में लिखे **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत तक के लिये उस से अ़ज़ाब उठा ले ।

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْئَلُکَ یَاعَالِمَ السِّرِّ یَاعَظِیۡمَ الْخَطَرِ یَاخَالِقَ الْبَشَرِ یَامُوۡقِعَ الظَّفَرِ یَامَعۡرُوۡفَ الۡاَثَرِ یَاذَا الطَّوۡلِ وَالْمَنِّ یَاکَاشِفَ الضُّرِّ وَالْمِحَنِ یَااِلٰـہَ الۡاَوَّلِیۡنَ وَالۡاٰخِرِیۡنَ فَرِّجۡ عَنِّیۡ ھُمُوۡمِیۡ وَاکۡشِفۡ عَنِّیۡ غُمُوۡمِیۡ وَصَلِّ اللّٰھُمَّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمۡ.

(फ़तावा रज़विय्या, 9/109)

﴾3﴿ जो येह दुआ़ किसी पर्चे पर लिख कर मय्यित के सीने पर कफ़न के नीचे रख दे तो अ़ज़ाबे क़ब्र न हो और न मुन्कर नकीर नज़र आएं।

لَآاِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآاِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَاشَرِیۡکَ لَہٗ لَآاِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ لَہُ الۡمُلۡکُ وَلَہُ الۡحَمۡدُ لَآاِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَلَاحَوۡلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الۡعَلِیِّ الۡعَظِیۡمِ.

(फ़तावा रज़विय्या, 9/108)

मदनी मश्वरा : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से ''कफ़न के तीन अनमोल तोह़्फ़े'' नामी पर्चे ख़रीद कर अपने पास रख लीजिये और मुसलमानों की फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर पेश कर के सवाब कमाइये नीज़ कफ़न बेचने वालों और तजहीज़ो तक्फ़ीन करने वाले समाजी इदारों को भी पेश कीजिये कि वोह हर कफ़न के साथ एक पर्चा فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہ दे दिया करें।

www.dawateislami.net

नमाज़े जनाज़ा का बयान

नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है या'नी कोई एक भी अदा कर ले तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए वरना जिन जिन को ख़बर पहुंची थी और नहीं आए वोह सब गुनहगार होंगे।

(فتاوٰی تاتارخانیہ، کتاب الصلوۃ، الفصل الثانی والثلاثون فی الجنائز، ۲/۱۵۳)

इस के लिये जमाअ़त शर्त़ नहीं, एक शख़्स भी पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो गया। (عالمگیری، کتاب الصلوۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الخامس فی الصلاۃ علی المیت، ۱/۱۶۲)

इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार कुफ़्र है।

(درالمختار معہ ردالمحتار، کتاب الصلوۃ، باب صلوۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۰)

मय्यित के तअ़ल्लुक़ से नमाज़े जनाज़ा की 7 शर्तें

नमाज़े जनाज़ा में मय्यित से तअ़ल्लुक़ रखने वाली येह सात शर्तें हैं :

﴾1﴿ मय्यित का मुसलमान होना ﴾2﴿ मय्यित के बदन व कफ़न का पाक होना ﴾3﴿ जनाज़े का वहां मौजूद होना या'नी कुल या अक्सर या निस्फ़ मअ़ सर के मौजूद होना, लिहाज़ा ग़ाइब की नमाज़ नहीं हो सकती ﴾4﴿ जनाज़ा ज़मीन पर रखा होना या हाथ पर हो मगर क़रीब हो, अगर जानवर वग़ैरा पर लदा हो नमाज़ न होगी ﴾5﴿ जनाज़ा मुसल्ली (नमाज़ी) के आगे क़िब्ले को होना, अगर मुसल्ली के पीछे होगा नमाज़ सह़ीह़ न होगी ﴾6﴿ मय्यित का वोह ह़िस्सए बदन जिस का छुपाना फ़र्ज़ है छुपा होना ﴾7﴿ मय्यित इमाम के मह़ाज़ी (सामने) हो या'नी अगर एक मय्यित है तो उस का कोई ह़िस्सए बदन इमाम के मह़ाज़ी हो और चन्द हों तो किसी एक का ह़िस्सए बदन इमाम के मह़ाज़ी होना काफ़ी है।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: ھل یسقط فرض... الخ، ۳/۱۲۱-۱۲۳)

www.dawateislami.net

इन शराइत़ की कुछ तफ़्सील

❁ मय्यित से मुराद वोह है जो ज़िन्दा पैदा हुवा फिर मर गया लिहाज़ा बच्चा अगर मुर्दा पैदा हुवा तो उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी जाए।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/826 मुलख़्ख़सन)

❁ छोटे बच्चे के मां बाप दोनों मुसलमान हों या एक तो वोह मुसलमान है, उस की नमाज़ पढ़ी जाए और दोनों काफ़िर हैं तो नहीं।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/826)

❁ बदन पाक होने से येह मुराद है कि उसे ग़ुस्ल दिया गया हो या ग़ुस्ल ना मुमकिन होने की सूरत में तयम्मुम कराया गया हो और कफ़न पहनाने से पेशतर उस के बदन से नजासत निकली तो धो डाली जाए और बा'द में ख़ारिज हुई तो धोने की ह़ाजत नहीं और कफ़न पाक होने का येह मत़लब है कि पाक कफ़न पहनाया जाए और बा'द में अगर नजासत ख़ारिज हुई और कफ़न आलूदा हुवा तो ह़रज नहीं।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی صلاۃ الجنازۃ، ۱۲۲/۳ ملتقطًا)

❁ बिग़ैर ग़ुस्ल नमाज़ पढ़ी गई न हुई, उसे ग़ुस्ल दे कर फिर पढ़ें और अगर क़ब्र में रख चुके, मगर मिट्टी अभी नहीं डाली गई तो क़ब्र से निकालें और ग़ुस्ल दे कर नमाज़ पढ़ें और मिट्टी दे चुके तो अब नहीं निकाल सकते, लिहाज़ा अब उस की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ें कि पहली नमाज़ न हुई थी कि बिग़ैर ग़ुस्ल हुई थी और अब चूंकि ग़ुस्ल ना मुमकिन है लिहाज़ा अब हो जाएगी। (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی صلاۃ الجنازۃ، ۱۲۱/۳)

www.dawateislami.net

❁ अगर जनाज़ा उल्टा रखा या'नी इमाम के दहने मय्यित का क़दम हो तो नमाज़ हो जाएगी मगर क़स्दन ऐसा किया तो गुनहगार हुवे।

(درالمختارمعہ رد المحتار، کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ،۳/۱۲۴)

❁ अगर क़िब्ले के जानने में ग़लती हुई या'नी मय्यित को अपने ख़याल से क़िब्ला ही को रखा था मगर ह़क़ीक़तन क़िब्ला को नहीं तो मौज़ए तह़र्री में (या'नी जहां तह़र्री का हुक्म हो) अगर **तह़र्री**[1] की, नमाज़ हो गई वरना नहीं। (درالمختار معہ رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، الخ،۳/۱۲۴)

ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़ का हुक्म

❁ जिस ने ख़ुदकुशी की ह़ालांकि येह बहुत बड़ा गुनाह है, मगर उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाएगी अगर्चे क़स्दन ख़ुदकुशी की हो, जो शख़्स रज्म किया गया (सज़ा के त़ौर पर पथ्थर मार मार कर हलाक किया गया) या क़िसास (क़त्ल के बदले) में मारा गया, उसे ग़ुस्ल देंगे और नमाज़ पढ़ेंगे।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: ھل یسقط فرض...الخ،۳/۱۲۷وعالمگیری، کتاب الصلاۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الخامس فی الصلاۃ علی المیت،۱/۱۶۳)

जनाज़े की निय्यतें

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के तह़रीर कर्दा जनाज़े के मदनी फूलों की रौशनी में कुछ निय्यतें फ़रमा लीजिये।

1.....जब किसी मौक़अ़ पर ह़क़ीक़त मा'लूम करना दुश्वार हो जाए तो सोचे और जिस जानिब गुमान ग़ालिब हो अ़मल करे इस सोचने का नाम **तह़र्री** है। **तह़र्री** पर अ़मल करना उस वक़्त जाइज़ है जब दलाइल से पता न चले दलील होते हुवे तह़र्री पर अ़मल करने की इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 17, 3/661)

www.dawateislami.net

❁ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये नमाज़े जनाज़ा पढ़ूंगा ❁ फ़र्ज़े किफ़ाया अदा करूंगा ❁ मर्हूम के अ़ज़ीज़ों की दिलजूई करूंगा ❁ मर्हूम के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत और ईसाले सवाब करूंगा ❁ बा'दे नमाज़ मस्नून त़रीक़े पर जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दूंगा (या'नी पहले सीधे सिरहाने फिर सीधी पाईंती (सीधे पाउं की त़रफ़) फिर उल्टे सिरहाने फिर उल्टी पाईंती) ❁ हर बार दस-दस, कुल चालीस क़दम चल कर चालीस कबीरा गुनाहों की मग़्फ़िरत का ह़क़दार बनूंगा ❁ जनाज़े को कन्धा देते वक़्त लोगों को ईज़ा और धक्के देने से बचूंगा ❁ अपना जनाज़ा उठने और दफ़्न होने को याद कर के फ़िक्रे आख़िरत करूंगा।

नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाए ?

नमाज़े जनाज़ा में इमामत का ह़क़ बादशाहे इस्लाम को है, फिर क़ाज़ी, फिर इमामे जुमुआ़, फिर इमामे मह़ल्ला, फिर वली को। इमामे मह़ल्ला का वली पर तक़द्दुम बत़ौरे इस्तिह़्बाब है और येह भी उस वक़्त कि वली से अफ़्ज़ल हो वरना वली बेहतर है।

(غنية المتملی، فصل فی الجنائز،ص٥٨٤ و درالمختار معه رد المحتار،كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة،٣/ ١٣٩-١٤١)

नमाज़े जनाज़ा के अरकान और सुन्नतें

नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न हैं :

﴾1﴿ चार बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना ﴾2﴿ क़ियाम

नमाज़े जनाज़ा में तीन सुन्नते मुअक्कदा हैं :

﴾1﴿ सना ﴾2﴿ दुरूद शरीफ़ ﴾3﴿ मय्यित के लिये दुआ़

(درالمختار معه ردالمحتار، كتاب الصلوة، باب صلاة الجنازة، ١٢٤/٣)

www.dawateislami.net

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा[1] «ह़नफ़ी»

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा" सफ़्ह़ा 8 पर जनाज़े की नमाज़ का त़रीक़ा यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

मुक़्तदी इस त़रह़ निय्यत करे : "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की वासित़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के।" (فتاوی تاتارخانیه، کتاب الصلوة،الفصل الثانی و الثلاثون فی الجنائز،۲/۱۵۳)

अब इमाम व मुक़्तदी पहले कानों तक हाथ उठाएं और "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहते हुवे फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लें और सना पढ़ें। इस में "وَتَعَالٰى جَدُّكَ" के बा'द "وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ" पढ़ें फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें फिर दुरूदे इब्राहीम पढ़ें, फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें और दुआ़ पढ़ें (इमाम तक्बीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी आहिस्ता, बाक़ी तमाम अज़्कार इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता पढ़ें) दुआ़ के बा'द फिर "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें और हाथ लटका दें फिर दोनों त़रफ़ सलाम फेर दें। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/836 माख़ूज़न)

सना

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ.

---

1 .....नमाज़े जनाज़ा से पहले मर्ह़ूम के हुक़ूक़ और नमाज़ के त़रीक़े से मुतअ़ल्लिक़, ए'लान कीजिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तह़रीर कर्दा येह ए'लान किताब के आख़िर में इस उ़न्वान से है। "**बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये।**"

www.dawateislami.net

पाक है तू ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! और मैं तेरी ह़म्द करता हूं, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी अ़ज़्मत बुलन्द है और तेरी ता'रीफ़ बरतर है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।

दुरूदे इब्राहीम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ؕ
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ؕ

ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुह़म्मद पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तू ने दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम पर और उन की आल पर बेशक तू ही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला। ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! बरकत नाज़िल कर (हमारे सरदार) मुह़म्मद पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तू ने बरकत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम और उन की आल पर बेशक तू ही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला।

बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا
وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا ؕ اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ
عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ.

(مستدرك حاكم، كتاب الجنائز، ادعية صلاة الجنازة، ١/٦٨٤، حديث ١٣٦٦)

www.dawateislami.net

इलाही बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौतशुदा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को। इलाही तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे।

ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَآ اَجْرًا وَّذُخْرًا
وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا.

(کنز الد قائق، کتاب الصلوة، باب الجنائز، ص ۵۲)

इलाही ! इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

ना बालिग़ा लड़की के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا وَّذُخْرًا
وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً.

(کنزالدقائق، کتاب الصلوۃ،باب الجنائز،ص۵۲ وجوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلوۃ،باب الجنائز، ص۱۳۸)

www.dawateislami.net

इलाही ! इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारे लिये सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

❁ जो पैदाइशी पागल हो या बालिग़ होने से पहले पागल हो गया हो और उसी पागल पन में मौत वाक़ेअ़ हुई तो उस की नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ की दुआ़ पढ़ेंगे।

(جوهرة نيرة، كتاب الصلوة، باب الجنائز، ص١٣٨ و غنية المتملى، فصل فى الجنائز، ص٥٨٧)

जनाज़े की पूरी जमाअ़त न मिले तो ?

❁ मस्बूक़ (या'नी जिस की बा'ज़ तक्बीरें फ़ौत हो गईं वोह) अपनी बाक़ी तक्बीरें इमाम के सलाम फेरने के बा'द कहे और अगर येह अन्देशा हो कि दुआ़ वग़ैरा पढ़ेगा तो पूरी करने से क़ब्ल लोग जनाज़े को कन्धे तक उठा लेंगे तो सिर्फ़ तक्बीरें कह ले दुआ़ वग़ैरा छोड़ दे।

(درالمختار معه رد المحتار، كتاب الصلوة، باب صلاة الجنازة،٣/١٣٦)

❁ चौथी तक्बीर के बा'द जो शख़्स आया वोह (जब तक इमाम ने सलाम नहीं फेरा) शामिल हो जाए और इमाम के सलाम के बा'द तीन बार "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहे, (درالمختار معه رد المحتار، كتاب الصلوة،باب صلاة الجنازة،٣/١٣٦) फिर सलाम फैर दे।

जूते पर खड़े हो कर जनाज़ा पढ़ना

❁ जूता पहन कर अगर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें तो जूते और ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है और जूता उतार कर उस पर खड़े हो कर पढ़ें तो जूते के तले और ज़मीन का पाक होना ज़रूरी नहीं।

www.dawateislami.net

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं :

"अगर वोह जगह पेशाब वग़ैरा से नापाक थी या जिन के जूतों के तले नापाक थे और इस ह़ालत में जूता पहने हुवे नमाज़ पढ़ी उन की नमाज़ न हुई, एह़तियात़ येही है कि जूता उतार कर उस पर पाउं रख कर नमाज़ पढ़ी जाए कि ज़मीन या तला अगर नापाक हो तो नमाज़ में ख़लल न आए।" (फ़तावा रज़विय्या, 9/188)

जनाज़े में कितनी सफ़ें हों

❁ बेहतर येह है कि जनाज़े में तीन सफ़ें हों कि ह़दीसे पाक में है : "जिस की नमाज़े (जनाज़ा) तीन सफ़ों ने पढ़ी उस की मग़फ़िरत हो जाएगी।" अगर कुल सात ही आदमी हों तो एक इमाम बन जाए अब पहली सफ़ में तीन खड़े हो जाएं दूसरी में दो और तीसरी में एक। (غنية المتملی، فصل فی الجنائز، ص٥٨٨)

❁ जनाज़े में पिछली सफ़ तमाम सफ़ों से अफ़्ज़ल है।

(درالمختار معه ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ٣/١٣١)

जनाज़े से मुतअ़ल्लिक़ मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल

❁ इमाम ने पांच तक्बीरें कहीं तो पांचवीं तक्बीर में मुक़्तदी इमाम की मुताबअ़त न करे बल्कि चुप खड़ा रहे जब इमाम सलाम फेरे तो उस के साथ सलाम फेर दे।

❁ जो शख़्स जनाज़े के साथ हो उसे बिग़ैर नमाज़ पढ़े वापस न होना

www.dawateislami.net

चाहिये और नमाज़ के बा'द औलियाए मय्यित से इजाज़त ले कर वापस हो सकता है और दफ़्न के बा'द इजाज़त की ह़ाजत नहीं।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الخامس فی الصلاۃ علی المیت، ۱/۱۶۵)

۞ अगर कोई कुंवें में गिर कर मर गया या उस के ऊपर मकान गिर पड़ा और मुर्दा निकाला न जा सका तो उसी जगह उस की नमाज़ पढ़ें।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی تعظیم اولی الامر واجب، ۳/۱۴۷)

۞ जनाज़े के साथ पैदल चलना अफ़्ज़ल है और सुवारी पर हो तो आगे चलना मकरूह और आगे हो तो जनाज़े से दूर हो।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ، ۱/۱۶۲ وصغیری شرح منیۃ المصلی، فصل فی الجنائز، ص ۲۹۲)

۞ अगर लोग बैठे हों और नमाज़ के लिये वहां जनाज़ा लाया गया तो जब तक रखा न जाए खड़े न हों।

(درالمختار مع رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۶۰)

۞ अगर किसी जगह बैठे हों और वहां से जनाज़ा गुज़रा तो खड़ा होना ज़रूरी नहीं, हां जो शख़्स साथ जाना चाहता है वोह उठे और जाए।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ، ۱/۱۶۲)

۞ जब जनाज़ा रखा जाए तो यूं न रखें कि क़िब्ला को पाउं हों या सर बल्कि आड़ा रखें कि दाहिनी करवट क़िब्ला को हो।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ، ۱/۱۶۲)

۞ जनाज़े पर जो चादर डाली जाए वोह क़ुरआनी आयतों वाली न हो तो बेहतर है क्यूंकि बा'ज़ औक़ात येह चादर पैरों तक चली जाती है।

www.dawateislami.net

❁ जनाज़े के जुलूस में सब इस्लामी भाई मिल कर इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़सीदए दुरूद "का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद" पढ़ें। (इस के इलावा भी ना'तें वग़ैरा पढ़ें मगर सिर्फ़ और सिर्फ़ अकाबिर उ़लमाए अहले सुन्नत[1] ही का कलाम पढ़ा जाए) (मदनी वसिय्यत नामा, स. 5)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने रिसाले "मुर्दे के सदमे" में जनाज़े के कुछ मदनी फूल तह़रीर फ़रमाए हैं इन्हें भी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

"जनाज़ा बाइसे इ़ब्रत है" (उर्दू) के पन्द्रह हुरूफ़ की निस्बत से जनाज़े के 15 मदनी फूल

❁ **4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :** ﴾1﴿ जिसे किसी जनाज़े की ख़बर मिले वोह अहले मय्यित के पास जा कर उन की ता'ज़ियत करे **अल्लाह** तआ़ला

1 .....अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा 237 पर फ़रमाते हैं : "आ़फ़िय्यत इसी में है कि मुस्तनद उ़लमाए अहले सुन्नत का कलाम सुना जाए।" उर्दू कलाम सुनने (पढ़ने) के लिये मश्वरतन "ना'ते रसूल" के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात अस्माए गिरामी ह़ाज़िर हैं : ﴾1﴿ इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن (**ह़दाइक़े बख़्शिश**) ﴾2﴿ उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان (**ज़ौक़े ना'त**) ﴾3﴿ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रते मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (**क़बालए बख़्शिश**) ﴾4﴿ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (**सामाने बख़्शिश**) ﴾5﴿ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان (**बयाज़े पाक**) ﴾6﴿ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی (**रियाज़ुन्नई़म**) ﴾7﴿.... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان (**दीवाने सालिक**)।"

नीज़ इ़श्क़ो मह़ब्बत की चाश्नी से तर बतर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का कलाम "**वसाइले बख़्शिश**"

www.dawateislami.net

उस के लिये एक क़ीरात़ सवाब लिखे, फिर अगर जनाज़े के साथ जाए तो अल्लाह तआ़ला दो क़ीरात़ अज्र लिखे, फिर उस पर नमाज़ पढ़े तो तीन क़ीरात़, फिर दफ़्न में ह़ाज़िर हो तो चार और हर क़ीरात़ कोहे उहुद (या'नी उहुद पहाड़) के बराबर है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/401 وعمدة القاری، کتاب الایمان، باب اتباع الجنائز من الایمان، ۱/۴۰۰، تحت الحدیث۴۷)

《2》 मुसलमान के मुसलमान पर छे हुक़ूक़ हैं, (उन में से एक येह है कि) जब फ़ौत हो जाए तो उस के जनाज़े में शरीक हो (مسلم، کتاب السلام، باب من حق المسلم للمسلم رد السلام، ص ۱۱۹۲، حدیث ۲۱۶۲ ملخصًا)

《3》 जब कोई जन्नती शख़्स फ़ौत हो जाता है, तो अल्लाह तआ़ला ह़या फ़रमाता है कि उन लोगों को अ़ज़ाब दे जो उस का जनाज़ा ले कर चले और जो उस के पीछे चले और जिन्हों ने उस की नमाज़े जनाज़ा अदा की। (فردوس بمأثور الخطاب، ۱/۲۸۲، حدیث ۱۱۰۸)

《4》 बन्दए मोमिन को मरने के बा'द सब से पहली जज़ा येह दी जाएगी कि उस के तमाम शुरकाए जनाज़ा की बख़्शिश कर दी जाएगी। (مسند البزار، ۱۱/۸۶، حدیث۴۷۹۶)

जनाज़े का साथ देने का सवाब

۞ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने मह़ज़ तेरी रिज़ा के लिये जनाज़े का साथ दिया, उस की जज़ा क्या है ? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : जिस दिन वोह मरेगा, फ़िरिश्ते उस के जनाज़े के हमराह चलेंगे और मैं उस की मग़फ़िरत करूंगा। (شرح الصدور، باب مشی الملئکة...الخ، ص۹۷)

जनाज़ा देख कर पढ़ने का विर्द

۞ ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? कहा : एक कलिमे की वज्ह से बख़्श दिया जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जनाज़ा देख कर कहा करते थे। (वोह कलिमा येह है) سُبۡحٰنَ الۡحَیِّ الَّذِیۡ لَایَمُوۡتُ (या'नी वोह ज़ात पाक है जो ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी) लिहाज़ा मैं भी जनाज़ा देख कर येही कहा करता था, येह कलिमा (कहने) के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।

(احیاء العلوم، کتاب ذکرالموت ومابعدہ،باب منامات المشائخ،٥/٢٦٦ملخصًا)

❁ जनाज़े में रिज़ाए इलाही, फ़र्ज़ की अदाएगी, मय्यित और उस के अ़ज़ीज़ों की दिलजूई वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतों से शिर्कत करनी चाहिये।

❁ जनाज़े के साथ जाते हुवे अपने अन्जाम के बारे में सोचते रहिये कि जिस त़रह़ आज इसे ले चले हैं, इसी त़रह़ एक दिन मुझे भी ले जाया जाएगा, जिस त़रह़ इसे मनो मिट्टी तले दफ़्न किया जाने वाला है, इसी त़रह़ मेरी भी तदफ़ीन अ़मल में लाई जाएगी। इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करना इ़बादत और कारे सवाब है।

❁ जनाज़े को कन्धा देना कारे सवाब है, सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जनाज़ा उठाया था।

(طبقات کبریٰ لابن سعد،٣/٣٢٩ و بنایۃ،کتاب الصلوۃ،باب الجنائز، فصل فی حمل الجنازۃ،٣/٢٤٢ملخصًا)

जनाज़े को कन्धा देने का सवाब

❁ ह़दीसे पाक में है : "जो जनाज़ा ले कर चालीस क़दम चले उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे।" नीज़ ह़दीस शरीफ़ में है :

www.dawateislami.net

"जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ह़तमी (या'नी मुस्तक़िल) मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।"

(جوهرة نيرة ، كتاب الصلوة، باب الجنائز، ص ١٣٩ و درمختارمعه رد المحتار، كتاب الصلوة،باب صلاة الجنائز، مطلب: فی حمل الميت، ٣/١٥٨ व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/823)

जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा

❁ सुन्नत येह है कि यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस-दस क़दम चले। पूरी सुन्नत येह है कि पहले सीधे सिरहाने कन्धा दे फिर सीधी पाईंती (या'नी सीधे पाउं की त़रफ़) फिर उल्टे सिरहाने फिर उल्टी पाईंती और दस-दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुवे। (عالمگيری،كتاب الصلوة،باب الحادی و العشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازة، ١/١٦٢ व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/822)

बा'ज़ लोग जनाज़े के जुलूस में ए'लान करते रहते हैं :

"दो-दो क़दम चलो !"

उन को चाहिये कि इस त़रह़ ए'लान किया करें :

"दस-दस क़दम चलो !"

एह़तियात़ फ़रमाएं

❁ जनाज़े को कन्धा देते वक़्त जान बूझ कर ईज़ा देने वाले अन्दाज़ में लोगों को धक्के देना जैसा कि बा'ज़ लोग किसी शख़्सिय्यत के जनाज़े में करते हैं येह नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

www.dawateislami.net

बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा

❁ छोटे बच्चे का जनाज़ा अगर एक शख़्स हाथ पर उठा कर ले चले तो ह़रज नहीं और यके बा'द दीगरे लोग हाथों में लेते रहें।

(عالمگیری، کتاب الصلوۃ،باب الحادی و العشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ،۱/۱۶۲)

औ़रतों को (बच्चा हो या बड़ा किसी के भी) जनाज़े के साथ जाना नाजाइज़ व ममनूअ़ है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/823)

(ودرالمختارمعہ رد المحتار،کتاب الصلوۃ، باب صلاۃ الجنائز، مطلب: فی حمل المیت، ۱۶۲/۳)

क्या शोहर बीवी के जनाज़े को कन्धा दे सकता है ?

❁ शोहर अपनी बीवी के जनाज़े को कन्धा भी दे सकता है, क़ब्र में भी उतार सकता है और मुंह भी देख सकता है सिर्फ़ ग़ुस्ल देने और बिला ह़ाइल बदन को छूने की मुमानअ़त है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/813)

❁ जनाज़े के साथ बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा या कलिमए शहादत या ह़म्दो ना'त वग़ैरा पढ़ना जाइज़ है।

(देखिये : फ़तावा रज़विय्या, 9/139 ता 158)

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो !

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

www.dawateislami.net

क़ब्र व दफ़्न का बयान

मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और दफ़्न करने से मुराद येह है कि गढ़ा खोद कर उस में मय्यित रखें और ऊपर तख़्ते लगा कर मिट्टी भर दें येह जाइज़ नहीं कि मय्यित को ज़मीन पर रख दें और चारों त़रफ़ से दीवारें क़ाइम कर के बन्द कर दें।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر والدفن...الخ، ۱/۱۶۵ و ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/۱۶۳)

क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में सब से पहली मन्ज़िल है अगर येह आसान हो गई तो इस के बा'द वाली मन्ज़िलें इस से आसान होंगी और अगर यहां मुश्किल हुई तो आगे इस से भी ज़ियादा मुश्किल मुआ़मला होगा लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है जो अपनी मौत और क़ब्र में उतरने को याद करे और अभी से इस के लिये तय्यारी करे।

(ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحزن والبکاء، ۴/۴۶۶، حدیث ۴۱۹۵)

इस के लिये तय्यारी करो

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्र के किनारे बैठे और इतना रोए कि आप की चश्माने अक़्दस (या'नी पाकीज़ा आंखों) से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम (या'नी गीली) हो गई। फिर फ़रमाया : इस (क़ब्र) के लिये तय्यारी करो। (ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحزن والبکاء، ۴/۴۶۶، حدیث ۴۱۹۵)

www.dawateislami.net

क़ब्र में मेरे साथ कोई भी न होगा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आंसूओं से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रीश (या'नी दाढ़ी) मुबारक तर हो जाती। (ترمذی، کتاب الزھد، ۱۳۸/٤، حدیث۲۳۱۵)

अल मवाइ़ज़ुल उ़स्फ़ूरिय्या में इस ह़िकायत को क़द्रे तफ़्सील से बयान किया गया है और उस में कुछ यूं भी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्र को देख कर बहुत ज़ियादा रोने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : मुझे अपनी तन्हाई याद आ जाती है क्यूंकि क़ब्र में मेरे साथ लोगों में से कोई भी न होगा (फिर नेकी की दा'वत के मदनी फूल इनायत करते हुवे) फ़रमाया : जिस के लिये उस की दुन्या क़ैदख़ाना है उस के लिये उस की क़ब्र जन्नत और जिस के लिये उस की दुन्या जन्नत है उस की क़ब्र उस के लिये क़ैद ख़ाना है, जिस के लिये दुन्या की ज़िन्दगी बत़ौरे क़ैद थी मौत उस की रिहाई का पैग़ाम है, जिस ने दुन्या में नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क किया वोह आख़िरत में पूरा पूरा ह़िस्सा पाएगा, बेहतर शख़्स वोह है जो कि इस से पहले कि दुन्या उसे छोड़े वोह ख़ुद दुन्या को छोड़ चुका हो और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मिलने से क़ब्ल उस से राज़ी हो गया हो। हर शख़्स की क़ब्र का मुआ़मला उस की दुन्यवी ज़िन्दगी के मुत़ाबिक़ है या'नी नेकियों में ज़िन्दगी गुज़ारी तो क़ब्र में राह़तें और अगर बदियां करते हुवे मरा तो हलाकतें ही हलाकतें। (مواعظہ حسنہ، ص ٦١)

www.dawateislami.net

क़ब्र का मय्यित से ख़िताब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है : ऐ इन्सान ! तुझ पर अफ़्सोस है तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला था ? क्या तुझे मा'लूम नहीं था कि मैं आज़माइशों, तारीकियों, तन्हाई और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, जब तू मुझ पर से आगे पीछे क़दम रखता गुज़रा करता था तो तुझे कौन सा ग़ुरूर घेरे होता था ? अगर मय्यित नेक होती है तो उस की त़रफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है क्या तुझे मा'लूम नहीं है येह शख़्स नेकियों का हुक्म देता और बुराइयों से रोका करता था । क़ब्र कहती है : तब तो मैं इस के लिये सब्ज़े में तब्दील हो जाऊंगी, इस का जिस्म नूरानी बन जाएगा और इस की रूह़ अल्लाह तआ़ला के क़ुर्बे रह़मत में जाएगी ।

(مکاشفۃ القلوب، الباب الخامس والاربعون فی بیان القبر وسؤالہ،ص١٧٠ و معجم کبیر، ٢٢/٣٧٧،حدیث٩٤٢)

तू ने इ़ब्रत क्यूं न ह़ासिल की ?

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सबीह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब आदमी को क़ब्र में रखा जाता है और उसे अ़ज़ाब दिया जाता है तो उस के क़रीबी मुर्दे कहते हैं : ऐ अपने भाइयों और हमसायों के बा'द दुन्या में रहने वाले ! क्या तू ने हमारे जाने से कोई नसीह़त ह़ासिल न की ? और तेरे सामने हमारा मर कर क़ब्रों में दफ़्न हो जाना कोई क़ाबिले ग़ौर बात न थी ? तू ने हमारी मौत से हमारे आ'माल ख़त्म होते देखे ? लेकिन तू ज़िन्दा रहा और तुझे अ़मल करने की मोहलत दी गई, मगर तू ने उस मोहलत को ग़नीमत न

www.dawateislami.net

जाना और नेक आ'माल न किये और उस से ज़मीन का वोह टुकड़ा कहता है : ऐ दुन्या के ज़ाहिर पर इतराने वाले ! तू ने अपने उन रिश्तेदारों से इ़ब्रत क्यूं न ह़ासिल की जो दुन्यावी ने'मतों पर इतराया करते थे मगर वोह तेरे सामने मेरे पेट में गुम हो गए, उन की मौत उन्हें क़ब्रों में ले आई और तू ने उन्हें कन्धों पर सुवार उस मन्ज़िल की त़रफ़ आते देखा कि जिस से कोई राहे फ़रार नहीं है।

(مکاشفة القلوب، الباب الخامس والاربعون فی بیان القبر و سؤاله، ص ١٧٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे क़ब्र के अन्दरूनी ह़ालात पर ख़ूब ग़ौर फ़रमाया करते हैं और अफ़्सोस ! हम बारहा क़ब्रें देखते हैं मगर इ़ब्रत नहीं पकड़ते। काश ! हम भी सन्जीदगी से ग़ौर करने वाले बनें। अपना मुह़ासबा करें कि क़ब्रो आख़िरत के लिये क्या तय्यारी की है और जो ज़िन्दगी बाक़ी है उसे कैसे गुज़ारनी है ? आइये अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी नेकियों में गुज़ारने, गुनाहों से ताइब होने और तौबा पर इस्तिक़ामत पाने और ख़ुद को क़ब्रो ह़श्र की हौलनाकियों से बचाने की कोशिश करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, नेकी की दा'वत के मदनी कामों में भरपूर ह़िस्सा लीजिये, मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब फ़रमाते रहिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तदफ़ीन में शिर्कत की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो जनाज़े में शामिल हो और तदफ़ीन तक साथ रहे तो वोह अ़ज़ीमुश्शान सवाब का ह़क़दार होगा चुनान्चे,

तीन क़ीरात़ का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जनाज़े के साथ चला और तदफ़ीन तक साथ रहा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ऐसे तीन क़ीरात़ सवाब लिखेगा जिन में से हर क़ीरात़ जबले उहुद से बड़ा होगा । (معجم اوسط للطبرانی، من اسمه هاشم،٦/٤٢٩، حدیث٩٢٩٢)

क़ब्र की क़िस्में

बनावट के ए'तिबार से क़ब्र की दो क़िस्में हैं :

《1》 लह़्द (या'नी बग़ली क़ब्र) 《2》 शक़ (या'नी सन्दूक़)

《1》 लह़्द

इसे बग़ली क़ब्र भी कहते हैं । इस के तय्यार करने का त़रीक़ा येह है कि सन्दूक़ नुमा गढ़ा खोद कर उस में क़िब्ला की त़रफ़ दीवार में इतनी जगह खोदें जिस में मय्यित को बा आसानी रखा जा सके । ख़याल रहे लह़्द सिर्फ़ सख़्त ज़मीन में ही बनाई जा सकती है नर्म ज़मीन में नहीं बन सकती ।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ शक़

येह सन्दूक़ नुमा गढ़ा खोद कर तय्यार की जाती है और आ़म तौ़र पर हमारे यहां येही राइज है, लह़द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और नर्म ज़मीन हो तो सन्दूक़ में ह़रज नहीं।

(عالمگیری،کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر والدفن...الخ،١/ ١٦٥)

लह़द

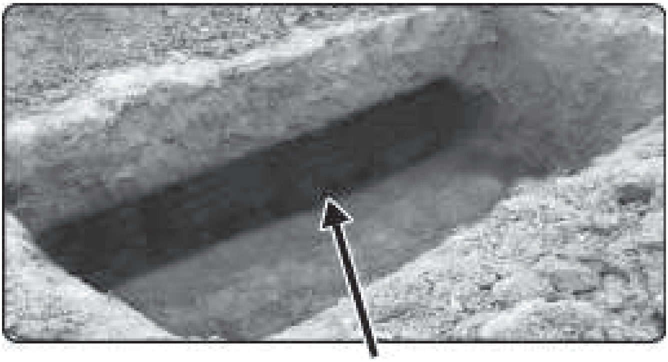

क़िब्ला की जानिब दीवार में मय्यित रखने का त़ाक़

शक़

जन्नतुल बक़ीअ़ में लह़द पाने वाले मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी

मरना तो हर एक को है यक़ीनन मौत आ कर ही रहेगी लेकिन जिसे मदीने में मौत आए और फिर जन्नतुल बक़ीअ़ में लह़द बन जाए तो

www.dawateislami.net

उस के क्या कहने ! ह़दीसे पाक में है : तुम में से जिस से हो सके कि वोह मदीने में मरे तो उसे चाहिये कि वोह मदीने ही में मरे क्यूंकि जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा और उस के ह़क़ में गवाही दूंगा।

(شعب الایمان،باب فی المناسك،فضل الحج و العمرة،٣/٤٩٧،حديث١٤٨٢)

मौत ले कर आ जाती ज़िन्दगी मदीने में मौत से गले मिल कर ज़िन्दगी से मिल जाता

अहले बक़ीअ़ की फ़ज़ीलत से मुतअ़ल्लिक़ मेरे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : सब से पहले मेरी क़ब्र खुलेगी, फिर अबू बक्र फिर उ़मर की क़ब्रें खुलेंगी फिर मैं अहले बक़ीअ़ के पास आऊंगा तो वोह भी अपनी क़ब्रों से निकलेंगे और वोह मेरे साथ होंगे।

(مستدرك حاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب فضيلة الشيخين... الخ،٤/١٣،حديث٤٤٨٦)

जन्नतुल बक़ीअ़ मदीनए मुनव्वरा का वोह क़दीम और बा बरकत क़ब्रिस्तान है जहां कमो बेश दस हज़ार सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मुक़द्दस मज़ारात हैं और येह जन्नतुल बक़ीअ़ आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन की सीध में है यहां जिसे मदफ़न नसीब हो जाए तो उस के मुक़द्दर की रिफ़्अ़त का क्या पूछना ! ऐसी अ़ज़ीम सआ़दत पाने के लिये हर आ़शिक़ का दिल बे क़रार रहता है और येही तमन्ना होती है

काश दश्ते त़ैबा में, मैं भटक के मर जाता
फिर बक़ीए़ ग़र्क़द (1) में दफ़्न कोई कर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 155)

---

(1).....**जन्नतुल बक़ीअ़** को **बक़ीउ़ल ग़र्क़द** भी कहते हैं, अ़रबी में **बक़ीअ़** दरख़्त वाले मैदान को कहा जाता है, **ग़र्क़द** एक ख़ास दरख़्त का नाम है चूंकि इस मैदान में पहले ग़र्क़द के दरख़्त थे इसी लिये इस जगह का नाम **बक़ीउ़ल ग़र्क़द** हो गया।

(मिरआतुल मनाजीह, क़ब्रों की ज़ियारत, 2/525)

www.dawateislami.net

यक़ीनन क़ाबिले रश्क हैं वोह खुशबख़्त आ़शिक़ाने रसूल जिन्हें मदीने में मरना नसीब हुवा और जन्नतुल बक़ीअ़ जिन का मदफ़न बना, अगर आप भी मए इ़श्क़े रसूल के जाम भर भर कर पीना, यादे मदीना में तड़पने का क़रीना सीखना, मदीने में मरने की और बक़ीए़ पाक में दफ़्न होने की तड़प बढ़ाना चाहते हैं तो आइये दा'वते इस्लामी के मदनी माहो़ल से वाबस्ता हो जाइये, मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये कि मुआ़शरे के वोह अफ़राद जो गुनाहों की दलदल में धंसे हुवे थे दा'वते इस्लामी में आ कर अपने गुनाहों से ताइब हो गए, जो कभी मस्जिद का रुख़ न करते थे वोह मस्जिदें आबाद रखने वाले बन गए, जो कभी सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक न होते थे, वोह सुन्नतों का दर्स देने वाले मुबल्लिग़ बन गए। आइये एक खुश नसीब आ़शिक़े रसूल मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुह़म्मद इरफ़ान अ़त्त़ारी का वाक़िआ़ सुनिये जो दा'वते इस्लामी के मदनी माहो़ल से वाबस्ता तो क्या हुवे उन की तक़्दीर ही चमक उठी। मदीने में मरने और बक़ीए़ पाक में दफ़्न होने की सच्ची तड़प ने उन्हें बिल आख़िर आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों में पहुंचा ही दिया। चुनान्चे,

बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े नया आबाद (लियारी) के इस्लामी भाई, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी और डिवीज़न क़ाफ़िला ज़िम्मेदार मुह़म्मद इरफ़ान अ़त्त़ारी एक बा अख़्लाक़ और मिलन सार इस्लामी भाई थे। उन्हें मदनी कामों का बड़ा जज़्बा था। मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के मिस्दाक़ अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर पाबन्दी से अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ख़ूब मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करते और इस्लामी भाइयों को भी सफ़र की तरग़ीब

www.dawateislami.net

दिलाते, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के भी पाबन्द थे। उन का मा'मूल था कि नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद जाते हुवे इस्लामी भाइयों को नमाज़ की दा'वत देते। उन्हों ने यकमुश्त 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में भी सफ़र फ़रमाया और ख़ूब नेकी की दा'वत की धूमें मचाईं। घर में उन का किरदार पसन्दीदा और मिसाली था। घर के तमाम अफ़राद उन से मह़ब्बत करते। इरफ़ान भाई उन पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें भी नेकी की दा'वत पेश करते, चुनान्चे, उन की तरग़ीब पर उन के बड़े भाई ने 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत पाई। नेकी की दा'वत की धूमें मचाने और सुन्नतें आ़म करने का जज़्बा ले कर इरफ़ान अ़त्तारी ने आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मोज़म्बीक़ (अफ़्रीक़ा) के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत पाई और कमो बेश 25 माह वहीं मुक़ीम रहे। इस दौरान मुतअ़द्दिद ग़ैर मुस्लिमों को दाइरए इस्लाम में दाख़िल करने की सआ़दत ह़ासिल हुई ह़त्ता कि फ़ैज़ाने मदीना (मोज़म्बीक़) की ता'मीरात के दौरान भी बा'ज़ ग़ैर मुस्लिमों ने उन के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया।

सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते करते फिर वोह दिन भी आया कि सच मुच उन्हें सफ़रे मदीना का मुज़्दा मिला, ग़म ख़्वार आक़ा की बारगाह से जब बुलावा आया तो **लब्बैक** कहते हुवे (सआ़दते उ़मरह पाने) सूए ह़रमैने त़य्यिबैन रवाना हो गए (वालिदा और ज़ौजा भी हमराह थीं) मक्कए मुकर्रमा में उ़मरह अदा करने और कुछ दिन क़ियाम के बा'द मदीने के लिये रवाना हुवे। अब येह मदीनए त़य्यिबा में थे, वहां की पुरकैफ़ पुरसोज़ मुअ़त्तर व मुअ़म्बर फ़ज़ाओं में। जब रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी का वक़्त आया तो धड़कते दिल के साथ बा अदब ह़ाज़िरी की सआ़दत पाई। अभी मदीने ही में क़ियाम था कि इस दौरान बीमार हो गए और तेज़ बुख़ार की वज्ह से त़बीअ़त ज़ियादा नासाज़ हो गई।

www.dawateislami.net

ज़ोहर की नमाज़ अदा करने के बा'द रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाथ उठाए मुनाजात में मश्ग़ूल कुछ इस त़रह़ अ़र्ज़ कर रहे थे : या **अल्लाह** ! मुझे अब यहां से वापस नहीं जाना मैं यहीं मरूं मेरा मदफ़न जन्नतुल बक़ीअ़ हो। दुआ़ के बा'द आराम करने के लिये लेट गए लेकिन उन की दुआ़ बारगाहे इलाही में मक़्बूल हो चुकी थी चुनान्चे, उन पर बेहोशी त़ारी हो गई जब अस्पताल ले जाने के लिये इस्लामी भाई उठाने लगे तो उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से या रसूलल्लाह कहा और कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर फिर बेहोश हो गए और फिर उसी बेहोशी के आ़लम में रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई। उन की नमाज़े जनाज़ा गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वों में अदा की गई और जन्नतुल बक़ीअ़ में तदफ़ीन हुई।

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।* اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्र की लम्बाई चौड़ाई कितनी हो ?

❁ क़ब्र की लम्बाई मय्यित के क़द से कुछ ज़ाइद हो और चौड़ाई आधे क़द की और गहराई कम से कम निस्फ़ क़द की और बेहतर येह कि गहराई भी क़द बराबर हो[1] और मुतवस्सित़ दरजा येह कि सीने तक हो। इस से मुराद येह कि लह़्द या सन्दूक़ इतना हो, येह नहीं कि जहां से खोदनी शुरूअ़ की वहां से आख़िर तक येह मिक़्दार हो। (फ़तावा रज़विय्या, 9/370 و ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: فی دفن المیت، ٣/ ١٦٤)

[1]..... क़ब्र मय्यित के क़द बराबर खोदना ज़ियादा बेहतर है क्यूंकि अगर जिस्म गल सड़ गया तो उस की बद बू फैलने से बचाव होगा और गहराई की वज्ह से गोश्तख़ोर जानवर बिज्जू (Badger) से हिफ़ाज़त भी होगी (इसे गोरखोदिया भी कहते हैं येह बा'ज़ औक़ात क़ब्र में सुराख़ कर के घुस जाता और गोश्त खा जाता है)। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام....

www.dawateislami.net

क़ब्र अन्दर से कैसी हो ?

❁ क़ब्र के अन्दर की दीवारें वग़ैरा कच्ची मिट्टी की हों, आग की पकी हुई ईंटें इस्ति'माल न की जाएं अगर अन्दर में पकी हुई ईंट की दीवारें ज़रूरी हों तो फिर अन्दरूनी हिस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी त़रह़ लीप दिया जाए।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/ ۱٦۷ وعالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر والدفن...الخ، ۱/ ۱٦٦)

❁ क़ब्र के अन्दर चटाई वग़ैरा बिछाना नाजाइज़ है कि बे सबब माल ज़ाएअ़ करना है। (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/ ۱٦٤)

❁ मुमकिन हो तो अन्दरूनी तख़्तों पर यासीन शरीफ़, सूरतुल मुल्क और दुरूदे ताज पढ़ कर दम कर दिया जाए। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 4)

तदफ़ीन की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की तदफ़ीन में हिस्सा लूंगा ❁ फ़र्ज़े किफ़ाया अदा करूंगा

.....ने क़ब्र गहरी खोदने को पसन्द फ़रमाया और इस की तरग़ीब दिलाई है चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ السَّامِی फ़रमाते हैं : अगर क़ब्र को ज़ियादा गहरा कर के मय्यित के क़द बराबर किया तो ज़ियादा अच्छा किया इस त़रह़ गहरा करने का मक़्सद बू रोकने और दरिन्दों के उखाड़ने से बचाने में मुबालग़ा है। (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/۱٦٤) मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़ब्र गहरी करना सुन्नत है इस लिये कि इस में मय्यित को गोश्तख़ोर जानवर **बिज्जू** से बचाना है।

(اشعۃ اللمعات، کتاب الجنائز، باب دفن المیّت، ۱/ ۷۳۹)

www.dawateislami.net

❁ ह़क़्क़े मुस्लिम की अदाएगी करूंगा ❁ क़ब्रिस्तान की दुआ़ पढूंगा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَ لَكُمْ وَاَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ ❁ मुमकिन हुवा तो दूसरों को भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ाऊंगा ❁ पाउं ज़ख़्मी होने या ईज़ा का अन्देशा न हुवा तो क़ब्रिस्तान में नंगे पाउं चलूंगा ❁ क़ब्र पर पाउं रखने और बैठने से बचूंगा और मुमकिन हुवा तो नर्मी से समझा कर दूसरों को भी बचाऊंगा ❁ बे जा गुफ़्त्गू और हंसी मज़ाक़ से परहेज़ करूंगा ❁ मौक़अ़ की मुनासबत से लोगों को इकठ्ठा कर के नेकी की दा'वत पेश करूंगा ❁ मौत और क़ब्र में उतरने को याद कर के ख़ुद को और दूसरों को इ़ब्रत दिलाऊंगा ❁ मर्ह़ूम और तमाम मोमिनीन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करूंगा ❁ ईसाले सवाब भी करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तदफ़ीन का त़रीक़ा

जनाज़ा क़ब्र के क़रीब क़िब्ले की जानिब रखिये कि मुस्तह़ब है और मय्यित को क़िब्ले की जानिब ही से क़ब्र में उतारें, क़ब्र की पाईंती (या'नी पाउं की जानिब वाली जगह) रख कर सर की त़रफ़ न लाएं।

(در المحتار معه رد المحتار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ١٦٦/٣)

❁ ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन और बेहतर येह है कि क़वी और नेक आदमी क़ब्र में उतरें। औ़रत की मय्यित मह़ारिम उतारें या'नी वोह जिन से उस औ़रत का निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम था जैसे भाई, बेटा, बाप वग़ैरा। येह न हों तो दीगर रिश्तेदार, येह भी न हों तो परहेज़गारों से उतरवाएं।

(عالمگیری، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر والدفن...الخ، ١٦٦/١ ملخصًا)

www.dawateislami.net

❁ औ़रत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ता लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें । (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/ ۱۶۸ وجوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۴۰)

❁ क़ब्र में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه

(تنویر الابصار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ،۳/۱۶۶)

❁ मय्यित को सीधी करवट पर इस त़रह़ लिटाएं कि उस का मुंह और सीना क़िब्ले की त़रफ़ हो जाए ।

(درالمختار معہ رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۶۶ ملتقطًا)

❁ इस का आसान त़रीक़ा येह है कि मय्यित की पीठ के नीचे नर्म मिट्टी या रैते का तक्या सा बना दें और हाथ को करवट से अलग रखें । जहां इस में दिक़्क़त हो तो चित लिटा कर मुंह क़िब्ले को कर दें अब अक्सर येही मा'मूल है । (फ़तावा रज़विय्या, 9/371 मुल्तक़त़न)

❁ अगर مَعَاذَاللّٰه مَعَاذَاللّٰه मुंह ग़ैरे क़िब्ला की त़रफ़ रहा और ऐसा सख़्त हो गया कि फिर नहीं सकता तो छोड़ दें और ज़ियादा तक्लीफ़ न दें ।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/372)

❁ कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं और न खोली तो भी ह़रज नहीं ।
(درالمختار معہ رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ،۳/۱۶۷ و جوھرۃ نیرۃ، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۴۰)

www.dawateislami.net

❁ अलबत्ता जहां कफ़न की बन्दिश खोलने से सत्र खुलने और औ़रत की बे पर्दगी का अन्देशा हो तो हरगिज़ खोलने की इजाज़त नहीं।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ अगर मय्यित का मुंह देखने के लिये कि क़िब्ला की जानिब हुवा या नहीं, औ़रत का चेहरा खुलवाने की ह़ाजत हो तो येह एह़तियात़ मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रहे कि किसी ना मह़रम की नज़र चेहरे पर न पड़े।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

कफ़न की गिरह खोलने वाला येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَہٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَہٗ.

(طحطاوی علی مراقی الفلاح، کتاب الصلوۃ، باب احکام الجنائز، فصل فی حملھا و دفنھا، ص۶۰۹)

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस के अज्र से मह़रूम न कर और हमें इस के बा'द फ़ित्ने में न डाल।

❁ क़ब्र कच्ची ईंटों से बन्द कर दें अगर ज़मीन नर्म हो तो (लकड़ी के) तख़्ते लगाना जाइज़ है।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۱۶۷/۳)

❁ ज़हे नसीब ! सादाते किराम अपने रह़मत भरे हाथों क़ब्र में उतार कर اَرْحَمُ الرّٰحِمِین के सिपुर्द करें। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 5)

मिट्टी डालने का त़रीक़ा

❁ ह़ाज़िरीने जनाज़ा में से हर एक के लिये मुस्तह़ब है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। **पहली बार** कहें مِنْھَا خَلَقْنٰکُمْ (हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया) **दूसरी बार** وَفِیْھَا نُعِیْدُکُمْ (और इसी में

www.dawateislami.net

तुम्हें फिर ले जाएंगे) **तीसरी बार** وَ مِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى (और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे) कहें। अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें।

(جوهرة نيرة، كتاب الصلوة، باب الجنائز، ص ١٤١)

❁ जितनी मिट्टी क़ब्र से निकली है उस से ज़ियादा डालना मकरूह है।

(عالمگیری، کتاب الصلوة،الباب الحادی و العشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر والدفن...الخ ١/١٦٦)

❁ हाथ में जो मिट्टी लगी है उसे झाड़ दे या धो डालें इख़्तियार है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/845)

बा'दे तदफ़ीन क़ब्र ढाल वाली बनाएं

❁ क़ब्र ऊंट के कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाएं चोखूंटी (या'नी चार कोनों वाली जैसा कि आज कल तदफ़ीन के कुछ रोज़ बा'द अक्सर ईंटों वग़ैरा से बनाते हैं) न बनाएं।

(ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب:فى دفن الميت، ١٦٩/٣)

❁ क़ब्र एक बालिश्त ऊंची हो या मज़ीद कुछ ज़ियादा।

(ردالمحتار، كتاب الصلاة ، باب صلاة الجنازة، مطلب: فى دفن الميت، ١٦٨/٣)

क़ब्र पर पानी छिड़कना कैसा ?

❁ बा'दे दफ़्न क़ब्र पर पानी छिड़कना मस्नून है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/373)

❁ इस के इ़लावा बा'द में पौदे वग़ैरा को पानी देने की ग़रज़ से छिड़कें तो जाइज़ है। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 15)

❁ बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की क़ब्र पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ मह़्ज़ रस्मी त़ौर पर पानी छिड़कते हैं येह नाजाइज़ और इस्राफ़ है।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/373 मफ़्हूमन)

www.dawateislami.net

۞ क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।

(ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب:فی وضع الجرید...الخ،۳/ ۱۸۴)

क़ब्र में तबर्रुकात रखना बाइसे बरकत है

۞ शजरा या अ़ह्द नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब ताक़ खोद कर उस में रखें बल्कि "दुर्रे मुख़्तार" में कफ़न पर अ़ह्द नामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़्फ़िरत की उम्मीद है और मय्यित के सीने और पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखना जाइज़ है। एक शख़्स ने इस की वसिय्यत की थी, इन्तिक़ाल के बा'द सीना और पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ लिख दी गई फिर किसी ने उन्हें ख़्वाब में देखा, ह़ाल पूछा, कहा : जब मैं क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, फ़िरिश्तों ने जब पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ देखी, कहा : तू अ़ज़ाब से बच गया।

(درالمختارمعہ ردالمحتار،کتاب الصلوۃ، باب صلاۃ الجنائز، ۳/۱۸۵)

यूं भी हो सकता है कि पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ लिखें और सीने पर कलिमए त़य्यिबा "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم"

(ردالمحتار،کتاب الصلوۃ،باب صلاۃ الجنائز،مطلب:فیما یکتب علی کفن المیت،۳/۱۸۶)

۞ अगर गोरकन क़ब्र में ताक़ की तरकीब न बनाए तो येह तबर्रुकात कफ़न के ऊपर रख सकते हैं। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आप में से जिस से बन पड़े वोह ज़रूर क़ब्र में अ़ह्द नामा या शजरा शरीफ़ या दोनों रख दे اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस

www.dawateislami.net

की बरकत से आप के अ़ज़ीज़ की मुश्किलें आसान हो जाएंगी और उसे क़ब्र में राह़तें नसीब होंगी । आइये, ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ! चुनान्चे,

क़ब्र में राह़तें नसीब हुई

ज़म ज़म नगर (ह़ैदराबाद, बाबुल इस्लाम, सिन्ध) से मौसूल होने वाले मक्तूब में कुछ इस त़रह़ तह़रीर था : अगस्त 2004 ईसवी में एक अ़त्त़ारिय्या इस्लामी बहन का इन्तिक़ाल हुवा । उन के इन्तिक़ाल के बा'द उन्हें ग़ुस्ल देने वाली दा'वते इस्लामी की मुबल्लिग़ा इस्लामी बहन ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का अ़त़ाकर्दा रिसाला शजरए क़ादरिय्या रज़विय्या अ़त्त़ारिय्या उन की रिश्तेदार ख़वातीन को देते हुवे उन की क़ब्र में रखने का मश्वरा दिया । चुनान्चे, घर के मर्द अफ़राद के ज़रीए़ शजरए आ़लिय्या उन की क़ब्र में रखवा दिया गया । कुछ अ़र्से बा'द मर्हूमा अपनी एक रिश्तेदार इस्लामी बहन को ख़्वाब में शानदार बिछौने पर बैठी हुई नज़र आईं । वोह बड़ी ख़ुश व ख़ुर्रम दिखाई दे रही थीं । मर्हूमा मुस्कुराते हुवे कुछ यूं कहने लगीं : येह शजरा शरीफ़ ले लो और उन इस्लामी बहन को शुक्रिय्या के साथ वापस कर दो, येह उन की अमानत है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस शजरए (अ़त्त़ारिय्या) की बरकत से मुझे क़ब्र में बहुत सुकून मिला है ।

(शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्त़ारिय्या, स. 169)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सब दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतें हैं जिस ने हमें ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम का जज़्बा दिया आप भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और अपनी क़ब्रो

www.dawateislami.net

आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये और अगर आप सिलसिलए क़ादरिय्या अ़त्त़ारिय्या में बैअ़त हैं[1] तो शजरए अ़त्त़ारिय्या भी अपने साथ (जेब वग़ैरा में) रखने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ खुली आंखों इस की बरकतें देखेंगे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ातिह़ा ख़्वानी और ईसाले सवाब[2]

۞ फ़ातिह़ा ख़्वानी (मुरव्वजा सूरतें और आयतें तिलावत) कर के, हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के वसीले से तमाम अम्बिया व मुर्सलीन, मलाइकए मुक़र्रबीन, सह़ाबा व सह़ाबिय्यात, उम्महातुल मोमिनीन, अहले बैते अत़्हार, शुहदाए किराम व उ़लमाए दीन, औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन को ईसाले सवाब कीजिये फिर तमाम मुसलमान जिन्नो इन्स और ख़ुसूसन मर्हूम (मर्हूमा) को ईसाल कीजिये।

۞ दफ़्न के बा'द सिरहाने सूरए बक़रह का पहला रुकूअ़ الٓمّٓ ता مُفْلِحُوْنَ और क़दमों की त़रफ़ आख़िरी रुकूअ़ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरह तक पढ़ना मुस्तह़ब है।[3] (جوھرۃ نیرۃ ، کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ، ص ۱٤۱)

---

1 .....अगर अभी तक आप किसी जामेए शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुवे तो सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या अ़त्त़ारिय्या में मुरीद बनने का त़रीक़ा सफ़ह़ा नम्बर 355 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

2 .....फ़ातिह़ा से पहले ह़ाज़िरीन को मुतवज्जेह करने के लिये तिलावत का ए'लान कीजिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का तह़रीर कर्दा येह ए'लान किताब के आख़िर में इस उ़नवान से है : **"तिलावत से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये"**

3 .....सूरए बक़रह के येह दोनों रुकूअ़ सफ़ह़ा नम्बर 330 और 331 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

❁ क़ब्र के सिरहाने क़िब्ला रू खड़े हो कर अज़ान दीजिये कि मय्यित के लिये निहायत नफ़्अ़ बख़्श है। (फ़तावा रज़विय्या, 5/370 माख़ूज़न)

बा'दे तदफ़ीन तल्क़ीन का बयान

❁ अब तल्क़ीन कीजिये कि सुन्नत है, ह़दीसे पाक में है : जब तुम्हारा कोई मुसलमान भाई मरे और उस को मिट्टी दे चुको तो तुम में एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सुनेगा और जवाब न देगा। फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा। फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह कहेगा : "हमें इरशाद कर, **अल्लाह** तआ़ला तुझ पर रह़्म फ़रमाए" मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती। फिर कहे :

اُذْكُرْ مَا خَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)
وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ (صَلَّى
اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) نَبِيًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا.

तर्जमा : तू उसे याद कर, जिस पर तू दुन्या से निकला या'नी येह गवाही कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी और क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी था।

www.dawateislami.net

मुन्कर नकीर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो ? फ़रमाया : तो ह़व्वा की त़रफ़ निस्बत करे।

(معجم کبیرللطبرانی، ۸/۲۵۰، حدیث۷۹۷۹)

याद रहे ! या फ़ुलां बिन फ़ुलाना की जगह मय्यित और उस की मां का नाम ले, मसलन या **मुह़म्मद इल्यास बिन अमीना** और (अगर मय्यित इस्लामी बहन की हो तो मसलन) या **फ़ाति़मा बिन्ते ह़लीमा** वग़ैरा नीज़ तल्क़ीन सिर्फ़ अ़रबी में की जाए।

बा'ज़ अजिल्ला अइम्मए ताबेईन फ़रमाते हैं : जब क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुकें और लोग वापस जाएं तो मुस्तह़ब समझा जाता था कि मय्यित से उस की क़ब्र के पास खड़े हो कर कहा जाए :

يا فُلَان! قُلْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا الله (तीन बार)

तर्जमा : ऐ फ़ुलां ! तू कह कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

(**नोट :** यहां या फ़ुलां ! की जगह मय्यित का नाम लें मसलन या इल्यास और या फ़ाति़मा ! वग़ैरा)

फिर कहा जाए :

قُلْ رَّبِّى اللهُ وَدِيْنِى الْاِسْلَامُ وَنَبِيِّ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(شرح الصدور، باب: مايقال عند الد فن والتلقين،ص١٠٦)

तर्जमा : तू कह ! मेरा रब **अल्लाह** है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस पर इतना और इज़ाफ़ा किया :

www.dawateislami.net

وَاعْلَمْ اَنَّ هٰذَیْنِ الَّذِیْنَ اَتَیَاکَ اَوْیَاْتِیَانِکَ اِنَّمَا هُوعَبْدَانِ
لِلّٰهِ لَایَضُرَّانِ وَلَایَنْفَعَانِ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ فَلَا تَخَفْ وَلَاتَحْزَنْ
وَاشْهَدْ اَنَّ رَبَّکَ اللّٰهُ وَدِیْنَکَ الْاِسْلَامُ وَنَبِیَّکَ مُحَمَّدٌ
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ثَبَّتَنَا اللّٰهُ وَاِیَّاکَ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ
فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَةِ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ.

तर्जमा : और जान ले कि येह दो शख़्स जो तेरे पास आए या आएंगे येह **अल्लाह** के बन्दे हैं बिग़ैर ख़ुदा के हुक्म के न ज़रर पहुंचाएं, न नफ़्अ़। पस न ख़ौफ़ कर और न ग़म कर और तू गवाही दे कि तेरा रब **अल्लाह** है और तेरा दीन इस्लाम है और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं **अल्लाह** हम को और तुझ को क़ौले साबित पर साबित रखे, दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है।[1]

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/851 व फ़तावा रज़विय्या, 9/223)

---

1 .....इस्लामी बहन की क़ब्र पर खड़े हो कर यूं तल्क़ीन की जाए :

اُذْكُرِیْ مَاخَرَجْتِ عَلَیْهِ مِنَ الدُّنْیَا شَهَادَةَ (तीन बार कहे) یَا فُلَانَةَ بِنْتَ فُلَانَةَ
اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ
وَاَنَّکِ رَضِیْتِ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى
عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ نَبِیًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا.

तर्जमा : तू उसे याद कर ! जिस पर तू दुन्या से निकली या'नी येह गवाही कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी और क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी थी।...............

www.dawateislami.net

❁ दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास इतनी देर तक ठहरना मुस्तह़ब है जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह़ कर के गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए कि उन के रहने से मय्यित को उन्स होगा और नकीरैन का जवाब देने में वह़शत न होगी और उतनी देर तक तिलावते क़ुरआन और मय्यित के लिये दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करें और येह दुआ़ करें कि सुवाले नकीरैन के जवाब में साबित क़दम रहे।

(बहारे शरीअ़त, हिस़्सा 4, 1/846)

फिर कहा जाए : " يَا فُلَانَةُ! قُوْلِيْ " لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰہ (तीन बार कहे)

तर्जमा : ऐ फ़ुलानी ! तू कह कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

وَقُوْلِیْ رَبِّیَ اللّٰهُ وَدِيْنِیَ الْاِسْلَامُ وَ نَبِیِّیْ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلهٖ وسَلَّم

तर्जमा : तू कह ! मेरा रब **अल्लाह** है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। (شرح الصدور، باب: مايقال عند الدفن و التلقين، ص١٠٦)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस पर इतना और इज़ाफ़ा किया :

وَاعْلَمِیْ اَنَّ هٰذَيْنِ الَّذِيْنَ اَتَيَاکِ اَوْ يَاْتِيَانِکِ اِنَّمَا هُوَ عَبْدَانِ لِلّٰهِ لَايَضُرَّانِ وَلَايَنْفَعَانِ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ فَلَا تَخَافِیْ وَلَاتَحْزَنِیْ وَاشْهَدِیْ اَنَّ رَبَّکِ اللّٰهُ وَدِيْنَکِ الْاِسْلَامُ وَنَبِيَّکِ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰله وسَلَّم ثَبَّتَنَا اللّٰهُ وَاِيَّاکِ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِی الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِی الْاٰخِرَةِ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ.

तर्जमा : और जान ले कि येह दो शख़्स जो तेरे पास आए या आएंगे येह **अल्लाह** के बन्दे हैं बिग़ैर ख़ुदा के हुक्म के न ज़रर पहुंचाएं, न नफ़्अ़। पस न ख़ौफ़ कर और न ग़म कर और तू गवाही दे कि तेरा रब **अल्लाह** है और तेरा दीन इस्लाम है और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं **अल्लाह** हम को और तुझ को क़ौले साबित पर साबित रखे, दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है।

(बहारे शरीअ़त, हिस़्सा 4,1/851 व फ़तावा रज़विय्या, 9/223)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़म त़ौर पर लोग तदफ़ीन से फ़ारिग़ होते हैं क़ब्रिस्तान से चल पड़ते हैं मय्यित को उन्सिय्यत पहुंचाने और इ़ब्रत ह़ासिल करने के लिये थोड़ी देर भी रुकने का ज़ेह्न नहीं होता मगर اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस की तरग़ीब दिलाई जाती है और कई इस्लामी भाई ऐसे हैं जो तदफ़ीन के बा'द वहीं रुक कर ना'त ख़्वानी, दुरूद ख़्वानी, तिलावत और दीगर ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल हो कर मय्यित को उन्सिय्यत पहुंचाने का सामान करते हैं। कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हैं और जिन्हें ऐसे इस्लामी भाइयों का क़ुर्ब ह़ासिल है जो न सिर्फ़ ज़िन्दगी में बल्कि मरने के बा'द भी अपने मुसलमान भाई की ख़ैर ख़्वाही का ज़ेह्न रखते हैं। आइये इस ह़वाले से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में सुनिये :

मज़ार शरीफ़ पर बारह घन्टे ज़िक्रो अज़्कार का सिलसिला

जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तदफ़ीन हो चुकी तो शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तरग़ीब पर ढाई सौ से ज़ियादा इस्लामी भाई तक़रीबन 12 घन्टे तक आप के मज़ार पर ठहर कर ना'त ख़्वानी, इस्लाह़ी बयान और ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रहे और इस दौरान नमाज़ों के औक़ात में बा जमाअ़त नमाज़ का सिलसिला भी रहा मज़ीद वहीं से एक मदनी क़ाफ़िला भी हाथों हाथ तय्यार हो गया जो सह़राए मदीना में सात दिन बा'द बाबुल इस्लाम सिन्ध सत़ह़ पर होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ तक वहीं मुक़ीम रहा। (मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी, स. 73)

www.dawateislami.net

किसी की क़ब्र बाग़ और किसी की क़ब्र में आग

बाहर से ब ज़ाहिर यक्सां नज़र आने वाली क़ब्रें अन्दर से एक जैसी नहीं होतीं, किसी की क़ब्र अन्दर से गुलो गुल्ज़ार और बाग़ो बहार होती है जब कि किसी की क़ब्र में सुलगती अंगार होती और वोह क़ब्र सांप बिच्छूओं का ग़ार होती है लिहाज़ा जो लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी के साथ मरते और क़ब्र में उतरते हैं उन की बस शामत ही आ जाती है मगर जो नेक बन्दे ईमान सलामत लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर दुन्या से रुख़्सत होते हैं, वोह बा'दे वफ़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत को पहुंचते हैं और उन के बस मज़े ही मज़े होते हैं।

आप भी अगर अपनी क़ब्र को गुलो गुल्ज़ार बनाना चाहते हैं तो आइये क़ब्र रौशन करने, गुनाहों की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता हो जाइये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हुवे रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर ईसवी माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। आप की तरग़ीबो तह़रीस के लिये एक अ़ज़ीमुश्शान मदनी बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली !

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के बाब ग़ीबत की तबाहकारियां में फ़रमाते हैं :

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى के बारे में मेरा ह़ुस्ने ज़न है कि वोह दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बुज़ुर्ग थे और गोया इस ह़दीसे पाक के मिस्दाक़ थे : كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ या'नी दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो ।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب قول النبی...الخ، ۴/۲۲۳، حدیث ۶۴۱۶)

18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 17-02-2006 बरोज़ जुमुआ़ नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के बा'द अपनी क़ियाम गाह वाक़ेअ़ गुलशने इक़्बाल (बाबुल मदीना कराची) में अचानक ह़रकते क़ल्ब बन्द होने के सबब ब उ़म्र तक़रीबन 30 बरस जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सह़राए मदीना, बाबुल मदीना कराची में दफ़्न किया गया । विसाल शरीफ़ के तक़रीबन 3 साल 7 महीने 10 दिन बा'द या'नी 25 रजबुल मुरज्जब 1430 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 18-07-2009 हफ़्ता और इतवार की दरमियानी रात बाबुल मदीना कराची में कई घन्टे तक मूस्ला धार बरसात हुई जिस की वज्ह से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की क़ब्र दरमियान से खुल गई । जो इस्लामी भाई सह़राए मदीना में ह़िफ़ाज़ती उमूर पर मुतअ़य्यन हैं उन्हों ने सुब्ह़ के वक़्त देखा कि क़ब्र से

www.dawateislami.net

सब्ज़ रंग की रौशनी निकल रही है। आ़रिज़ी त़ौर पर क़ब्र दुरुस्त करने वाले इस्लामी भाइयों का ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर) कुछ यूं बयान है कि हम ने देखा कि तदफ़ीन के तक़रीबन साढ़े तीन साल बा'द भी मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की मुबारक लाश और कफ़न इस त़रह़ सलामत थे कि गोया अभी अभी इन्तिक़ाल हुवा हो, तक्फ़ीन के वक़्त सर पर रखा जाने वाला सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ आप के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लुटा रहा था, इमामे शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़्दीक आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ुल्फ़ों का कुछ ह़िस्सा अपनी बहारें दिखा रहा था, पेशानी नूरानी थी और चेहरए मुबारक भी क़िब्ला रुख़ था। मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की क़ब्र मुबारक से ख़ुश्बू की ऐसी लपटें आ रही थीं कि हमारे मशामे जां मुअ़त्त़र हो गए। क़ब्र में बारिश का पानी उतर जाने की वज्ह से येह इमकान था कि क़ब्र मज़ीद धंस जाए और सीलें मर्ह़ूम के वुजूदे मसऊ़द को सदमा पहुंचाएं लिहाज़ा इस वाक़िए़ के तक़रीबन दस रोज़ बा'द या'नी शबे बुध 5 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हिजरी (28-7-2009) ब शुमूल मुफ़्तियाने किराम व उ़लमाए इ़ज़्ज़ाम हज़ारहा इस्लामी भाइयों का कसीर मजमअ़ हुवा, ग़ुलाम ज़ादा अबू उसैद ह़ाजी उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्त़ार मदनी سَلَّمَهُ اللّٰهُ الْغَنِی पहले से मौजूद शिगाफ़ के ज़रीए़ क़ब्र के अन्दर उतरे ताकि येह अन्दाज़ा लगाएं कि आया मुन्तक़िली के लिये जिस्मे मुबारक बाहर निकालने की ह़ाजत है या अन्दर रहते हुवे भी क़ब्र शरीफ़ की ता'मीरे नौ मुमकिन है। उन्हों ने अन्दर का जाइज़ा लिया और अन्दर ही से दा'वते इस्लामी के "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" के मुफ़्ती साहि़ब को सूरते ह़ाल बयान की उन्हों ने बदन मुबारक बाहर न निकालने का हुक्म फ़रमाया, ग़ुलाम ज़ादा ह़ाजी उ़बैद रज़ा को मूवी केमेरा दिया गया चुनान्चे,

www.dawateislami.net

पुरानी क़ब्र के अन्दरूनी माह़ोल और ऊपर से मिट्टी वग़ैरा गिरने के बा वुजूद اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और ज़ुल्फ़ों के बा'ज़ ह़िस्से की कामयाब मूवी बना ली, जो कि कुछ ही देर के बा'द "सह़राए मदीना" में लगाए गए मुख़्तलिफ़ स्क्रीनों पर हज़ारों इस्लामी भाइयों को दिखा दी गई, उस वक़्त लोगों के जज़्बात दीदनी थे, येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर बे शुमार इस्लामी भाई अश्कबार हो गए। इस के बा'द आने वाली रात या'नी बुध और जुमा'रात की दरमियानी शबे बुध 5 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1430 हिजरी (28-7-2009) को दा'वते इस्लामी के मदनी चैनल पर बराहे रास्त "ख़ुसूसी मदनी मुकालमा" नश्र किया गया जिस में दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के लाखों नाज़िरीन को केमेरे के अन्दर मह़फ़ूज़ कर्दा क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी सह़ीह़ सलामत लाश मुबारक के इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और गैसू मुबारक के कुछ बालों की ज़ियारत करवाई गई। चूंकि येह ख़बर हर त़रफ़ जंगल की आग की त़रह़ फैल चुकी थी लिहाज़ा मुख़्तलिफ़ शहरों के जुदा जुदा अ़लाक़ों के इस्लामी भाइयों के बयानात का लुब्बे लुबाब है कि ख़ुसूसी मदनी मुक़ालमे के दौरान कई गलियां और बाज़ार इस त़रह़ सूने हो गए थे जिस त़रह़ मुसलमानों के अ़लाक़ों में रमज़ानुल मुबारक में इफ़्त़ार के वक़्त होते हैं और T.V पर घर घर से "ख़ुसूसी मदनी मुकालमे" की आवाज़ सुनाई दे रही थी। होटलों, नाई की दुकानों वग़ैरा में जहां जहां T.V सेट मौजूद थे वहां अ़वाम हुजूम दर हुजूम जम्अ़ हो कर मदनी चैनल पर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की मदनी बहारों के नज़्ज़ारे कर रहे थे। एक इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ मदनी चैनल पर "ख़ुसूसी मदनी मुकालमा" सुन कर और

www.dawateislami.net

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी मुबारक लाश की रूह़ परवर झलकियां देख कर एक ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने इस सिलसिले में शबे बराअत 1430 हिजरी के मुबारक मौक़अ़ पर एक तारीख़ी V.C.D बनाम "**मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली**" जारी कर दी तादमे तारीख़ हज़ारों V.C.D फ़रोख़्त हो चुकी हैं।

जबीं मैली नहीं होती दह्न मैला नहीं होता
ग़ुलामाने मुह़म्मद का कफ़न मैला नहीं होता

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब ग़ीबत की तबाहकारियां, जिल्द 2, स. 466)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़ेद बाल क़ियामत में नूर होंगे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सफ़ेद बालों को न उखाड़ो क्यूंकि येह क़ियामत के दिन नूर होंगे, जिस का एक बाल सफ़ेद हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखेगा और उस का एक गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा और उस का एक दरजा बुलन्द फ़रमाएगा।

(الترغیب و الترهیب، کتاب اللباس و الزینة، الترهیب من خضب اللحیة بالسواد، ۳/۸٦، حدیث٦)

www.dawateislami.net

ता'ज़िय्यत का बयान

ता'ज़िय्यत का लुग़वी मा'ना है सब्र दिलाना, दिलासा देना और इस से मुराद मुसीबत ज़दा आदमी को सब्र की तल्क़ीन करना है नीज़ मय्यित के लवाहिक़ीन से इज़्हारे अफ़्सोस व इज़्हारे हमदर्दी करते हुवे, दुआइय्या अल्फ़ाज़ और तसल्ली आमोज़ कलिमात कहने को भी ता'ज़िय्यत कहते हैं। (उर्दू लुग़त, 5/293)

जब किसी का इन्तिक़ाल हो जाए तो उस के क़रीबी रिश्तेदारों के पास ता'ज़िय्यत के लिये जाना सुन्नत है येह कारे सवाब है और इस के भी फ़ज़ाइल हैं चुनान्चे, इस ज़िम्न में दो अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइये !

एक क़ीरात़ जितना सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिसे किसी जनाज़े की ख़बर मिले और वोह अहले मय्यित के पास जा कर उन की ता'ज़िय्यत करे अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात़ सवाब लिखेगा।

(عمدة القاری، کتاب الایمان،باب اتباع الجنائز من الایمان،١/٤٠٠،تحت الحدیث٤٧)

जन्नत में दाख़िला

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक मरतबा बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो तेरी रिज़ा का त़ालिब हो कर किसी ग़मज़दा की ता'ज़िय्यत करे तो तेरी त़रफ़ से उस की जज़ा क्या है ? इरशादे बारी हुवा : मैं उसे लिबासे तक़्वा पहनाऊंगा और उसे जहन्नम से बचा कर जन्नत में दाख़िल करूंगा।

(جامع الاحادیث ، حرف القاف، ٥/٣٣٥ ، حدیث١٥١٨٧)

www.dawateislami.net

ता'ज़ियत की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की ता'ज़ियत करूंगा ❁ सुन्नत पर अ़मल करूंगा ❁ मर्हूम के लिये दुआ़ करूंगा ❁ सब्र के फ़ज़ाइल बता कर सब्र की तल्क़ीन करूंगा ❁ जज़्अ़ फ़ज़्अ़ की सूरत में बन पड़ा तो नर्मी से समझा कर रोकने की कोशिश करूंगा ❁ मर्हूम के लिये ईसाले सवाब करूंगा और उन के अहले ख़ाना को ईसाले सवाब के लिये तक़्सीमे रसाइल और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाऊंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले ''नेक बनने का नुस्ख़ा'' से ता'ज़ियत के मदनी फूल (कुछ तरमीम के साथ) मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

"ता'ज़ियत सुन्नते मुबारका है" (उर्दू) के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से ता'ज़ियत के 16 मदनी फूल

3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿ जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा उस के लिये उस मुसीबत ज़दा जैसा सवाब है (ترمذی،کتاب الجنائز،باب: ماجاء فی أجر من عزی مصابا،۲/۳۳۸، حدیث۱۰۷۵)

﴾2﴿ जो बन्दए मोमिन अपने किसी मुसीबत ज़दा भाई की ता'ज़ियत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा (ابن ماجه ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عزی مصابا، ۲/۲۶۸، حدیث ۱۶۰۱)

﴾3﴿ जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की

www.dawateislami.net

रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती (معجم اوسط، باب الهاء، من اسمه هاشم، ٦ / ٤٢٩، حديث ٩٢٩٢) ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! वोह कौन है जो तेरे अ़र्श के साए में होगा जिस दिन उस के इ़लावा कोई साया न होगा ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ मूसा ! वोह लोग जो मरीज़ों की इ़यादत करते हैं, जनाज़े के साथ जाते हैं और किसी फ़ौतशुदा बच्चे की मां से ता'ज़ियत करते हैं" (تمهيد الفرش للسيوطى، ص٦٢) ۞ ता'ज़ियत का मा'ना है : मुसीबत ज़दा आदमी को सब्र की तल्क़ीन करना। "ता'ज़ियत मस्नून (या'नी सुन्नत) है" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/852) ۞ दफ़्न से पहले भी ता'ज़ियत जाइज़ है मगर अफ़्ज़ल येह है कि दफ़्न के बा'द हो येह उस वक़्त है कि औलियाए मय्यित (मय्यित के अहले ख़ाना) जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ (या'नी रोना पीटना) न करते हों, वरना उन की तसल्ली के लिये दफ़्न से पहले ही करे (جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤١) ۞ ता'ज़ियत का वक़्त मौत से तीन दिन तक है, इस के बा'द मकरूह है कि ग़म ताज़ा होगा मगर जब ता'ज़ियत करने वाला या जिस की ता'ज़ियत की जाए वहां मौजूद न हो या मौजूद है मगर उसे इ़ल्म नहीं तो बा'द में ह़रज नहीं (جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤١ وردالمحتار، كتاب الصلاة،باب صلاة الجنائز، مطلب فى كراهية الضيافة من اهل الميت، ٣/١٧٧)

۞ (ता'ज़ियत करने वाला) आ़जिज़ी व इन्किसारी और रन्जो ग़म का

www.dawateislami.net

इज़हार करे, गुफ़्तगू कम करे और मुस्कुराने से बचे कि (ऐसे मौक़अ़ पर) मुस्कुराना (दिलों में) बुग़्ज़ो कीना पैदा करता है (आदाबे दीन (मुतर्जम), स. 35)

❁ मुस्तह़ब येह है कि मय्यित के तमाम अक़ारिब को ता'ज़ियत करें, छोटे बड़े मर्द व औ़रत सब को मगर औ़रत को उस के मह़ारिम ही ता'ज़ियत करें। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/852) ता'ज़ियत में येह कहे : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सब्रे जमील अ़ता फ़रमाए और इस मुसीबत पर अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मर्हूम की मग़्फ़िरत फ़रमाए। नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन लफ़्ज़ों से ता'ज़ियत फ़रमाई :

اِنَّ لِلّٰهِ مَااَخَذَ وَلَهٗ مَااَعْطٰى وَكُلٌّ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ

तर्जमा : ख़ुदा ही का है जो उस ने लिया और जो दिया और उस के नज़दीक हर चीज़ एक मुक़र्ररा वक़्त तक है, लिहाज़ा सब्र करो और सवाब की उम्मीद रखो (بخاری، کتاب الجنائز، باب قول النبی صلی اللّٰہ تعالی علیہ والہ وسلم یعذب المیت ببعض بکاء...الخ،۱/۴۳۴،حدیث۱۲۸۴)

❁ मय्यित के अइ़ज़्ज़ा (या'नी अ़ज़ीज़ों) का घर में बैठना कि लोग उन की ता'ज़ियत के लिये आएं इस में ह़रज नहीं और मकान के दरवाज़े पर या शारेए़ आम (या'नी आम रास्ते) पर बिछौने (या दरी वग़ैरा) बिछा कर बैठना बुरी बात है (عالمگیری،کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر و الدفن...الخ و مما یتصل بذلک مسائل،۱/۱۶۷ وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز، مطلب: فی کراھۃ الضیافۃ من اھل المیت، ۳ / ۱۷۶)

❁ क़ब्र के क़रीब ता'ज़ियत करना मकरूहे (तन्ज़ीही) है।

(درالمختار معہ رد المحتار،کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز،۳/۱۷۷)

www.dawateislami.net

❁ बा'ज़ क़ौमों में वफ़ात के बा'द आने वाली पहली शबे बराअत या पहली ईद के मौक़अ़ पर अ़ज़ीज़ो अक़रिबा अहले मय्यित के घर ता'ज़ियत के लिये इकठ्ठे होते हैं येह रस्म ग़लत़ है, हां जो किसी वज्ह से ता'ज़ियत न कर सका था वोह ईद के दिन ता'ज़ियत करे तो ह़रज नहीं इसी त़रह़ पहली बक़र ईद पर जिन अहले मय्यित पर क़ुरबानी वाजिब हो उन्हें क़ुरबानी करनी होगी वरना गुनहगार होंगे। येह भी याद रहे कि सोग के अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद ईद आने पर मय्यित का सोग (ग़म) करना या सोग के सबब उ़म्दा लिबास वग़ैरा न पहनना नाजाइज़ व गुनाह है। अलबत्ता वैसे ही कोई उ़म्दा लिबास न पहने तो गुनाह नहीं ❁ जो एक बार ता'ज़ियत कर आया उसे दोबारा ता'ज़ियत के लिये जाना मकरूह है (در المختار معه رد المحتار، کتاب الصلاۃ ، باب صلاۃ الجنائز، ۳/ ۱۷۷) ❁ अगर ता'ज़ियत के लिये औ़रतें जम्अ़ हों कि नौह़ा करें तो उन्हें खाना न दिया जाए कि गुनाह पर मदद देना है (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/853) ❁ नौह़ा या'नी मय्यित के औसाफ़ मुबालग़े के साथ (या'नी बढ़ा चढ़ा कर ख़ूबियां) बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को "बैन" कहते हैं बिल इजमाअ़ ह़राम है। यूंही वावैला **वाह मुसीबता** (या'नी हाए मुसीबत) कह के चिल्लाना (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/854 व جوهرة نيرة، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۹) ❁ अत़िब्बा (या'नी त़बीब) कहते हैं कि (जो अपने अ़ज़ीज़ की मौत पर सख़्त सदमे में से दो चार हो उस के) मय्यित पर बिल्कुल न रोने से सख़्त बीमारी पैदा हो जाती है, आंसू बहने से दिल की गर्मी निकल जाती है, इस लिये इस (बिग़ैर नौह़ा) रोने से हरगिज़ मन्अ़ न किया जाए (मिरआतुल

www.dawateislami.net

मनाजीह़, मय्यित पर रोने का बयान 2/501) ❁ मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ता'ज़ियत के ऐसे प्यारे अल्फ़ाज़ होने चाहिये जिस से उस ग़मज़दा की तसल्ली हो जाए, फ़क़ीर का तजरिबा है कि अगर इस मौक़अ़ पर ग़मज़दों को वाक़िआ़ते करबला सुनाए जाएं तो बहुत तसल्ली होती है। तमाम ता'ज़ियतें ही बेहतर हैं मगर बच्चे की वफ़ात पर (मह़ारिम का उस की) मां को तसल्ली देना बहुत सवाब है। (मिरआतुल मनाजीह़, मय्यित पर रोने का बयान 2/507 मुलख़्ख़सन) ❁ मय्यित के पड़ोसी या दूर के रिश्तेदार अगर मय्यित के घर वालों के लिये उस दिन और रात के लिये खाना लाएं तो बेहतर है और उन्हें इसरार कर के खिलाएं। (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنائز، مطلب: فی الثواب علی المصیبۃ، ۱۷۵/۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! सारी दुन्या में नेकी की दा'वत को आ़म करने का दर्द रखने वाली मदनी तह़रीक या'नी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और अपनी ज़िन्दगी सुन्नतों के मुत़ाबिक़ गुज़ारने की कोशिश में लग जाइये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात को अपना लीजिये और आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। आइये ! ता'ज़ियत का अन्दाज़ सीखने के लिये उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे से सरशार, दुखी दिलों के ग़म गुसार, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक मक्तूब मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मक्तूबे ता'ज़ियत अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से लवाहि़क़ीने मर्हूम मुह़म्मद शान अ़त़्त़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की ख़िदमाते आ़लिय्या में मदनी मिठास से तर ब तर सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہ،اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَال

मा'लूम हुवा कि मुह़म्मद शान अ़त़्त़ारी ह़ादिसे में वफ़ात पा गए हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्हूम को ग़रीक़े रह़मत करे, उन की क़ब्र पर रह़मतो रिज़्वान के फूल बरसाए, उन की क़ब्र और मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल हैं सब उठा कर मर्हूम को रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुमा दे । मर्हूम की मग़फ़िरत फ़रमा कर उन्हें जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए और मर्हूम के लवाहि़क़ीन को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

अ़जब सरा है येह दुन्या यहां पे शामो सह़र
किसी का कूच किसी का क़ियाम होता है

अफ़्सोस ! सगे मदीना अपने आप को नेकियों से दूर और गुनाहों से भरपूर पाता है । हां रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ इस अम्र पर क़ादिर ज़रूर है कि गुनाह व क़ुसूर को नेकियों से बदल दे लिहाज़ा ख़ुदाए मजीद से येही उम्मीद है कि वोह मुझ पापी व बदकार के गुनाहों को

www.dawateislami.net

अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ ज़रूर नेकियों से बदल देगा और इसी उम्मीद पर मैं अपनी ज़िन्दगी की तमाम तर नेकियां बारगाहे मुस्त़फ़वी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में नज़्र कर के "मर्ह़ूम मुह़म्मद शान अ़त्तारी" की नज़्र करता हूं।

अ़जब नैरंगी दुन्या है कि एक त़रफ़ किसी का जनाज़ा उठाया जा रहा है जब कि दूसरी त़रफ़ किसी को दुल्हा बनाया जा रहा है। एक त़रफ़ ख़ुशी के शादयाने बज रहे हैं तो दूसरी त़रफ़ किसी की मय्यित पर आहो फ़ुग़ां का शौर है।

नसीमे सुब्ह़ गुलशन में गुलों से खेलती होगी
किसी की आख़िरी हिचकी किसी की दिल्लगी होगी

मर्ह़ूम मुह़म्मद शान अ़त्तारी के ईसाले सवाब की ख़ात़िर घर का हर मर्द (जिस की उ़म्र बीस साल से ज़ाइद हो) कम अज़ कम एक बार दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा मदनी क़ाफ़िले के साथ ज़रूर सफ़र इख़्तियार करे। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सभी की ख़िदमत में मदनी इल्तिजा है।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने — जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

والسلام مع الاكرام

30 मुह़र्रमुल ह़राम 1428 हिजरी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(जन्नत की तय्यारी, स. 70)

www.dawateislami.net

नौह़ा का बयान

मय्यित के औसाफ़ मुबालग़े के साथ बयान कर के आवाज़ से चीख़ना चिल्लाना रोना पीटना वावैला करना नौह़ा कहलाता है। इसे बैन भी कहते हैं, येह अफ़्आ़ल ज़मानए जाहिलिय्यत के हैं और बिल इजमाअ़ ह़राम हैं। ऐसा करने वाली औ़रतें और मर्द सख़्त शदीद अ़ज़ाब के ह़क़दार हैं। (جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٩)

नौह़ा से मुतअ़ल्लिक़ पांच पैरे

﴾1﴿ ता'ज़ियत के लिये अक्सर रिश्तेदार औ़रतें जम्अ़ हो कर रोती पीटती और नौह़ा करती हैं उन्हें ऐसा करने से रोकना चाहिये कि ह़दीस में उन के लिये सख़्त वई़द है चुनान्चे,

जहन्नम वालों पर भोंकने वालियां

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के ताजदार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : बेशक येह नौह़ा करने वालियां क़ियामत के दिन जहन्नम में, दोज़ख़ियों के दाएं बाएं दो सफ़ों में की जाएंगी और दोज़ख़ियों पर ऐसे भोंकेंगी जैसे कुत्तियां भोंकती हैं। (معجم اوسط للطبراني، من اسمه محمد،٤/٦٦،حديث٥٢٢٩)

﴾2﴿ गिरेबान फाड़ना, मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना कूटना, रान पर हाथ मारना येह सब जाहिलिय्यत के काम हैं और ह़राम।

(عالمگیری، کتاب الصلاة، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز،الفصل السادس فی القبر و الدفن...الخ ومما يتصل بذلك مسائل، ١/١٦٧)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ तीन दिन से ज़ियादा सोग जाइज़ नहीं, मगर औ़रत शोहर के मरने पर चार महीने दस दिन सोग करे।

(بـخاری، کتاب الجنائز، باب احداد المرأۃ علی غیر زوجھا، ۱/ ۴۳۲،حدیث ۱۲۸۰)

﴾4﴿ आवाज़ से रोना मन्अ़ है और आवाज़ बुलन्द न हो तो इस की मुमानअ़त नहीं, बल्कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात पर बुका फ़रमाया (या'नी आंसू बहाए)।

(جوھرۃ نیرۃ،کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص۱۳۹)

﴾5﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आंख के आंसू और दिल के ग़म के सबब **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता और ज़बान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : लेकिन इस के सबब अ़ज़ाब या रह़म फ़रमाता है और घर वालों के रोने की वज्ह से मय्यित पर अ़ज़ाब होता है।

(بخاری،کتاب الجنائز، باب البکاء عند المریض، ۱/ ۴۴۱، حدیث ۱۳۰۴)

या'नी जब कि उस ने वसिय्यत की हो या वहां रोने का रवाज हो और मन्अ़ न किया हो, واللّٰہ تعالٰی اعلم या येह मुराद है कि उन के रोने से उसे तक्लीफ़ होती है कि दूसरी ह़दीस में आया, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! अपने मुर्दे को तक्लीफ़ न दो, जब तुम रोने लगते हो, वोह भी रोता है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1/856)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ज़ियारते क़ुबूर

ज़ियारते क़ुबूर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है लिहाज़ा हमें इस सुन्नत पर भी अ़मल करना चाहिये कि इस में इ़ब्रत और मौत व आख़िरत की याद है और येह दुन्या से बे रग़बती का सबब भी है चुनान्चे,

आख़िरत की याद

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या से बे रग़बती का सबब और आख़िरत की याद दिलाती है। (ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فى زيارة القبور، ۲/۲۵۲، حديث ۱۵۷۱)

लिहाज़ा इ़ब्रत और मौत की याद के लिये हमें मौक़अ़ ब मौक़अ़ अपने अ़ज़ीज़, रिश्तेदारों की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाना चाहिये और वालिदैन की क़ुबूर की ज़ियारत को मा'मूल बना लेना चाहिये।

आइये ज़ियारते क़ुबूर से मुतअ़ल्लिक़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात**" से मदनी फूल (कुछ तरमीम के साथ) मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

"ज़ियारते क़ुबूर सुन्नत है" (उर्दू) के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 14 मदनी फूल

❁ क़ुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और मज़ाराते औलियाए किराम व शुहदाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़ाज़िरी सआ़दत बर सआ़दत और उन्हें ईसाले सवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा) व सवाब। (फ़तावा रज़विय्या, 9/532)

www.dawateislami.net

क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा

❁ इस त़रह खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो, इस के बा'द तिरमिज़ी शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنا وَلَكُمْ
اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَر.

तर्जमा : ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमाए तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।

(ترمذی، کتاب الجنائز، باب مایقول الرجل اذا دخل المقابر، ۲/۳۲۹ ، حدیث ۱۰۵۵)

❁ जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِىْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا
وَهِىَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ اَدْخِلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا مِّنِّىْ.

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुवे तू उन पर अपनी रह़मत फ़रमा और उन को मेरा सलाम पहुंचा दे।

तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से ले कर उस (दुआ़ के पढ़ते) वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुवे सब उस (या'नी दुआ़ पढ़ने वाले) के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करेंगे।

(شرح الصدور، باب زیارة القبور وعلم الموتی بزوارھم ورؤیتھم لھم، ص۲۲۶)

www.dawateislami.net

❁ अगर क़ब्र के पास बैठना चाहें तो साहि़बे क़ब्र के मर्तबे को मल्ह़ूज़ रख कर बा अदब बैठ जाइये ।

(رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی زیارۃ القبور،۳/۱۷۹)

ज़ियारते क़ुबूर के अफ़्ज़ल औक़ात

❁ क़ब्रों की ज़ियारत के लिये येह चार दिन बेहतर हैं : पीर या जुमा'रात या जुमुआ़ या हफ़्ता ।

(عالمگیری، کتاب الکراھیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور...الخ،۵/۳۵۰)

❁ जुमुआ़ के दिन बा'द नमाज़े सुब्ह़ ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है ।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/523)

❁ रात को तन्हा क़ब्रिस्तान न जाना चाहिये । (फ़तावा रज़विय्या, 9/523)

❁ मुतबर्रक (या'नी बरकत वाली) रातों में ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है ख़ुसूसन शबे बराअत ।

(عالمگیری، کتاب الکراھیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور...الخ،۵/۳۵۰)

❁ इसी त़रह़ मुतबर्रिक (या'नी बरकत वाले) दिनों में भी ज़ियारते क़ुबूर अफ़्ज़ल है मसलन ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और बक़र ईद), 10 मुह़र्रमुल ह़राम और अ़शरए ज़िल ह़िज्जा (या'नी ज़ुल ह़िज्जा के इब्तिदाई 10 दिन)

(عالمگیری، کتاب الکراھیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور...الخ،۵/۳۵۰)

क़ब्र पर अगरबत्ती जलाना

❁ क़ब्र के ऊपर "अगरबत्ती" न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अदबी) और बद फ़ाली है (और इस से मय्यित को तक्लीफ़ होती है) हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो)

www.dawateislami.net

क़ब्र के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना महबूब (या'नी पसन्दीदा) है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/482-525 मुलख़्ख़सन)

क़ब्र पर मोमबत्ती रखना

❁ क़ब्र पर चराग़ या जलती मोमबत्ती वग़ैरा न रखिये कि येह आग है और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को अज़िय्यत होती है, हां अगर आप के पास चार्जर टॉर्च या टॉर्च वाला मोबाइल फ़ोन न हो, गवर्नमेन्ट की बत्तियां भी न हों या बन्द हों और रात के अन्धेरे में राह चलने या देख कर तिलावत करने के लिये रौशनी दरकार हो तो क़ब्र के एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर मोमबत्ती या चराग़ रख सकते हैं, जब कि वोह ख़ाली जगह ऐसी न हो कि जहां पहले क़ब्र थी अब मिट चुकी है।

❁ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नक़्ल फ़रमाते हैं : सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, इन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौह़ा करने वाली जाए न आग जाए।

(مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یهدم...الخ، ص۷۵، حدیث۱۹۲ व फ़तावा रज़विय्या, 9/482)

जिस क़ब्र का पता न हो कि मुसलमान की है या काफ़िर की

❁ जिस क़ब्र का येह भी ह़ाल मा'लूम न हो कि येह मुसलमान की है या काफ़िर की, उस की ज़ियारत करनी, फ़ातिह़ा देनी हरगिज़ जाइज़ नहीं कि क़ब्रे मुसलमान की ज़ियारत सुन्नत है और फ़ातिह़ा मुस्तह़ब और क़ब्रे काफ़िर की ज़ियारत ह़राम है और उसे ईसाले सवाब का क़स्द (इरादा) कुफ़्र। (फ़तावा रज़विय्या, 9/533)

www.dawateislami.net

❁ अपने लिये कफ़न तय्यार रखे तो ह़रज नहीं और क़ब्र खुदवा रखना बे मा'ना है, क्या मा'लूम कहां मरेगा ?

(درالمختار معه رد المحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ٣/١٨٣)

हों बारे गुनह से न ख़जिल दोशे अ़ज़ीज़ां
लिल्लाह मेरी ना'श कर ऐ जाने चमन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल

❁ क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर इधर उधर की बातों और ग़फ़्लत भरे ख़यालों के बजाए फ़िक्रे मदीना या'नी अपना मुह़ासबा करते हुवे अपनी मौत को याद कर के हो सके तो आंसू बहाइये और गुनाहों को याद कर के खुद को अ़ज़ाबे क़ब्र से ख़ूब डराइये, तौबा कीजिये और येह तसव्वुर ज़ेह्न में जमाइये कि जिस त़रह़ आज येह मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों में अकेले पड़े हैं, अ़न क़रीब मैं भी इसी त़रह़ अन्धेरी क़ब्र में तन्हा पड़ा होऊंगा नीज़ ह़दीसे पाक के इन अल्फ़ाज़ को याद कीजिये : كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ या'नी जैसी करनी वैसी भरनी। (جامع صغیر للسیوطی، حرف الکاف، ص ٣٩٩، حدیث ٦٤١١)

क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर   *जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर*

❁ शबे बराअत में या किसी भी ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की क़ब्र पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ मह़्ज़ रस्मी त़ौर पर पानी छिड़कते हैं येह इस्राफ़ व नाजाइज़ है और अगर येह समझते हैं कि इस से मय्यित की क़ब्र में ठन्डक होगी तो इस्राफ़ के साथ साथ निरी जहालत भी है, हां मय्यित की तदफ़ीन के बा'द छिड़कने में ह़रज नहीं बल्कि बेहतर है। इसी त़रह़ अगर क़ब्र पर पौदे वग़ैरा हैं इस लिये पानी डाला जब भी ह़रज नहीं। लेकिन येह याद रहे ! पानी डालने के लिये अगर क़ब्रों पर पाउं रख कर

www.dawateislami.net

जाना पड़ता हो तो इस की इजाज़त नहीं, जाएगा तो गुनहगार होगा बल्कि ऐसी सूरत में उजरत दे कर किसी और से भी न डलवाए।

❁ क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی وضع الجرید...الخ،۳/۱۸٤)

❁ यूंही जनाज़े पर फूलों की चादर डालने में ह़रज नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/852)

❁ क़ब्र पर से तर घास नोचना न चाहिये कि उस की तस्बीह़ से रह़मत उतरती है और मय्यित को उन्स ह़ासिल होता है और नोचने में मय्यित का ह़क़ ज़ाएअ़ करना है।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی وضع الجرید...الخ،۳/۱۸٤)

❁ क़ब्र पर पाउं रखने या सोने से क़ब्र वाले को ईज़ा होती है और बिला इजाज़ते शरई किसी मुसलमान को ईज़ा देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लिहाज़ा किसी मुसलमान की क़ब्र पर पाउं न रखे, न किसी क़ब्र को रौंदे और न किसी क़ब्र पर बैठे और न ही टेक लगाए क्यूंकि इस से नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْم ने मन्अ़ फ़रमाया है। चुनान्चे, दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : पढ़िये :

(1) मुझे आग की चिंगारी पर या तल्वार पर चलना या मेरा पाउं जूते में सी दिया जाना ज़ियादा पसन्द है इस से कि मैं किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलूं

(ابن ماجه، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی النھی عن المشی علی القبور والجلوس علیھا،۲/۲۵۰، حدیث۱۵٦۷)

(2) अगर कोई शख़्स अंगारों पर बैठ जाए जिस से उस के कपड़े जल जाएं और आग उस की खाल तक पहुंच जाए तो येह क़ब्र पर बैठने से बेहतर है।

(مسلم، کتاب الجنائز،باب النھی عن الجلوس علی القبر والصلاۃ علیه، ص۴۸۳، حدیث۱۹۷۱)

www.dawateislami.net

❁ क़ब्रिस्तान में आ़म रास्ते से जाए, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले "ردالمحتار" में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है।

(ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب الانجاس، فصل الاستنجاء، مطلب: القول المرجح على الفعل، ٦١٢/١)

बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना नाजाइज़ व गुनाह है। (درالمختار ومعه ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ١٨٣/٣)

❁ कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ाति़र मुसलमानों की क़ब्रें मिस्मार कर के (या'नी तोड़ फोड़ कर) फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लेटना, चलना, खड़ा होना, ज़िक्रो अज़्कार और तिलावत के लिये बैठना वग़ैरा ह़राम है, दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये।

❁ क़ब्र पर रहने का मकान बनाना या क़ब्र पर बैठना या सोना या उस पर बोलो बराज़ (या'नी पेशाब पाख़ाना) करना येह सब उमूर अशद (या'नी सख़्त तरीन) मकरूह क़रीब ब ह़राम हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 9/436)

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मुर्दे को क़ब्र में भी उस बात से ईज़ा होती है जिस से घर में उसे अज़िय्यत होती।

(فردوس بمأثور الخطاب، باب الالف، ١/١٢٠، حديث ٧٤٩)

❁ औलियाए किराम के मज़ाराते त़य्यिबा पर सफ़र कर के जाना जाइज़ है, वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और अगर वहां कोई मुन्करे शरई हो मसलन औ़रतों से इख़्तिलात़ तो इस की वज्ह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता बल्कि उसे बुरा जाने और मुमकिन हो तो बुरी बात ज़ाइल करे।

(ردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنائز، مطلب: فی زيارة القبور، ١٧٨/٣)

www.dawateislami.net

ईसाले सवाब का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है जो मुसलमान दुन्या से रुख़्सत हो जाते हैं उन के लिये भी उस ने अपने फ़ज़्लो करम के दरवाज़े खुले ही रखे हैं और जो उन के लिये ईसाले सवाब और दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं तो इस की बरकत से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर करम फ़रमाता है, आइये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की करम नवाज़ी से मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे,

दुआ़ए मग़्फ़िरत की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला एक नेक बन्दे का दरजा जन्नत में बुलन्द फ़रमाएगा तो वोह कहेगा कि ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ कहां से येह मर्तबा मुझ को मिला ? तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि तेरे बेटे ने तेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगी है इस लिये तुझे येह दरजा मिला है।

(مشکاۃالمصابیح،کتاب الدعوات،باب الاستغفار و التوبۃ، ۱/۴۴۰، حدیث: ۲۳۴۵)

ह़ज़रते मुह़म्मद तूसी मुअ़ल्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

अबू बक्र रशीदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते मुह़म्मद तूसी मुअ़ल्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देखा तो उन्हों ने फ़रमाया कि

www.dawateislami.net

अबू सईद सफ़्फ़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कह देना कि हमारा तुम्हारा तो मुआ़हदा था कि हम एक दूसरे को नहीं भूलेंगे तो हम तो नहीं बदले मगर तुम बदल गए । मेरी आंख खुल गई और मैं ने अबू सईद सफ़्फ़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से उस ख़्वाब का तज़्किरा किया तो उन्हों ने कहा कि क्या बताऊं मैं हर जुमुआ़ को उन की क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाया करता था और कुछ ईसाले सवाब किया करता था लेकिन इस जुमुआ़ को मैं नहीं जा सका इसी की उन को मुझ से शिकायत हो गई है ।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الثامن، بیان منامات المشائخ، ۲۶۷/۵)

ईसाले सवाब

ईसाले सवाब या'नी कुरआने मजीद या दुरूद शरीफ़ या कलिमए त़य्यिबा या किसी नेक अ़मल का सवाब दूसरे को पहुंचाना जाइज़ है । इबादते मालिया या बदनिया फ़र्ज़ व नफ़्ल सब का सवाब दूसरों को पहुंचाया जा सकता है, ज़िन्दों के ईसाले सवाब से मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचाता है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3/642)

शैख़ मुहि़य्युद्दीन इब्ने अ़रबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे ह़दीस पहुंची थी कि जो सत्तर हज़ार बार कलिमा शरीफ़ पढ़ ले या पढ़ कर किसी को बख़्श दिया जाए तो उस की मग़्फ़िरत होती है मैं ने इतना कलिमा पढ़ लिया था, एक दिन मेरे हां दा'वत में एक साह़िबे कश्फ़ जवान ह़ाज़िर था, अचानक रोने लगा, सबब पूछा बोला कि मैं अपनी मां को दोज़ख़ में देखता हूं, मैं ने अपने दिल में पढ़ा हुवा वोह कलिमा उस की मां को बख़्श दिया वोह जवान अचानक हंस पड़ा और बोला

www.dawateislami.net

कि अब मैं उसे जन्नत में देखता हूं, मैं ने उस ह़दीस की सिह़ह़त उस वली के कश्फ़ से मा'लूम की और उस के कश्फ़ की सिह़ह़त ह़दीस से।

(مرقاة المفاتيح، کتاب الصلاة، باب ما علی الماموم...الخ، الفصل الثانی، ۳/۲۲۲، تحت حدیث ۱۱۴۲)

लिहाज़ा सत्तर हज़ार बार कलिमए त़य्यिबा का ख़त्म कर के अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ को ईसाले सवाब कीजिये !

आइये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के रिसाले "**ईसाले सवाब और फ़ातिह़ा का त़रीक़ा**" से ईसाले सवाब के मदनी फूल (कुछ तरमीम के साथ) मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

"अल्लाह की रह़मत के क्या कहने" (उर्दू) के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 19 मदनी फूल

۞ ईसाले सवाब के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : "सवाब पहुंचाना" इस को "सवाब बख़्शना" भी कहते हैं मगर बुज़ुर्गों के लिये "सवाब बख़्शना" कहना मुनासिब नहीं। "सवाब नज़्र करना" कहना अदब के ज़ियादा क़रीब है। इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे अक़्दस عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ख़्वाह और नबी या वली को "सवाब बख़्शना" कहना बे अदबी है कि बख़्शना बड़े की त़रफ़ से छोटे को होता है बल्कि नज़्र करना या हदिय्या करना कहे। (फ़तावा रज़विय्या, 26/609)

۞ फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, तिलावत, ना'त शरीफ़, ज़िक्रुल्लाह, दुरूद शरीफ़, बयान, दर्स, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आ़मात, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ालआ़, मदनी कामों के लिये इनफ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का ईसाले सवाब कर सकते हैं।

www.dawateislami.net

❁ मय्यित का तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी करना बहुत अच्छे काम हैं कि येह ईसाले सवाब के ही ज़राएअ़ हैं। शरीअ़त में तीजे वग़ैरा के अ़दमे जवाज़ (या'नी नाजाइज़ होने) की दलील न होना खुद दलीले जवाज़ (जाइज़ होने की दलील) है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ़ करना क़ुरआने करीम से साबित है जो कि ईसाले सवाब की अस्ल है। चुनान्चे, पारह 28, सूरतुल ह़श्र, आयत 10 में इरशादे रब्बुल इ़बाद है :

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِ هِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।*

❁ तीजे वग़ैरा का खाना सिर्फ़ उसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुवे माल से कर सकते हैं जब कि सारे वुरसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त भी दें अगर एक भी वारिस नाबालिग़ है तो सख़्त ह़राम है। हां बालिग़ अपने हि़स्से से कर सकता है। (فتاوی خانیۃ، کتاب الحظر و الاباحۃ، ٤/٣٦٦ व फ़तावा रज़विय्या, 9/664 व बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 4, 1/853 मुलख़्ख़सन)

❁ तीजे का खाना चूंकि उ़मूमन दा'वत की सूरत में होता है इस लिये अग़निया के लिये जाइज़ नहीं सिर्फ़ ग़ुरबा व मसाकीन खाएं, तीन दिन के बा'द भी मय्यित के खाने से अग़निया (या'नी जो फ़क़ीर न हों उन) को बचना चाहिये। फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 667 से मय्यित के खाने से मुतअ़ल्लिक़ एक मुफ़ीद सुवाल-जवाब मुलाह़ज़ा हों,

सुवाल : मक़ूला طَعَامُ الْمَيِّتِ يُمِيْتُ الْقَلْب (मय्यित का खाना दिल को मुर्दा कर देता है) मुस्तनद क़ौल है ? अगर मुस्तनद है तो इस के क्या मा'ना हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : येह तजरिबे की बात है और इस के मा'ना येह हैं कि जो त़आ़मे मय्यित के मुतमन्नी रहते हैं उन का दिल मर जाता है, ज़िक्र व त़ाअ़ते इलाही के लिये ह़यात व चुस्ती उस में नहीं कि वोह अपने पेट के लुक़्मे के लिये मौते मुस्लिमीन के मुन्तज़िर रहते हैं और खाना खाते वक़्त मौत से ग़ाफ़िल और उस की लज़्ज़त में शाग़िल। (फ़तावा रज़विय्या, 9/667)

❁ मय्यित के तीजे का खाना (मालदार न खाएं) सिर्फ़ फ़ुक़रा को खिलाएं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/853 मुलख़्ख़सन)

❁ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (बा'ज़ लोग) चहलुम या बरसी या शशमाही पर खाना बे निय्यते ईसाले सवाब मह़ज़ एक रस्मी त़ौर पर पकाते और "शादियों की भाजी" की त़रह़ बरादरी में बांटते हैं, वोह भी बे अस्ल है, जिस से एह़तिराज़ (या'नी बचना) चाहिये। (फ़तावा रज़विय्या, 9/671) अलबत्ता येह खाना ईसाले सवाब और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हो तो बहुत अच्छा और कारे सवाब है। नीज़ अगर कोई ईसाले सवाब के लिये खाने का एहतिमाम न भी करे तब भी कोई ह़रज नहीं। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 15 माख़ूज़न)

❁ एक दिन के बच्चे को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं, उस का तीजा, वग़ैरा भी करने में ह़रज नहीं और जो ज़िन्दा हैं उन को भी ईसाले सवाब किया जा सकता है।

❁ अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों और मुसलमान जिन्नात को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 15)

❁ ग्यारहवीं शरीफ़ और रजबी शरीफ़ (या'नी 15 रजबुल मुरज्जब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कूंडे करना) वग़ैरा जाइज़

www.dawateislami.net

है। कूंडे ही में खीर खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं, इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं, इस मौक़अ़ पर जो "कहानी" पढ़ी जाती है वोह बे अस्ल है, यासीन शरीफ़ पढ़ कर 10 क़ुरआने करीम ख़त्म करने का सवाब कमाइये और कूंडों के साथ साथ इस का भी ईसाले सवाब कर दीजिये।

❁ दास्ताने अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदा की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें। इसी त़रह़ एक पेम्फ़्लेट बनाम "वसिय्यत नामा" लोग तक़्सीम करते हैं जिस में किसी "शैख़ अह़मद" का ख़्वाब दर्ज है येह भी जा'ली है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं उन का भी ए'तिबार न करें।

(फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 15)

❁ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की फ़ातिह़ा के खाने को ता'ज़ीमन "नज़्रो नियाज़" कहते हैं और येह नियाज़ तबर्रुक है इसे अमीर व ग़रीब सब खा सकते हैं। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 16)

❁ नियाज़ और ईसाले सवाब के खाने पर फ़ातिह़ा पढ़ाने के लिये किसी को बुलवाना या बाहर के मेहमान को खिलाना शर्त़ नहीं, घर के अफ़राद अगर ख़ुद ही फ़ातिह़ा पढ़ कर खा लें जब भी कोई ह़रज नहीं।

(फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 16)

❁ रोज़ाना जितनी बार भी ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाना खाएं उस में अगर किसी न किसी बुज़ुर्ग के ईसाले सवाब की निय्यत कर

www.dawateislami.net

लें तो ख़ूब है। मसलन नाश्ते में निय्यत करें, आज के नाश्ते का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के ज़रीए़ तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को पहुंचे। दो पहर को निय्यत कीजिये : अभी जो खाना खाएंगे (या खाया) उस का सवाब सरकारे ग़ौसे आ'ज़म और तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को पहुंचे, रात को निय्यत कीजिये : अभी जो खाएंगे उस का सवाब इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن और हर मुसलमान मर्द व औ़रत को पहुंचे। या हर बार सभी को ईसाले सवाब किया जाए और येही अन्सब (ज़ियादा मुनासिब) है। याद रहे ईसाले सवाब सिर्फ़ उसी सूरत में हो सकेगा जब कि वोह खाना किसी अच्छी निय्यत से खाया जाए मसलन इ़बादत पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से खाया तो येह खाना कारे सवाब हुवा, और इस का ईसाले सवाब हो सकता है। अगर एक भी अच्छी निय्यत न हो तो खाना मुबाह़ कि इस पर न सवाब न गुनाह, तो जब सवाब ही न मिला तो ईसाले सवाब कैसा ! अलबत्ता दूसरों को ब निय्यते सवाब खिलाया हो तो उस खिलाने का सवाब ईसाल हो सकता है। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 16)

۞ अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाए जाने वाले खाने से पहले ईसाले सवाब करें या खाने के बा'द दोनों त़रह़ दुरुस्त है। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 17)

۞ हो सके तो हर रोज़ (नफ़्अ़ पर नहीं बल्कि) अपनी बिकरी (Sale) का चौथाई फ़ीसद (0.25% या'नी चार सौ रूपे पर एक रूपिया) और मुलाज़मत करने वाले तनख़्वाह का माहाना कम अज़ कम एक फ़ीसद सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें। इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें ख़ुद ही देख लेंगे। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 17)

www.dawateislami.net

❁ मस्जिद या मद्रसे का क़ियाम सदक़ए जारिय्या और ईसाले सवाब का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

❁ जितनों को ईसाले सवाब करें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा। येह नहीं कि सवाब तक़्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले। (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ ، باب صلاۃالجنائز، مطلب: فی القراۃ للمیت،۳/۱۸۰ بتغیرقلیل)

ईसाले सवाब करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि उस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन सब के मजमूए़ के बराबर उस को सवाब मिले। मसलन कोई नेक काम किया जिस पर उस को दस नेकियां मिलीं अब उस ने दस मुर्दों को ईसाले सवाब किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एक सौ दस और अगर एक हज़ार को ईसाले सवाब किया तो उस को दस हज़ार दस। وَعَلٰی ھٰذَاالْقِیَاس

(फ़तावा रज़विय्या, 9/623–629 माख़ूज़न व बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/850 मुलख़्ख़सन)

❁ ईसाले सवाब सिर्फ़ मुसलमान को कर सकते हैं। काफ़िर या मुर्तद को ईसाले सवाब करना या उस को **मर्हूम, जन्नती, ख़ुल्द आश्यां, बैकुन्ठ बासी, स्वर्ग बासी** कहना कुफ़्र है। (फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 18)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने अ़ज़ीज़ों और प्यारों को ईसाले सवाब करने के लिये ख़ूब नेकियां कीजिये। नेकियां करने, पांचों नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ नवाफ़िल की कसरत और तिलावते कु़रआने पाक की आ़दत बनाने के लिये तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने

www.dawateislami.net

रसूल के हमराह सफ़र कर के ढेरों नेकियां कमाइये और अपने अ़ज़ीज़ों को ईसाल कीजिये। आइये तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार समाअ़त फ़रमाइये। चुनान्चे,

ईसाले सवाब की मदनी बहार

क़ादिराबाद (ज़िल्अ़ मन्डी बहाउद्दीन, पंजाब) के इस्लामी भाई मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुह़म्मद जुनैद अ़त्तारी एक ह़ादिसे में इन्तिक़ाल कर गए। उन की हमशीरा का बयान है कि भाईजान के इन्तिक़ाल के कुछ अ़र्से बा'द मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं जुनैद भाई की क़ब्र के पास खड़ी हूं, अचानक उन की क़ब्र खुल गई, मैं ने देखा कि जुनैद भाई क़ब्र में बैठे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल हैं, मैं ने उन्हें मुख़ात़ब करते हुवे कहा : जुनैद भाई ! हम आप को तिलावत, ज़िक्रो दुरूद और सदक़ा व ख़ैरात के ज़रीए़ ईसाले सवाब करते हैं क्या आप को वोह सवाब पहुंचता है ? येह सुन कर जवाब दिया ! "**हां तुम जो भी ईसाले सवाब करते हो वोह मुझे मिलता है !**" (ख़ुश्बूदार क़ब्र, स. 12)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इब्लीस की बेटी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या इब्लीसे लई़न (या'नी ला'नती शैत़ान) की बेटी है और इस (या'नी दुन्या) से मह़ब्बत करने वाला हर शख़्स उस की बेटी का ख़ावन्द है। (الحديقة الندية، ١/١٩)

www.dawateislami.net

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه
का मदनी वसिय्यत नामा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (كامل عدى، ج٥،ص٥٠٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِه इस वक़्त नमाज़े **फ़ज्र** के बा'द **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में बैठ कर ''اَرْبَعِيْنَ وَصايا مِنَ الْمَدِيْنَةِ الْمُنَوَّرَةِ'' (या'नी **मदीनए मुनव्वरह** से चालीस 40 वसिय्यतें) तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं, आह ! सद आह !

आज मेरी **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी की आख़िरी सुब्ह़ है, सूरज रौज़ए मह़बूब عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हुवा चाहता है, आह ! आज रात तक अगर **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न मिलने की सूरत न हुई तो मदीने से जुदा होना पड़ जाएगा। आंख अश्कबार है, दिल बे क़रार है, हाए !

अफ़्सोस चन्द घड़ियां त़यबा की रह गई हैं
दिल में जुदाई का ग़म तूफ़ां मचा रहा है

आह ! दिल ग़म में डूबा हुवा है, हिज्रे मदीना की जां सोज़ फ़िक्र ने सरापा तस्वीरे ग़म बना कर रख दिया है, ऐसा लगता है गोया होंटों का

www.dawateislami.net

तबस्सुम किसी ने छीन लिया हो, आह ! अ़न क़रीब मदीना छूट जाएगा, दिल टूट जाएगा, आह ! मदीने से सूए वत़न रवानगी के लम्ह़ात ऐसे जां गुज़ा होते हैं गोया,

किसी शीर ख़्वार बच्चे को उस की मां की गोद से छीन लिया गया हो और वोह रोता हुवा निहायत ही ह़सरत के साथ बार बार मुड़ कर अपनी मां की त़रफ़ देखता हो कि शायद मां एक बार फिर बुला लेगी....और शफ़्क़त के साथ गोद में छुपा लेगी...... अपने सीने से चिमटा लेगी... मुझे लोरी सुना कर अपनी मामता भरी गोद में मीठी नींद सुला देगी.... आह !

मैं शिकस्ता दिल लिये बोझल क़दम रखता हुवा
चल पड़ा हूं या शहनशाहे मदीना अल वदाअ़

अब शिकस्ता दिल के साथ "**चालीस वसाया**" अ़र्ज़ करता हूं, मेरे येह वसाया "**दा'वते इस्लामी**" से वाबस्ता तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की त़रफ़ भी हैं नीज़ मेरी औलाद और दीगर अहले ख़ाना भी इन वसाया पर ज़रूर तवज्जोह रखें ।

ज़हे क़िस्मत ! मुझ पापी व बदकार को मदीनए पुर अन्वार में, वोह भी सायए सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार में, ऐ काश ! जल्वए सरकारे नामदार, शहनशाहे अबरार, शफ़ीए रोज़े शुमार, मह़बूबे परवर दगार, अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत नसीब हो जाए और **जन्नतुल बक़ीअ़** में दो[2] गज़ ज़मीन मुयस्सर आए अगर ऐसा हो जाए तो दोनों जहां की सआ़दतें ही सआ़दतें हैं । आह ! वरना जहां मुक़द्दर......

﴾1﴿ अगर आ़लमे नज़्अ़ में पाएं तो उस वक़्त का हर काम सुन्नत के मुत़ाबिक़ करें, मुमकिना सूरत में सीधी करवट लिटा कर चेहरा क़िब्ला रू करें । यासीन शरीफ़ भी सुनाएं और कलिमए त़य्यिबा सीने पर दम आने तक मुसलसल ब आवाज़ पढ़ा जाए ।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ बा'दे क़ब्ज़े रूह़ भी हर हर मुआ़मले में सुन्नतों का लिहाज़ रखें, मसलन तजहीज़ो तक्फ़ीन वगै़रा में **ता'जील** (या'नी जल्दी) और ज़ियादा अ़वाम इकठ्ठी करने के शौक़ में ताख़ीर करना सुन्नत नहीं। बहारे शरीअ़त हिस्सा 4 में बयान किये हुवे अह़काम पर अ़मल किया जाए। ख़ुसूसन ताकीद अशद ताकीद है कि हरगिज़ नौह़ा न किया जाए क्यूंकि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

﴾3﴿ **क़ब्र** का साइज़ वगै़रा सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो और लह़्द बनाएं कि सुन्नत है।(1)

﴾4﴿ अन्दरूने क़ब्र दीवारें वगै़रा कच्ची मिट्टी की हों, आग की पकी हुई ईंटें इस्ति'माल न की जाएं, अगर अन्दर में पकी हुई ईंट की दीवारें ज़रूरी हों तो फिर अन्दरूनी हिस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी त़रह़ लीप दिया जाए।

﴾5﴿ मुमकिन हो तो अन्दरूनी तख़्तों पर **यासीन शरीफ़, सूरतुल मुल्क** और दुरूदे ताज पढ़ कर दम कर दिया जाए।

﴾6﴿ कफ़ने मस्नून ख़ुद सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ के पैसों से हो। ह़ालते फ़क्र की सूरत में किसी **सह़ीह़ुल अ़क़ीदा** सुन्नी के माले ह़लाल से लिया जाए।

﴾7﴿ ग़ुस्ल बा रीश, बा इमामा व पाबन्दे सुन्नत इस्लामी भाई ऐ़न सुन्नत के मुत़ाबिक़ दें (सादाते किराम अगर गन्दे वुजूद को ग़ुस्ल दें तो सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ इसे अपने लिये बे अदबी तसव्वुर करता है)

---

1 .....क़ब्र की दो क़िस्में हैं (1) सन्दूक़ (2) लह़्द :

लह़्द बनाने का त़रीक़ा येह है कि क़ब्र खोदने के बा'द मय्यित रखने के लिये जानिबे क़िब्ला जगह खोदी जाती है। लह़्द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और अगर ज़मीन नर्म हो तो सन्दूक़ में मुज़ायक़ा नहीं। हो सकता है गोरकन वगै़रा मश्वरा दें कि सलीब अन्दरूनी हिस्से में तिरछी कर के लगा लो मगर उस की बात न मानी जाए।

www.dawateislami.net

﴾8﴿ गुस्ल के दौरान सत्रे औ़रत की मुकम्मल हिफ़ाज़त की जाए अगर नाफ़ से ले कर **घुटनों** समेत कथ्थई या किसी गहरे रंग की दो[2] मोटी चादरें उढ़ा दी जाएं तो ग़ालिबन सत्र चमकने का एह्तिमाल जाता रहेगा। हां पानी ज़ाहिरी जिस्म के हर हिस्से बल्कि रूएं रूएं की जड़ से ले कर नोक पर बहना लाज़िमी है।

﴾9﴿ कफ़न अगर आबे ज़मज़म या आबे मदीना बल्कि दोनों से तर किया हुवा हो तो सआ़दत है। काश ! कोई सय्यिद साहिब सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा दें।(1)

﴾10﴿ बा'दे गुस्ले मय्यित, कफ़न में चेहरा छुपाने से क़ब्ल, पहले पेशानी पर अंगुश्ते शहादत से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखिये।

﴾11﴿ इसी त़रह सीने पर : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾12﴿ दिल की जगह पर : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾13﴿ नाफ़ और सीने के दरमियानी हिस्सए कफ़न पर : या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, या इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, या इमाम अह़मद रज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, या शैख़ ज़ियाउद्दीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शहादत की उंगली से लिखें।

﴾14﴿ नीज़ नाफ़ के ऊपर से ले कर सर तक तमाम हिस्सए कफ़न पर (इलावा पुश्त के) "मदीना मदीना" लिखा जाए। याद रहे ! येह सब कुछ रोशनाई से नहीं सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से लिखना है और ज़हे नसीब कोई सय्यिद साहिब लिखें।

1.....सिर्फ़ उ़लमा व मशाइख़ को बा इमामा दफ़्न किया जा सकता है, आ़म लोगों की मय्यित को मअ़ इमामा दफ़्नाना मन्अ़ है।

www.dawateislami.net

﴾15﴿ दोनों[2] आंखों पर **मदीनतुल मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعْظِيْمًا की खजूरों की गुठलियां रख दी जाएं।

﴾16﴿ जनाज़ा ले कर चलते वक़्त भी तमाम सुन्नतें मल्हूज़ रखिये।

﴾17﴿ जनाज़े के जुलूस में सब इस्लामी भाई मिल कर इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़सीदए दुरूद "का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद" पढ़ें। (इस के इ़लावा भी ना'तें वग़ैरा पढ़ें मगर सिर्फ़ और सिर्फ़ उ़लमाए अहले सुन्नत ही का कलाम पढ़ा जाए)

﴾18﴿ जनाज़ा कोई **सह़ीहुल अ़क़ीदा** सुन्नी आ़लिमे बा अ़मल या कोई सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाई या अह्ल हों तो औलाद में से कोई पढ़ा दें मगर ख़्वाहिश है कि सादाते किराम को **फ़ौक़िय्यत** दी जाए।

﴾19﴿ ज़हे नसीब ! सादाते किराम अपने रह़मत भरे हाथों क़ब्र में उतार कर اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْن के सिपुर्द कर दें।

﴾20﴿ चेहरे की त़रफ़ दीवारे क़िब्ला में त़ाक़ बना कर उस में किसी पाबन्दे सुन्नत इस्लामी भाई के हाथ का लिखा हुवा अ़ह्द नामा, नक़्शे ना'ले शरीफ़, सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ का नक़्शा, शजरा शरीफ़, नक़्शे हरकारा वग़ैरा **तबर्रुकात** रखिये।

﴾21﴿ **जन्नतुल बक़ीअ़** में जगह मिल जाए तो ज़हे क़िस्मत ! वरना किसी **वलिय्युल्लाह** के क़ुर्ब में, येह भी न हो सके तो जहां इस्लामी भाई चाहें सिपुर्दे ख़ाक करें मगर जाए ग़स्ब पर दफ़्न न करें कि ह़राम है।

﴾22﴿ **क़ब्र** पर अज़ान दीजिये।

www.dawateislami.net

﴾23﴿ ज़हे नसीब ! कोई सय्यिद साहि़ब तल्क़ीन फ़रमा दें।[1]

﴾24﴿ हो सके तो मेरे अहले मह़ब्बत मेरी तदफ़ीन के बा'द 12 रोज़ तक, येह न हो सके तो कम अज़ कम 12 घन्टे ही सही मेरी क़ब्र पर ह़ल्क़ा किये रहें और ज़िक्रो दुरूद और तिलावत व ना'त से मेरा दिल बहलाते रहें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नई जगह में दिल लग ही जाएगा इस दौरान भी और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एह्तिमाम रखें।

﴾25﴿ मेरे ज़िम्मे अगर क़र्ज़ वग़ैरा हो तो मेरे माल से और अगर माल न हो तो दरख़्वास्त है कि मेरी औलाद अगर ज़िन्दा हो तो वोह या कोई और

1.....**तल्क़ीन की फ़ज़ीलत :** सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम्हारा कोई मुसलमान भाई मरे और उस को मिट्टी दे चुको तो तुम में एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सुनेगा और जवाब न देगा। फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा, फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह कहेगा : "हमें इरशाद कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए।" मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती। फिर कहे :

اُذْكُرْ مَاخَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا: شَهَادَةَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)، وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) نَبِيًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا.

तर्जमा : "तू उसे याद कर जिस पर तू दुन्या से निकला या'नी येह गवाही कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी और क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी था।"

मुन्कर नकीर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो ? फ़रमाया : ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की त़रफ़ निस्बत करे। (طبرانی کبیر، ج ۸، ص ۲۵۰، حدیث ۷۹۷۹) याद रहे ! फ़ुलां बिन फ़ुलाना की जगह मय्यित और उस की मां का नाम ले, मसलन **या मुह़म्मद इल्यास बिन अमीना**। अगर मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो मां के नाम की जगह **ह़व्वा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का नाम ले। तल्क़ीन सिर्फ़ अ़रबी में पढ़िये।

www.dawateislami.net

इस्लामी भाई एह़सानन अपने पल्ले से अदा फ़रमा दें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाएगा। (मुख़्तलिफ़ इज्तिमाआ़त में ए'लान किया जाए कि जिस किसी की भी दिल आज़ारी या ह़क़ तलफ़ी हुई हो वोह मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी को मुआ़फ़ फ़रमा दें अगर क़र्ज़ वग़ैरा हो तो फ़ौरन वुरसा से रुजूअ़ करें या मुआ़फ़ कर दें)

﴾26﴿ मुझे कसरत के साथ ईसाले सवाब व दुआ़ए मग़्फ़िरत से नवाज़ते रहें तो एह़साने अ़ज़ीम होगा।

﴾27﴿ सब के सब मस्लके आ'ला ह़ज़रत या'नी मज़्हबे अहले सुन्नत पर इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की सह़ीह़ इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ क़ाइम रहें।

﴾28﴿ बद मज़्हबों की सोह़बत से कोसों दूर भागिये कि उन की सोह़बत ख़ातिमा बिल ख़ैर में बहुत बड़ी रुकावट और सबबे बरबादिये आख़िरत है।

﴾29﴿ ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** और सुन्नत पर मज़्बूत़ी से क़ाइम रहिये।

﴾30﴿ नमाज़े पन्जगाना, रोज़ए रमज़ान, ज़कात, ह़ज वग़ैरा फ़राइज़ (व दीगर वाजिबात व सुनन) के मुआ़मले में किसी क़िस्म की कोताही न किया करें।

﴾31﴿ **वसिय्यत ज़रूरी वसिय्यत :** दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के साथ हर दम वफ़ादार रहिये, इस के हर रुक्न और अपने हर निगरान के हर उस हुक्म की इत़ाअ़त कीजिये जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो। शूरा या दा'वते इस्लामी के किसी भी ज़िम्मेदार की बिला इजाज़ते शरई मुख़ालफ़त करने वाले से मैं बेज़ार हूं, ख़्वाह वोह मेरा कैसा ही क़रीबी अ़ज़ीज़ हो।

www.dawateislami.net

﴿32﴾ हर इस्लामी भाई हफ़्ते में कम अज़ कम एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करे और हर माह कम अज़ कम तीन दिन, बारह माह में 1 माह और ज़िन्दगी में यक मुश्त कम अज़ कम बारह माह के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करे। हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन अपने किरदार की इस्लाह़ पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के "मदनी इन्आ़मात" का रिसाला पुर करे और हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाए।

﴿33﴾ ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व सुन्नत का पैग़ाम दुन्या में आ़म करते रहिये।

﴿34﴾ बद अ़क़ीदगियों और बद आ'मालियों नीज़ दुन्या की बे जा मह़ब्बत, माले ह़राम और नाजाइज़ फ़ेशन वग़ैरा के ख़िलाफ़ अपनी जिद्दो जहद जारी रखिये। हुस्ने अख़्लाक़ और मदनी मिठास के साथ नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहिये।

﴿35﴾ ग़ुस्सा और चिड़चिड़ा पन को क़रीब भी मत फटकने दीजिये वरना दीन का काम दुश्वार हो जाएगा।

﴿36﴾ मेरी तालीफ़ात और मेरे बयान की केसिटों से मेरे वुरसा को दुन्या की दौलत कमाने से बचने की मदनी इल्तिजा है।

﴿37﴾ मेरे "तर्के" वग़ैरा के मुआ़मले में हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल किया जाए।

﴿38﴾ मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे, ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं।

﴿39﴾ मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले।

﴿40﴾ बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं। वुरसा से भी दरख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें।

www.dawateislami.net

अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े मह़शर में ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो। (अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो उस की वज्ह से किसी क़िस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं। अगर "हड़ताल" इस का नाम है कि ज़बर दस्ती कारोबार बन्द करवाया जाए, दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वग़ैरा किया जाए तो बन्दों की ऐसी ह़क़ तलफ़ियां करना कोई भी **मुफ़्तिये इस्लाम** जाइज़ नहीं कह सकता, इस त़रह़ की हड़ताल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।)

काश ! गुनाह बख़्शने वाला ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनहगार को अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मुआफ़ फ़रमा दे। ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब तक ज़िन्दा रहूं इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में गुम रहूं, ज़िक्रे मदीना करता रहूं, नेकी की दा'वत के लिये कोशां रहूं, मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाऊं और बे ह़िसाब बख़्शा जाऊं। **जन्नतुल फ़िरदौस** में प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो। आह ! काश ! हर वक़्त नज़्ज़ारए मह़बूब में गुम रहूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने ह़बीब पर बे शुमार दुरूदो सलाम भेज, इन की तमाम उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदार इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

*"**मदनी वसिय्यत नामा**" पहली बार मुह़र्रमुल ह़राम 1411 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1990 ईसवी मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से जारी किया था फिर कभी कभी थोड़ी बहुत तरमीम की गई थी अब मज़ीद बा'ज़ तरामीम के साथ ह़ाज़िर है।*

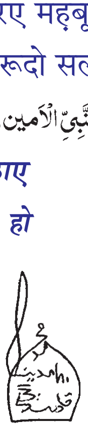

10 जुमादल ऊला 1434 हिजरी
मुत़ाबिक़, 23-3-2013

www.dawateislami.net

फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा

आज कल मुसलमानों में खुसूसन खाने पर जो **फ़ातिह़ा का त़रीक़ा** राइज है वोह भी बहुत अच्छा है। जिन खानों का **ईसाले सवाब** करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये।

अब :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ

पढ़ कर एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَاۤ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾
وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

तीन बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

www.dawateislami.net

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ٥

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ شَرِّ
غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنۡ
شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ٥

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِکِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰہِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾
مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ
صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ٥

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ
یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِہۡدِنَا
الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ
غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ﴿۷﴾

www.dawateislami.net

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ o

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۚۖۛ فِیۡہِ ۚۛ ہُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ﴿۲﴾
الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَیۡبِ وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ
یُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ
مِنۡ قَبۡلِکَ ۚ وَ بِالۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِکَ عَلٰی ہُدًی
مِّنۡ رَّبِّہِمۡ ٭ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴾1﴿ وَ اِلٰـہُکُمۡ اِلٰہٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۶۳﴾

(پ۲، البقرۃ:۱۶۳)

﴾2﴿ اِنَّ رَحۡمَتَ اللّٰہِ قَرِیۡبٌ مِّنَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۵۶﴾

(پ۸، الاعراف:۵۶)

﴾3﴿ وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَۃً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۰۷﴾

(پ۱۷، الانبیاء:۱۰۷)

﴾4﴿ مَا کَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنۡ رِّجَالِکُمۡ وَ لٰکِنۡ رَّسُوۡلَ
اللّٰہِ وَ خَاتَمَ النَّبِیّٖنَ ؕ وَ کَانَ اللّٰہُ بِکُلِّ شَیۡءٍ عَلِیۡمًا ﴿۴۰﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۴۰)

﴾5﴿ اِنَّ اللّٰہَ وَ مَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ
اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَ سَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۶)

www.dawateislami.net

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ
وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

इस के बा'द येह आयात पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۲۳،الصّٰفّٰت:۱۸۰۔۱۸۲)

अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला हाथ उठा कर बुलन्द आवाज़ से "**अल फ़ातिह़ा**" कहे। सब लोग आहिस्ता से या'नी इतनी आवाज़ से कि सिर्फ़ खुद सुनें **सूरतुल फ़ातिह़ा** पढ़ें। अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें : "आप को दिया।" अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला **ईसाले सवाब** कर दे।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़ातिह़ा से क़ब्ल जो सूरतें वग़ैरा पढ़ते थे वोह भी तह़रीर की जाती हैं :

www.dawateislami.net

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ﴿۰﴾

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ
یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِہۡدِنَا
الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ۬
غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ﴿۷﴾

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ﴿۰﴾

اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۬ۚ لَا تَاۡخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّ لَا
نَوۡمٌ ؕ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ
یَشۡفَعُ عِنۡدَہٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِہٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡہِمۡ وَ مَا
خَلۡفَہُمۡ ۚ وَ لَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِہٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ کُرۡسِیُّہُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوۡدُہٗ حِفۡظُہُمَا ۚ
وَ ہُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ﴿۲۵۵﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۵۵)

तीन बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ﴿۰﴾

قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ وَ لَمۡ
یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

www.dawateislami.net

ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का त़रीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है उस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा । और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात मुसलमान हुवे या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा । इस दौरान बेहतर येह है कि जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये । अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी नाम ब नाम ईसाले सवाब कीजिये । (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है अगर किसी का भी नाम न लें सिर्फ़ इतना ही कह लें कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस का सवाब आज तक जितने भी अहले ईमान हुवे उन सब को पहुंचा तब भी हर एक को पहुंच जाएगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

अब ह़स्बे मा'मूल दुआ़ ख़त्म कर दीजिये । (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह दूसरे खानों और पानी में डाल दीजिये)

www.dawateislami.net

मर्ह़ूम वालिदैन के साथ एह़सान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिसाले "**ग़फ़्लत**" में दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे लिखते हैं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब-किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे। (فردوس الاخبار،۲/۳۷۵،حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मर्ह़ूम वालिदैन के लिये दुआ व इस्तिग़्फ़ार कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उसैद साइ़दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं : हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि बनी सलमा में का एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरे वालिदैन मर चुके हैं अब भी उन के साथ एह़सान का कोई त़रीक़ा बाक़ी है ? फ़रमाया : हां उन के लिये दुआ व इस्तिग़्फ़ार करना और जो उन्हों ने अ़ह्द किया है उस को पूरा करना और जिस रिश्ते वाले के साथ उन्हीं की वज्ह से सुलूक किया जा सकता हो उस के साथ सुलूक करना और उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करना।

(ابوداود، کتاب الادب، باب فی برالوالدین، ۴/۴۳۴، حدیث ۵۱۴۲)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि वालिदैन की वफ़ात के बा'द भी उन के लिये दुआ़ और इस्तिग़्फ़ार कर के उन्हें ख़ुशी पहुंचाई जा सकती है और नेक आ'माल कर के ईसाले सवाब भी किया जा सकता है बल्कि औलाद को चाहिये कि नेक आ'माल ही करें क्यूंकि मरने के बा'द वालिदैन को उन की औलाद के आ'माल पेश किये जाते हैं और वोह नेक आ'माल से ख़ुश और बुरे से रन्जीदा होते हैं चुनान्चे,

मर्हूम वालिदैन पर औलाद के आ'माल पेश होते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना सदक़ा बिन सुलैमान जा'फ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मेरा उ़नफ़ुवाने शबाब था (या'नी जवानी के इब्तिदाई दिन थे) और मैं बुरी आ़दतों और दुन्या की रंगीनियों में मगन था मगर जब मेरे वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हुवा तो मेरा दिल चोट खा गया । मैं ने अपनी साबिक़ा ख़त़ाओं पर शर्मिन्दा होते हुवे बारगाहे ख़ुदावन्दी में तौबा कर ली और आ'माले सालेह़ा (या'नी नेकियों) की त़रफ़ राग़िब हो गया । शामते नफ़्स से एक दिन फिर किसी बुरे काम का मुर्तकिब हो गया तो उसी रात वालिदे मर्हूम ख़्वाब में आए और फ़रमाया : मेरे बेटे ! तेरे आ'माल मेरे सामने पेश किये जाते हैं तो मुझे बहुत ज़ियादा ख़ुशी होती हैं क्यूंकि वोह नेक लोगों के आ'माल जैसे होते हैं लेकिन इस मरतबा जब तेरे आ'माल पेश किये गए तो मुझे बहुत शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ा । ख़ुदारा ! मुझे मेरे फ़ौतशुदा दोस्तों के सामने रुस्वा न किया करो । बस उस ख़्वाब के बा'द मेरी ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ गया, मैं डर गया और तौबा पर इस्तिक़ामत इख़्तियार कर ली । इस ह़िकायत के रावी कहते हैं : तहज्जुद

www.dawateislami.net

की नमाज़ में हम ह़ज़रते सय्यिदुना सदक़ा बिन सुलैमान जा'फ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को इस त़रह़ मुनाजात करते हुवे सुनते थे : ऐ सालिह़ीन की इस्लाह़ करने वाले ! ऐ भटके हुवों को सीधी राह चलाने वाले ! ऐ गुनाहगारों पर रह़म फ़रमाने वाले ! मैं तुझ से ऐसी तौबा का सुवाल करता हूं जिस के बा'द कभी गुनाह की त़रफ़ न जाऊं, कभी बुराई व ज़ुल्म की त़रफ़ नज़र उठा कर भी न देखूं, ऐ ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 401)

लिहाज़ा चाहिये कि अच्छे आ'माल कर के वालिदैन को ख़ुशी पहुंचाएं और बुरे आ'माल से बच कर उन्हें ग़मगीन होने से बचाएं । वालिदैन के ईसाले सवाब से मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

वालिदैन की त़रफ़ से ख़ैरात कीजिये

﴾1﴿ **जब** तुम में से कोई कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिये कि इसे अपने मां बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और उस के (या'नी ख़ैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी ।

(شعب الایمان، باب فی بر الوالدین،فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتهما، ٦/٢٠٥،حدیث ٧٩١١)

दस ह़ज का सवाब

﴾2﴿ **जो** अपनी मां या बाप की त़रफ़ से **ह़ज** करे उन (या'नी मां या बाप) की त़रफ़ से ह़ज अदा हो जाए, उसे (या'नी ह़ज करने वाले को) मज़ीद **दस ह़ज का सवाब** मिले । (دارقطنی، ٢/٣٢٩، حدیث ٢٥٨٧)

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! जब कभी **नफ़्ली ह़ज** की सआदत ह़ासिल हो तो फ़ौतशुदा मां या बाप की निय्यत कर लीजिये ताकि उन को भी ह़ज का सवाब मिले, आप का भी ह़ज हो जाए बल्कि मज़ीद **दस ह़ज** का सवाब हाथ आए। अगर मां बाप में से कोई इस हाल में फ़ौत हो गया कि उन पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुकने के बा वुजूद वोह न कर पाए थे तो अब औलाद को **ह़ज्जे बदल** का शरफ़ ह़ासिल करना चाहिये। "**ह़ज्जे बदल**" के तफ़्सीली अह़काम के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ किताब "**रफ़ीक़ुल ह़रमैन**" का सफ़ह़ा 208 ता 214 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

मक़्बूल ह़ज का सवाब

रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जो ब निय्यते सवाब अपने वालिदैन दोनों या एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे, **ह़ज्जे मक़्बूल** के बराबर सवाब पाए और जो ब कसरत उन की **क़ब्र** की ज़ियारत करता हो, फ़िरिश्ते इस की **क़ब्र** की (या'नी जब येह फ़ौत होगा) ज़ियारत को आएं।

(نوادر الاصول للحکیم الترمذی، ۱/۷۳، حدیث۹۸)

जुमुआ़ को ज़ियारते क़ब्र की फ़ज़ीलत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : **जो** शख़्स **जुमुआ़** के रोज़ अपने **वालिदैन** या उन में से किसी एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे और उस के पास **सूरए यासीन** पढ़े बख़्श दिया जाए। (الکامل لابن عدی، ۶/۲۶۰)

www.dawateislami.net

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुह़म्मद बिन नो'मान से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने मां बाप या उन में से एक की क़ब्र की हर जुमुआ़ में ज़ियारत किया करे तो उस की बख़्शिश की जाएगी और वोह भलाई करने वालों में लिखा जाएगा।

(شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتهما، ٦/٢٠١، حدیث ٧٩٠١)

ह़दीसे बाला के तह़त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया कि यहां जुमुआ़ से मुराद या तो जुमुआ़ का दिन है या पूरा हफ़्ता, बेहतर है कि हर जुमुआ़ के दिन वालिदैन की क़ुबूर की ज़ियारत किया करे, अगर वहां ह़ाज़िरी मुयस्सर न हो जैसे कि येह फ़क़ीर अब पाकिस्तान में है और मेरे वालिदैन की क़ब्रें हिन्दुस्तान में तो हर जुमुआ़ को उन के लिये ईसाले सवाब किया करे। येह भी मा'लूम हुवा कि मां बाप की क़ब्रों की ज़ियारत करने वाला गोया अब भी उन की ख़िदमत कर रहा है। जो सवाब उन की ज़िन्दगी में उन की ख़िदमत करने का है वोही सवाब उन की वफ़ात के बा'द उन की क़ुबूर की ज़ियारत का है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि वालिदैन की वफ़ात के बा'द तीन काम करो : **एक** येह कि हर जुमुआ़ को उन की क़ब्रों की ज़ियारत करो, उन के लिये दुआ़–ख़त्म वग़ैरा पढ़ो। **दूसरे** येह कि उन के क़र्ज़ अदा करो, उन के वा'दे पूरे करो। **तीसरे** येह कि वालिद के दोस्तों और वालिदा की सहेलियों को अपना बाप व मां समझो और उन की ख़िदमत करो। (मिरआतुल मनाजीह़, क़ब्रों की ज़ियारत, 2/526)

एह़तियात़ फ़रमाएं

याद रखिये ! जब ज़ियारते क़ुबूर के लिये जाएं तो एह़तियात़ फ़रमाएं कि किसी क़ब्र पर पाउं न पड़े। अगर क़ब्रों पर पाउं रखे बिग़ैर

www.dawateislami.net

मां-बाप वग़ैरा की क़ब्रों तक न जा सकते हों तो अब दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ना होगा क्यूंकि बुज़ुर्गों के मज़ारों या मां बाप की क़ब्रों पर जाना मुस्तह़ब काम है जब कि मुसलमान की क़ब्र पर पाउं रखना नाजाइज़ व ह़राम और मुस्तह़ब काम के लिये ह़राम काम की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : इस का लिह़ाज़ लाज़िम है कि जिस क़ब्र के पास बिल ख़ुसूस जाना चाहता है उस तक (ऐसा) क़दीम (या'नी पुराना) रास्ता हो, (जो कि क़ब्रें मिटा कर न बनाया गया हो) अगर क़ब्रों पर से हो कर जाना पड़े तो इजाज़त नहीं, सरे राह दूर खड़े हो कर एक क़ब्र की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर ईसाले सवाब कर दे। (फ़तावा रज़विय्या, 9/524)

अगर वालिदैन नाराज़ी में फ़ौत हुवे हों

जिस के मां बाप नाराज़ी के आ़लम में फ़ौत हो गए हों वोह उन के लिये ब कसरत दुआ़ए मग़फ़िरत करे कि मरने वाले के लिये सब से बड़ा तोह्‌फ़ा दुआ़ए मग़फ़िरत है और उन की त़रफ़ से ख़ूब ख़ूब ईसाले सवाब करे। औलाद की त़रफ़ से मुसलसल नेकियों के तह़ाइफ़ पहुंचेंगे तो उम्मीद है कि वालिदैने मर्ह़ूमैन राज़ी हो जाएं। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 197 पर है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी के मां बाप दोनों या एक का इन्तिक़ाल हो गया और येह उन की नाफ़रमानी करता था, अब उन के लिये हमेशा इस्तिग़फ़ार करता रहता है, यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को नेकूकार लिख देता है।"

(شعب الایمان،باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتھما،٦/٢٠٢،حدیث٧٩٠٢)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ख़ूब नेक आ'माल कर के वालिदैन को ईसाल कीजिये और उन को राह़त पहुंचाइये और वुस्अ़त हो तो मद्रसतुल मदीना या मस्जिद वग़ैरा ता'मीर करवा के वरना ता'मीर में अपना ह़िस्सा शामिल कर के उन के लिये सवाबे जारिय्या कीजिये।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक औलाद भी सदक़ए जारिया होती है और उन की दुआ़ओं के त़ुफ़ैल फ़ौतशुदा वालिदैन के लिये आसानियां हो जाती हैं लिहाज़ा नेक बनने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और मदनी इन्आ़मात को अपना लीजिये। ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और वालिदैन को ईसाले सवाब कीजिये। आइये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

वालिद साह़िब से अ़ज़ाब उठ गया

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, मैं ने ईद के दूसरे रोज़ आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। इसी दौरान वालिदे मर्ह़ूम जिन को फ़ौत हुवे दो बरस गुज़र चुके थे, मेरे ख़्वाब में बहुत अच्छी ह़ालत में तशरीफ़ लाए, मैं ने पूछा : अब्बू ! इन्तिक़ाल के बा'द क्या हुवा ? फ़रमाया : कुछ अ़र्सा गुनाहों की सज़ा मिली मगर अब अ़ज़ाब उठ गया है, तुम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल को हरगिज़ मत छोड़ना कि इसी की बरकत से मुझ पर करम हुवा है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे त़आ़म, जिल्द अव्वल, स. 357)

हैं इस्लामी भाई सभी भाई-भाई हैं बेह़द मह़ब्बत भरा मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नमाज़ के फ़िद्ये का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه रिसाला "गुस्ल का त़रीक़ा" में दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे लिखते हैं कि सरकारे मदीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صلى الله تعالى عليه واله وسلم का फ़रमाने रह़मत बुन्याद है, "मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत (पाकीज़गी) है।"

(ابویعلی، مسند ابی هریرة ، ما اسنده شهر بن حوشب عن ابی هریرة، ٥/٤٥٨،حدیث٦٣٨٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िद्ये की ता'रीफ़

इबादत में कोताही का कफ़्फ़ारा जो अल्लाह عزوجل की रिज़ा के लिये दिया जाए, उसे फ़िदया कहते हैं और नमाज़ का फ़िदया येह है कि हर नमाज़ के इवज़ एक सदक़ए फ़ित्र शरई फ़क़ीर को ख़ैरात करे। नमाज़ के फ़िद्ये के बारे में तफ़्सील मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

जिन के रिश्तेदार फ़ौत हुवे हों वोह ज़रूर पढ़ें

मय्यित की उ़म्र में से नव साल औ़रत के लिये और बारह साल मर्द के लिये ना बालिग़ी के निकाल दीजिये। बक़िया सालों का हिसाब लगाइये कि कितनी मुद्दत तक की नमाज़ें उस के ज़िम्मे क़ज़ा की बाक़ी हैं। ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये। बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द बक़िया तमाम उ़म्र का हिसाब लगा

www.dawateislami.net

लीजिये। अब फ़ी नमाज़ एक एक सदक़ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिये। एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार तक़रीबन 2 किलो से 80 ग्राम कम (1920 ग्राम) गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है। और एक दिन की छे नमाज़ें हैं पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब। मसलन 2 किलो से 80 ग्राम कम गेहूं की रक़म 12 रूपे हो तो एक दिन की नमाज़ों के 72 रूपे हुवे और 30 दिन के 2160 रूपे और बारह[12] माह के तक़रीबन 25,920 रूपे हुवे। अब किसी मय्यित पर 50 साल की नमाज़ें बाक़ी हैं तो फ़िदया अदा करने के लिये 12,96,000 रूपे ख़ैरात करने होंगे।

ज़ाहिर है हर शख़्स इतनी रक़म ख़ैरात करने की इस्तिताअ़त (त़ाक़त) नहीं रखता, इस के लिये उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने शरई ह़ीला इरशाद फ़रमाया है। मसलन वोह 30 दिन की तमाम नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से 2160 रूपे किसी फ़क़ीर (फ़क़ीर और मिस्कीन की ता'रीफ़ सफ़ह़ा नम्बर 204 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये) की मिल्क कर दे, येह 30 दिन की नमाज़ों का फ़िदया अदा हो गया। अब वोह फ़क़ीर येह रक़म देने वाले ही को हिबा कर दे (या'नी तोह़फ़े में दे दे) येह क़ब्ज़ा करने के बा'द फिर फ़क़ीर को 30 दिन की नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से क़ब्ज़े में दे कर उस का मालिक बना दे। इसी त़रह़ लौट फैर करते रहें यूं सारी नमाज़ों का फ़िदया अदा हो जाएगा। 30 दिन की रक़म के ज़रीए़ ही ह़ीला करना शर्त़ नहीं वोह तो समझाने के लिये मिसाल दी है। अगर बिलफ़र्ज़ 50 साल के फ़िदयों की रक़म मौजूद हो तो एक ही बार लौट फैर करने में काम हो जाएगा। नीज़ फ़ित्रे की रक़म का हिसाब गेहूं के मौजूदा भाव से लगाना होगा।

(नमाज़ के अह़काम, क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा स. 345)

www.dawateislami.net

रोज़ों का फ़िदया

इसी त़रह़ फ़ी रोज़ा भी एक सदक़ए फ़ित्र है। नमाज़ों का फ़िदया अदा करने के बा'द रोज़ों का भी इसी त़रीक़े से फ़िदया अदा कर सकते हैं। ग़रीब व अमीर सभी फ़िदये का ह़ीला कर सकते हैं। अगर वुरसा अपने मर्हूमीन के लिये येह अ़मल करें तो येह मय्यित की ज़बरदस्त इमदाद होगी, इस त़रह़ मरने वाला भी إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद होगा और वुरसा भी अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ होंगे। बा'ज़ लोग मस्जिद वग़ैरा में एक क़ुरआने पाक का नुस्ख़ा दे कर अपने मन को मना लेते हैं कि हम ने मर्हूम की तमाम नमाज़ों का फ़िदया अदा कर दिया येह उन की ग़लत़ फ़ेहमी है। (तफ़्सील के लिये देखिये फ़तावा रज़विय्या, 8 / 167) याद रखिये ! मर्हूम की नमाज़ों का फ़िदया औलाद और दीगर वुरसा की त़रह़ कोई आ़म मुसलमान भी दे सकता है।

(नमाज़ के अह़काम, क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा, स. 345 व منحۃ الخالق، ٢/١٦٠ ملخصًا)

मर्हूमा के फ़िदये का एक मस्अला

औ़रत की आ़दते हैज़ अगर मा'लूम हो तो उतने दिन और न मा'लूम हो तो हर महीने से तीन[3] दिन, नव[9] बरस की उ़म्र से मुस्तस्ना करें मगर जितनी बार ह़म्ल रहा हो मुद्दते ह़म्ल के महीनों से अय्यामे हैज़ का इस्तिस्ना न करें। औ़रत की आ़दते निफ़ास अगर मा'लूम हो तो हर ह़म्ल के बा'द उतने दिन मुस्तस्ना करें और न मा'लूम हो तो कुछ नहीं कि निफ़ास के लिये जानिबे अक़ल (कम से कम) में शरअ़न कुछ तक़्दीर नहीं। मुमकिन है कि एक ही मिनट आ कर फ़ौरन पाक हो जाए। (फ़तावा रज़विय्या, 8 / 154 माख़ूज़न)

www.dawateislami.net

सादाते किराम को नमाज़ का फ़िदया नहीं दे सकते

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से सय्यिदों और ग़ैर मुस्लिमों को नमाज़ का फ़िदया देने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया : येह सदक़ा (या'नी नमाज़ का फ़िदया) ह़ज़राते सादाते किराम के लाइक़ नहीं और हुनूद वग़ैरहुम कुफ़्फ़ारे हिन्द इस सदक़े के लाइक़ नहीं। इन दोनों को देने की अस्लन इजाज़त नहीं, न इन के दिये अदा हो। मुस्लिमीन मसाकीन ज़विल क़ुर्बा ग़ैरे हाशिमीन (या'नी अपने मिस्कीन मुसलमान रिश्तेदार ग़ैर हाशिमियों) को देना दूना (या'नी दुगना) अज्र है। (फ़तावा रज़विय्या, 8 / 166)

100 कोड़ों का ह़ीला

ह़ीलए शरई का जवाज़ क़ुरआनो ह़दीस और फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मो'तबर कुतुब में मौजूद है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام की बीमारी के ज़माने में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا एक बार ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ताख़ीर से ह़ाज़िर हुईं तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने क़सम खाई कि "मैं तन्दुरुस्त हो कर सौ कोड़े मारूंगा" सिह़्ह़त याब होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें 100 तीलियों की झाड़ू मारने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। (नूरुल इरफ़ान स. 728 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 23 सूरए صٓ की आयत नम्बर 44 में इरशाद फ़रमाता है :

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ (پ۲۳، ص:٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर उस से मार दे और क़सम न तोड़।*

www.dawateislami.net

"आ़लमगीरी" में ह़ीलों का एक मुस्तक़िल बाब है जिस का नाम "किताबुल ह़िय्यल" है चुनान्चे, आ़लमगीरी "किताबुल ह़िय्यल" में है : जो ह़ीला किसी का ह़क़ मारने या उस में शुबा पैदा करने या बात़िल से फ़रेब देने के लिये किया जाए वोह मकरूह है और जो ह़ीला इस लिये किया जाए कि आदमी ह़राम से बच जाए या ह़लाल को ह़ासिल कर ले वोह अच्छा है। इस क़िस्म के ह़ीलों के जाइज़ होने की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान है :

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ (پ۲۳، ص:٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर उस से मार दे और क़सम न तोड़।*

(عالمگیری ،کتاب الحیل، الفصل الاول فی بیان جواز الحیل ...الخ،٦/٣٩٠)

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?

ह़ीले के जवाज़ पर एक और दलील मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदतुना सारह और ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا में कुछ चप-क़लिश हो गई। ह़ज़रते सय्यिदतुना सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने क़सम खाई कि मुझे अगर क़ाबू मिला तो मैं हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का कोई उ़ज़्व काटूंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में भेजा कि उन में सुल्ह़ करवा दें। ह़ज़रते सय्यिदतुना सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : "مَاحِیۡلَۃُ یَمِیۡنِی؟" या'नी मेरी क़सम का क्या ह़ीला होगा ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़्य नाज़िल हुई कि सारह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) को

www.dawateislami.net

हुक्म दो कि वोह हाजिरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا) के कान छेद दें। उसी वक़्त से औ़रतों के कान छेदने का रवाज पड़ा।

(شرح الاشباہ والنظائر للحموی،الفن الخامس،۳/۲۹۵)

गाय के गोश्त का तोह़फ़ा

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से रिवायत है कि दो जहान के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गाय का गोश्त ह़ाज़िर किया गया, किसी ने अ़र्ज़ की : येह गोश्त ह़ज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا पर सदक़ा हुवा था। फ़रमाया **هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَّلَنَا هَدِيَّةٌ** या'नी येह बरीरा के लिये सदक़ा था हमारे लिये हदिय्या है।

(مسلم، کتاب الزکاۃ،باب اباحۃ الھدیۃ للنبی و لبنی ھاشم و بنی مطلب، وان کان...الخ، ص ٥٤١، حدیث١٠٧٥)

ज़कात का शरई ह़ीला

इस ह़दीसे पाक से साफ़ ज़ाहिर है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا जो कि सदके़ की ह़क़दार थीं उन को बत़ौरे सदक़ा मिला हुवा गाय का गोश्त अगर्चे उन के ह़क़ में सदक़ा ही था मगर उन के क़ब्ज़ा कर लेने के बा'द जब बारगाहे रिसालत में पेश किया गया था तो उस का हुक्म बदल गया था और अब वोह सदक़ा न रहा था। यूं ही कोई मुस्तह़िक़ शख़्स ज़कात अपने क़ब्ज़े में लेने के बा'द किसी भी आदमी को तोह़फ़तन दे सकता या मस्जिद वग़ैरा के लिये पेश कर सकता है कि मज़्कूरा मुस्तह़िक़ शख़्स का पेश करना अब ज़कात न रहा, हदिय्या या अ़तिय्या हो गया। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ज़कात का

www.dawateislami.net

शरई ह़ीला करने का त़रीक़ा यूं इरशाद फ़रमाते हैं : "ज़कात की रक़म मुर्दे की तजहीज़ो तक्फ़ीन या मस्जिद की ता'मीर में सर्फ़ नहीं कर सकते कि तम्लीके फ़क़ीर (या'नी फ़क़ीर को मालिक करना) न पाई गई। अगर इन उमूर में ख़र्च करना चाहें तो इस का त़रीक़ा येह है कि फ़क़ीर को (ज़कात की रक़म का) मालिक कर दें और वोह (ता'मीरे मस्जिद वग़ैरा में) सर्फ़ करे, इस त़रह़ सवाब दोनों को होगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 5, 1/890)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! कफ़न दफ़्न बल्कि ता'मीरे मस्जिद में भी **ह़ीलए शरई** के ज़रीए ज़कात इस्ति'माल की जा सकती है। क्यूंकि ज़कात तो फ़क़ीर के ह़क़ में थी जब फ़क़ीर ने क़ब्ज़ा कर लिया तो अब वोह मालिक हो चुका, जो चाहे करे। ह़ीलए शरई की बरकत से देने वाले की ज़कात भी अदा हो गई और फ़क़ीर भी मस्जिद में दे कर सवाब का ह़क़दार हो गया। फ़क़ीरे शरई को ह़ीले का मस्अला बेशक समझा दिया जाए।

फ़क़ीर की ता'रीफ़

फ़क़ीर वोह है कि जिस के पास कुछ न कुछ हो मगर इतना न हो कि निसाब को पहुंच जाए या निसाब की क़दर तो हो मगर उस की ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी) में मुस्तग्रक़ (घिरा हुवा) हो। मसलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान, सुवारी के जानवर (या स्कूटर या कार) कारीगरों के औज़ार, पहनने के कपड़े, ख़िदमत के लिये लौंडी, गुलाम, इल्मी शुग़ुल रखने वाले के लिये

www.dawateislami.net

इस्लामी किताबें जो उस की ज़रूरत से ज़ाइद न हों इसी त़रह़ अगर मदयून (या'नी मक़रूज़) है और दैन (या'नी क़र्ज़) निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे तो फ़क़ीर है अगर्चे उस के पास एक तो क्या कई निसाबें हों। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 5, 1/924)

وردالمحتار، کتاب الزکاۃ، باب المصرف، ۳/۳۳۳)

मिस्कीन की ता'रीफ़

मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोह्ताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल ह़लाल है। फ़क़ीर (या'नी जिस के पास कम अज़ कम एक दिन का खाने के लिये और पहनने के लिये मौजूद है उस) को बिग़ैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल ह़राम है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 5, 1/924 व عالمگیری، کتاب الزکاۃ، الباب السابع فی المصارف، ۱/۱۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जो भिकारी कमाने पर क़ुदरत होने के बा वुजूद बिला ज़रूरत व मजबूरी बत़ौरे पेशा भीक मांगते हैं गुनाहगार व अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं और जो ऐसों के ह़ाल से बा ख़बर हो उसे उन को देना जाइज़ नहीं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें मर्ह़ूमीन के साथ ख़ैर ख़्वाही करते हुवे उन की नमाज़ों और रोज़ों का फ़िद्या अदा करने और शरीअ़त के अह़काम पर पाबन्दी से अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा करे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

इद्दत व सोग का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिसाला "**सय्यिदी कुत़बे मदीना**" में दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे लिखते हैं :

100 हाजतें पूरी होंगी

सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात 100 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की 100 ह़ाजतें पूरी फ़रमा देगा, 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा होगा जैसा मेरी ह़यात में है। (جمع الجوامع،۷/۱۹۹،حدیث ۲۲۳۵۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इद्दत की ता'रीफ़

लुग़त में इ़द्दत ब मा'ना "शुमार व गिनती" है, जब कि शरीअ़त में उस इन्तिज़ार को इ़द्दत कहते हैं जो (त़लाक़ या शोहर की वफ़ात के सबब) निकाह़ या शुबहे निकाह़ के ज़ाइल होने के बा'द किया जाए। इस ज़माने में दूसरा निकाह़ करना ममनूअ़ होता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, इ़द्दत का बयान, 5 / 146)

www.dawateislami.net

वफ़ात की इद्दत

वफ़ात की इद्दत चार माह दस दिन है। (बहारे शरीअ़त, हिस़्सा 8, 2/237 व جوهرة نيرة، كتاب العدة، الجزء الثانى، ص٩٧) और जब औ़रत उम्मीद (या'नी ह़म्ल) से हो तो इद्दत की मुद्दत बच्चे की विलादत होने तक है अगर्चे शोहर की वफ़ात के फ़ौरन बा'द बच्चे की विलादत हो जाए। अगर दो या तीन बच्चे एक ह़म्ल से हुवे तो पहले की विलादत होने से इद्दत पूरी हो गई।

(बहारे शरीअ़त, हिस़्सा 8, 2/238 व جوهرة نيرة، كتاب العدة، الجزء الثانى، ص٩٧)

इद्दत कहां गुज़ारनी होती है ?

इद्दत शोहर के ही घर में गुज़ारनी होती है। अगर मकान ढे रहा हो या ढने (गिरने) का ख़ौफ़ हो या चोरों का या माल तलफ़ होने का ख़ौफ़ हो तो इन सूरतों में मकान बदल सकती है।

(बहारे शरीअ़त, हिस़्सा 8, 2/248) व عالمگیری، كتاب الطلاق، الباب الرابع عشر فى الحداد، ١/٥٣٥

दौराने इद्दत घर से निकलना कैसा ?

दौराने इद्दत औ़रत घर से बाहर नहीं जा सकती अलबत्ता ज़रूरतन घर से बाहर जाने की इजाज़त है लेकिन दिन ही दिन में जाए और ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले वापस आ जाए। (मसलन बीमार हो गई और डॉक्टर घर पर नहीं आ सकती तो जा सकती है लेकिन जब भी किसी ह़ाजत से निकलना पड़े, मह़रम के ज़रीए़ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से शरई रहनुमाई ले कर निकले।)

www.dawateislami.net

इद्दत के दौरान निकाह़ करना कैसा ?

इद्दत के दौरान न किसी से निकाह़ कर सकती है न ही उसे निकाह़ का पैग़ाम दिया जा सकता है, इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं :

"जब तक इद्दत न गुज़रे निकाह़ तो निकाह़, निकाह़ का पैग़ाम देना भी ह़रामे क़त्ई है।" (फ़तावा रज़विय्या, 13 / 319) एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि "इद्दत के अन्दर (पढ़ाया गया) निकाह़ बाति़ल व ह़राम है।"

(फ़तावा रज़विय्या, 11 / 266)

इद्दत में पैग़ामे निकाह़ का हुक्म

जो औ़रत इद्दत में हो उस के पास सराह़तन निकाह़ का पैग़ाम देना ह़राम है और मौत की इद्दत हो तो इशारतन कह सकते हैं और त़लाक़े रजई या बाइन या फ़स्ख़ की इद्दत में इशारतन भी नहीं कह सकते। इशारतन कहने की सूरत येह है कि कहे मैं निकाह़ करना चाहता हूं मगर येह न कहे कि तुझ से वरना सराह़त हो जाएगी या कहे मैं ऐसी औ़रत से निकाह़ करना चाहता हूं जिस में येह येह वस्फ़ हों और वोह औसाफ़ बयान करे जो उस औ़रत में हैं या कहे मुझे तुझ जैसी कहां मिलेगी ?

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 8, 2/244 व عالمگیری، کتاب الطلاق، الباب الرابع عشر فی الحداد، ۱/۵۳٤)

लेकिन पर्दे और दीगर लवाज़िमात की पाबन्दी ज़रूरी है।

दौराने इद्दत पर्दे का हुक्म

इद्दत से क़ब्ल जिन जिन से पर्दा करना शरअ़न फ़र्ज़ था तो दौराने इद्दत भी उन ही से पर्दा करना होगा जब कि त़लाक़े मुग़ल्लज़ा, त़लाक़े बाइना और ख़ुलअ़ वाली दौराने इद्दत शोहर से भी पर्दा करेगी।

www.dawateislami.net

सोग का बयान

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई औ़रत किसी मय्यित पर तीन दिन से ज़ियादा सोग न करे, मगर शोहर पर चार महीने दस दिन सोग करे। (مسلم، کتاب الطلاق، باب وجوب الاحدادفی عدۃ الوفاۃ...الخ، ص۷۹۹،حدیث۱٤۹۱)

नीज़ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस औ़रत का शोहर मर गया है, वोह न कुसुम का रंगा हुवा कपड़ा पहने और न गेरू का रंगा हुवा और न ज़ेवर पहने और न मेहंदी लगाए और न सुर्मा।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 8, 2/241 व (ابوداود،کتاب الطلاق،باب فیما تجتنبہ... الخ،۲/٤۲۵، حدیث۲۳۰٤)

सोग की ता'रीफ़

सोग के मा'ना येह है कि ज़ीनत को तर्क करे।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 8, 2/242 व (درالمختار معہ ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی الحداد، ۵/۲۲۱)

सोग से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम

सोग उस पर है जो कि आ़क़िला बालिग़ा मुसलमान हो और मौत या त़लाके़ बाइन की इ़द्दत हो।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 8, 2/243 व (درالمختار معہ ردالمحتار، کتاب الطلاق،فصل فی الحداد، ۵/۲۲۰)

ऐसी इस्लामी बहन को अपनी इ़द्दत पूरी होने तक सोग मनाना शरअ़न वाजिब और इस का तर्क ह़राम है। ह़त्ता कि त़लाक़ देने वाला सोग से मन्अ़ करता है या शोहर ने मरने से पहले कह दिया था कि सोग न करना जब भी सोग वाजिब है।

(درالمختار معہ ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی الحداد، ۵/۲۲۱)

www.dawateislami.net

सोग में क्या काम ममनूअ़ हैं ?

❁ हर क़िस्म का ज़ेवर यहां तक कि अंगूठी, छल्ला और कांच की चूड़ियां वग़ैरा न पहने।

❁ किसी भी रंग का रेशमी कपड़ा न पहने।

❁ सुर्मा न लगाए।

❁ कंघी न करे। (मजबूरी हो तो मोटे दन्दानों की त़रफ़ से कंघी करे)

❁ हर त़रह़ की ज़ेबो ज़ीनत हार, फूल, मेहंदी, ख़ुश्बू वग़ैरा का इस्ति'माल तर्क कर दे।

❁ ज़रूरी नहीं कि ब ह़ालते सोग सफ़ेद लिबास ही को पहने बल्कि सादा और मुमकिन हो तो पुराना लिबास अपनाए उन्हें इस्ति'माल में लाए।

❁ घर से शदीद मजबूरी के बिग़ैर न निकले ह़त्ता कि इजतिमाअ़, ज़िक्रो मीलाद की मह़ाफ़िल, क़ुरआन ख़्वानी वग़ैरा में नहीं जा सकती।

❁ किसी अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाए तो दौराने इ़द्दत उस के घर भी नहीं जा सकती।

❁ अल ग़रज़ हर क़िस्म का सिंघार ख़त्मे इ़द्दत तक मन्अ़ है।

(फ़तावा रज़विय्या, 13/331 मुलख़्ख़सन)

❁ दौराने इ़द्दत जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर दिली त़ौर पर ख़ुश होने में ह़रज नहीं। अलबत्ता इस ख़ुशी के मौक़अ़ पर भी उ़म्दा लिबास व ज़ेवरात वग़ैरा नहीं पहन सकती हां घर में झन्डे और लाईटें वग़ैरा लगाने और नियाज़ करने में मुमानअ़त नहीं।

सोग में इन कामों की इजाज़त है

❁ चारपाई पर सोना, बिछौना बिछाना, सोने के लिये हो या बैठने के लिये मन्अ़ नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 13/331 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

❁ ग़ुस्ल करना, साफ़ सुथरा और सादा लिबास पहनना।

❁ सर दर्द की वज्ह से सर में तेल का इस्ति'माल करना। तेल का इस्ति'माल कोशिश करे रात में करे और येह ज़ीनत की निय्यत से न करे।

❁ आंखों में दर्द के सबब सुर्मा लगा सकती है मुमकिन हो तो सफ़ेद सुर्मा लगाए। (येह भी रात में लगाए और ज़ीनत की निय्यत से न लगाए।)

❁ बाल उलझ जाएं या सर दर्द के सबब कंघा कर सकती है मगर कंघे के मोटे दन्दानों वाली त़रफ़ से कंघा करे जिस से फ़क़त़ बाल सुलझा ले ज़ीनत की निय्यत न हो। (फ़तावा रज़विय्या, 13/331 मुलख़्ख़सन)

❁ जिस मरज़ का इलाज घर में नहीं हो सकता उस के लिये बाहर जा सकती है लेकिन रात का अक्सर हिस्सा शोहर के मकान में ही गुज़ारे और अगर इसी मकान में इलाज मुमकिन हो तो अब बाहर निकलना ह़राम है।

❁ ज़रूरतन फ़ोन पर गुफ़्तगू कर सकती है।

❁ इ़द्दत के दिन ख़त्म होने पर औ़रत को मस्जिद में जाना या मस्जिद को देखना, किसी रिश्तेदार वग़ैरा के बुलाने पर निकलना, नफ़्ल अदा करना, सुब्ह़ या शाम किसी मख़्सूस वक़्त इ़द्दत को ख़त्म करना या उस दिन घर से ज़रूर निकलना इन तमाम बातों की शरअ़न कोई अस्ल नहीं हां ख़त्मे इ़द्दत पर उसी दिन घर से रिश्तेदार वग़ैरा के घर जाने के लिये निकलने में कोई ह़रज भी नहीं और न ही शुक्राने के नफ़्ल पढ़ने में कोई ह़रज है। अलबत्ता इ़द्दत को ख़त्म करने के लिये येह सब काम ज़रूरी नहीं।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

❁ शोहर की क़ब्र पर न जाए बल्कि घर से उस के लिये फ़ातिह़ा पढ़ कर दुआ़ए मग़फ़िरत करे।

www.dawateislami.net

मुतफ़र्रिक़ बयानात

www.dawateislami.net

मुतफ़र्रिक़ बयानात

बयान नम्बर : 1

गुस्ले मय्यित से क़ब्ल का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : दुआ़ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।

(نسائی، کتاب السھو، باب التمجید والصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم فی الصلاۃ، ص ۲۲۰، حدیث ۱۲۸۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अनमोल हीरे

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिसाला "अनमोल हीरे" में एक तमसील बयान फ़रमाते हैं : चुनान्चे,

कहते हैं, एक बादशाह अपने मुसाह़िबों के साथ किसी बाग़ के क़रीब से गुज़र रहा था कि उस ने देखा बाग़ में से कोई शख़्स संगरेज़े (या'नी छोटे छोटे पथ्थर) फेंक रहा है, एक संगरेज़ा खुद उस को भी आ कर लगा। उस ने खुद्दाम को दौड़ाया कि जा कर संगरेज़े फेंकने वाले को पकड़ कर मेरे पास ह़ाज़िर करो, चुनान्चे, खुद्दाम ने एक गंवार को ह़ाज़िर कर दिया। बादशाह ने कहा : येह संगरेज़े तुम ने कहां से ह़ासिल किये ? उस ने डरते डरते कहा : मैं वीराने में सैर कर रहा था कि मेरी नज़र इन खूब सूरत संगरेज़ों पर पड़ी, मैं ने इन को झोली में भर लिया, इस के बा'द फिरता फिराता इस बाग़ में आ निकला और फल तोड़ने के लिये येह

www.dawateislami.net

संगरेज़े इस्ति'माल कर लिये । बादशाह ने कहा : तुम इन संगरेज़ों की क़ीमत जानते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं, बादशाह बोला : येह पथ्थर के टुकड़े दर अस्ल अनमोल हीरे थे, जिन्हें तुम नादानी के सबब ज़ाएअ़ कर चुके। इस पर वोह शख़्स अफ़्सोस करने लगा मगर अब उस का अफ़्सोस करना बेकार था कि वोह अनमोल हीरे उस के हाथ से निकल चुके थे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ हमारी ज़िन्दगी के लम्ह़ात भी अनमोल हीरे हैं अगर इन को हम ने बेकार ज़ाएअ़ कर दिया तो ह़सरत व नदामत के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

"दिन" का ए'लान

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی शुअ़बुल ईमान में नक़्ल करते हैं : ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : रोज़ाना सुब्ह़ जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उस वक़्त दिन येह ए'लान करता है : अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि आज के बा'द मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा।

(شعب الایمان،الباب الثالث والعشرون فی الصیام،۳/۳۸۶،حدیث ۳۸۴۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का जो दिन नसीब हो गया उसी को ग़नीमत जान कर जितना हो सके इस में अच्छे अच्छे काम कर लिये जाए तो बेहतर है क्यूंकि मरने के बा'द कोई अ़मल न हो सकेगा। येह दुन्या दारुल अ़मल और आख़िरत दारुल जज़ा है जो यहां जैसा करेगा आख़िरत में वैसा ही बदला पाएगा, ख़ुश नसीब हैं वोह जो अपनी ज़िन्दगी में क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहते हैं

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी मौत और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये मौत के बा'द आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है, ह़श्र में उठने तक इसी में हज़ारों साल रहना होगा येह किसी के लिये गुलो गुलज़ार तो किसी के लिये क़ा'रे अ़ज़ाब व नार होगी, न जाने हमारा क्या बनेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमाए और क़ब्र मह़बूब के जल्वों से पुरनूर फ़रमाए। आइये क़ब्र से मुतअ़ल्लिक़ कुछ रिवायात मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

क़ब्र की ह़ाज़िरी पर गिर्या व ज़ारी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब किसी की क़ब्र पर तशरीफ़ लाते तो इस क़दर आंसू बहाते कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। अ़र्ज़ की गई : जन्नत व दोज़ख़ का तज़किरा करते वक़्त आप नहीं रोते मगर क़ब्र पर बहुत रोते हैं इस की वज्ह क्या है ? फ़रमाया : मैं ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है : आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है, अगर क़ब्र वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला इस से आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है। (ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر القبر و البلى، ٤/٥٠٠، حديث ٤٢٦٧)

www.dawateislami.net

ख़ौफ़े उ़स्मानी

अल्लाह ! अल्लाह ! जामेउ़ल क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ !!! इन का लक़ब ज़ुन्नूरैन था कि इन के निकाह़ में रह़मते कौनैन, साह़िबे क़ा-ब क़ौसैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की यके बा'द दीगरे दो शहज़ादियां थीं, इन्हें दुन्या ही में क़त़ई जन्नती होने की बिशारत मिल चुकी थी और इन से मा'सूम फ़िरिश्ते ह़या करते थे। इस के बा वुजूद क़ब्र की हौलनाकियों और अन्धेरियों के बारे में बे इन्तिहा ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ग़लबे के मौक़अ़ पर एक बार इरशाद फ़रमाया : अगर मुझे जन्नत व जहन्नम के दरमियान लाया जाए और येह मा'लूम न हो कि इन दोनों में से किस में जाऊंगा तो मैं वहीं राख हो जाना पसन्द करूं।

(حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، عثمان بن عفان، ۱ / ۹۹، حدیث ۱۸۳)

सब से पहले क़ब्र में आने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से रिवायत है : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो सब से पहले उस का अ़मल आ कर उस की बाईं रान को ह़रकत देता और कहता है : मैं तेरा अ़मल हूं। वोह मुर्दा पूछता है : मेरे बाल बच्चे कहां हैं ? मेरी ने'मतें, मेरी दौलतें कहा हैं ? तो अ़मल कहता है : येह सब तेरे पीछे रह गए और मेरे सिवा तेरी क़ब्र में कोई नहीं आया। (شرح الصدور، باب ضمۃ القبر لکل احد، ص ۱۱۱)

www.dawateislami.net

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! हमारे दिलों पर गुनाहों की तहें जम चुकी हैं, ह़ालांकि यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम है कि मौत आ कर रहेगी, ऐन मुमकिन है आज ही आ जाए और हम भी क़ब्र में उतार दिये जाएं, येह भी जानते हैं कि रात को बिजली फ़ेल हो जाए तो दिल घबराता और अन्धेरा काट खाता है, इस के बा वुजूद क़ब्र के हौलनाक अन्धेरे का कोई एह़सास नहीं। अफ़्सोस ! हम सदमों से भरपूर मौत की तय्यारी से यक्सर ग़ाफ़िल हैं।

याद रखिये ! हर वोह चीज़ जिस से ज़िन्दगी में आदमी को मह़ज़ दुन्यवी मह़ब्बत होती है मरने के बा'द उस की याद तड़पाती है और येह सदमा मुर्दे के लिये नाक़ाबिले बरदाश्त होता है, इस बात को यूं समझने की कोशिश कीजिये कि जब किसी का फूल जैसा इकलौता बच्चा गुम हो जाए तो वोह किस क़दर परेशान होता है और अगर साथ ही उस का कारोबार वग़ैरा भी तबाह हो जाए तो उस के सदमे का क्या आ़लम होगा ? नीज़ अगर वोह अफ़्सर भी हो और मुसीबत बालाए मुसीबत उस का वोह ओ़ह्दा भी जाता रहे तो उस पर जो कुछ सदमे के पहाड़ टूटेंगे उस को वोही समझेगा, लिहाज़ा मुर्दे को भी वालिदैन, बीवी-बच्चों, भाई-बहनों और दोस्तों का फ़िराक़ नीज़ गाड़ी, लिबास, मकान, दुकान, फ़ेक्ट्री, उ़म्दा पलंग, फ़र्नीचर, खाने पीने की चीज़ों का ज़ख़ीरा, ख़ून पसीने की कमाई, ओ़ह्दा वग़ैरा हर हर वोह चीज़ जिस से उसे मह़ज़ दुन्या के लिये मह़ब्बत थी उस की जुदाई का सदमा होता है और जो जितना ज़ियादा लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ात़िर राह़तों में ज़िन्दगी गुज़ारता है मरने के बा'द इन आसाइशों के छूटने का सदमा भी उतना ही ज़ियादा होगा, जिस के पास मालो दौलत कम हो

www.dawateislami.net

उस को उस के छूटने का ग़म भी कम और जिस के पास ज़ियादा हो उस को छूटने का ग़म भी ज़ियादा। याद रहे ! येह कम या ज़ियादा ग़म उसी सूरत में होगा जब कि उस ने उस मालो दौलत से दुन्यावी महब्बत की होगी। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : येह इन्किशाफ़ जान निकलते ही तदफ़ीन से पहले हो जाता है और वोह फ़ानी दुन्या की जिन जिन ने'मतों पर मुत़मइन था उन की जुदाई की आग उस के अन्दर शो'ला ज़न होती है। (احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت ومابعدہ،الباب السابع فی حقیقۃ الموت...الخ،۲۴۸/۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे होते हैं, जिन्हों ने दुन्या के मालो अस्बाब से दिल नहीं लगाया होता उन्हें माल छूटने का सदमा भी नहीं होता और क़ब्र में उन के ख़ूब मज़े होते हैं जैसा कि ह़दीसे पाक में है :

मोमिन की क़ब्र सत्तर हाथ कुशादा की जाती है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरबार है : मोमिन अपनी क़ब्र में एक सर सब्ज़ बाग़ में होता है और उस की क़ब्र 70 हाथ कुशादा की जाती है और उस की क़ब्र चौधवीं के चांद की त़रह़ रौशन कर दी जाती है।

(ابو یعلی، مسند ابی ھریرۃ، ما اسندہ شھر بن حوشب عن ابی ھریرۃ،۵/۵۰۸،حدیث ۶۶۱۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर एक येही चाहता है कि उस की क़ब्र रौशन और जन्नत का बाग़ हो। आइये क़ब्र रौशन करने, आख़िरत संवारने, नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी

www.dawateislami.net

क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर ईसवी माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। आप की तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

दिल का दर्द दूर हो गया

पका क़ल्आ़ (ज़म ज़म नगर (हैदराबाद) बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ का बयान है : अचानक मेरे दिल में दर्द हुवा। जब दवाओं से फ़ाइदा न हुवा तो बाबुल मदीना (कराची) आ कर एक अस्पताल में दिल का ऑपरेशन करवाया। मगर तक्लीफ़ ख़त्म होने के बजाए मज़ीद बढ़ गई, दर्द की बे शुमार दवाईं इस्ति'माल कीं, लेकिन फ़ाइदा न हुवा। आख़िरे कार एक इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे मरज़ को दूर कर दिया।

दिल में गर दर्द हो या कि सर दर्द हो पाओगे सिह़्ह़तें क़ाफ़िले में चलो
ऑपरेशन टलें और शिफ़ाएं मिलें कर के हिम्मत चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान नम्बर : 2

जनाज़े की गाड़ी में बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, शहनशाहे उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो।

(مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلوۃ، باب الصلوۃ علی النبی، ۲/۱۴۰، حدیث ۳۱۱۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : जब मेरे वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने बहुत आहो बुका की (या'नी ख़ूब रोया धोया) और उन की क़ब्र पर रोज़ाना ह़ाज़िरी देने लगा फिर रफ़्ता रफ़्ता कुछ कमी आ गई। एक रोज़ वालिदे मर्ह़ूम ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : ऐ बेटे ! तुम ने क्यूं ताख़ीर की ? मैं ने पूछा : क्या आप को मेरे आने का इ़ल्म हो जाता है ? फ़रमाया : क्यूं नहीं, मुझे तुम्हारी हर ह़ाज़िरी की ख़बर हो जाती थी और मैं तुम्हें देख कर खुश होता था नीज़ मेरे पड़ोसी मुर्दे भी तुम्हारी दुआ़ से राज़ी होते थे। चुनान्चे, इस ख़्वाब के बा'द मैं ने पाबन्दी से वालिद साहिब की क़ब्र पर जाना शुरूअ़ कर दिया। (شرح الصدور، باب زیارۃ القبور و علم الموتی...الخ، ص ۲۲۷)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि क़ब्र वाले रिश्तेदारों और दोस्त-यारों की आमद और उन की दुआ़ और ईसाले सवाब पर खुश होते हैं और जो रिश्तेदार नहीं जाता उस के मुन्तज़िर रहते हैं । लिहाज़ा हमें क़ब्रिस्तान जा कर मुसलमानों की क़ब्रों की ज़ियारत करनी चाहिये कि येह सुन्नत, बाइ़से यादे आख़िरत व मग़्फ़िरत और अहले क़ुबूर के लिये सबबे मन्फ़अ़त है । इस सिलसिले में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है । (ابن ماجه ، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی زيارة القبور،٢/٢٥٢،حديث١٥٧١)

﴾2﴿ जब कोई शख़्स ऐसी क़ब्र पर गुज़रे जिसे दुन्या में जानता था और उस पर सलाम करे तो वोह मुर्दा उसे पहचानता है और उस के सलाम का जवाब देता है । (تاريخ بغداد،حرف العين من آباء الابراهيمين، ٦/١٣٥،حديث٣١٧٥)

﴾3﴿ जो अपने वालिदैन दोनों या एक की क़ब्र की हर जुमुअ़ा के दिन ज़ियारत करेगा, उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी और नेकूकार लिखा जाएगा ।

(شعب الايمان،باب فی بر الوالدين، فصل فی حفظ حق الوالدين بعد موتهما،٦/٢٠١،حديث٧٩٠١)

क़ब्रिस्तान के मुर्दे ख़्वाब में आ पहुंचे !

एक साहि़ब का मा'मूल था कि वोह क़ब्रिस्तान में आ कर बैठ जाते और जब भी कोई जनाज़ा आता उस की नमाज़ पढ़ते और शाम के वक़्त क़ब्रिस्तान के दरवाज़े पर खड़े हो कर इस त़रह़ दुआ़एं देते : (ऐ क़ब्र

www.dawateislami.net

वालो !) खुदा तुम को उन्स अ़ता करे, तुम्हारी गुर्बत पर रह़्म करे, तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाए और नेकियां क़बूल करे। वोही साहि़ब फ़रमाते हैं : एक शाम (ब वक़्ते रुख़्सत) मैं अपना क़ब्रिस्तान वाला मा'मूल पूरा न कर सका या'नी उन्हें दुआ़एं दिये बिग़ैर ही घर आ गया। मेरे ख़्वाब में एक कसीर मख़्लूक़ आ गई, मैं ने उन से पूछा : आप लोग कौन हैं और क्यूं आए हैं ? बोले : हम क़ब्रिस्तान वाले हैं, आप ने आ़दत कर ली थी कि घर आते वक़्त हम को हदिय्या (या'नी तोह़्फ़ा) देते थे और आज न दिया। मैं ने कहा : वोह हदिय्या क्या था ? तो उन्हों ने कहा : वोह हदिय्या दुआ़ओं का था। मैं ने कहा : अच्छा, अब येह हदिय्या मैं तुम को फिर से दूंगा। इस के बा'द मैं ने अपने उस मा'मूल को कभी तर्क न किया।

(شرح الصدور، باب زیارۃ القبور و علم الموتی...الخ، ص۲۲٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत से मा'लूम हुवा कि मरने वाले अपनी क़ब्रों पर आने और जाने वालों को पहचानते हैं और उन्हें ज़िन्दों की दुआ़ओं से फ़ाइदा पहुंचता है, जब ज़िन्दा लोगों की त़रफ़ से ईसाले सवाब के तोह़्फ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाही ह़ासिल हो जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें इजाज़त देता है तो घरों पर जा कर ईसाले सवाब का मुत़ालबा भी करते हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9, सफ़ह़ा 650 पर नक़्ल करते हैं : मोमिनीन की रूहें हर शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात), रोज़े ईद, रोज़े आ़शूरा और शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर खड़ी रहती हैं और हर रूह़ ग़मनाक बुलन्द आवाज़ से निदा

www.dawateislami.net

करती (या'नी पुकार कर कहती) है कि ऐ मेरे घर वालो ! ऐ मेरी औलाद ! ऐ मेरे क़राबत दारो ! (हमारे ईसाले सवाब की निय्यत से) सदक़ा (ख़ैरात) कर के हम पर मेहरबानी करो।

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिहा को आए

बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करना है।

(شعب الایمان،باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتھما، ٦/٢٠٣، حدیث٧٩٠٥)

नूरानी लिबास

एक बुज़ुर्ग ने अपने मर्ह़ूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ़ तुम लोगों को पहुंचती है ? तो उन्हों ने जवाब दिया : हां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं। (شرح الصدور، باب ماینفع المیت فی قبرہ، ص٣٠٥)

वह़शते क़ब्र से बचा या रब
जल्वए यार से हो क़ब्र आबाद

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा फ़ौतशुदा मुसलमानों को ज़िन्दों की दुआ़ओं का बेह़द फ़ाइदा पहुंचता है, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 419 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मदनी पंज सूरह" सफ़्ह़ा 397 पर है : मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मेरी उम्मत गुनाह समेत क़ब्र में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूंकि वोह मोमिनीन की दुआ़ओं से बख़्श दी जाती है।

(معجم اوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ۱/۵۰۹، حدیث۱۸۷۹)

मुझ को सवाब भेजो, दुआ़एं हज़ार दो   गो क़ब्र में उतारा, न दिल से उतार दो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्रिस्तान के मदनी फूल

﴾1﴿ क़ब्रिस्तान में इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो, इस के बा'द तिरमिज़ी शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الْقُبُوْرِ یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَر

तर्जमा : ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं। (ترمذی،کتاب الجنائز،باب مایقول الرجل اذا دخل المقابر،۲/۳۲۹،حدیث۱۰۵۵)

﴾2﴿ क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर इधर उधर की बातों और ग़फ़्लत

www.dawateislami.net

भरे ख़यालों के बजाए फ़िक्रे मदीना या'नी अपना मुह़ासबा करते हुवे ह़दीसे पाक के इन अल्फ़ाज़ को याद कीजिये : كَمَا تَدِيْنُ تُدَان या'नी जैसी करनी वैसी भरनी। (جامع صغیر للسیوطی، حرف الکاف، ص ۳۹۹، حدیث ۶۴۱۱)

क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर

जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

《3》 क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی وضع الجرید...الخ،۳/۱۸۴)

《4》 यूंहीं जनाज़े पर फूलों की चादर डालने में ह़रज नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/852)

《5》 क़ब्र पर से तर घास नोचना न चाहिये कि उस की तस्बीह़ से रह़मत उतरती है और मय्यित को उन्स ह़ासिल होता है और नोचने में मय्यित का ह़क़ ज़ाएअ़ करना है।

(ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی وضع الجرید...الخ،۳/۱۸۴)

《6》 क़ब्र के ऊपर "अगरबत्ती" न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अदबी) और बद फ़ाली है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/482-525 मुलख़्ख़सन)

《7》 क़ब्र पर चराग़ या जलती मोमबत्ती वग़ैरा न रखिये कि येह आग है और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को अज़िय्यत होती है, हां अगर आप के पास चार्जर टॉर्च या टॉर्च वाला मोबाइल फ़ोन न हो, गवर्नमेन्ट की बत्तियां

www.dawateislami.net

भी न हों या बन्द हों और रात के अन्धेरे में राह चलने या देख कर तिलावत करने के लिये रौशनी मक़्सूद हो, तो क़ब्र के एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर मोमबत्ती या चराग़ रख सकते हैं, जब कि वोह ख़ाली जगह ऐसी न हो कि जहां पहले क़ब्र थी अब मिट चुकी है।

﴾8﴿ क़ब्र पर पाउं रखने या सोने से क़ब्र वाले को ईज़ा होती है और बिला इजाज़ते शरई किसी मुसलमान को ईज़ा देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लिहाज़ा किसी मुसलमान की क़ब्र पर पाउं न रखे, न किसी क़ब्र को रौंदे, न किसी क़ब्र पर बैठे और न ही टेक लगाए क्यूंकि इस से नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया है।

चुनान्चे, दो **फ़रामैने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये :

[1] मुझे आग की चिंगारी पर या तल्वार पर चलना या मेरा पाउं जूते में सी दिया जाना ज़ियादा पसन्द है इस से कि मैं किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलूं।

(ابن ماجه ، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی النهی عن المشی علی القبور والجلوس علیها ، ٢/ ٢٥٠،حدیث١٥٦٧)

[2] अगर कोई शख़्स अंगारों पर बैठ जाए जिस से उस के कपड़े जल जाएं और आग उस की खाल तक पहुंच जाए तो येह क़ब्र पर बैठने से बेहतर है। (مسلم، كتاب الجنائز،باب النهی عن الجلوس علی القبر و الصلاة علیه،ص٤٨٣،حدیث١٩٧١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब के बयानात

बयान नम्बर : 1

ईमान की ह़िफ़ाज़त

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिब्राईल (عَلَیْهِ السَّلَام) ने मुझ से अ़र्ज़ की, कि रब तआ़ला फ़रमाता है : ऐ मुह़म्मद ! (عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक बार दुरूद भेजे, मैं उस पर दस रह़मतें नाज़िल करूं और तुम्हारी उम्मत में से जो कोई एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस सलाम भेजूं।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم وفضلھا، الفصل الثانی، ۱/۱۸۹، حدیث۹۲۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बल्अ़म बिन बाऊ़रा का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने बल्अ़म बिन बाऊ़रा की "जब्बारीन" नामी क़ौम से जंग का इरादा किया और सर ज़मीने शाम में नुज़ूल फ़रमाया तो बल्अ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम उस के पास आई और उस से कहने लगी कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام अपने साथ बहुत बड़ा और त़ाक़तवर लश्कर ले आए हैं ताकि हम से जंग करें और हमें हमारे शहरों से निकाल कर हमारी बजाए बनी इस्राईल को इस सर ज़मीन में आबाद करें, तुम्हारे पास इस्मे आ'ज़म है और तुम्हारी हर दुआ़ क़बूल होती है, तुम

www.dawateislami.net

निकलो और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करो कि वोह उन्हें यहां से भगा दे। क़ौम की बात सुन कर बल्अ़म ने कहा : अफ़्सोस है तुम पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के नबी हैं, उन के साथ फ़िरिश्ते और ईमानदार लोग हैं, इस लिये मैं उन के ख़िलाफ़ कैसे बद दुआ़ कर सकता हूं ? मुझे **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से जो इ़ल्म मिला है उस का तक़ाज़ा येह है कि अगर मैं ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ख़िलाफ़ ऐसा किया तो मेरी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाएगी। क़ौम ने जब गिर्या व ज़ारी के साथ मुसलसल इसरार किया तो बल्अ़म ने कहा : अच्छा मैं पहले अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी मा'लूम कर लूं।

बल्अ़म का येही त़रीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ़ करता तो पहले मरज़िये इलाही عَزَّوَجَلَّ मा'लूम कर लेता और ख़्वाब में उस का जवाब मिल जाता, चुनान्चे, इस मरतबा उस को येह जवाब मिला कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथियों के ख़िलाफ़ दुआ़ न करना। चुनान्चे, उस ने क़ौम से कह दिया कि मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन के ख़िलाफ़ बद दुआ़ करने की मुमानअ़त फ़रमा दी है। फिर उस की क़ौम ने उसे हदिय्ये और नज़राने दिये जिन्हें उस ने क़बूल कर लिया। इस के बा'द क़ौम ने दोबारा उस से बद दुआ़ करने की दरख़्वास्त की तो दूसरी मरतबा बल्अ़म ने रब तबारक व तआ़ला से इजाज़त चाही। अब की बार इस का कुछ जवाब न मिला तो उस ने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस मरतबा कुछ जवाब ही नहीं मिला। वोह लोग कहने लगे कि अगर **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर न होता तो वोह पहले की त़रह़ दोबारा भी साफ़ मन्अ़ फ़रमा देता, फिर क़ौम ने और भी ज़ियादा इसरार किया ह़त्ता की वोह उन की बातों में आ गया। चुनान्चे, बल्अ़म बिन बाऊ़रा अपनी गधी पर सुवार हो कर एक पहाड़ की त़रफ़ रवाना हुवा।

www.dawateislami.net

गधी ने उसे कई मरतबा गिराया और वोह फिर सुवार हो जाता ह़त्ता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से गधी ने उस से कलाम किया और कहा : अफ़्सोस ! ऐ बल्अ़म ! कहां जा रहे हो ? क्या तुम देख नहीं रहे कि फ़िरिश्ते मुझे जाने से रोक रहे हैं। (शर्म करो) क्या तुम अल्लाह तआ़ला के नबी और फ़िरिश्तों के ख़िलाफ़ बद दुआ़ करने जा रहे हो ? बल्अ़म फिर भी बाज़ न आया और आख़िरे कार वोह बद दुआ़ करने के लिये अपनी क़ौम के साथ पहाड़ पर चढ़ा।

अब बल्अ़म जो बद दुआ़ करता अल्लाह तआ़ला उस की ज़बान को उस की क़ौम की त़रफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो दुआ़ए ख़ैर करता था तो बजाए क़ौम के बनी इस्राईल का नाम उस की ज़बान पर आता था। येह देख कर उस की क़ौम ने कहा : ऐ बल्अ़म ! तू येह क्या कर रहा है ? बनी इस्राईल के लिये दुआ़ और हमारे लिये बद दुआ़ क्यूं कर रहा है ? बल्अ़म ने कहा : येह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े में नहीं है, अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत मुझ पर ग़ालिब आ गई है। इतना कहने के बा'द उस की ज़बान निकल कर उस के सीने पर लटक गई। उस ने अपनी क़ौम से कहा : मेरी तो दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो गईं, अब मैं तुम्हें उन के ख़िलाफ़ एक तदबीर बताता हूं तुम ह़सीनो जमील औ़रतों को बना संवार कर उन के लश्कर में भेज दो, अगर उन में से एक शख़्स ने भी बदकारी कर ली तो तुम्हारा काम बन जाएगा क्यूंकि जो क़ौम ज़िना करे अल्लाह तआ़ला उस पर सख़्त नाराज़ होता है और उसे कामयाब नहीं होने देता, चुनान्चे, बल्अ़म की क़ौम ने इसी त़रह किया, जब औ़रतें बन संवर कर लश्कर में पहुंचीं तो एक कन्आ़नी औ़रत बनी इस्राईल के एक सरदार के पास से गुज़री तो वोह अपने हुस्नो जमाल की वज्ह से उसे पसन्द आ गई। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मन्अ़ करने के बा

www.dawateislami.net

वुजूद उस सरदार ने उस औ़रत के साथ बदकारी की, इस की पादाश में उसी वक़्त बनी इस्राईल पर त़ाऊ़न मुसल्लत़ कर दिया गया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मुशीर उस वक़्त वहां मौजूद न था जब वोह आया तो उस ने बदकारी का क़िस्सा मा'लूम होने के बा'द मर्द व औ़रत दोनों को क़त्ल कर दिया। तब त़ाऊ़न का अ़ज़ाब उन से उठा लिया गया, लेकिन इस दौरान सत्तर हज़ार इस्राईली त़ाऊ़न से हलाक हो चुके थे।

(صراط الجنان،پ۹،الاعراف، تحت الآیۃ:۱۷۵،۳/۴۷۲ و تفسیر بغوی،الاعراف، تحت الآیۃ:۱۷۵، ۲/۱۷۹)

रिवायत है कि बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ख़ुदा तआ़ला से दरयाफ़्त किया कि तू ने बल्अ़म बिन बाऊ़रा को इतनी ने'मतें अ़त़ा फ़रमा कर फिर उस को क्यूं ज़िल्लत के गढ़ों में गिरा दिया ? तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने मेरी ने'मतों का कभी शुक्र अदा नहीं किया। अगर वोह शुक्र गुज़ार होता तो मैं उस की करामतों को सल्ब कर के उस को दोनों जहां में इस त़रह़ ज़लीलो ख़्वार और ख़ाइबो ख़ासिर न करता। (تفسیر روح البیان،۳/۱۳۹،الاعراف، تحت الآیۃ:۱۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि क़ौमे जब्बारीन का एक ऐसा शख़्स जो उन में निहायत ही मुअ़ज़्ज़ज़ था, जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इस्मे आ'ज़म का इ़ल्म दिया था और वोह ऐसा मुस्तजाबुद्दा'वात था कि जो दुआ़ मांगता क़बूल होती लेकिन उस का अन्जाम कितना इ़ब्रत नाक हुवा कि उस का ईमान ही सलामत न रहा और काफ़िर हो कर मरा। बारगाहे इलाही से ऐसा मर्दूद व मत़रूद हुवा कि उ़म्र भर कुत्ते की त़रह़ लटकती हुई ज़बान लिये फिरा और आख़िरत में जहन्नम की भड़कती हुई शो'ला बार नार का ह़क़दार हुवा। اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

इस वाक़िए़ से इ़ब्रत ह़ासिल करते हुवे हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये कि कहीं गुनाहों

www.dawateislami.net

की नुहूसत ईमान की बरबादी का सबब न बन जाए क्यूंकि इस बात में तो कोई शक नहीं कि हम मुसलमान हैं मगर हम में से किसी के पास इस बात की कोई ज़मानत नहीं कि वोह मरते दम तक मुसलमान ही रहेगा। जिस त़रह़ बे शुमार कुफ़्फ़ार ख़ुश क़िस्मती से मुसलमान हो जाते हैं इसी त़रह़ मुतअ़द्दिद बद नसीब मुसलमानों का مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ईमान से मुन्ह़रिफ़ होना (या'नी फिर जाना) भी साबित है और जो ईमान से फिर कर या'नी मुर्तद हो कर मरेगा वोह हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में रहेगा। चुनान्चे, पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 217 में फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَمَنۡ یَّرۡتَدِدۡ مِنۡكُمۡ عَنۡ دِیۡنِهٖ فَیَمُتۡ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓـئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِیۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۱۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।*

न जाने हमारा ख़ातिमा कैसा हो ?

एक त़वील ह़दीसे पाक में नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया : औलादे आदम मुख़्तलिफ़ त़बक़ात पर पैदा की गई इन में से बा'ज़ मोमिन पैदा हुवे, ह़ालते ईमान पर ज़िन्दा रहे और मोमिन ही मरेंगे। बा'ज़ काफ़िर पैदा हुवे, ह़ालते कुफ़्र पर ज़िन्दा रहे और काफ़िर ही मरेंगे। जब कि बा'ज़ मोमिन पैदा हुवे, मोमिनाना ज़िन्दगी गुज़ारी और ह़ालते कुफ़्र पर मरे। बा'ज़ काफ़िर पैदा हुवे, काफ़िर ज़िन्दा रहे और मोमिन हो कर मरेंगे।

(ترمذی، کتاب الفتن، باب ما اخبر النبی اصحابه بما هو کائن الی یوم القیامة، ۴/۸۱، حدیث ۲۱۹۸)

www.dawateislami.net

शैत़ान अज़ीज़ों के रूप में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में आने को तो हम आ गए मगर अब दुन्या से ईमान को सलामत ले जाने के लिये सख़्त दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़रना होगा और फिर भी कुछ नहीं मा'लूम कि ख़ातिमा कैसा होगा ! आह ! आह ! आह ! मौत के वक़्त ईमान छीनने के लिये शैत़ान त़रह़ त़रह़ के हथकन्डे इस्ति'माल करेगा ह़त्ता कि मां बाप का रूप धार कर भी ईमान पर डाके डालेगा और यहूदो नसारा को दुरुस्त साबित करने की मज़्मून सअ्य करेगा। यक़ीनन वोह ऐसा नाज़ुक मौक़अ़ होगा कि बस जिस पर **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम व एह़सान होगा वोही कामयाब व कामरान होगा और उसी का ईमान सलामत रहेगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 83 पर फ़रमाते हैं कि इमाम इब्नुल ह़ाज मक्की قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی "मदख़ल" में फ़रमाते हैं कि दमे नज़्अ़ दो शैत़ान, आदमी के दोनों पहलू पर आ कर बैठते हैं एक उस के बाप की शक्ल बन कर दूसरा मां की। एक कहता है : वोह शख़्स यहूदी हो कर मरा तू (भी) यहूदी हो जा कि यहूद वहां बड़े चैन से हैं। दूसरा कहता है : वोह शख़्स नसरानी (या'नी क्रिस्चैन हो कर दुन्या से) गया तू (भी) नसरानी (क्रिस्चैन) हो जा कि नसारा (क्रिस्चैन) वहां बड़े आराम से हैं।

(المدخل لابن الحاج،٣/١٨١)

पैदा न होने वाला क़ाबिले रश्क है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मुआमला बड़ा नाज़ुक है, बरबादिये ईमान के ख़ौफ़ से ख़ाइफ़ीन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं। दुन्या में जीते जी मोमिन होना यक़ीनन बाइसे सआदत है मगर येह सआदत

www.dawateislami.net

ह़क़ीक़त में उसी सूरत में सआ़दत है कि दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त ईमान सलामत रहे। ख़ुदा की क़सम ! क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर भी मोमिन है। जी हां जो दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में कामयाब हुवा वोही ह़क़ीक़ी मा'नों में कामयाब और जो जन्नत को पा ले वोही बा मुराद है। चुनान्चे, पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 185 में इरशाद होता है :

فَمَنۡ زُحۡزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدۡخِلَ الۡجَنَّةَ فَقَدۡ فَازَؕ وَمَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الۡغُرُوۡرِ ﴿۱۸۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

बुरी सोहबत ईमान के लिये ख़त़रनाक है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ातिमा बुरा होने या ईमान पर ख़ातिमा न होने के कुछ अस्बाब हैं, जिन में एक बहुत बड़ा सबब बुरी सोहबत है। याद रखिये बुरी सोह़बत ईमान के लिये बहुत ख़त़रनाक है। अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! इस के बा वुजूद हम बुरे दोस्तों से बाज़ नहीं आते, गप शप की बैठकों से ख़ुद को नहीं बचाते, मज़ाक़ मस्ख़रियों और ग़ैर सन्जीदा ह़रकतों की आ़दतों से पीछा नहीं छुड़ाते। आह ! बुरी सोह़बत की नुहूसत ऐसी छाई है कि लम्ह़ा भर के लिये भी तन्हाई में यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने को जी नहीं चाहता। ज़बान की अ़दमे ह़िफ़ाज़त का दौर दौरा हो गया। हमारी अक्सरिय्यत की ह़ालत येह हो गई है कि जो मुंह में आया बक दिया। अफ़्सोस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी और नाख़ुशी का एह़सास कम हो गया। ज़बान से निकले हुवे अल्फ़ाज़ की अहम्मिय्यत के तअ़ल्लुक़ से एक इब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे इब्रत

www.dawateislami.net

बुन्याद है : बन्दा कभी अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी की बात कहता है और उस की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करता (या'नी बा'ज़ बातें इन्सान के नज़्दीक निहायत मा'मूली होती हैं) अल्लाह तआ़ला उस (बात) की वज्ह से उस के बहुत से दरजे बुलन्द करता है और कभी अल्लाह पाक की नाराज़ी की बात करता है और उस का ख़याल भी नहीं करता उस (बात) की वज्ह से जहन्नम में गिरता है।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، ٤/٢٤١، حدیث ٦٤٧٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माह़ोल बद से बदतर होता जा रहा है, ज़बानों की लगामें अक्सर ढीली हो चुकी हैं, सुन्नी उ़लमा की सोह़बतों से मह़रूम, मदनी माह़ोल से दूर, ग़ैर सन्जीदा नौजवानों बल्कि इसी त़रह़ के बक-बक झक-झक करने वाले बड़ बड़िये बड़े बूढ़ों की फ़ुज़ूल बैठकों से ह़स्सास शख़्स बहुत घबराता है, क्यूंकि ऐसी जगहों पर ज़बानें कैंचियों की त़रह़ चल रही होती हैं مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बसा औक़ात कुफ़्रिय्या कलिमात भी बक दिये जाते हैं। ऐसी मजलिसों में बरबादिये ईमान का सख़्त ख़त़रा रहता है। नेकी की दा'वत देने या किसी सख़्त ह़ाजत पड़ने और शरई इजाज़त मिलने पर ह़स्बे ज़रूरत शिर्कत करने के इ़लावा ऐसी मह़फ़िलों से दूर रहना बेह़द ज़रूरी है।

तश्वीश सख़्त तश्वीश की बात येह है कि ज़रूरिय्याते दीन में से किसी ज़रूरते दीनी का इन्कार यूंही जो फ़े'ल मुनाफ़िये ईमान (या'नी ईमान की ज़िद) है मसलन बुत या चांद सूरज को सजदा करना ऐसा क़त़ई कुफ़्र है कि इस में जहालत भी उ़ज़्र नहीं, या'नी इस का कुफ़्र होना मा'लूम हो या न हो दोनों ही सूरतों में कुफ़्र है। चुनान्चे, अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उ़म्दतुल क़ारी में इरशाद फ़रमाते हैं : "हर उस इन्सान की

www.dawateislami.net

तक्फ़ीर की जाएगी (या'नी उस को काफ़िर क़रार दिया जाएगा) जो सरीह़ कलिमए कुफ़्र मुंह से निकाले या फिर ऐसा फ़े'ल करे जो कुफ़्र का बाइ़स हो अगर्चे वोह येह जानता न हो कि येह कलिमा या फ़े'ल कुफ़्र है।"

(عمدۃ القاری، کتاب الایمان،باب خوف المؤمن من ان یحبط عملہ وھو لایشعر، ۱/ ۴۰۳)

अफ़्सोस ! कुफ़्रिय्यात की मा'लूमात नहीं

अफ़्सोस ! हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत को कुफ़्रिय्या कलिमात की कमा ह़क़्क़ुहू मा'लूमात भी नहीं। हर एक को अपने बारे में येह ख़ौफ़ रखना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि मुझ से कोई ऐसा क़ौल या फ़े'ल सादिर हो जाए जिस के सबब مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो जाए और किया कराया सब अकारत जाए और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ कुफ़्र ही पर दुन्या से सफ़र हो जाए और फिर हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम मुक़द्दर हो जाए।

कुफ़्रिय्या कलिमात आ़म होने के बा'ज़ अस्बाब

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल फ़िल्मो ड्रामों, फ़िल्मी गानों, अख़्बारी मज़्मूनों, जिन्सी व रूमानी नाविलों, इ़श्क़िय्या व फ़िस्क़िय्या अफ़्सानों, बच्चों की बेहूदा कहानियों, त़रह़ त़रह़ के बे तुके हफ़्तरोज़ों, ह़यासोज़ माहनामों और मुख़र्रिबे अख़्लाक़ डाइजेस्टों और मज़ाह़िय्या चुटकुलों की केसीटों वग़ैरा के ज़रीए़ कुफ़्रिय्या कलिमात आ़म होते जा रहे हैं।

कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है

याद रखिये ! कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। चुनान्चे, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत,

www.dawateislami.net

मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 624 पर फ़रमाते हैं : मुह़र्रमाते बात़िनिय्या (या'नी बात़िनी ममनूआ़त मसलन) तकब्बुर व रिया व उ़जब (या'नी ख़ुद पसन्दी) व ह़सद वग़ैरहा और इन के मुआ़लजात (या'नी इलाज) कि इन का इ़ल्म भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है। मज़ीद सफ़ह़ा 626 पर फ़तावा शामी के ह़वाले से फ़रमाते हैं : ह़राम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है, इस ज़माने में येह सब से ज़रूरी उमूर हैं। (ردالمحتار، مطلب: فی فرض الکفایة وفرض العین، ۱/۱۰۷)

मगर अफ़्सोस ! आज मुसलमान इ़ल्मे दीन से दूर जा पड़ा है और शायद येही वज्ह है कि येह राहे हिदायत से भटक कर, ना सिर्फ़ गुनाहों की दलदल में फंस चुका है बल्कि हंसी मज़ाक़ और ग़मी व ख़ुशी के मौक़ओ़ं पर बड़ी बे बाकी के साथ कुफ़्रिय्या कलिमात बक देता है। याद रखिये ! जिस त़रह़ अन्धेरे में सफ़र करने के लिये चराग़ की रौशनी ज़रूरी है इसी त़रह़ ईमान की ह़िफ़ाज़त और ज़िन्दगी के इस सफ़र में कामयाबी के लिये अ़क़्ल को इ़ल्मे दीन के चराग़ की ज़रूरत पड़ती है। अगर इ़ल्मे दीन की रौशनी नहीं होगी तो अ़क़्ल का बे लगाम घोड़ा ठोकर खा कर कुफ़्रो जहालत के अन्धेरों में भटकता रह जाएगा। आज अगर हम अपने इर्द गिर्द पाई जाने वाली बुराइयों की वुजूहात का जाइज़ा लें तो हमें इस की एक बहुत बड़ी वज्ह जहालत भी नज़र आएगी कि लोग ला इ़ल्मी की वज्ह से इन बुराइयों और गुनाहों में मुब्तला हैं और येह तो ज़ाहिर है कि जो जहालत के नशे में बद मस्त हो वोह क्या जाने कि बुराई क्या है और अच्छाई क्या ? चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

www.dawateislami.net

फ़रमाने मक़्बूल है : बेशक तुम लोग अपने रब की त़रफ़ से दलील (या'नी हिदायत) पर हो जब तक तुम में दो नशे ज़ाहिर न हों, एक जहालत का नशा और दूसरा दुन्यवी ज़िन्दगी से मह़ब्बत का नशा। पस तुम लोग (अभी तो) नेकी का हुक्म देते हो और बुराइयों से मन्अ़ करते हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करते हो (लेकिन) जब तुम में दुन्या की मह़ब्बत पैदा हो जाएगी तो तुम न तो नेकी का हुक्म दोगे और न बुराइयों से मन्अ़ करोगे और न राहे ख़ुदा में जिहाद करोगे। पस उस वक़्त क़ुरआनो सुन्नत की बात कहने वाला मुहाजिरीन और अन्सार में सब से पहले ईमान लाने वालों की त़रह़ होगा।

(مجمع الزوائد، کتاب الفتن، باب النهی عن المنکر...الخ،۷/۵۳۳، حدیث۱۲۱۵۹)

अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना येह दोनों मज़्मूम नशे आ़म देखे जा रहे हैं। जहालत के नशे में आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत बद मस्त है। अगर कोई कहे कि ता'लीम तो ख़ूब आ़म हो गई है और जगह ब जगह स्कूल और कॉलेज खुल चुके हैं अब जहालत कहां रही है ? तो मुआ़फ़ कीजिये सिर्फ़ अ़स्री ता'लीम जहालत का इ़लाज नहीं। सह़ीह़ येही है कि इस्लामी अह़काम पर मब्नी फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करने ही से जहालत दूर हो सकती है। फ़ी ज़माना मुसलमानों की भारी अक्सरिय्यत में ज़रूरी दीनी मा'लूमात का बे ह़द फ़ुक़्दान (या'नी कमी) है। आज दुन्या जिन लोगों को ता'लीम याफ़्ता कहती है उन की अक्सरिय्यत दुरुस्त मख़ारिज से क़ुरआने करीम नहीं पढ़ सकती ! येह जहालत नहीं तो क्या है ? पढ़े लिखों से वुज़ू और ग़ुस्ल का सह़ीह़ त़रीक़ा या नमाज़ के अरकान पूछ लीजिये शायद ही कोई बता पाए, उन से जनाज़े की दुआ़ सुनाने की फ़रमाइश कर देखिये शायद बग़लें झांकने लगें ! जहालत व बे दीनी इस ह़द तक पहुंच चुकी है कि उ़लमाए दीन का अदबो एह़तिराम करने के बजाए مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ उ़लमा

www.dawateislami.net

की तौहीन की जाती है, हंसी मज़ाक़ और ख़ुशी व ग़मी के मौक़ओं पर कलिमाते कुफ़्र बके जाते हैं। बद अख़्लाक़ी, बद सुलूकी, औ़रतों पर ज़ुल्म, धोका देही, वा'दा ख़िलाफ़ी, शराब नोशी और दीगर ख़ुराफ़ात का बाज़ार गर्म कर रखा है। इन सब बुराइयों का सबब इ़ल्मे दीन से दूरी, फ़िक्रे आख़िरत से ग़फ़्लत और ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न न होना है। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल अक्सर मुसलमानों की तवज्जोह सिर्फ़ और सिर्फ़ मुरव्वजा अ़स्री ता'लीम की त़रफ़ है, इसी की हर त़रफ़ पज़ीराई है, सारी दौलत व क़ुव्वत इसी पर सर्फ़ की जा रही है जब कि ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न रखने वाले और इ़ल्मे दीन के पढ़ने वाले सआ़दत मन्द निस्बतन कम हैं। यक़ीनन येह सब दुन्यावी ज़िन्दगी के नशे के करिश्मे हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ईमान की ह़िफ़ाज़त और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का एक बहुत बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत भी है। इजतिमाअ़ में शिर्कत को मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से ईमान की ह़िफ़ाज़त का सामान होगा और इ़ल्मे दीन के मोती मिलेंगे, जहालत के अन्धेरे दूर होंगे और ज़िन्दगी इ़ल्मो अ़मल की किरनों से झिलमिलाने लगेगी। आइये दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की मदनी बहार समाअ़त फ़रमाइये। चुनान्चे,

पथ्थर दिल भी रो पड़ा

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : उठती जवानी और अच्छी सिह़्ह़त ने मुझे मग़रूर बना दिया था, नित नए फ़ेन्सी मल्बूसात सिलवाना, कॉलेज आते जाते बस का टिकट भुलाना, कन्डेक्टर मांगे तो बद मुआ़शी पर उतर आना, रात गए तक

www.dawateislami.net

आवारा गर्दी में वक़्त गंवाना, जुवे में पैसे लुटाना वग़ैरा हर त़रह़ की मा'सिय्यत मुझ में सरायत किये हुवे थी। वालिदैन समझा समझा कर थक चुके थे, मेरी इस्लाह़ के लिये दुआ़ करते करते अम्मी जान की पलकें भीग जाती मगर मैं था कि अपने ही ह़ाल में मस्त था और मेरे कानों पर जूं तक न रेंगती। शबो रोज़ इसी त़रह़ गुज़र रहे थे कि हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से हमारे अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई कभी कभी सर–सरी त़ौर पर दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश कर देते और मैं भी सुनी अन–सुनी कर देता मगर एक बार इजतिमाअ़ वाली शाम वोही इस्लामी भाई मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में एक दम इसरार पर उतर आए कि आज तो आप को चलना ही पड़ेगा, मैं टालता रहा मगर वोह न माने और देखते ही देखते उन्हों ने रिक्षा रोक लिया और बड़ी मिन्नत के साथ कुछ इस अन्दाज़ में बैठने के लिये दरख़्वास्त की, कि अब मुझ से इन्कार न हो सका, मैं बैठ गया और हम दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब आ पहुंचे। जब दुआ़ के लिये बत्तियां बुझाई गईं तो येह समझ कर कि इजतिमाअ़ ख़त्म हो गया है, मैं उठ गया, मुझे क्या मा'लूम कि अब आने वाले लम्ह़ात में मेरी तक़्दीर में मदनी इन्क़िलाब बरपा होने वाला है। ख़ैर मेरे उस मोह़सिन इस्लामी भाई ने मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में समझा बुझा कर मुझे जाने से रोका और मैं दोबारा बैठ गया। अब **अल्लाह–अल्लाह, अल्लाह–अल्लाह**.....की सदाओं से फ़ज़ा गूंज उठी। **अल्लाह–अल्लाह** की येह सदाएं ना सिर्फ़ मेरे कानों में रस घोल रही थीं बल्कि मेरे क़ल्ब पर चढ़ी गुनाहों की गन्दगी धो रही थीं। फिर जब रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ शुरूअ़ हुई तो शुरकाए इजतिमाअ़ की हिचकियों की आवाज़ बुलन्द होने लगी यहां तक कि मेरे जैसा पथ्थर

www.dawateislami.net

दिल आदमी भी फूट–फूट कर रोने लगा, मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल का हो कर रह गया।

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की तरक़्क़ी का बाइ़स बना मदनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की बरकत से मुआ़शरे का एक बिगड़ा हुवा नौजवान अपने आप को सुधारने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये कमरबस्ता हो गया लिहाज़ा आप भी दुन्या व आख़िरत संवारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और इस्तिक़ामत पाने के लिये कम अज़ कम 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की निय्यत कर लीजिये। मज़ीद अपने मर्ह़ूम के ईसाले सवाब के लिये इसी माह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र इख़्तियार फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेक लोगों की सोह़बत की बरकत से ईमान की ह़िफ़ाज़त, नेक–नमाज़ी बनने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का जज़्बा बेदार होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए, ख़ातिमा बिल ख़ैर करे और मीठे मीठे मह़बूब के क़दमों में जगह अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

बयान नम्बर : 2

सोहबत का असर

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शाहे बह्रो बर, मालिके खुल्दो कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : तुम अपनी मजलिसों (महफ़िलों) को मुझ पर दुरूद पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना तुम्हारे लिये क़ियामत के दिन नूर होगा।

(جامع صغیرللسیوطی، ص ۲۸۰، حدیث ۴۵۸۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम की दुआ़ की बरकत

मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم एक बार बल्ख़ शहर में बयान फ़रमा रहे थे, दौराने बयान गुनहगारों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त दुआ़ मांगी : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस इजतिमाअ़ में जो सब से बड़ा गुनहगार है, अपनी रह़मत से उस की मग़्फ़िरत फ़रमा। एक कफ़न चोर भी वहां मौजूद था, जब रात हुई तो वोह कफ़न चुराने की ग़रज़ से क़ब्रिस्तान गया मगर जूं ही क़ब्र खोदी एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी : ऐ कफ़न चोर ! तू आज दिन के वक़्त ह़ातिमे असम के इजतिमाअ़ में बख़्शा जा चुका है फिर आज रात येह गुनाह क्यूं करने लगा है ? येह सुन कर वोह रो पड़ा और उस ने सच्चे दिल से तौबा कर ली।

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر حاتم اصم، ص ۲۲۲ ملخصًا)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वाक़ेई नेक बन्दों की सोह़बत और आ़शिक़ाने रसूल के इजतिमाआ़त में शिर्कत दोनों जहानों के लिये बाइ़से सआ़दत है क्यूंकि नेक बन्दे दूसरों के लिये भी बाइ़से मन्फ़अ़त होते हैं और जो इस्लामी भाई जिस क़दर अपने दूसरे इस्लामी भाइयों के लिये नफ़्अ़ बख़्श होगा उसी क़दर उस के मरातिब व दरजात बुलन्द होते जाएंगे। ह़दीसे पाक में वारिद है : लोगों में बेहतर वोह है जो लोगों को नफ़्अ़ दे और लोगों में बदतर वोह है जो लोगों को तक्लीफ़ दे।

(كشف الخفاء، ١/٣٤٨، حديث١٢٥٢)

लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि मुसलमानों को तक्लीफ़ और ईज़ा देने से बचें और उन्हें फ़ाइदा पहुंचा कर ख़ैरुन्नास या'नी बेहतर और भलाई पाने वालों में शामिल हों।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िक्र करने वालों की मजलिस इख़्तियार करो

ह़ज़रते अबू रज़ीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि उन से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की अस्ल पर रहबरी न करूं जिस से तुम दुन्या व आख़िरत की भलाई पा लो (पस वोह अस्ल चीज़ येह है कि) तुम ज़िक्र करने वालों की मजलिस इख़्तियार करो।

(شعب الایمان، باب فی مقاربة...الخ، فصل فی المصافحة...الخ، ٦/٤٩٢، حديث٩٠٢٤)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मजलिस से मुराद

www.dawateislami.net

उ़लमाए दीन व औलियाए कामिलीन, सालिह़ीन व वासिलीन की मजलिसें हैं, क्यूंकि येह मजलिसें जन्नत के बाग़ात हैं। जैसा कि दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है येह मजलिसें ख़्वाह मद्रसे हों या दर्से कुरआनो ह़दीस की मजलिसें या ह़ज़राते सूफ़ियाए किराम की मह़फ़िलें। येह फ़रमान बहुत जामेअ़ है जिस मजलिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़श्क़ और इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का शौक़ पैदा हो वोह मजलिस इक्सीर है। (मिरआतुल मनाजीह़, अल्लाह के लिये मह़ब्बत का बयान, 6/603)

ज़िक्रुल्लाह की मजलिस में शिर्कत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते घूम फिर कर ज़िक्र की मजालिस तलाश करते हैं। जब वोह कोई ऐसी मजलिस देखते हैं जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र हो रहा हो तो उन लोगों के साथ जा कर बैठ जाते हैं और एक दूसरे को अपने परों से ढांप लेते हैं यहां तक कि आस्मान तक का ख़ला पुर हो जाता है। जब वोह मजलिस मुतफ़र्रिक़ (या'नी मुन्तशिर) होती है तो फ़िरिश्ते आस्मान की त़रफ़ परवाज़ कर जाते हैं। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन से पूछता है ह़ालांकि ख़ुद ज़ियादा जानने वाला है, तुम कहां से आए हो ? तो वोह अ़र्ज़ करते हैं : हम ज़मीन से तेरे बन्दों के पास से आ रहे हैं वोह तेरी पाकी और बड़ाई बयान कर रहे थे, तेरा कलिमा पढ़ते और तेरी ता'रीफ़ करते थे और तुझ से सुवाल करते थे। रब तआ़ला फ़रमाता है : वोह क्या मांगते थे ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : तुझ से तेरी जन्नत मांग रहे थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : क्या उन्हों ने मेरी जन्नत को देखा है ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : नहीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : अगर वोह

www.dawateislami.net

उसे देख लेते तो क्या करते !!! फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : और वोह तेरी पनाह त़लब कर रहे थे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : किस चीज़ से पनाह चाहते थे ? अ़र्ज़ करते हैं : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जहन्नम से । रब तआ़ला फ़रमाता है : क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा है ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : नहीं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते !!! फिर फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : वोह तुझ से मग़फ़िरत चाहते थे । रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं ने उन की मग़फ़िरत फ़रमा दी और उन की मुराद उन्हें अ़त़ा फ़रमा दी और जिस से वोह पनाह चाहते थे उन्हें उस से पनाह अ़त़ा फ़रमा दी । वोह अ़र्ज़ करते हैं : या रब عَزَّوَجَلَّ ! उन में फ़ुलां शख़्स भी है जो बहुत गुनहगार है वोह वहां से गुज़र रहा था और उन के साथ बैठ गया । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं ने उस को भी बख़्श दिया क्यूंकि येह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन (या'नी हम सोह़बत) भी मह़रूम नहीं रहता । (مسلم،کتاب الذکر..الخ،باب فضل مجالس الذکر،ص۱۴۴۴،حدیث۲۶۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह मा'लूम हुवा कि रह़मते ख़ुदावन्दी ला मह़दूद है और उस की रह़मत से कोई फ़र्द ख़ारिज नहीं बल्कि हर एक को उस की रह़मत मुह़ीत़ है और येही अ़क़ीदा इस्लाम ने मुसलमानों को दिया है लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम हर ह़ाल में रह़मते ख़ुदावन्दी के त़लबगार रहें और नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार करें ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर नाज़िल होने वाली रह़मतों के छींटे हम पर भी पड़ें और हमारा बेड़ा पार हो जाए ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अच्छे बुरे साथी की मिसाल

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अच्छे बुरे साथी की मिसाल मुश्क के उठाने और भट्टी धोंकने वाले की त़रह़ है, मुश्क (एक बेहतरीन ख़ुश्बू का नाम) उठाने वाला या तो तुम्हें वैसे ही देगा या तुम उस से कुछ ख़रीद लोगे या तुम उस से अच्छी ख़ुश्बू पाओगे और भट्टी धोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जला देगा या तुम उस से बद बू पाओगे।

(مسلم، کتاب البر و الصلة، باب استحباب مجالسة...الخ، ص ١٤١٤، حديث ٢٦٢٨)

अल्लाह के लिये दोस्ती की फ़ज़ीलत

ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बिला शुबा जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं जिन पर ज़बर जद के बालाख़ाने हैं उन के दरवाज़े खुले हुवे हैं वोह ऐसे चमकते हैं जैसे बहुत रौशन सितारा चमकता है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन बालाख़ानों में कौन (ख़ुश नसीब) रहेंगे ? इरशाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआ़ला ही के वासिते़ आपस में मह़ब्बत रखते हैं और जो अल्लाह तआ़ला ही के वासिते़ आपस में मिल कर बैठते हैं और जो अल्लाह तआ़ला ही के वासिते़ आपस में मुलाक़ात करते हैं।

(شعب الايمان، باب فی مقاربة...الخ، فصل فی المصافحة...الخ، ٦/٤٨٧، حديث ٩٠٠٢)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद के लिये इकट्ठे होने वाले

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की दाईं जानिब (इस में फ़ज़ीलत का ज़िक्र है क्यूंकि अल्लाह तआ़ला जिहत व सम्त से पाक है) कुछ ऐसे लोग होंगे जो न अम्बिया होंगे न शुहदा, उन के चेहरों का नूर देखने वालों की निगाहों को ख़ीरा करता होगा। अम्बिया व शुहदा उन के मक़ाम और क़ुर्बे इलाही को देख कर इज़्हारे मसर्रत फ़रमाएंगे। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से किसी सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कौन (ख़ुश नसीब) होंगे? इरशाद फ़रमाया : येह मुख़्तलिफ़ क़बाइल और बस्तियों के लोग होंगे (जो दुन्या में) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद के लिये इकट्ठे होते थे और पाकीज़ा बातें इस त़रह़ चुनते थे जिस त़रह़ खजूर का खाने वाला बेहतरीन खजूरों को चुनता है।

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکروالدعاء، الترغیب فی حضور مجالس الذکر...الخ، ۲/۲۵۲، حدیث ۲۳۳٤)

कहां हैं वोह लोग?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमाएगा कि कहां हैं वोह लोग जो मेरे जलाल की वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते थे, आज मैं उन्हें अपने साए (या'नी सायए रह़मत) में जगह दूंगा जब कि मेरे साए के सिवा आज कोई साया नहीं है।

(مسلم، کتاب البر...الخ، باب فی فضل الحب فی اللّٰہ، ص۱۳۸۸، حدیث ۲۵٦٦)

www.dawateislami.net

तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "अच्छे माह़ोल की बरकतें" सफ़ह़ा 21 पर है :

एक अच्छा और पाकीज़ा माह़ोल जहां ज़िक्रे इलाही और ज़िक्रे मुस्त़फ़ाई का मौक़अ़ फ़राहम करता है, वहां फ़रमूदाते रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ और फ़रमूदाते रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुनने लिखने और पढ़ने का ज़रीआ़ भी बनता है और माह़ोल की बरकतों के सबब इन पर अ़मल पैरा होने का एक वलवला और जज़्बा बेदार होता है। चुनान्चे, कोई फ़र्द इस ह़क़ीक़त को झुटला नहीं सकता कि अ़मल करने का वोह आ'ला जज़्बा जो एक पाकीज़ा माह़ोल की सोह़बत से मिलता है, वोह दूसरी त़रह़ ना मुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर है। अगर इह़याउल उ़लूम में शर्ह़ व बस्त़ के साथ बयान किये गए फ़न्ने तसव्वुफ़ का खु़लासा चन्द अल्फ़ाज़ में बयान करना हो तो हम कह सकते हैं कि इस फ़न की इन्तिहा मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ और इस की इब्तिदा अच्छी सोह़बत हैं क्यूंकि अच्छी सोह़बत से नेक ख़यालात पैदा होते हैं और इन्सान को अपनी पैदाइश के मक़्सद, दुन्यावी ज़िन्दगी की बे सबाती, उख़रवी ज़िन्दगी के दवाम, ह़िसाबो किताब और जज़ा व सज़ा पर गौ़र करने का मौक़अ़ मिलता है और इस से दिल में ख़ौफ़ व उम्मीद पैदा होते हैं जो इन्सान में आख़िरत के लिये अ़मल शुरूअ़ करने की ख़्वाहिश पैदा कर देते हैं। चुनान्चे, आख़िरत की त़रफ़ तवज्जोह हो जाती है और नफ़्सानी ख़्वाहिशात कम होती चली जाती हैं, दिल में इश्क़े रसूल और मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ को ह़ासिल करने की ख़्वाहिश बेदार हो जाती है और फिर नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत इख़्तियार कर के दिल को गै़रुल्लाह की याद से ख़ाली किया

www.dawateislami.net

जाता है जिस के नतीजे में दिल ज़िक्रुल्लाह से मानूस हो जाता है और फिर रफ़्ता रफ़्ता येह उन्स मा'रिफ़त और मा'रिफ़त मह़ब्बत में तब्दील हो जाती है जो कि ऐ़न मक़्सूद है अलबत्ता इस के लिये तौफ़ीक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुतवज्जेह होना बुन्यादी अम्र है।

पता चला कि नेक सोह़बत उख़्रवी सआ़दत को ह़ासिल करने का पहला ज़ीना है और जब कोई प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों और ता'लीमात को अपने दामन में समेट ले और इन पर आ़मिले सादिक़ हो जाए तो उस के ज़ाहिरो बात़िन का मुअ़त़्त़र व मुअ़म्बर हो जाना बाइ़से ह़ैरानी नहीं है बल्कि उस की अ़ज़मतो शान तो इस क़दर बुलन्दो बाला हो जाती है कि बा'दे मर्ग उस के मदफ़न की मिट्टी भी मुअ़त़्त़र हो जाती है। चुनान्चे,

क़ब्र की मिट्टी महक उठी

ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माई़ल बुख़ारी (सिने विलादत 194 हिजरी, सिने वफ़ात 256 हिजरी) رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को जब क़ब्र में रखा गया तो फ़ौरन क़ब्र शरीफ़ से मुश्क की ख़ुश्बू महकने लगी, क़ब्र का ज़र्रा ज़र्रा मुश्क बन गया, लोग ज़ियारत के लिये आते और ख़ाके क़ब्र को बत़ौरे तबर्रुक ले जाते थे, यहां तक कि क़ब्र में ग़ार पड़ गया। (बई ख़ौफ़ कि लोग इसी त़रह़ मिट्टी ले जाते रहे तो थोड़े अ़र्से में क़ब्र ना पैद हो जाएगी) उस के चारों त़रफ़ लकड़ी का जंगला लगा दिया गया लेकिन ज़ाइरीन जंगले से बाहर की ख़ाक ले जाने लगे तो उस में भी ख़ुश्बू पाते थे। मुद्दतहाए दराज़ तक येह ख़ुश्बू महकती रही।

(سیر اعلام النبلاء، الطبقۃ الرابعۃ عشر، ۲۱۳۶-ابو عبد اللہ البخاری، ۱۰/۳۱۹)

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ मुसन्निफ़े दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन सुलैमान जुज़ूली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (अल मुतवफ़्फ़ा सिने 870 हिजरी) को सतत्तर साल के बा'द जब सर ज़मीने "सूस" से निकाल कर "मर्राकुश" की सर ज़मीन में दफ़्न किया गया तो लोगों ने ब चश्मे ख़ुद देखा कि आप का कफ़न सह़ीह़ व सालिम और बदन तरो ताज़ा था और जब आप को पहले मदफ़न से निकाला गया तो फ़ज़ा मुअ़त्त़र हो गई आज भी आप की क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू आती है। (مطالع المسرات، ص ٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छे दोस्त की हम नशीनी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जब कोई शख़्स फ़ौत होता है तो उस के हम नशीन (या'नी वोह जिन की सोह़बत में बैठता था) उस पर पेश किये जाते हैं अगर वोह (मरने वाला) अहले ज़िक्र से होता है तो अहले ज़िक्र वाले और अगर खेल कूद वालों में से होता है तो खेल कूद वाले पेश किये जाते हैं।

(حلیة الاولیاء، مجاهد بن جبر، ۳/۳۲۴، حدیث ٤١١٥)

अच्छे हम नशीन के ह़वाले से तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा समाअ़त फ़रमाइये :

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ अच्छा हम नशीन वोह है कि उस के देखने से तुम्हें ख़ुदा याद आए उस की गुफ़्तगू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए। (جامع صغیر، حرف الخاء، ص ۲۴۷، حدیث ٤٠٦٣)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ बड़ों की सोहबत में बैठा करो और उ़लमा से बातें पूछा करो और हुकमा से मेल जोल रखो। (معجم کبیر،۲۲/۱۲۵، حدیث۳۲۴)

﴾3﴿ अच्छा साथी वोह है कि जब तुम ख़ुदा को याद करो तो वोह तुम्हारी मदद करे और जब तुम भूलो तो याद दिला दे।

(جامع صغیر، باب حرف الخاء،ص ۲۴۴،حدیث ۳۹۹۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक सोह़बत की बरकतों के बारे में आप ने सुना अब कुछ बुरी सोह़बत की नुहूसतों के बारे में भी समाअ़त फ़रमाइये। चुनान्चे,

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "अच्छे माहोल की बरकतें" सफ़ह़ा 27 पर है :

सोह़बत का असर मुसल्लमा है, इन्सान अपने हम नशीन की आ़दात, अख़्लाक़ और अ़क़ाइद से ज़रूर मुतअस्सिर होता है इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को उन लोगों के पास बैठने से सख़्ती से मन्अ़ फ़रमाया है जिन का रात दिन का मश्ग़ला इस्लाम, पैग़म्बरे इस्लाम और क़ुरआने ह़कीम पर त़ा'नो तशनीअ़ करना है लिहाज़ा ऐसे ख़त़रनाक और भयानक क़िस्म के क़बीह़ो शनीअ़ नासूर से आलूदा मरीज़ों की सोह़बत से बचो वरना कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उस नापाक मरज़ में मुब्तला हो जाओ।

बुरे दोस्त की हम नशीनी

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि बुरे

www.dawateislami.net

मुसाह़िब (साथी, हम नशीन) से बचो कि तुम उसी के साथ पहचाने जाओगे या'नी जैसे लोगों के पास आदमी की निशस्त व बरख़ास्त होती है, लोग उसे वैसा ही जानते हैं।

(كنزالعمال، كتاب الصحبة، قسم الاقوال، الباب الثالث فی الترهيب عن صحبة السوء، ۹/۱۹، حديث۲۴۸۳۹)

उन से भाई चारा न करो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि फ़ाजिर से भाई बन्दी न करो कि वोह अपने फ़े'ल को तुम्हारे लिये मुज़य्यन करेगा और येह चाहेगा कि तुम भी उस जैसे हो जाओ और अपनी बद तरीन ख़स्लत को अच्छा कर के दिखाएगा तुम्हारे पास उस का आना जाना ऐ़ब और नंग है और अह़मक़ से भी भाई चारा न करो कि वोह अपने को मशक़्क़त में डाल देगा और तुम्हें कभी नफ़्अ़ नहीं पहुंचाएगा और कभी येह होगा कि तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाना चाहेगा मगर होगा येह कि नुक़्सान पहुंचा देगा, उस की ख़ामोशी बोलने से बेहतर है और उस की दूरी नज़दीकी से बेहतर है और कज़्ज़ाब (झूटे) से भी भाई चारा न करो कि उस के साथ मुआ़शरत तुम्हें नफ़्अ़ नहीं देगी तुम्हारी बात दूसरों तक पहुंचाएगा और दूसरों की तुम्हारे पास लाएगा और अगर तुम सच बोलोगे जब भी वोह सच नहीं बोलेगा।

(كنزالعمال، كتاب الصحبة ، قسم الافعال، باب فی آداب الصحبة، ۹/۷۵، حديث۲۵۵۷۱)

इस की सोहबत से बचो

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने अपने दामाद ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़रमाया :

www.dawateislami.net

ऐ मुग़ीरा ! जिस भाई या साथी की सोह़बत तुम्हें दीनी फ़ाइदा न पहुंचाए तुम उस की सोह़बत से बचो ताकि तुम मह़फ़ूज़ व सलामत रहो ।

(كشف المحجوب ، باب الصحبة ومايتعلق بها ، ص٣٧٤ وحلية الاولياء ، المغيرة بن حبيب، ٦/٢٦٧، حديث٨٥٥٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुरी सोह़बत से दीनो दुन्या दोनों तबाहो बरबाद हो जाते हैं, बुरे माह़ोल में इन्सान की आ़दातो अत़्वार बिगड़ जाते हैं और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करते करते फ़िस्क़ो फ़ुजूर का मुजस्समा बन जाता है । ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर आप बुरे दोस्तों या किसी बुरे माह़ोल में उठते बैठते हैं तो फ़ौरन अलग हो जाइये और अच्छे माह़ोल को अपना लीजिये और इस की बरकतें लूटिये, आइये रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जगाने, ईमान की ह़िफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, मौत का तसव्वुर जमाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्रो जहन्नम से डराने, गुनाहों की आ़दत मिटाने, अपने आप को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर ईसवी माह की पहली तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये । आप की तरग़ीबो तह़रीस के लिये एक मदनी बहार गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया

शालीमार टाऊन (मर्कजुल औलिया, लाहौर) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : मैं बेहूद बिगड़ा हुवा इन्सान था, फ़िल्मों ड्रामों का रस्या होने के साथ साथ जवान लड़कियों के साथ छेड़ खा़नियां, औबाश नौजवानों के साथ दोस्तियां, रात गए तक उन के साथ आवारा गर्दियां वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे। मेरी ह़रकाते बद के बाइ़स खा़नदान वाले भी मुझ से कतराते, अपने घरों में मेरी आमद से घबराते नीज़ अपनी औलाद को मेरी सोह़बत से बचाते थे। मेरी गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्हे़ बहारां बनने की सबील यूं हुई कि एक दा'वते इस्लामी वाले आ़शिक़े रसूल की मुझ पर मीठी नज़र पड़ गई, उस ने निहायत ही शफ़्क़त के साथ इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाई। बात मेरे दिल में उतर गई और मैं ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों ने मुझ पापी व बदकार के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा और सुन्नतों भरे मदनी लिबास का जज़्बा मिला, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजा और मेरे जैसा गुनहगार सुन्नतों के मदनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हो गया। जो अ़ज़ीज़ो अक़रिबा देख कर कतराते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब वोह गले लगाते हैं। पहले मैं खा़नदान के अन्दर बद तरीन था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले की बरकत से अब अ़ज़ीज़ तरीन हो गया हूं।

जब तक बिका न था तो कोई पूछता न था
तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सत्ताईस अनमोल नगीने

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सोह़बत व मजलिस के मुतअ़ल्लिक़ यहां मज़ीद कुछ रिवायात जम्अ़ की गई हैं, ब ग़ौर समाअ़त कीजिये :

﴿1﴾ बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक सालेह़ (या'नी नेक) मुसलमान की बरकत से उस के पड़ोस के सौ घरवालों की बला दफ़्अ़ फ़रमाता है।

(معجم اوسط،۳/۱۲۹، حدیث ۴۰۸۰)

﴿2﴾ रिज़ाए इलाही के लिये मुलाक़ात करो क्यूंकि जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुलाक़ात की तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उसे मन्ज़िल तक पहुंचाने साथ जाते हैं। (کشف الخفاء، حرف الزای،۱/۳۸۷، حدیث ۱۴۱۱)

﴿3﴾ जब तुम अपने भाई में तीन ख़स्लतें देखो तो उस से उम्मीद रखो। (वोह तीन चीज़ें येह हैं) ह़या, अमानत, सच्चाई और जब तुम इन (तीन चीज़ों) को न देखो तो उस से उम्मीद न रखो।

(الکامل فی ضعفاء الرجال، رشدین بن کریب،۴/۶۵، کنزالعمال، کتاب الصحبۃ، قسم الاقوال، الباب الثانی فی آداب الصحبۃ...الخ،۹/۱۳،حدیث ۲۴۵۰۰)

﴿4﴾ तुम्हारा मुसाहिब व साथी मोमिन ही हो और तुम्हारा खाना मुत्तक़ी परहेज़गार ही खाए।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من یؤمر ان یجالس،۴/۳۴۱، حدیث ۴۸۳۲)

﴿5﴾ तन्हाई बेहतर है बुरे साथी से और अच्छा साथी बेहतर है तन्हाई से और अच्छी बात बोलना बेहतर है ख़ामोशी से और ख़ामोशी बेहतर है बुरी बात बोलने से।

(شعب الایمان،باب فی حفظ اللسان، فصل فی السکوت عما لایعنیه،۴/۲۵۶،۲۵۷، حدیث ۴۹۹۳)

www.dawateislami.net

﴾6﴿ तुम बुरे साथी से बचो क्यूंकि तुम उस के साथ पहचाने जाओगे।

(كنزالعمال، كتاب الصحبة، قسم الاقوال، الباب الثالث فى الترهيب عن صحبة السوء، ٩/١٩، حديث ٢٤٨٣٩)

﴾7﴿ तुम बुरे साथी से बचो क्यूंकि वोह जहन्नम का एक टुकड़ा है उस की महृब्बत तुम्हें फ़ाइदा नहीं पहुंचाएगी और वोह अपना अ़ह्द तुम से वफ़ा नहीं करेगा। (فردوس الاخبار، ١/٢٢٤، حديث ١٥٧٣)

﴾8﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम उ़लमा के पास बैठना और दाना लोगों के कलाम को ध्यान से सुनना लाज़िम पकड़ो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दानाई व हि़क्मत के नूर से मुर्दा दिल को ज़िन्दा करता है, जैसा कि मुर्दा बन्जर ज़मीन को बारिश के पानी से ज़िन्दा करता है।

(منبهات ابن حجرعسقلانی، باب الثنائی، ص ٣)

﴾9﴿ किसी दाना शख़्स से मरवी है कि तीन चीज़ें ग़म व आलाम को दूर कर देती हैं :

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों की मुलाक़ात (3) दाना ह़ज़रात की गुफ़्तगू।

﴾10﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया :

चार चीज़ें दिल की तारीकी से हैं :

(1) ख़ूब पेट भरा होना ला परवाही की वज्ह से

(2) ज़ुल्म करने वालों की सोह़बत इख़्तियार करना

(3) पिछले गुनाहों को भूल जाना

(4) लम्बी लम्बी उम्मीदें

www.dawateislami.net

और चार चीज़ें दिल की रौशनी से हैं :

(1) भूके पेट होना परहेज़ व डर की वज्ह से

(2) नेकूकारों की सोह़बत इख़्तियार करना

(3) पिछले गुनाहों को याद रखना

(4) छोटी उम्मीदें

(منبهات ابن حجرعسقلانی، باب الرباعی، ص۳۹)

﴾11﴿ अबू नुऐ़म ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत किया कि जो बन्दा ज़मीन के टुकड़ों में से किसी टुकड़े पर सजदा करता है तो वोह टुकड़ा (ह़िस्सा) उस के लिये क़ियामत के दिन गवाही देगा और वोह उस पर रोता है जिस दिन वोह (बन्दए मोमिन) मरता है।

(حلیة الاولیاء، عطا بن میسرة، ۲۲٤/٥، حدیث٦٩٠٩)

﴾12﴿ अच्छे मुसाह़िब (पास बैठने वाले) की मिसाल मुश्क वाले जैसी है अगर तुम्हें उस से कुछ न मिले तब भी ख़ुश्बू पहुंचेगी और बुरे मुसाह़िब की मिसाल भट्टी वाले की त़रह़ है अगर तुम्हें (उस की भट्टी की) सियाही न भी पहुंचे फिर भी उस का धुवां तो पहुंचेगा।

(ابوداود، کتاب الادب، باب من یؤمر ان یجالس، ٣٤٠/٤، حدیث٤٨٢٩)

﴾13﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम अपने मुर्दों को नेक लोगों के दरमियान दफ़्न करो क्यूंकि मुर्दा बुरे पड़ोसी की वज्ह से तक्लीफ़ उठाता है जिस त़रह़ ज़िन्दा बुरे पड़ोसी की वज्ह से तक्लीफ़ उठाता है। (حلیة الاولیاء، مالك بن انس، ٣٩٠/٦، حدیث٩٠٤٢)

www.dawateislami.net

﴾14﴿ तीन चीज़ें तुम्हारे लिये तुम्हारे भाई की ख़ालिस मह़ब्बत करने का ज़रीआ़ हैं :

(1)......जब तुम उस से मिलो तो उसे सलाम करो

(2).....तुम उस के लिये मजलिस में जगह कुशादा करो और

(3).....तुम उसे उस नाम से बुलाओ जो उसे प्यारा हो।

(مستدرك حاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب ثلاث...الخ، ٤/٥٣٣، حديث ٥٨٧٠)

﴾15﴿ जो लोग मजलिस से उठ जाएं और उस में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न करें, तो वोह ऐसे उठे जैसे गधे की लाश और वोह (मजलिस) उन पर (रोज़े क़ियामत) ह़सरत (का बाइ़स) होगी।

(ابوداود، كتاب الادب، باب كراهية ان يقوم الرجل من مجلسه ولا يذكرالله، ٤/٣٤٧،حديث ٤٨٥٥)

﴾16﴿ कोई शख़्स किसी क़ौम के पास आए और उस की ख़ुशनूदी के लिये वोह लोग जगह में वुस्अ़त कर दें तो अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि उन को राज़ी करे।

(كنزالعمال، كتاب الصحبة، قسم الاقوال، حق المجالس والجلوس، ٩/٥٨، حديث ٢٥٣٧٠)

﴾17﴿ कोई शख़्स दो आदमियों के दरमियान न बैठे मगर उन की इजाज़त से और दूसरी रिवायत में है कि किसी शख़्स के लिये ह़लाल नहीं कि वोह दो आदमियों के दरमियान बिग़ैर उन की इजाज़त के जुदाई करे या'नी उन के दरमियान बैठ जाए।

(ابوداود، كتاب الادب، باب فى الرجل يجلس بين الرجلين بغيراذنهما، ٤/٣٤٤،حديث ٤٨٤٤ـ ٤٨٤٥)

﴾18﴿ जब तुम बैठो तो अपने जूते उतार लो तुम्हारे क़दम आराम पाएंगे।

(كنزالعمال، كتاب الصحبة، قسم الاقوال، حق المجالس والجلوس، ٩/٥٩، حديث ٢٥٣٩٠)

www.dawateislami.net

﴾19﴿ जब कोई शख़्स अपनी जगह से उठ जाए फिर वोह वापस लौट कर आए (या'नी जब कि जल्द ही लौट आए) तो अपनी जगह का वोही ज़ियादा मुस्तह़िक़ व ह़क़दार है।

(ابی داود، کتاب الادب،باب اذا قام الرجل من مجلس ثم رجع، ٣٤٦/٤، حدیث٤٨٥٣)

﴾20﴿ ज़ियादा शरफ़ वाली बैठक वोह है जो क़िब्ला रुख़ है।

(مستدرك حاکم ، کتاب الادب، باب اشرف المجالس...الخ، ٣٨٣/٥، حدیث٧٧٧٨)

﴾21﴿ बेहतरीन नेकी हम नशीनों की ता'ज़ीम करना है।

(فردوس الاخبار،ذکرفصول اخر فی عبارات شتی، ٢٠٧/١، حدیث١٤٣٨)

﴾22﴿ बदतरीन मजलिस रास्ते के बाज़ार हैं और बेहतरीन मजलिस मसाजिद हैं पस अगर तुम मस्जिद में न बैठो तो अपने घर को लाज़िम करो।

(کنزالعمال،کتاب الصحبة،قسم الاقوال،حق المجالس والجلوس،٦٠/٩، حدیث٢٥٤١١)

﴾23﴿ लोग किसी ऐसी मजलिस में बैठते हैं जिस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद नहीं पढ़ते तो वोह उन पर ह़सरत का बाइ़स होगी अगर्चे जन्नत में दाख़िल हो जाएं (दुरूद न पढ़ने पर ह़सरत होगी) जिस वक़्त वोह (दुरूद पढ़ने की) जज़ा देखेंगे।

(شعب الایمان،باب فی تعظیم النبی واجلاله وتوقیره، ٢١٥/٢، حدیث١٥٧١)

﴾24﴿ अपने तीसरे साथी को छोड़ कर दो शख़्स आपस में सरगोशी न करें क्यूंकि येह बात उस को रन्ज पहुंचाएगी।

(ابوداود،کتاب الادب، باب فی التناجی،٣٤٦/٤، حدیث٤٨٥١)

www.dawateislami.net

﴾25﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जब हम नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो हम में से जो आता वोह आख़िर में बैठ जाता।

(ابو داود، کتاب الادب، باب فی التحلق، ٤/٣٣٩، حدیث ٤٨٢٥)

﴾26﴿ मुसलमान का मुसलमान पर (येह) ह़क़ है कि जब उसे देखे तो उस के लिये सरक जाए (या'नी मजलिस में आने वाले इस्लामी भाई के लिये इधर उधर कुछ सरक कर जगह बना दे कि वोह उस में बैठ जाए)

(شعب الایمان، باب فی مقاربة...الخ، فصل فی قیام المرء لصاحبه، ٦/٤٦٨، حدیث ٨٩٣٣)

﴾27﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि आप ने (इस बात से) मन्अ़ फ़रमाया कि किसी शख़्स को उस की जगह से उठा दिया जाए और उस जगह में दूसरा बैठ जाए अलबत्ता तुम सरक जाया करो और जगह कुशादा कर दिया करो (या'नी बैठने वालों को चाहिये कि आने वाले इस्लामी भाई के लिये सरक जाएं और उसे भी जगह दे दें ताकि वोह भी बैठ जाए) और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا (इस बात को) मकरूह जानते थे कि कोई शख़्स अपनी जगह से उठ जाए और येह उस की जगह पर बैठें। (ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का येह फ़े'ल कमाल दरजे की परहेज़गारी से था कि कहीं ऐसा न हो कि उस का दिल तो उठने को नहीं चाहता था मगर मह़्ज़ उन की ख़ात़िर जगह छोड़ दी हो।)

(بخاری، کتاب الاستئذان، باب اذا قیل لکم...الخ، ٤/١٧٩، حدیث ٦٢٧٠)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर : 3

दुन्या की मज़म्मत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शाहे बह़्रो बर, मालिके ख़ुल्दो कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (ابو يعلى، ٣/٩٥، حديث ٢٩٥١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नती मह़ल का सौदा

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار एक बार बसरा के एक मह़ल्ले में एक ज़ेरे ता'मीर आ़लीशान मह़ल के अन्दर दाख़िल हुवे, क्या देखते हैं कि एक ह़सीन नौजवान मज़दूरों, मिस्तरियों और काम करने वालों को बड़े इन्हिमाक के साथ हर हर काम की हिदायत दे रहा है। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने अपने रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से फ़रमाया : मुलाह़ज़ा फ़रमाइये येह नौजवान मह़ल की ता'मीर व तज़्ईन (या'नी ज़ैबो ज़ीनत) के मुआ़मले में किस क़दर दिलचस्पी रखता है, मुझे इस के ह़ाल पर रह़्म आ रहा है, मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करूं कि इसे इस ह़ाल से नजात दे, क्या अ़जब कि येह जवानाने जन्नत से हो

www.dawateislami.net

जाए। येह फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के साथ उस के पास तशरीफ़ ले गए, सलाम किया। उस ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को न पहचाना। जब तआ़रुफ़ हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़ूब इ़ज़्ज़त व तौक़ीर की और तशरीफ़ आवरी का मक़्सद दरयाफ़्त किया। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने (उस नौजवान पर इनफ़िरादी कोशिश का आग़ाज़ करते हुवे) फ़रमाया : आप इस आ़लीशान मकान पर कितनी रक़म ख़र्च करने का इरादा रखते हैं? नौजवान ने अ़र्ज़ की : एक लाख दिरहम। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : अगर येह रक़म आप मुझे दे दें तो मैं आप के लिये एक ऐसे आ़लीशान मह़ल की ज़मानत लेता हूं, जो इस से ज़ियादा ख़ूब सूरत और पाईदार है। उस की मिट्टी मुश्क व ज़ा'फ़रान की होगी, वोह कभी मुन्हदिम न होगा और सिर्फ़ मह़ल ही नहीं बल्कि उस के साथ ख़ादिम, ख़ादिमाएं और सुर्ख़ याक़ूत के कुब्बे, निहायत शानदार और ह़सीन ख़ैमे वग़ैरा भी होंगे और उस मह़ल को मे'मारों ने नहीं बनाया बल्कि वोह सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के कुन (या'नी हो जा) कहने से बना है। नौजवान ने जवाबन अ़र्ज़ की : मुझे इस बारे में एक शब ग़ौर करने की मोहलत इनायत फ़रमाइये। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : बहुत बेहतर।

इस मुकालमे के बा'द येह ह़ज़रात वहां से चले आए, ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को रात में बार बार उस नौजवान का ख़याल आता रहा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर फ़रमाते रहे। सुब्ह़ के वक़्त फिर उस जानिब तशरीफ़ ले गए तो

www.dawateislami.net

नौजवान को अपने दरवाज़े पर मुन्तज़िर पाया। नौजवान ने बड़े पुर तपाक त़रीक़े से इस्तिक़्बाल करते हुवे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कल की बात याद है ? ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने इरशाद फ़रमाया : क्यूं नहीं ! तो नौजवान एक लाख दराहिम की थेलियां ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के ह़वाले करते हुवे अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि येह रही मेरी पूंजी और येह ह़ाज़िर हैं क़लम, दवात और काग़ज़।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने काग़ज़ और क़लम हाथ में ले कर इस मज़मून का बैअ़नामा तह़रीर फ़रमाया : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم येह तह़रीर इस ग़रज़ के लिये है कि मालिक बिन दीनार फ़ुलां बिन फ़ुलां के लिये उस के दुन्यवी मकान के इवज़ **अल्लाह** तआ़ला से एक ऐसे ही शानदार मह़ल दिलाने का ज़ामिन है और अगर उस मह़ल में मज़ीद कुछ और भी हो तो **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल है। इस एक लाख दिरहम के बदले, मैं ने एक जन्नती मह़ल का सौदा फ़ुलां बिन फ़ुलां के लिये कर लिया है जो उस के दुन्यवी मकान से ज़ियादा वसीअ़ और शानदार है और वोह जन्नती मह़ल क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ के साए में है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने येह तह़रीर लिख कर बैअ़नामा नौजवान के ह़वाले कर के एक लाख दराहिम शाम से पहले पहले फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दिये। इस अ़ज़ीम अ़ह्द नामे को लिखे हुवे अभी 40 रोज़ भी न गुज़रे थे कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से निकलते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की निगाह मेह़राबे मस्जिद पर पड़ी, क्या देखते हैं कि उस नौजवान के

www.dawateislami.net

लिये लिखा हुवा वोही काग़ज़ वहां रखा है और उस की पुश्त पर बिग़ैर सियाही (Ink) के येह तह़रीर चमक रही थी : अल्लाह عَزِیْزٌ حَکِیْم की जानिब से मालिक बिन दीनार के लिये परवानए बराअत है कि तुम ने जिस मह़ल के लिये हमारे नाम से ज़मानत ली थी वोह हम ने उस नौजवान को अ़त़ा फ़रमा दिया बल्कि इस से 70 गुना ज़ियादा नवाज़ा।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار उस तह़रीर को ले कर बा उ़ज्लत (या'नी जल्दी से) नौजवान के मकान पर तशरीफ़ ले गए, वहां से आहो फ़ुग़ां का शोर बुलन्द हो रहा था, पूछने पर बताया गया कि वोह नौजवान कल फ़ौत हो गया है, ग़स्साल ने बयान दिया कि उस नौजवान ने मुझे अपने पास बुलाया और वसिय्यत की, कि मेरी मय्यित को तुम ग़ुस्ल देना और एक काग़ज़ मुझे कफ़न के अन्दर रखने की वसिय्यत की। चुनान्चे, ह़स्बे वसिय्यत उस की तदफ़ीन की गई। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने मेह़राबे मस्जिद से मिला हुवा काग़ज़ ग़स्साल को दिखाया तो वोह बे इख़्तियार पुकार उठा : وَاللّٰهِ الْعَظِیْم येह तो वोही काग़ज़ है जो मैं ने कफ़न में रखा था। येह माजरा देख कर एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की ख़िदमत में दो लाख दिरहम के इ़वज़ ज़मानत नामा लिखने की इल्तिजा की तो फ़रमाया : जो होना था वोह हो चुका, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ जो चाहता है करता है। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار उस मर्ह़ूम नौजवान को याद कर के अश्क बारी फ़रमाते रहे। (روض الریاحین، ص۵۸)

जिस को ख़ुदाए पाक ने दी ख़ुश नसीब है
कितनी अ़ज़ीम चीज़ है दौलत यक़ीन की

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

शाने औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی के हम अ़स्र थे। आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि परवर दगार جَلَّ جَلَالُہٗ ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कितना इख़्तियार अ़ता फ़रमाया कि आप ने दुन्यवी मकान के इवज़ जन्नती मह़ल का सौदा फ़रमा लिया। वाक़ेई **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ के वलियों की बहुत बड़ी शान होती है। शाने औलिया समझने के लिये येह ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे, सय्यिदुल अम्बिया वल मुर्सलीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : थोड़ा सा रिया भी शिर्क है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली से दुश्मनी करे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लड़ाई करता है। **अल्लाह** तआ़ला नेकों, परहेज़गारों, छुपे हुवों को दोस्त रखता है कि ग़ाइब हों तो ढूंडे न जाएं, ह़ाज़िर हों तो बुलाए न जाएं और उन को नज़दीक न किया जाए, उन के दिल हिदायत के चराग़ हों, हर तारीक गर्द आलूद से निकलें।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق،باب الریاءو السمعۃ،الفصل الثالث،۲/۲۶۹،حدیث ۵۳۲۸)

हर नेक बन्दे का एह़तिराम कीजिये

मज़्कूरा ह़दीस से मा'लूम हुवा कि बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में मक़्बूलिय्यत का मे'यार शोहरत व नामवरी हरगिज़ नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तो मुख़्लिस बन्दे ही मक़्बूल होते हैं और येह भी ज़रूरी नहीं कि हर वली की विलायत का शोहरा और धूम धाम हो। येह ह़ज़रात मुआ़शरे के हर त़बक़े में होते हैं। कभी मज़दूर के भेस में, कभी सब्ज़ी और फल फ़रोश की सूरत में, कभी ताजिर या मुलाज़िम की शक्ल

www.dawateislami.net

में, कभी चौकीदार या मे'मार के रूप में बड़े बड़े औलिया होते हैं, हर कोई उन की शनाख़्त नहीं कर सकता, लिहाज़ा हमें किसी भी मुसलमान को ह़क़ीर नहीं जानना चाहिये। बल्कि बा'ज़ औलियाए किराम बा क़ाइदा अल्लाह वाले रूह़ानी ह़ाकिम होते हैं जो "रूह़ानी निज़ाम" से मरबूत़ (या'नी जुड़े हुवे) होते हैं। उन अल्लाह वालों की नज़र में दुन्या की रंगीनियां हेच हुवा करती हैं, येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या दुन्या के मुक़ाबले में आख़िरत को तरजीह़ देते हैं। ह़त्ता कि उन के नज़्दीक दुन्या की कोई वक़्अ़त ही नहीं क्यूंकि उन्हें दुन्या की बे सबाती अच्छी त़रह़ मा'लूम हुवा करती है और मज़म्मते दुन्या की अह़ादीसे मुबारका उन के पेशे नज़र रहा करती थीं। इस ज़िम्न में दुन्या की मज़म्मत पर मुश्तमिल चन्द अह़ादीसे मुबारका समाअ़त फ़रमाइये। चुनान्चे,

﴾1﴿ आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या की हैसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्तौरिद बिन शद्दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या इतनी सी है जैसे कोई अपनी इस उंगली को समन्दर में डाले तो वोह देखे कि इस उंगली पर कितना पानी आया।

(مسلم، کتاب الجنۃ و صفۃ نعیمھا و اھلھا، باب فناء الدنیا و بیان الحشر یوم القیامۃ، ص۱۵۲۹، حدیث۲۸۵۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह भी फ़क़त़ समझाने के लिये है, वरना फ़ानी और मुतनाही (या'नी इन्तिहा को पहुंचने वाले) को बाक़ी ग़ैरे फ़ानी ग़ैरे मुतनाही से (इतनी) वज्हे निस्बत भी नहीं जो भीगी उंगली की तरी को

www.dawateislami.net

समन्दर से है। ख़याल रहे कि दुन्या वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर दे, आ़क़िल आ़रिफ़ की दुन्या तो आख़िरत की खेती है, उस की दुन्या बहुत ही अ़ज़ीम है, ग़ाफ़िल की नमाज़ भी दुन्या है जो वोह नामो नुमूद के लिये अदा करता है। आ़क़िल का खाना, पीना, सोना, जागना बल्कि जीना मरना भी दीन है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है, मुसलमान इस लिये खाए पिये सोए जागे कि येह हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें हैं। **ह़यातुद्दुन्या** और चीज़ है, **ह़यातुन फ़िद्दुन्या** और **ह़यातुन लिद्दुन्या** कुछ और, या'नी दुन्या की ज़िन्दगी, दुन्या में ज़िन्दगी, दुन्या के लिये ज़िन्दगी। जो ज़िन्दगी दुन्या में हो मगर आख़िरत के लिये हो दुन्या के लिये न हो, वोह मुबारक है। मौलाना फ़रमाते हैं :

آب دَر کشتی ہلاکِ کِشتی اَست

آب اَندر زَیرِ کِشتی پشتی است

या'नी कश्ती दरया में रहे तो नजात है और अगर दरया कश्ती में आ जावे तो हलाक है। (मिरआतुल मनाजीह़, नर्मी दिल की बातें, 7/3)

﴾2﴿ भेड़ का मरा हुवा बच्चा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भेड़ के मुर्दा बच्चे के पास से गुज़रे, इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई येह पसन्द करेगा कि येह उसे एक दिरहम के इवज़ मिले ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम नहीं चाहते कि येह हमें किसी भी चीज़ के इवज़ (बदले) मिले। तो इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इस से भी ज़ियादा ज़लील है जैसे येह तुम्हारे नज़दीक।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، الفصل الاول، ۲/۲٤۲، حدیث ۵۱۵۷)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी बकरी का मुर्दार बच्चा कोई चार आने में भी नहीं ख़रीदता कि उस की खाल बेकार और गोश्त वग़ैरा ह़राम है, उसे कौन ख़रीदे ! सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि दुन्यादार को तमाम जहान के मुर्शिद हिदायत नहीं दे सकते, तारिकुद्दुन्या दीनदार को सारे शयात़ीन मिल कर गुमराह नहीं कर सकते, दुन्यादार दीनी काम भी करता है तो दुन्या के लिये और दीनदार दुन्यावी काम भी करता है तो दीन के लिये।

(मिरआतुल मनाजीह़, नर्मी दिल की बातें, 7/3)

﴾3﴿ दुन्या मच्छर के पर से भी ज़लील है

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे इब्रत बुन्याद है : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या की ह़ैसिय्यत मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वोह इस दुन्या से किसी काफ़िर को पानी का एक घूंट भी पीने को न देता।

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی ھوان الدنیا علی اللّٰہ، ۱۴۳/۴، حدیث ۲۳۲۷)

﴾4﴿ दुन्या मलऊन है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : होशयार रहो, दुन्या ला'नती चीज़ है और जो दुन्या में है वोह भी ला'नती है सिवाए

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के और उस के जो रब عَزَّوَجَلَّ के क़रीब कर दे और आ़लिम के और त़ालिबे इ़ल्म के।

(مشكاة المصابيح،كتاب الرقاق،الفصل الاول،٢/٢٤٥،حديث٥١٧٦)

﴾5﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को दुन्या से परहेज़ कराता है

ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन लबीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि त़यबा के शम्सुद्दुह़ा, का'बे के बदरुद्दुजा मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को दुन्या से इस त़रह़ परहेज़ कराता है जिस त़रह़ तुम अपने मरीज़ को खाने और पीने की चीज़ों से परहेज़ कराते हो।

(شعب الايمان، باب فی الزهد و قصر الامل، ٧/٣٢١،حديث١٠٤٥٠)

﴾6﴿ दिरहम का बन्दा ला'नती है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ला'नती है दिरहमो दीनार का बन्दा।

(ترمذی،كتاب الزهد ، ٤/١٦٦، حديث٢٣٨٢)

﴾7﴿ हुब्बे मालो जाह की तबाहकारी

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दो भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए वोह

www.dawateislami.net

इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल और इ़ज़्ज़त की लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाती है।

(ترمذی، کتاب الزھد، ٤/١٦٦، حدیث٢٣٨٣)

﴾8﴿ दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है। (مسلم، کتاب الزھد والرقاق، ص١٥٨٢، حدیث ٢٩٥٦)

﴾9﴿ फ़ुज़ूल ता'मीर में भलाई नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : शाहे अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सारे ख़र्च **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में हैं सिवाए इमारात की ता'मीर के कि इन में भलाई नहीं।

(ترمذی، کتاب صفة القیامة، ٤/٢١٨، حدیث٢٤٩٠)

﴾10﴿ ग़ैर ज़रूरी ता'मीरात की हौसला शिकनी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मुसलमान को हर ख़र्च के इ़वज़ अज्र दिया जाता है सिवाए इस मिट्टी के।

(مشکاة المصابیح، کتاب الرقاق، الفصل الثانی، ٢/٢٤٦، حدیث ٥١٨٢)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : (अच्छी निय्यत के साथ शरीअ़त के मुत़ाबिक़) खाने पीने, लिबास वग़ैरा पर ख़र्च करने में सवाब मिलता है कि येह चीज़ें इ़बादात का ज़रीआ़ हैं मगर बिला ज़रूरत मकानात बनाने में कोई सवाब नहीं, लिहाज़ा इमारात साज़ी का शौक़ न करो कि इस में वक़्त और माल दोनों की बरबादी है। ख़याल रहे ! यहां दुन्यवी इमारतें वोह भी बिला ज़रूरत बनाना मुराद हैं । मस्जिद, मद्रसा, ख़ानक़ाह, मुसाफ़िर ख़ाने बनाना तो इ़बादत है कि येह तो सदक़ाते जारिया हैं। यूं ही (अच्छी निय्यत के साथ) ब क़दरे ज़रूरत मकान बनाना भी सवाब है कि इस में सुकून से रह कर अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करेगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्लमन्द को चाहिये कि वोह अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का जाइज़ा ले, अपने गुनाहों पर नादिम हो कर उन से सच्ची तौबा करे, ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने की उम्मीद के धोके में न पड़े बल्कि क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़ौरन नेक आ'माल में लग जाए, दौलत व माल और अहलो इ़याल की मह़ब्बत में न नेकियां छोड़े न गुनाहों में पड़े कि इन सब का साथ तो दम भर का है और नेकियां क़ब्रो आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सब से आख़िरी ख़ुत़बा जो इरशाद फ़रमाया उस में येह भी है : अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें दुन्या मह़ज़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए आख़िरत की तय्यारी करो और इस लिये अ़त़ा नहीं की, कि तुम इसी के हो

www.dawateislami.net

कर रह जाओ, बेशक दुन्या मह्ज़ फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूंकि दुन्या मुन्क़त़ेअ़ होने वाली है।

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना न रहा इस में गदा न बादशाह

इ़ब्रतनाक वाक़िआ़

मदीनतुल औलिया (मुल्तान) का एक नौजवान धन कमाने की धुन में अपने वत़न, शहर, ख़ानदान वग़ैरा से दूर किसी दूसरे मुल्क में जा बसा। ख़ूब माल कमाता और घरवालों को भिजवाता, उस के और घरवालों के बाहम मश्वरे से आ़लीशान मकान (कोठी) बनाने का त़ै पाया। येह नौजवान सालहा साल तक रक़म भेजता रहा, घरवाले मकान बनवाते और उस को सजाते रहे यहां तक कि उस की तक्मील हुई। येह शख़्स जब वत़न वापस आया तो उस आ़लीशान मकान (कोठी) में रिहाइश के लिये तय्यारियां उ़रूज पर थीं मगर आह ! मुक़द्दर कि उस मकान में मुन्तक़िल होने से तक़रीबन एक हफ़्ता क़ब्ल ही उस का इन्तिक़ाल हो गया और वोह अपने आ़लीशान मकान के बजाए क़ब्र में मुन्तक़िल हो गया।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर और उठते चले जा रहे हैं बराबर

येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

www.dawateislami.net

जहां में हैं इब्रत के हर सू नमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कब तक इस दुन्या में ग़फ़्लत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते रहेंगे ? याद रखिये ! इस दुन्या को अचानक छोड़ कर रुख़्सत होना पड़ेगा । लहलहाते बाग़ात, उ़म्दा उ़म्दा मकानात, ऊंचे ऊंचे मह़ल्लात, मालो दौलत व हीरे जवाहिरात, सोने चांदी के ज़ेवरात और मन्सबो शोहरत व दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात हरगिज़ काम न आएंगे, लिहाज़ा समझदार वोही है जो ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल और दुन्यवी ज़रूरिय्यात को पूरा करने की ख़ातिर भाग-दौड़ करने के साथ साथ क़ब्रो आख़िरत संवारने के लिये भी ग़ौरो फ़िक्र करता है ।

60 साल की इबादत से बेहतर

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : (आख़िरत के मुआ़मले में) घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है ।

(جامع صغیر للسیوطی، حرف الفاء، ص ٣٦٥، حدیث ٥٨٩٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर करना चाहिये कि हम इस दुन्या में क्यूं भेजे गए ? हमारा मक़्सदे ह़यात क्या है ? अब तक हम ने अपनी ज़िन्दगी किस त़रह़ गुज़ारी ? आह ! नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र और मीज़ान व पुल सिरात़ पर हमारा क्या बनेगा ? हमारे वोह अ़ज़ीज़ो

www.dawateislami.net

अक़ारिब जो हम से पहले दुन्या से रुख़्सत हो गए क़ब्र में न जाने उन के साथ क्या हो रहा होगा ? اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने से लज़्ाइजे़ दुन्या से छुटकारा, लम्बी उम्मीद से नजात और मौत की याद की बरकत से नेकियों की रग़्बत के साथ साथ अज्रे कसीर भी ह़ासिल होगा। ऐसी मदनी सोच पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी निहायत ही अच्छा इक़्दाम साबित होगा क्यूंकि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी का जे़ह्न दिया जाता है, नीज़ दुन्यावी व उख़्रवी मुआ़मलात को ब ख़ूबी अन्जाम देने की सूझ बूझ पैदा होती है। मदनी माह़ोल की इन्ही बरकतों से हज़ारों बल्कि लाखों लोगों की ज़िन्दगियां संवर गईं हैं और इन ख़ुशबख़्त मोमिनीन की हुस्ने आ़क़िबत का बसा औक़ात इज़्हार भी हुवा है, जिसे देख कर हर सलीमुल फ़ित़रत शख़्स इस बात का ख़्वाहां हो गया कि काश ऐसा ही ईमान अफ़रोज़ मुआ़मला मेरे साथ भी हो जाए। चुनान्चे,

70 दिन पुरानी लाश

5 रमज़ानुल मुबारक 1426 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 08-10-2005 बरोज़ हफ़्ता पाकिस्तान के मशरिक़ी हिस्से में ख़ौफ़नाक ज़लज़ला आया जिस में लाखों अफ़राद फ़ौत हुवे, इन्हीं में मुज़फ़्फ़राबाद (कश्मीर) के अ़लाक़े मीरा तसोलियां की मुक़ीम 19 सालह नसरीन अ़त्त़ारिय्या बिन्ते ग़ुलाम मुर्सलीन जो कि दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती थीं, फ़ौत हो गईं। मर्ह़ूमा के वालिद और दीगर घरवालों ने ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम 1426 हिजरी

www.dawateislami.net

ब मुत़ाबिक़ 10-12-2005 शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे किसी वज्ह से क़ब्र को खोल दिया, यक बारगी आने वाली ख़ुश्बूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअ़त्त़र हो गए। शहादत को 70 अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अ़त्त़ारिय्या का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरो ताज़ा था।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की भी क्या ख़ूब बहारें हैं, आइये दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ाने, आख़िरत बेहतर बनाने, सुन्नतों पर अ़मल करने, नेकियों का सवाब कमाने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और इस्तिक़ामत पाने के लिये कम अज़ कम 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की निय्यत कर लीजिये। मज़ीद अपने मर्ह़ूम के ईसाले सवाब के लिये इसी माह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र इख़्तियार फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नेक लोगों की सोह़बत की बरकत से ईमान की ह़िफ़ाज़त, नेक नमाज़ी बनने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का जज़्बा बेदार होगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए, ख़ातिमा बिल ख़ैर करे और मीठे मीठे मह़बूब के क़दमों में जगह अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ईसाले सवाब की तरग़ीब के बयानात

बयान नम्बर : 1

तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिसाला "**करबला का ख़ूनीं मन्ज़र**" में दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे "अल क़ौलुल बदीअ़" से नक़्ल फ़रमाते हैं :

ख़ौफ़नाक बला

एक शख़्स ने ख़्वाब में ख़ौफ़नाक बला देखी, घबरा कर पूछा : तू कौन है ? बला ने जवाब दिया : मैं तेरे बुरे आ'माल हूं, पूछा : तुझ से नजात की क्या सूरत है ? जवाब मिला : दुरूद शरीफ़ की कसरत।

(القول البدیع،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ و السلام علی رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ تعالی علیہ وآلہ وسلم، ص ۲۵۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जो क़बीलए ख़ज़रज के सरदार थे, सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं (लिहाज़ा मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करना चाहता हूं) कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ?

www.dawateislami.net

सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "पानी" तो ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक कुंवां खुदवाया और कहा : هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ येह उम्मे सा'द के लिये है।

(ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، ۲/۱۸۰، حدیث ۱۶۸۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दों का मुर्दों के ईसाले सवाब के लिये आ'माले सालेह़ा और राहे खुदा में ख़र्च करना मुस्तह़ब व मस्नून है। हमें चाहिये कि हम भी अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये ज़ियादा से ज़ियादा कारे ख़ैर में ह़िस्सा लिया करें क्यूंकि ईसाले सवाब का मर्हूम को शिद्दत से इन्तिज़ार रहता है चुनान्चे,

ईसाले सवाब का इन्तिज़ार

सरकारे नामदार, रसूलों के सरदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : क़ब्र में मुर्दे का ह़ाल डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़्फ़ा) मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।

(شعب الایمان، باب فی برالوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین...الخ، ۶/۲۰۳، حدیث ۷۹۰۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ईसाले सवाब के बहुत सारे त़रीक़े हैं मसलन खाना खिलाना, क़ुरआन ख़्वानी करवाना, ना'त ख़्वानी

www.dawateislami.net

करवाना, इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम करना, मसाजिद व मदारिस की ता'मीरात में हिस्सा लेना और मक्तबतुल मदीना के मदनी रसाइल तक़्सीम करना वग़ैरा लिहाज़ा जिस में आप आसानी और सहूलत पाएं ईसाले सवाब के लिये उस सूरत को अपनाइये लेकिन साथ साथ मदनी रसाइल ज़रूर तक़्सीम कीजिये कि येह इल्मे दीन और नेकी की दा'वत को आ़म करने का आसान और मुअस्सिर ज़रीआ़ हैं। इन रसाइल को पढ़ या सुन कर न जाने कितनों की तक़्दीरें बदल गईं और वोह अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर सलातो सुन्नत की राह पर आ गए।

आइये इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनिये : चुनान्चे,

मदनी रिसाले की बरकत

तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं गुनाहों की तारीकियों में गुम था। ग़फ़्लत के अन्धेरों ने मुझे दीन से अ़मलन इस क़दर दूर कर रखा था कि नमाज़, रोज़े की कुछ परवाह न थी। एक रोज़ जब ह़स्बे मा'मूल मेरे क़ारी साहिब घर में मुझे कु़रआने पाक पढ़ाने के लिये आए तो उस वक़्त मैं T.V पर ड्रामा देखने में मसरूफ़ था, मैं ने कहा : क़ारी साहिब ! आप तशरीफ़ रखिये मैं ड्रामा देख कर अभी आ रहा हूं बस थोड़ा ही रह गया है। क़ारी साहिब का ह़ौसला भी कमाल का था, डांट डपट के बजाए निहायत ही शफ़्क़त से इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हों ने मुझे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "टी वी की तबाहकारियां" पढ़ कर सुनाया। रिसाला सुन कर बे इख़्तियार नदामत व शर्मिन्दगी मुझ पर ग़ालिब आई और मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से सर ता पा लरज़ उठा ! क़ारी साहिब की नसीह़त पर अ़मल करते हुवे मैं ने

www.dawateislami.net

जब अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का एह़तिसाब किया तो मेरा दिल रोने लगा कि आह ! सद हज़ार आह ! मैं ने ज़िन्दगी का इतना बड़ा हिस्सा फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्विय्यात में सर्फ़ कर दिया और मुझे इस का एह़सास तक न हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने सिद्के़ दिल से तौबा की और अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि आइन्दा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से बचता रहूंगा, नमाज़ की पाबन्दी करते हुवे सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करता रहूंगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा वग़ैरा से बचता रहूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल ने मेरी काया पलट दी और मुझ सा बिगड़ा हुवा इन्सान भी सुधरने पर कमर बस्ता हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब नेकी की दा'वत, जिल्द 2, स. 460)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार में इनफ़िरादी कोशिश और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "टी वी की तबाहकारियां" पढ़ कर सुनाने की बरकत का बयान है कि जब क़ारी साहि़ब ने अपने शागिर्द को मज़्कूरा रिसाला पढ़ कर सुनाया तो उन को तौबा की सआ़दत नसीब हुई, वोह नमाज़ी बने और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हुवे। इस से मा'लूम हुवा कि मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा मदनी रसाइल सुनना, सुनाना बेह़द मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कई ख़ुश नसीब इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना कम अज़ कम एक मदनी रिसाला पढ़ने या सुनने की सआ़दत

www.dawateislami.net

ह़ासिल करते हैं और जो साहि़बे हैसिय्यत होते हैं वोह तक़्सीम भी करते हैं आप भी मौक़अ़ ब मौक़अ़ इन मदनी रसाइल को पढ़ने, सुनने या सुनाने की तरकीब कीजिये नीज़ अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये मुख़्तलिफ़ औक़ात में ह़स्बे तौफ़ीक़ इन्हें बांटिये भी।

बांट कर मदनी रसाइल दीन को फैलाइये

कर के राज़ी ह़क़ को ह़क़दारे जिनां बन जाइये

अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه की तरग़ीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रसाइल तक़्सीम करने की तरग़ीब दिलाते हुवे अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه कुछ यूं फ़रमाते हैं : जिन जिन इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से बन पड़े एक मदनी बेग ख़रीद लें और उस में ह़स्बे तौफ़ीक़ मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल और बयानात की सीडीज़ वग़ैरा रखें। बेशक सारा दिन न सही सिर्फ़ ह़स्बे मौक़अ़ वोह मदनी बेग अपने साथ हो और रसाइल वग़ैरा दूसरों को तोह़्फ़तन पेश किये जाएं। मौक़अ़ की मुनासबत से येह भी हो सकता है कि बा'ज़ को सिर्फ़ पढ़ने के लिये दें, जब वोह पढ़ कर लौटा दें तो दूसरा रिसाला पेश करें इसी त़रह़ सीडीज़ और बड़ी किताबों की भी तरकीब की जा सकती है। यूं करने से आप बे अन्दाज़ा सवाब कमा सकते हैं और इस अ़मल पर मिलने वाली बे ह़िसाब नेकियों को अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों को ईसाले सवाब भी कर सकते हैं। मगर येह सब कुछ ख़ास अपनी जेब से हो इस के लिये चन्दा न किया जाए।

बांटिये मदनी रसाइल मदनी बेग अपनाइये

और ह़क़दारे सवाबे आख़िरत बन जाइये

www.dawateislami.net

तक़्सीमे रसाइल के लिये रसीद

मैं ने........................ बिन........................ को मक्तबतुल मदीना की किताबों और रसाइल का तक़्सीम करने के लिये मुझे देने या तक़्सीम करने का वकीले मुत़लक़ किया, या'नी ऐसा बा इख़्तियार नाइब बनाता हूं कि मज़्कूरा तमाम काम वोह ख़ुद सर अन्जाम दें या किसी और को इसी त़रह़ का "बा इख़्तियार" कर के सोंप दें। अगर मेरे ऑर्डर की किताबें और रसाइल किसी ह़ादिसे के सबब न मिल सके या किसी वज्ह से ख़रीदारी के लिये जाते हुवे रक़म छिन जाने की सूरत में किताबें या रसाइल ख़रीदा ही न जा सका तो मुझे इत्तिलाअ़ दी जाए और आइन्दा के मुआ़मलात मेरी इजाज़त से तै किये जाएं। आप के हाथ में मेरी रक़म अमानत है। अगर बिला किसी ग़लत़ इस्ति'माल के आप से रक़म या किताबें व रसाइल ज़ाएअ़ हो गया तो इस का तावान आप के ज़िम्मे न होगा और मैं मुत़ालबा न करूंगा।

ऑर्डर बुक करवाने वाले का नाम मअ़ वलदिय्यत :

____

ऐसा पता जिस पर राबित़ा आसान हो :

____

____

फ़ोन नम्बर :____________________ दस्तख़त़ : ____________________

www.dawateislami.net

बयान नम्बर : 2

मस्जिद, मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना की ता'मीर

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिसाला "**एहतिरामे मुस्लिम**" में दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे लिखते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : "क़ियामत के रोज़ लोगों में मेरे नज़दीक तर वोह होगा जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।"

(ترمذی،کتاب الوتر،باب ماجاء فی فضل الصلاة علی النبی صلی اللّٰہ تعالی علیه وسلم، ۲/۲۷،حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बैतुल मुक़द्दस की ता'मीर

मुल्के शाम में जिस जगह ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ख़ैमा गाड़ा गया था ठीक उसी जगह ह़ज़रते दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस (मस्जिदे अक़्सा) की बुन्याद रखी। मगर इमारत पूरी होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात का वक़्त आन पहुंचा और आप ने अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस इमारत की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। चुनान्चे, ह़ज़रते सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जिन्नों की एक जमाअ़त को इस काम पर लगाया और इमारत की ता'मीर होती रही। यहां तक कि आप की वफ़ात का वक़्त

www.dawateislami.net

भी क़रीब आ गया और इ़मारत मुकम्मल न हो सकी तो आप ने येह दुआ़ मांगी कि इलाही ! मेरी मौत जिन्नों की जमाअ़त पर ज़ाहिर न हो ताकि वोह बराबर इ़मारत की तक्मील में मसरूफ़े अ़मल रहें और उन सभों को जो इ़ल्मे ग़ैब का दा'वा है वोह भी बाति़ल ठहर जाए। येह दुआ़ मांग कर आप मेह़राब में दाखि़ल हो गए और अपनी आ़दत के मुता़बिक़ अपनी लाठी टेक कर इ़बादत में खड़े हो गए और इसी ह़ालत में आप की वफ़ात हो गई मगर जिन्न मज़दूर येह समझ कर कि आप ज़िन्दा खड़े हुवे हैं बराबर काम में मसरूफ़ रहे और अ़र्सए दराज़ तक आप का इसी ह़ालत में रहना जिन्नों के गुरौह के लिये कुछ बाइ़से ह़ैरत इस लिये नहीं हुवा कि वोह बारहा देख चुके थे कि आप एक एक माह बल्कि कभी कभी दो दो माह बराबर इ़बादत में खड़े रहा करते हैं। ग़रज़ एक साल तक वफ़ात के बा'द आप अपनी लाठी के सहारे खड़े रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमकों ने आप के अ़सा को खा लिया और अ़सा के गिर जाने से आप का जिस्म मुबारक ज़मीन पर आ गया। उस वक़्त जिन्नों की जमाअ़त और तमाम इन्सानों को पता चला कि आप की वफ़ात हो गई है। (अ़जाइबुल कु़रआन मअ़ ग़राइबुल कु़रआन, स. 190)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى येह वाक़िआ़ नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : "इस कु़रआनी वाक़िए़ से येह हिदायत मिलती है कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़द्दस बदन वफ़ात के बा'द सड़ते गलते नहीं हैं।" नीज़ येह भी पता चला कि जिन्नों को इ़ल्मे ग़ैब नहीं होता मज़ीद येह भी मा'लूम हुवा कि मस्जिद बनवाना अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का त़रीक़ा है क्यूंकि बैतुल मुक़द्दस

www.dawateislami.net

की बुन्याद ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने रखी और इस की तक्मील ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने जिन्नों से करवाई । इसी त़रह़ मस्जिदुल ह़राम की ता'मीर ह़ज़रते इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने की और मस्जिदे नबवी शरीफ़ की ता'मीर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाई ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा मस्जिद बनाना, इन्हें आबाद और इन से उल्फ़त व मह़ब्बत रखना बहुत बड़ी सआ़दत है और येह नसीब वालों ही का ह़िस्सा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी इन खुश नसीबों में शामिल फ़रमाए। आइये मस्जिद के फ़ज़ाइल पर मब्नी आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

मस्जिदें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का घर हैं

﴾1﴿ बेशक मस्जिदें ज़मीन में **अल्लाह** तआ़ला के घर हैं और **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह (अपने घर की) ज़ियारत करने वाले का इकराम (इ़ज़्ज़त) करे। (معجم کبیرطبرانی، ۱۰/۱۶۱، حدیث ۱۰۳۲۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले

﴾2﴿ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं। (معجم اوسط طبرانی، من اسمہ ابراھیم، ۲/۵۸، حدیث ۲۵۰۲)

जन्नत में घर

﴾3﴿ जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुशनूदी चाहते हुवे मस्जिद बनाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में घर बनाएगा।

(بخاری، کتاب الصلوۃ، باب من بنی مسجداً، ۱/۱۷۱، حدیث ۴۵۰)

www.dawateislami.net

《4》 जो रियाकारी और लोगों को सुनाने का इरादा किये बिग़ैर मस्जिद बनाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में घर बनाएगा।

(طبرانی اوسط، ١٨٤/٥، حدیث ٧٠٠٥)

मोती और याक़ूत का जन्नती महल

《5》 जो ह़लाल माल से मस्जिद बनाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में मोती और याक़ूत का मह़ल बनाएगा।

(طبرانی اوسط، ١٧/٤،حدیث ٥٠٥٩)

《6》 जो मस्जिद बनवाए ख़्वाह छोटी हो या बड़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक मह़ल बनाएगा।

(ترمذی،ابواب الصلوۃ ،باب ماجاء فی فضل بنیان المسجد، ٣٤٣/١،حدیث٣١٩)

नज़रे रह़मत

《7》 जब कोई बन्दा ज़िक्र या नमाज़ के लिये मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है जैसा कि जब कोई ग़ाइब आता है तो उस के घरवाले उस से ख़ुश होते हैं।

(ابن ماجه، کتاب المساجد و الجماعات،باب لزوم المساجد وانتظار الصلاۃ، ٤٣٨/١، حدیث ٨٠٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दे

《8》 जो मस्जिद से उल्फ़त रखता है अल्लाह तआला उस से मह़ब्बत रखता है। (معجم اوسط طبرانی، من اسمه محمد، ٤٠٠/٤،حدیث٦٣٨٣)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इस की शर्ह़ में लिखते हैं :

मस्जिद से उल्फ़त इस त़रह़ है कि रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह और शरई मसाइल सीखने सिखाने के लिये

www.dawateislami.net

बैठे रहने की आ़दत बनाना है और अल्लाह तआ़ला का उस बन्दे से मह़ब्बत करना इस त़रह़ है कि अल्लाह तआ़ला उस को अपने सायए रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाता और उस को अपनी ह़िफ़ाज़त में दाख़िल फ़रमाता है। (فيض القدير،حرف الميم،٦/١١٢،تحت الحديث٨٥٢٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सवाबे जारिया के काम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बेशक मोमिन के मरने के बा'द भी उस के आ'माल और नेकियों में से जो कुछ उस तक पहुंचता रहता है, उन में से एक तो वोह इ़ल्म है जिसे उस ने लोगों को सिखाया और फैलाया, वोह नेक औलाद है जिसे उस ने छोड़ा या वोह मुस्ह़फ़ जिसे तर्के में छोड़ा या मस्जिद बनवाई या नहर जारी कर दी या अपनी सिह़ह़त और ह़यात में अपने माल से ऐसा सदक़ा दिया जिस का सवाब उसे मरने के बा'द भी मिलता रहे।

(ابن ماجه ، كتا ب السنة ، باب ثواب معلم الناس الخير،١/١٥٧، حديث ٢٤٢)

मज़्कूरा ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ मस्जिद बनाना भी सवाबे जारिया के कामों में से है या'नी ऐसे नेक काम कि जिन का सवाब मरने के बा'द भी मिलता रहे लिहाज़ा अगर कोई मस्जिद बनवाए या इस की ता'मीर में ह़िस्सा मिलाए तो येह आ'ला दरजे का नेक काम है जिस का सवाब हमेशा पाता रहेगा इसी त़रह़ ता'लीमे इ़ल्मे दीन के लिये मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना वग़ैरा बनाना या इस की ता'मीर में ह़िस्सा

www.dawateislami.net

लेना या मस्जिद वग़ैरा के लिये ज़मीन या जाईदाद वक़्फ़ कर देना भी बहुत बड़े सवाबे जारिया के काम हैं जिन्हें वुस्अ़त हो वोह अपने और अपने मर्हूम अ़ज़ीज़ों के लिये ज़रूर मस्जिद व मद्रसे की ता'मीर करवाएं या ता'मीर में ह़िस्सा मिलाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मरने के बा'द उन के लिये येह राह़त का सामान होंगे।

सारी दुन्या में सुन्नतें आ़म करने का दर्द रखने वाली मदनी तह़रीक या'नी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त जहां मुतअ़द्दिद शो'बाजात व मजालिस क़ाइम हैं वहीं मजलिसे जामिअ़तुल मदीना और मजलिसे मद्रसतुल मदीना भी क़ाइम हैं जो जामिआ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना के मुआ़मलात देखती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुल्क व बैरूने मुल्क में ता दमे तह़रीर (1437 हिजरी) 422 जामिआ़त ब नाम "जामिअ़तुल मदीना" क़ाइम हैं इन के ज़रीए 25000 से ज़ाइद त़लबा व त़ालिबात को "दर्से निज़ामी" (आ़लिम कोर्स) की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। इसी त़रह़ कमो बेश 2291 मदारिस बनाम "मद्रसतुल मदीना" क़ाइम हैं जिन में 113425 (एक लाख तेरह हज़ार चार सौ पच्चीस) त़लबा व त़ालिबात मुफ़्त ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की सआ़दत ह़ासिल कर रहे हैं और ता दमे तह़रीर (2015 ईसवी), 64615 (चौंसठ हज़ार छे सौ पन्दरह) त़लबा व त़ालिबात ह़िफ़्ज़ और 179050 (एक लाख उनासी हज़ार पचास) त़लबा व त़ालिबात नाज़िरा क़ुरआने पाक ख़त्म कर चुके हैं। इसी त़रह़ मसाजिद की ता'मीर के लिये मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद के नाम से एक मजलिस क़ाइम है जो औसत़न हर रोज़ एक मस्जिद ता'मीर कर रही है और अब तक सेंकड़ों मस्जिदें बना चुकी है आप भी इन मजालिस से राबित़ा कर के अपने वालिदैन व दीगर अ़ज़ीज़ों

www.dawateislami.net

के ईसाले सवाब के लिये मस्जिद, जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना की ता'मीर के काम में मुआ़वनत फ़रमाएं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी न सिर्फ़ मदारिस, जामिआ़त और मसाजिद बनाती बल्कि उन्हें आबाद भी करती है आप भी दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल अपनाए रहिये, ख़ूब ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर ईसवी माह की पहली तारीख़ को यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये, आइये तरग़ीबो तह़रीस के लिये एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे,

इनफ़िरादी कोशिश की बरकत

बाबुल मदीना (कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं बह़रे इस्यां में मुस्तग़्रक़ अपनी ज़िन्दगी के अनमोल हीरे ग़फ़्लत की नज़्र किये जा रहा था, रात गए तक दोस्तों के साथ ख़ुश गप्पियों में मसरूफ़ रहना मेरा मा'मूल था। 18 रमज़ानुल मुबारक 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 19 सितम्बर 2008 ईसवी को ह़स्बे मा'मूल हम दोस्त मिल कर बैठे मज़ाक़ मस्ख़रियों में मश्ग़ूल थे और इस के सबब मजलिस से क़ह्क़हों के फ़व्वारे उबल रहे थे, दरीं अस्ना दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल हमारे पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने सलाम किया और बैठ गए, उन की आमद से हमारी मह़फ़िल में कुछ सन्जीदगी आई, उन्हों ने हमें निहायत उ़म्दा मदनी फूलों से नवाज़ा, उन के ह़ुस्ने आवाज़ और मदनी अन्दाज़ से हमें इतना सुरूर मिला कि हम उन के मीठे बोलों में खो गए। कुछ देर बा'द वोह जाने लगे तो हम ने अ़र्ज़ की : भाई ! मज़ीद कुछ देर तशरीफ़ रखिये। और हमें अच्छी अच्छी बातें बताइये, नेकी की दा'वत का

www.dawateislami.net

जज़्बा रखने वाले इस्लामी भाई ने हमारी दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली। दौराने गुफ़्तगू फ़िक्रे आख़िरत व इस्लाहे़ उम्मत का मौज़ूअ़ भी ज़ेरे बह़स रहा, उस आ़शिके़ रसूल की पुर तासीर इनफ़िरादी कोशिश ने हमारे दिलों पर गहरे नुक़ूश छोड़े।

दूसरी रात हम फिर उसी जगह मह़फ़िल सजाए उन इस्लामी भाई के मुन्तज़िर थे कि ह़स्बे उम्मीद वोह तशरीफ़ लाए और हमें दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चलने की दा'वत पेश की, उन के किरदार व गुफ़्तार को देख कर कम अज़ कम मैं तो इन्कार न कर सका और उन के साथ फ़ैज़ाने मदीना की पाकीज़ा फ़ज़ाओं में पहुंच गया। ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इश्के़ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जज़्बा दिल में उजागर करने वाले रूह़ परवर मदनी माह़ोल ने मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया और यूं उस आ़शिक़े रसूल की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल नसीब हो गया।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब नेकी की दा'वत, जिल्द, 2, स. 542)

हैं इस्लामी भाई सब ही भाई भाई — बेह़द है मह़ब्बत भरा मदनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की — तरक़्क़ी का बाइ़स बना मदनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी अ़तिय्यात के मदनी फूल

मय्यित के ईसाले सवाब के लिये मदनी अ़तिय्यात (चन्दा) लेते वक़्त जिस मस्जिद या मद्रसा वग़ैरा की ता'मीर करनी है उस की मुकम्मल वज़ाह़त करना ज़रूरी है लिहाज़ा इन अल्फ़ाज़ के साथ अ़तिय्यात वुसूल फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

मस्जिद के लिये मदनी अ़तिय्यात (चन्दा)

दा'वते इस्लामी के शो'बे मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद के तह़्त दुन्या भर में मसाजिद की ता'मीर होती रहती है आप अपने मर्हूम/मर्हूमा के ईसाले सवाब के लिये मस्जिद की ता'मीर और इस के जुम्ला अख़राजात के लिये रक़म अ़त़ा फ़रमा दें।

(जिस से येह रक़म ले रहे हैं उस को येह समझाना होगा)

मद्रसतुल मदीना/जामिअ़तुल मदीना के लिये मदनी अ़तिय्यात (चन्दा)

दा'वते इस्लामी की मजलिस जामिअ़तुल मदीना व मद्रसतुल मदीना या ख़ुद्दामुल मसाजिद के तह़्त दुन्या भर में नए जामिअ़तुल मदीना के लिये जगह की ख़रीदारी, जामिअ़तुल मदीना की ता'मीरात होती रहती हैं लिहाज़ा आप हमें अपने मर्हूम/मर्हूमा के ईसाले सवाब के लिये जामिअ़तुल मदीना मद्रसतुल मदीना की जगह की ख़रीदारी, किसी भी जामिअ़तुल मदीना की ता'मीर और इस के जुम्ला अख़राजात के लिये रक़म अ़त़ा फ़रमा दें।

मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के लिये मदनी अ़तिय्यात (चन्दा)

दा'वते इस्लामी के तह़्त दुन्या भर में मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के लिये जगह की ख़रीदारी और इन की ता'मीरात होती रहती हैं जिस में मस्जिद, दीनी कामों के लिये मकातिब और मद्रसा वग़ैरा ता'मीर किया जाता है। आप हमें मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की जगह ख़रीदने इस की ता'मीरात और इस के जुम्ला अख़राजात के लिये अपने मर्हूम/मर्हूमा के ईसाले सवाब के लिये रक़म अ़त़ा फ़रमा दें। जिस से चन्दा ले रहे हैं उस को वाज़ेह़ कर दें कि फ़ैज़ाने मदीना क्या है? इस में मस्जिद, दीनी कामों के लिये कमरे, मद्रसा वग़ैरा ता'मीर किया जाता है।

www.dawateislami.net

मजलिसे ईसाले सवाब मद्रसतुल मदीना के मदनी फूल

﴾1﴿ जिस ज़िम्मेदार को किसी मर्हूम के लिये ईसाले सवाब करवाना हो तो मुतअ़ल्लिक़ा नाज़िम को Sms वग़ैरा के ज़रीए़ (बैरूने मुल्क वाले दिये गए ई मैल एड्रेस पर) नाम लिखवा दे।

﴾2﴿ हर पीर शरीफ़ दुआ़ए मदीना में ईसाले सवाब होगा।

﴾3﴿ ईसाले सवाब का त़रीक़ा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

ए'लान

तमाम मदनी मुन्ने तवज्जोह फ़रमाएं ! हम ने जो इस हफ़्ते में पढ़ा, या पढ़ाया उस का ईसाले सवाब करते हैं।

फिर इन अल्फ़ाज़ में दुआ़ कीजिये।

दुआ़

इस हफ़्ते में जो हम ने पढ़ा, या पढ़ाया उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मिलने वाला सवाब ब वसीलए रह़्मतुल्लिल आ़लमीन बराए जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अम्बिया व मुर्सलीन, खुलफ़ाए राशिदीन, उम्महातुल मोमिनीन, शहीदानो असीराने करबला, तमाम सहा़बा व ताबेईन व तब्ए़ ताबेईन, अइम्मए मुज्तहिदीन, खुसूसन

www.dawateislami.net

अइम्मए अरबआ़ और इन के मुक़ल्लिदीन, सलासिले अरबआ़ के मशाइख़ व मुरीदीन ख़ुसूसन सरकारे आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत, मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िरीन, मदनी इन्आ़मात की आ़मिलातो आ़मिलीन और तमाम मोमिनातो मोमिनीन, मुस्लिमातो मुस्लिमीन, मर्ह़ूमीने दा'वते इस्लामी और जिन मर्ह़ूमीन के नाम मिले उन्हें ईसाले सवाब करते हैं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मर्ह़ूमीन की मग़फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿4﴾ ईसाले सवाब कर के जिन्हों ने Sms वग़ैरा किया उन्हें Reply करें कि हमारे मद्रसतुल मदीना में एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ हफ़्ते में कमो बेश......पारे पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला होता होगा, हम ने आप के भेजे गए नामों को ईसाले सवाब कर दिया है।

जो लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाए

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मन्फ़अ़त निशान है : मोमिन से उल्फ़त की जाती है और उस (शख़्स) में कोई भलाई नहीं जो न किसी से उल्फ़त (या'नी मह़ब्बत) रखे न उस से उल्फ़त की जाए और लोगों में से बेहतर वोह है जो लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाए।

(شعب الایمان، الباب الثالث والخمسون فی التعاون علی البر والتقوی، ۶/۱۱۷، حدیث ۷۶۵۸)

www.dawateislami.net

तजहीज़ो तक्फ़ीन से मुतअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब

(अज़ : दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

सुवाल : अगर मय्यित के जिस्म में किसी ह़ादिसे की वज्ह से सूराख़ हों तो उन पर टांके लगवाना कैसा ?

जवाब : फ़ौतगी के बा'द टांके लगवाने की इजाज़त नहीं कि इस में मय्यित को बिला वज्ह तक्लीफ़ पहुंचाना है, हां सूराख़ों के ऊपर रूई वग़ैरा रख दी जाए जैसा कि नाक व कान वग़ैरा के सूराख़ों में रखने का हुक्म है।

सुवाल : अगर अस्पताल से मय्यित इस ह़ाल में आई कि पट्टियां बंधी हों तो पट्टी खोल कर पानी बहाना होगा ?

जवाब : बा'ज़ पट्टियां जिस्म के साथ इस त़रह़ चिपकी होती हैं कि उन को उतारेंगे तो जिस्म या बाल खींचने से मय्यित को तक्लीफ़ होगी लिहाज़ा ऐसी पट्टी अगर नीम गर्म पानी डाल कर आसानी से उतारना मुमकिन हो तो उतार दें वरना रहने दें और कुछ पट्टियां जिस्म पर चिपकी नहीं होतीं। ऐसी पट्टियां मय्यित को बिग़ैर तक्लीफ़ पहुंचाए उतार दी जाएं।

सुवाल : पोस्ट मॉर्टम वाली मय्यित के सीने से नाफ़ तक सिलाई पर प्लास्टिक शीट लगी होती है उसे हटाना लाज़िमी है ?

जवाब : येह प्लास्टिक शीट आ़म तौ़र पर जिस्म के साथ चिपकी होती है जिस को उतारना मय्यित के लिये तक्लीफ़ का बाइ़स है लिहाज़ा ऐसी शीट भी अगर नीम गर्म पानी डालने से ब आसानी उतर सकती हो तो उतार दें वरना रहने दें।

www.dawateislami.net

सुवाल : मय्यित के अगर ख़ून निकल रहा है तो ज़ियादा पट्टियां कर सकते हैं या प्लास्टिक पेकिंग की इजाज़त है ?

जवाब : प्लास्टिक पेकिंग के बजाए पट्टियां की जाएं।

सुवाल : मय्यित को इस्तिन्जा करवाने के लिये प्लास्टिक वग़ैरा के दस्ताने इस्ति'माल कर सकते हैं ?

जवाब : कर सकते हैं।

सुवाल : अगर ग़ुस्ल के बा'द भी मय्यित का मुंह खुला रहता हो तो क्या सर से ठोड़ी तक पट्टी बांध सकते हैं ?

जवाब : बांध सकते हैं।

सुवाल : अगर जलने या डूबने वग़ैरा से मय्यित का जिस्म इतना गल चुका हो कि हाथ लगाने से खाल के उधड़ने या गोश्त के जुदा होने का यक़ीन हो तो क्या इस सूरत में भी उसे ग़ुस्ल दिया जाएगा ?

जवाब : अगर मय्यित का जिस्म गल चुका हो कि हाथ लगाने से खाल उधड़ेगी या गोश्त जुदा होगा तो भी उसे ग़ुस्ल देंगे और ग़ुस्ल देने का त़रीक़ा येही है कि उस पर बिग़ैर हाथ फेरे पानी बहा दिया जाए।

सुवाल : शूगर के मरीज़ के ज़ख़्म पर कीड़े जो अन्दर तक जा रहे होते हैं क्या उन को साफ़ करना ज़रूरी है ?

जवाब : मय्यित को तक्लीफ़ पहुंचाए बिग़ैर जहां तक मुमकिन हो साफ़ कर दिये जाएं।

www.dawateislami.net

सुवाल : अगर जनाज़ा ताख़ीर से होता हो तो ग़ुस्ल कब देना चाहिये इन्तिक़ाल के फ़ौरन बा'द या नमाज़े जनाज़ा से थोड़ा पहले ?

जवाब : इन्तिक़ाल के फ़ौरन बा'द ।

सुवाल : क़ब्र की दीवारों पर उंगली के इशारे से लिखना कैसा है ?

जवाब : लिख सकते हैं ।

सुवाल : अगर तदफ़ीन के दौरान अज़ाने मग़रिब हो जाए या दीगर नमाज़ों की जमाअ़त का वक़्त हो जाए तो तदफ़ीन की जाए या जमाअ़त से नमाज़ पढ़ी जाए ?

जवाब : जितने अफ़राद की तदफ़ीन में ह़ाजत है उतने रुक कर तदफ़ीन करें बक़िय्या जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करें ।

सुवाल : मय्यित के पाउं पर ज़ियादा मेल कुचैल हो तो साफ़ करना ज़रूरी है या पानी बहाना काफ़ी है ?

जवाब : ग़ुस्ल का फ़र्ज़ अदा होने के लिये पानी का बहाना काफ़ी है अलबत्ता मेल कुचैल उतारने के लिये साबुन का इस्ति'माल करना जाइज़ है ।

सुवाल : मस्जिद से जनाज़े का ए'लान करना कैसा है ?

जवाब : जाइज़ है ।

सुवाल : हमारे हां जब कोई फ़ौत हो जाता है तो नमाज़े जनाज़ा के बा'द ह़ीला किया जाता है जिस का त़रीक़ा येह है कि इमाम साह़िब नमाज़े जनाज़ा के बा'द मुक़्तदियों के साथ दाइरा बना कर खड़े हो जाते हैं और क़ुरआने करीम ले कर उस के नीचे कुछ रूपे रख कर एक दूसरे की मिल्क करते हैं और जब इमाम साह़िब के पास दोबारा पहुंचते हैं तो इमाम साह़िब

www.dawateislami.net

दुआ़ करते हैं एक दूसरे को मिल्क करने का अ़मल चन्द मरतबा करते हैं और हर मरतबा इमाम साहिब दुआ़ करते हैं, क्या येह ही़ला करना दुरुस्त है या नहीं ? और इस त़रह़ के ही़ले की वज्ह से मय्यित को कोई फ़ाइदा भी होगा या नहीं ? हा़लांकि मय्यित की नमाज़ों और रोज़ों का कोई हि़साब नहीं किया जाता। वज़ाह़त फ़रमा दें ?

जवाब : ही़लए इस्क़ात़ का येह त़रीक़ा मुकम्मल दुरुस्त नहीं है अलबत्ता इस में जो रक़म फ़ुक़रा को दी जा रही है उस के मुत़ाबिक़ मय्यित के रोज़ों और नमाज़ों का फ़िदया हो जाएगा, ही़लए इस्क़ात़ का दुरुस्त त़रीक़ा येह है कि मय्यित की सारी ज़िन्दगी की फ़ौतशुदा नमाज़ों और रोज़ों का हि़साब कर लिया जाए फिर अगर मय्यित ने वसिय्यत की है तो उस के कुल माल की तिहाई में से और अगर वसिय्यत न की हो तो अपने पास से कुछ माल दे कर या क़र्ज़ ले कर फ़िदया दिया जाए और अगर माल कम हो और फ़िदया ज़ियादा हो तो लौट फेर का त़रीक़ा कर लिया जाए येह भी जाइज़ है । फ़ुक़हाए किराम ने इस के जवाज़ की तसरीह़ फ़रमाई है अलबत्ता इस में इस बात का ख़याल रखा जाए कि दाइरे में खड़े होने वाले लोग शरई फ़क़ीर ही हों कोई ग़नी उस में खड़ा न हो, अगर कोई ग़नी खड़ा हो तो उस के पास पहुंचने वाली रक़म की मिक़्दार में फ़िदया अदा नहीं होगा। हर शरई फ़क़ीर इस रक़म पर क़ब्ज़ा करने के बा'द अपनी त़रफ़ से मय्यित के नमाज़ रोज़ों के फ़िदये की निय्यत से दूसरे को देता जाए, इसी त़रह़ लौट फेर करते रहें यहां तक कि मय्यित की तमाम फ़ौतशुदा नमाज़ों और रोज़ों का फ़िदया हो जाए। रक़म के साथ अगर क़ुरआने पाक भी है तो क़ुरआने

www.dawateislami.net

मजीद के बदले में सिर्फ़ इतना ही फ़िदया अदा होगा जितनी क़ुरआने पाक की क़ीमत है येह समझ लेना कि क़ुरआने पाक से सारा फ़िदया अदा हो जाएगा येह बे अस्ल है।[1]

सुवाल : बम वग़ैरा फटने की वज्ह से बा'ज़ औक़ात लाशें बिखर जाती हैं और उन के जिस्म के टुकड़े हो जाते हैं उन के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : किसी मुसलमान का आधे से ज़ियादा धड़ मिला तो ग़ुस्ल व कफ़न देंगे और जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे और नमाज़ के बा'द वोह बाक़ी टुकड़ा भी मिला तो उस पर दोबारा नमाज़ न पढ़ेंगे और आधा धड़ मिला तो अगर उस में सर भी है जब भी येही हुक्म है और अगर सर न हो या तूल में सर से पाउं तक दहना या बायां एक जानिब का हिस्सा मिला तो इन दोनों सूरतों में न ग़ुस्ल है न कफ़न न नमाज़ बल्कि एक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर दें। (درالمختار معه رد المحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة الجنائز، ۱۰۷/۳)

सुवाल : मय्यित को बिल्कुल बरहना कर के ग़ुस्ल देना शरअ़न जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : नाजाइज़ है कि ता'ज़ीमे मुसलमान ज़िन्दा व मुर्दा दोनों हा़लतों में यक्सां है।

सुवाल : मय्यित के रिश्तेदार दूसरे मुल्क में हों तो क्या उन के इन्तिज़ार में दफ़्न करने में ताख़ीर की जा सकती है ?

जवाब : ह़दीस में है कि जब तुम में से कोई मर जाए तो उस को रोक के न रखो और उस को क़ब्र की त़रफ़ जल्दी ले जाओ।

(مشکاة، کتاب الجنائز، باب دفن المیت، الفصل الثالث، ۳۲۵/۲، حدیث ۱۷۱۷)

1..फ़िदये से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील के लिये सफ़्ह़ा नम्बर 198 मुलाहज़ा फ़रमाइये !

www.dawateislami.net

जिन रिश्तेदारों के आने में बहुत ज़ियादा वक़्त लगेगा तो वहां उन के इन्तिज़ार में मय्यित को दफ़्न करने में ताख़ीर की हरगिज़ इजाज़त नहीं।

सुवाल : क़ब्र को पुख़्ता करना कैसा है ?

जवाब : क़ब्र ऊपर से पुख़्ता करना जाइज़ है मगर बेहतर येह है कि ऊपर से भी पुख़्ता न की जाए जब कि अन्दर से पुख़्ता करना बिला ज़रूरत ममनूअ़ व मकरूह है, याद रहे ह़क़ीक़तन क़ब्र ज़मीन का वोह ह़िस्सा है जिस से मय्यित मुत्तसिल (या'नी मिली हुई) होती है तो इस के इर्द गिर्द कोई जिहत पुख़्ता करना बिला ज़रूरत ममनूअ़ व मकरूह है अलबत्ता ज़रूरतन अन्दर का ह़िस्सा भी पुख़्ता करने की इजाज़त है।

सुवाल : बा'ज़ अ़लाक़े ऐसे हैं कि जब वहां क़ब्र खोदी जाती है तो पानी की सत़ह़ बुलन्द होने की वज्ह से थोड़ा बहुत पानी आ जाता है, इतना पानी होता है कि मय्यित की पुश्त गीली हो सकती है। क्या उन अ़लाक़ों में ज़मीन के ऊपर ही चार दीवारी बना कर मय्यित को दफ़्न किया जा सकता है ?

जवाब : मय्यित को ज़मीन पर रख कर उस के इर्द गिर्द चार दीवारी क़ाइम कर देना शरअ़न जाइज़ नहीं ह़त्तल इमकान मय्यित को ज़मीन के अन्दर दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है। लिहाज़ा बा क़ाइदा क़ब्र खोदी जाए और मय्यित को लकड़ी या लोहे वग़ैरा के ताबूत में बन्द कर के क़ब्र के अन्दर रख दिया जाए।

सुवाल : आ़म क़ब्रों पर नाम वाली तख़्तियां लगाने का क्या हुक्म है ?

जवाब : क़ब्र की पहचान के लिये नाम की तख़्ती लगाना जाइज़ है मगर उन पर कुरआने करीम की आयात व अस्माए मुक़द्दसा न लिखे जाएं कि आ़म तौ़र पर क़ब्रिस्तानों में उन की बे अदबी होती है।

www.dawateislami.net

सुवाल : हमारे अ़लाके़ में येह रवाज है कि जब कोई फ़ौत हो जाए तो बा'दे दफ़्न कुछ दिनों तक उस की क़ब्र पर फूल रखते हैं इसी त़रह़ शबे बराअत और ईद के मौक़अ़ पर भी क़ब्रों पर फूल और उन की पत्तियां रखी जाती हैं क्या क़ब्रों पर फूल रखना जाइज़ है और इस का कोई फ़ाइदा है या नहीं ?

जवाब : क़ब्र पर फूल रखना जाइज़ व मुस्तह़ब है जब तक फूल तर रहते हैं मय्यित को राह़त मिलती है, येह बात ह़दीसे मुबारक से साबित है।

चुनान्चे, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का या मदीना के बाग़ों में से किसी बाग़ में गुज़रे तो दो आदमियों की आवाज़ सुनी कि उन पर क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन दोनों पर अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़ी बात पर अ़ज़ाब नहीं हो रहा जिस से बचना मुश्किल हो फिर फ़रमाया इन में एक आदमी तो अपने पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ुल ख़ोरी करता था फिर खजूर की एक तर शाख़ मंगवाई उस के दो टुकड़े किये और हर क़ब्र पर एक एक टुकड़ा रखा। सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐसा किस लिये किया ? फ़रमाया : ताकि जब तक येह दोनों शाख़ें ख़ुश्क न हों इन दोनों के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (कमी) होती रहे।

(بخاری، کتاب الوضو، باب من الکبائر ان لایستتر من بوله، ۱/۹۵، حدیث۲۱۶)

मिर्क़ात में है कि लोगों में जो मुरव्वज है कि ख़ुश्बूदार फूल और खजूर की शाख़ क़ब्र पर रखते हैं वोह इस ह़दीस की रू से सुन्नत है।

(مرقاۃ المفاتیح،۲/۵۳)

www.dawateislami.net

सुवाल : अगर औ़रत की मय्यित हो तो उस को कफ़न में शल्वार पहनाना दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब : औ़रत के सुन्नत कफ़न में पांच कपड़े हैं। लिफ़ाफ़ा, इज़ार, क़मीस, ओढ़नी और सीनाबन्द, औ़रत को कफ़न में शल्वार पहनाना सुन्नत नहीं है और इस की कोई ह़ाजत भी नहीं है।

सुवाल : मय्यित के घर फ़ौतगी वाले दिन दूर से जो रिश्तेदार आए होते हैं उन के लिये खाने और रात रहने का इन्तिज़ाम करना शरअ़न कैसा है ? अगर खाने का एहतिमाम न किया जाए तो अक्सर गाऊं में होटल वग़ैरा भी नहीं होता जहां से मेहमान खुद ख़रीद कर खा लें न ही खुद कोई बन्दोबस्त कर सकते हों तो ऐसी सूरत में क्या करना चाहिये ?

जवाब : रिश्तेदार या पड़ोसियों का अहले मय्यित के लिये पहले रोज़ इतना खाना भेजना कि जिसे वोह दो वक़्त खा सकें सुन्नत है बल्कि इस्रार कर के उन्हें खिलाना चाहिये। इसी त़रह़ दूर से आने वालों में जो अहले मय्यित है वोह भी येह खाना खा सकता है। इन के इ़लावा दीगर जो मेला झमेला लगा के पड़े रहते हैं उन के लिये अहले मय्यित का खाने पीने के एहतिमाम में मश्ग़ूल होना दा'वते मय्यित ही के ज़ुमरे में दाख़िल रस्मे बद है। अगर अहले मय्यित में से कोई अपनी जेबे ख़ास से करे तब भी मन्अ़ है और माले मतरूका से करे तब भी बल्कि तर्के में अगर ना बालिग़ भी हों उन के ह़िस्सों में से की तो सख़्त अशद ह़राम है।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/666 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

सुवाल : अगर दो शख़्स किसी दुन्यवी ख़ुसूमत (या'नी झगड़े) की वज्ह से नाराज़ हों, इसी दौरान उन में से किसी एक का इन्तिक़ाल हो जाए तो दुन्यवी ख़ुसूमत की वज्ह से ज़िन्दा शख़्स के लिये मरने वाले की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ने पर क्या हुक्म होगा ?

जवाब : जो बिला उ़ज़्रे शरई तीन दिन से ज़ियादा मुसलमान भाई से नाराज़ रहता है वोह फ़ासिक़ है। ह़दीसे मुबारक में एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर जो हुक़ूक़ बयान किये गए हैं उन में से एक उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना भी है लिहाज़ा जो अपने मुसलमान भाई की नमाज़े जनाज़ा में शरीक हो सकता है उस को बिला उ़ज़्र तर्क न करे और दुन्यावी ख़ुसूमत की वज्ह से मुसलमान भाई की नमाज़े जनाज़ा को तर्क करना तो हरगिज़ न चाहिये।

सुवाल : ग़ुस्ल देने के दौरान मय्यित के मुंह में नक़्ली बत्तीसी, सोने का दांत, नक़्ली आंख या लेन्स वग़ैरा नज़र के होते हैं उन का क्या हुक्म है ?

जवाब : इस में क़ाइदा येह है कि इस त़रह़ की मस्नूई अश्या अगर बा आसानी जुदा कर सकते हैं कि मय्यित को तक्लीफ़ न पहुंचे तो अब जुदा करने की इजाज़त है और अगर मय्यित को तक्लीफ़ होगी तो नहीं।

सुवाल : बा'ज़ औक़ात जब नई क़ब्र खोदी जाती है तो हड्डियां निकल आती हैं ऐसी सूरत में क्या किया जाए ?

जवाब : किसी जगह मय्यित का दफ़्न होना मा'लूम हो अगर्चे सालों गुज़र जाएं उस जगह को खोद कर दूसरे मुर्दे की तदफ़ीन करना नाजाइज़ व ह़राम है और मा'लूम न था और खुदाई के दौरान हड्डियां निकलें तो उन्हें दोबारा दफ़्न कर दे और किसी दूसरी जगह नई क़ब्र खोदी जाए।

www.dawateislami.net

सुवाल : कभी ऐसा होता है कि बारिश की वज्ह से क़ब्र में शिगाफ़ पड़ जाता है तो लोग झांक झांक कर देखते हैं ऐसा करना कैसा ?

जवाब : यहां ग़ौर करना चाहिये कि जब मुर्दे को क़ब्र में बन्द कर के **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के सिपुर्द कर दिया जाता है तो अब आ़लमे बरज़ख़ का सिलसिला शुरूअ़ हो जाता है और अब येह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला और मुर्दे के दरमियान के राज़ होते हैं लिहाज़ा किसी को भी इन पर मुत्त़लअ़ होने की कोशिश करने या क़ब्र में झांकने की इजाज़त नहीं।

सुवाल : जो छोटा बच्चा ज़िन्दा पैदा हो कर फ़ौत हो जाए और उस का नाम नहीं रखा गया तो क्या बा'द में उस का नाम रखना ज़रूरी है या नहीं इस के बारे में इरशाद फ़रमा दें ?

जवाब : जो बच्चा ज़िन्दा पैदा हो कर फ़ौत हो गया उस का जनाज़ा भी होगा कफ़न दफ़न भी होगा और उस का नाम भी रखा जाएगा, इसी त़रह जो बच्चा ज़िन्दा पैदा नहीं हुवा तो उस का भी नाम रखा जाएगा अगर उस वक़्त जल्दी या सदमे की वज्ह से नाम रखना भूल गए और दफ़्न कर दिया तो बा'द में भी उस का नाम रख सकते हैं।

सुवाल : क्या गुस्ले मय्यित में इस्तिन्जा के लिये थैली इस्ति'माल की जा सकती है ?

जवाब : उ़मूमी त़ौर पर गुस्ले मय्यित में इस्तिन्जा के लिये इस्ति'माल किया जाने वाला कपड़ा थैली नुमा होता है जिसे हाथ पर चढ़ा कर इस्ति'माल कर सकते हैं।

www.dawateislami.net

सुवाल : बा'ज़ अ़लाक़ों में आज कल अक्सरो बेशतर क़ब्रों के अन्दर सीमेन्ट के बने हुवे ब्लोक लगाए जाते हैं और ऊपर से बन्द करने के लिये भी सीमेन्ट की बनी हुई सलीब लगाई जाती हैं, तो क्या इस त़रह़ दफ़्न करना सह़ीह़ है ?

जवाब : सीमेन्ट चूंकि आग से बनता है लिहाज़ा सीमेन्ट के ब्लोक या आग से बनी हुई ईंटें क़ब्र के अन्दर न लगाई जाएं और अगर क़ब्र की मिट्टी गिरने का अन्देशा है तो वोह ईंटें या ब्लोक लगाने के बा'द उन पर मिट्टी का लेप कर दिया जाए इसी त़रह़ सीमेन्ट की सलीबों के अन्दरूनी ह़िस्से पर भी मिट्टी लेप दी जाए ताकि मय्यित के हर त़रफ़ मिट्टी ही मिट्टी हो, अगर किसी ने यूं न भी किया तो गुनहगार नहीं।

सुवाल : क्या मकरूह वक़्त में भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ सकते है ?

जवाब : अगर मकरूह वक़्त में ही जनाज़ा लाया गया तो इस सूरत में नमाज़े जनाज़ा की अदाएगी मकरूह वक़्त में भी हो सकती है और अगर जनाज़ा पहले से तय्यार है और मकरूह वक़्त दाख़िल हो गया तो अब मकरूह वक़्त के अन्दर जनाज़ा पढ़ने की इजाज़त नहीं।

सुवाल : जब मय्यित को ग़ुस्ल दे दिया गया हो और कफ़न अभी नहीं पहनाया गया हो, अब रिश्तेदारों में से कोई ख़्वाहिश करे कि मैं भी ग़ुस्ल में शामिल हो जाऊं तो क्या वोह ग़ुस्ल में शामिल हो सकता है ? इस के बारे में इरशाद फ़रमाएं।

जवाब : मय्यित के ग़ुस्ल के वक़्त नेक अफ़राद शामिल हों और जितने अफ़राद की ह़ाजत है सिर्फ़ वोही ह़ज़रात मय्यित के पास रहें और जब ग़ुस्ल

www.dawateislami.net

दे दिया गया तो अब किसी को शरीक होने की (या पानी बहाने की) इजाज़त नहीं।

सुवाल : अगर किसी मय्यित के सत्र की जगह पर ज़ख़्म हो तो क्या उस सत्र के मक़ाम को देखने की इजाज़त है ताकि एह़तियात़ से ग़ुस्ल दे सकें?

जवाब : ग़ुस्ल देने के लिये ऐसे ज़ख़्म को देखने की इजाज़त नहीं है, हां पानी डालने में एह़तियात़ करें और हाथ वग़ैरा न फेरें।

सुवाल : जब क़ब्र पर अज़ान दी जाती है तो लोगों को कहा जाता है कि आप चले जाएं। अब यहां ठहरने की किसी को इजाज़त नहीं है। इस ह़वाले से रहनुमाई करें कि शरई ए'तिबार से इस त़रह़ करना कैसा है?

जवाब : क़ब्र पर अज़ान देने से मक़्सूद शैत़ान को दूर करना है और रिवायतों में है कि जब दफ़्न कर के लोग चालीस क़दम दूर चले जाते हैं तो अब मुन्कर नकीर का आना होता है। इस लिये बक़िय्या अफ़राद को जाने का कह दिया जाता है कि जब वोह चले जाएं तो अज़ान दी जाए लेकिन अगर कोई वहां खड़ा रहे और उस वक़्त अज़ान दी जाए तो इस में शरअ़न कोई क़बाह़त नहीं है।

सुवाल : बा'ज़ इस्लामी भाई दफ़्न से पहले क़ब्र में उतर कर सूरए मुल्क की तिलावत करते हैं येह करना कैसा है?

जवाब : क़ब्र में उतर कर मुर्दे की आसानी के लिये क़ुरआने पाक की अगर तिलावत करते हैं तो येह जाइज़ है, इस में ह़रज नहीं। अलबत्ता इस बात का ख़याल रखें कि अगर तदफ़ीन के लिये मय्यित आ गई तो उस वक़्त मय्यित को रोक कर और फिर उतर कर तिलावत करने की बजाए मय्यित के आने से पहले ही तिलावत कर लें।

www.dawateislami.net

सुवाल : बसा औक़ात ज़ियादा बारिश और पानी जम्अ़ होने की वज्ह से बा'ज़ क़ब्रें एक त़रफ़ झुक जाती हैं बल्कि कई क़ब्रों के गिरने का भी अन्देशा होता है इन्हें दोबारा सह़ीह़ करने के बारे में मदनी फूल इरशाद फ़रमा दें ?

जवाब : इस सूरत में क़ब्र खोलने की इजाज़त नहीं है बल्कि बाहर से ही क़ब्र को किसी भी त़रीक़े से दुरुस्त करने की कोशिश की जाए। ऐसे ही अगर सलीब गिर गई है तो इस सूरत में एक कपड़ा वग़ैरा ऊपर डाल कर किसी नेक सालेह़ मुत्तक़ी शख़्स को कहें कि वोह क़ब्र में झांके बिग़ैर सिर्फ़ हाथ डाल कर सलीब दुरुस्त कर दे फिर दूसरी सलीब फ़ौरी त़ौर पर ढक दी जाए। इस दौरान क़ब्र में झांकना जाइज़ नहीं है।

सुवाल : औ़रतों का क़ब्रिस्तान में फ़ातिह़ा के लिये जाना कैसा है ?

जवाब : औ़रतों को क़ब्रिस्तान जाना मन्अ़ है, बल्कि मज़ारात की ह़ाज़िरी भी मन्अ़ है, सिर्फ़ और सिर्फ़ नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुबारका पर औ़रतों को ह़ाज़िरी की इजाज़त है, (बल्कि सुन्नते मुअक्कदा क़रीब ब वाजिब है) इस के इ़लावा किसी भी मज़ार या क़ब्रिस्तान में फ़ातिह़ा के लिये औ़रतों को जाना मन्अ़ है, इजाज़त नहीं है, घर से ही फ़ातिह़ा पढ़ कर इस का ईसाले सवाब कर दें।

सुवाल : बा'ज़ औक़ात मय्यित को मजबूरी के तह़त अमानत के त़ौर पर दफ़्न कर दिया जाता है तो इस का क्या हुक्म होगा ?

जवाब : अमानतन दफ़्न करना कि बा'द में किसी और जगह मुन्तक़िल कर देंगे, इस्लाम में इस की इजाज़त नहीं है, जहां दफ़्न कर दिया वहीं रहने दें यहां से निकाल कर किसी और जगह मुन्तक़िल करना येह ह़राम है।

www.dawateislami.net

लवाहिक़ीन के लिये मदनी फूल

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या, चन्द लम्ह़ों का ख़्वाब है दुन्या

फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से ? नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या

गु़स्ले मय्यित के लिये जाएं तो अहले ख़ाना में से किसी समझदार फ़र्द को येह मदनी फूल पेश करें, ज़रूरतन कमी बेशी की जा सकती है। चाहें तो "**फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात और चमकदार कफ़न**" से मदद ह़ासिल कीजिये।

﴾1﴿ गु़स्ल के बरतन धो कर बा'द में इस्ति'माल किये जा सकते हैं।

(तफ़्सील सफ़्ह़ा 92 पर)

﴾2﴿ नौह़ा हरगिज़ न करने दें। (तफ़्सील सफ़्ह़ा 158 पर)

﴾3﴿ हो सके तो ता'ज़ियत के लिये जम्अ़ होने वालों के दरमियान (मौक़अ़ की मुनासबत से) चादर बिछा कर सत्तर हज़ार बार कलिमए त़य्यिबा का ख़त्म करवाएं और मय्यित को ईसाल कीजिये। (तफ़्सील सफ़्ह़ा 168 पर) मुमकिना सूरत में दर्स वग़ैरा की तरकीब भी की जाए।

﴾4﴿ हर जुमुआ़ क़ब्रिस्तान जाने, मर्ह़ूम / मर्ह़ूमा की क़ब्र पर फूल डालने और सूरए यासीन पढ़ने का मा'मूल बनाइये। (तफ़्सील सफ़्ह़ा 165 और 194 पर) (इस्लामी बहनें अपने घर के इस्लामी भाइयों को तरग़ीब दिलाएं)

﴾5﴿ ईसाले सवाब के लिये नवाफ़िल और सदक़ा व ख़ैरात का मा'मूल बनाइये। (तफ़्सील सफ़्ह़ा 169 पर)

﴾6﴿ मय्यित के ज़िम्मे क़र्ज़ या किसी का माली मुत़ालबा हो तो जल्द से जल्द अदाएगी की तरकीब कीजिये। ह़दीसे पाक में है कि मय्यित अपने

www.dawateislami.net

दैन में गिरिफ़्तार रहती है, एक रिवायत में है कि उस की रूह़ मुअ़ल्लक़ रहती है जब तक दैन अदा न किया जाए।

(حلیۃ الاولیاء لابی نعیم، سعد بن ابراھیم الزھری، ۳/۲۰۱، حدیث ۳۷۰۲ و مسند الطیالسی، عمر بن ابی سلمۃ عن ابی ھریرۃ، ص ۳۱۵، حدیث ۲۳۹۰)

﴾7﴿ मय्यित के ज़िम्मे नमाज़, रोज़े क़ज़ा हों तो उन का फ़िदया अदा कीजिये। इसी त़रह़ ज़कात की अदाएगी बाक़ी हो तो उस की और फ़र्ज़ ह़ज न करने की सूरत में ह़ज्जे बदल की भी तरकीब कीजिये।

(फ़िदये की तफ़्सील सफ़ह़ा 198 पर)

﴾8﴿ मय्यित के ईसाले सवाब के लिये वुस्अ़त हो तो मस्जिद बनवा दें वरना मस्जिद, मद्रसतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना की ता'मीर में ह़िस्सा डालें तो येह मर्ह़ूम / मर्ह़ूमा के लिये सवाबे जारिया होगा।

(तफ़्सील सफ़ह़ा 283 पर)

﴾9﴿ मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और बयानात की सीडीज़ तक़्सीम कीजिये, मय्यित को ज़बरदस्त सवाब पहुंचता रहेगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(तफ़्सील सफ़ह़ा 274 पर)

﴾10﴿ अगर वालिदैन में से किसी का इन्तिक़ाल हुवा हो तो सब भाई बहन येह इरादा कर लें कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से बचते रहेंगे क्यूंकि औलाद के आ'माल वालिदैन को पेश किये जाते हैं अच्छे पर ख़ुश और बुरे पर रन्जीदा होते हैं। (तफ़्सील सफ़ह़ा 192 पर)

गुनाहों से बचने और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी के साथ शिर्कत को अपना मा'मूल बना लीजिये।

www.dawateislami.net

तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के मदनी फूल

(मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन (इस्लामी बहनें))

﴾1﴿ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (अ़लाक़ा सत़ह़) हर माह (इलावा रमज़ान) अ़लाक़ा सत़ह़ पर तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत की तरकीब बनाएं।

❁ बेहतर है कि मदनी माह के आख़िरी अ़शरे में कोई भी दिन, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़, तरबिय्यती ह़ल्क़े, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के इलावा मुक़र्रर कर के इजतिमाअ़ गाह में या ऐसी जगह जो हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ शुरूअ़ करने के मदनी फूलों के मुत़ाबिक़ हो, माहाना तरबिय्यत की तरकीब बनाई जाए।

❁ "तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत" से कम अज़ कम एक हफ़्ता क़ब्ल हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और तरबिय्यती ह़ल्क़े वग़ैरा में "तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के लिये तरग़ीबी ए'लान" ज़रूर किया जाए।

❁ दोरानिय्या 3 घन्टे हो और शुरका कम अज़ कम 26 और ज़ियादा से ज़ियादा 41 हों।

﴾2﴿ मुल्क व बैरूने मुल्क में अगर कहीं मख़्सूस जगह पर ही "ग़ुस्ले मय्यित" होता हो तो उस जगह पर भी "तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत" की तरकीब बनाई जा सकती है। (लेकिन याद रहे कि शरई और तन्ज़ीमी त़ौर पर कोई ह़रज वाक़ेअ़ न हो)

﴾3﴿ तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के लिये "एक दिन" या लगातार "दो दिन" की क़ैद नहीं है। तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (अ़लाक़ा सत़ह़) व अ़लाक़ा मजलिसे मुशावरत ज़िम्मेदारान अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ तरकीब बनाएं। अलबत्ता लगातार दो दिन को तरजीह़ दी जाए।

www.dawateislami.net

﴾4﴿ हर ह़ल्क़े से कम अज़ कम 2 और ज़ियादा से ज़ियादा 8 नई इस्लामी बहनों (से मुराद ऐसी इस्लामी बहनें हैं जिन की मदनी माह़ोल में वाबस्तगी पुरानी हो मगर ज़ियादा तन्ज़ीमी कामों की ज़िम्मेदारी न हो) इस के साथ अ़वाम इस्लामी बहनें जो ग़ुस्ले मय्यित सीखने में दिलचस्पी रखती हों को भी तरबिय्यत में शिर्कत करवाई जा सकती है। क्यूंकि ग़ुस्ले मय्यित की तरबिय्यत का मक़्सद येही है कि हर आ़शिक़ए रसूल ग़ुस्ले मय्यित देना सीख जाए ताकि वोह अपने अहले ख़ाना और रिश्तेदार वग़ैरा की ख़ुद ही तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरकीब बना सकें।

❁ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (डिवीज़न व मुल्क सत़ह़) जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) व दारुल मदीना (लिल बनात) की त़ालिबात व मुअ़ल्लिमात व नाज़िमात को भी तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत में शिर्कत की तरग़ीब दिलाएं ताकि उन्हें भी इस मदनी काम से आगाही ह़ासिल हो सके।

(याद रहे ! जामिअ़तुल मदीना / मद्रसतुल मदीना / दारुल मदीना (लिल बनात) की पढ़ाई में हरगिज़ ह़रज नहीं आना चाहिये)

❁ अगर कोई प्रोफ़ेशनल ग़स्साला, जो ख़ुद दिलचस्पी रखती हों और तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखना चाहती हों तो उन्हें भी तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत में बुला कर सिखाने की तरकीब बनाई जा सकती है। लेकिन याद रहे कि हमारा मक़्सद सिर्फ़ येह होगा कि येह "ग़ुस्ले मय्यित" का दुरुस्त त़रीक़ा सीख लें। हम उन्हें अपने तन्ज़ीमी उसूलों वग़ैरा का पाबन्द नहीं करेंगे।

﴾5﴿ अ़लाक़ा सत़ह़ पर तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत की सिर्फ़ उन्हीं इस्लामी बहनों की तरकीब बनाई जाए जो तजहीज़ो तक्फ़ीन तफ़्तीश मजलिस से टेस्ट में OK हो चुकी हों।

www.dawateislami.net

﴾6﴿ तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदारान (अ़लाक़ा सत़ह़) तरबिय्यत वाले दिन किताब "तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा" सफ़ह़ा 84 ता 104 पर मौजूद मवाद की मदद से ही सिखाने की तरकीब बनाएं।

﴾7﴿ तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत वाले दिन ग़ुस्ल व कफ़न का त़रीक़ा सिखाते वक़्त मत़्लूबा अश्या या'नी रूई, 2 अ़दद चादरें, 3 अ़दद मग, 1 पेकेट अगरबत्ती, 1 अ़दद माचिस, 1 अ़दद तोलिया, 1 अ़दद साबुन, क़ैंची, कफ़न का कपड़ा, चटाई, सुई–धागा, फूलों की लड़ी और काफ़ूर की तरकीब बनाई जाए। इन अश्या के लिये चन्दा न किया जाए बल्कि ज़ाती रक़म से तरकीब बनाई जाए। (याद रहे ग़ुस्ले मय्यित की तरबिय्यत में पानी इस्ति'माल न किया जाए)

﴾8﴿ तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत वाले दिन तजहीज़ो तक्फ़ीन सीखने वालों के लिये पेकेट बना लिये जाएं जिस को अख़राजात के मुत़ाबिक़ क़ीमतन दिया जाए। पेकेट में येह येह अश्या हों : 3 अ़दद नक़्शे ना'लैने पाक, 3 अ़दद शजरा शरीफ़ (पॉकिट साइज़), 3 अ़दद अ़ह्द नामा, 3 अ़दद सब्ज़ गुम्बद की तस्वीर (चाहे तो स्टीकर हो), 1 अ़दद छोटी बोतल आबे ज़म ज़म, 1 अ़दद रिसाला मुर्दे की बे बसी या क़ब्र की पहली रात, एक पेपर "मत़्लूबा अश्या", एक अ़दद रिसाला फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, एक छोटा पेकेट ख़ाके शिफ़ा (चुटकी भर अगर मुयस्सर हो तो), 3 पेकेट मदीने पाक की खजूर की गुठलियां (एक पेकेट में 2 हों), एक अ़दद नेल पोलिश रीमूवर और एक पेपर "अ़ज़ाबे क़ब्र से ह़िफ़ाज़त की दुआ़" और एक पेपर "क़ियामत तक के लिये अ़ज़ाब से ह़िफ़ाज़त", किताब तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा।

۞ अगर प्रोफ़ेशनल ग़स्साला पेकेट लेना चाहे तो दिया जा सकता है।

۞ अगर मक्तबतुल मदीना से बा आसानी "कफ़न के तीन अनमोल तोहफ़े"

www.dawateislami.net

का पर्चा दस्तयाब हो जाए तो फिर पेकेट में "अ़ह्द नामा, अ़ज़ाबे क़ब्र से हि़फ़ाज़त की दुआ़ और क़ियामत तक के लिये अ़ज़ाब से हि़फ़ाज़त" के बजाए सिर्फ़ येही पेपर 3 अ़दद डाल दिये जाएं।

﴾9﴿ तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा सिखाते वक़्त पेशे नज़र रखने वाले मदनी फूल :

तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत वाले दिन तजहीज़ो तक्फ़ीन सिखाते वक़्त दरजे ज़ैल मदनी फूलों के मुत़ाबिक़ तरकीब बनाई जाए।

(1)......ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा सिखाते वक़्त पेकेट भी सामने रखा जाए और दरमियान में जिस चीज़ का तज़किरा हो वोह निकाल कर वज़ाह़त के साथ समझाया जाए।

(2)......इसी किताब के सफ़ह़ा 84 ता 104 का पहले से अच्छी त़रह़ मुत़ालआ़ कर के समझ लिया जाए और ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा सिखाते वक़्त किताब से देख कर बयान किया जाए।

(3)......जो इस्लामी बहनें उर्दू न समझती हों तो उन की ज़बान में मत़लूबा मवाद का तर्जमा मजलिसे तराजिम से करवा लिया जाए और उसे देख कर बयान किया जाए।

(4)......तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के लिये तख़्ताए ग़ुस्ल के बजाए किसी ऊंची चीज़ की तरकीब बनाई जाए।

(5)......तरबिय्यत वाले दिन तजहीज़ो तक्फ़ीन का अ़मली त़रीक़ा गुड़िया (खिलौने) पर कर के न बताया जाए।

(6)......सिखाने के दौरान अव्वल ता आख़िर सन्जीदगी बर क़रार रखी जाए बिल ख़ुसूस जिस इस्लामी बहन को "मय्यित" के त़ौर पर मुन्तख़ब किया जाए वोह इन्तिहाई सन्जीदा हो।

(7)......बेहतर है कि तरबिय्यत के इख़्तिताम पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे

www.dawateislami.net

अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का कलाम "आह हर लम्ह़ा गुनह की कसरत और भरमार है" पढ़ा जाए।

(8)......इस्लामी बहनों की येह भी तरबिय्यत की जाए कि जब वोह किसी जगह तजहीज़ो तक्फ़ीन के लिये जाएं तो इसी किताब से ग़ुस्ल व कफ़न के बयान वग़ैरा का अच्छी त़रह़ मुत़ालआ़ कर लें और किताब भी साथ रखें ताकि ज़रूरत पड़ने पर इस्तिफ़ादा किया जा सके।

(9)......इस्लामी बहनों की येह तरबिय्यत भी की जाए कि जिस घर में मय्यित हो गई हो उस वक़्त उन के घर में जो समझदार इस्लामी बहन हो उन्हें ह़ालात और नोइय्यत के ए'तिबार से लवाह़िक़ीन को समझाने वाले मदनी फूल की मदद से समझाने की तरकीब बनाई जाए। नीज़ ह़स्बे ज़रूरत इ़द्दत व सोग के मसाइल से आगाही फ़राहम की जाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत का महल उसे मिलेगा जो.....

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो इसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो इस से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नात़ा (या'नी तअ़ल्लुक़) जोड़े।

(مستدرك حاكم،۳/۱۲، حديث ۳۲۱۵)

www.dawateislami.net

तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत के लिये तरग़ीबी ए'लान

(मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन (इस्लामी बहनें))

प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें इस आ़रिज़ी दुन्या में एक मुअ़य्यन मुद्दत के लिये भेजा है। जब हमारा वक़्त पूरा हो जाएगा तो हमें इस ना पाईदार दुन्या से कूच करना पड़ेगा और ग़ुस्ल व कफ़न का सिलसिला शुरूअ़ हो जाएगा।

प्यारी इस्लामी बहनो ! मय्यित को ग़ुस्ल देना एक ऐसा काम है कि सब को सीखना चाहिये कि हर एक को इस से वासित़ा पड़ता है लेकिन अफ़्सोस कि दीन से दूरी के बाइ़स अक्सर इस्लामी बहनें मय्यित से ख़ौफ़ मह़सूस करती हैं, मय्यित के क़रीब नहीं आतीं और हाथ नहीं लगातीं इस वज्ह से मय्यित को अक्सर ख़िलाफ़े सुन्नत ग़ुस्ल दिया जाता है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मुर्दे की बे बसी**" में शर्हुस्सुदूर के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि मरने वाला हर चीज़ को जानता है ह़त्ता कि ग़स्साल से कहता है कि तुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम है तू ग़ुस्ल में मेरे साथ नर्मी कर। लिहाज़ा हमें ख़ुद भी शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मय्यित को ग़ुस्ल देने का त़रीक़ा ज़रूर सीखना चाहिये और अपनी औलाद को भी सिखाना चाहिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हर माह तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत दी जाती है और इस बार बरोज़.............................ब तारीख़.........................
ब मक़ाम..

www.dawateislami.net

ब वक़्त..................ता.................इस्लामी बहनों को "ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा" सिखाया जाएगा। तमाम इस्लामी बहनें वक़्त की पाबन्दी के साथ शिर्कत फ़रमाएं।

इस तरबिय्यत में वोह तमाम इस्लामी बहनें शिर्कत कर सकती हैं जो ग़ुस्ले मय्यित देने के लिये जा सकती हों अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ जो औक़ात वोह बताएंगी, उन्ही औक़ात में उन को ग़ुस्ले मय्यित के लिये भेजने की तरकीब बनाई जाएगी।

लिहाज़ा जो इस्लामी बहनें ग़ुस्ले मय्यित के लिये जा सकती हैं वोह ज़रूर ग़ुस्ले मय्यित की तरबिय्यत में तशरीफ़ लाएं कि फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 312 में इब्ने माजा शरीफ़ के ह़वाले से मन्क़ूल है : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न पहनाए, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह गुनाहों से ऐसे ही पाक हो जाता है जैसे पैदाइश के दिन था।

(ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فى غسل الميت، ٢/٢٠١، حديث ١٤٦٢)

जो ग़ुस्ले मय्यित में शिर्कत करें उन के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने यूं दुआ़ फ़रमाई है :

www.dawateislami.net

दुआए अ़त्तार

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो इस्लामी बहनें शरीअ़त के मुत़ाबिक़ गुस्ले मय्यित में हिस्सा लें उन को दोनों जहानों की भलाइयों से माला माल कर, उन्हें मदीने में ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मौत दे।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुआ़ए वली में वोह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

चुनान्चे, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की दुआ़ओं से हिस्सा पाने के लिये ज़रूर ज़रूर तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत ह़ासिल करें। जो इस्लामी बहनें अपने घरों से गुस्ले मय्यित के लिये जाने की तरकीब बना सकती हों सिर्फ़ वोही इस्लामी बहनें अपना नाम, राबित़ा नम्बर, एड्रेस और किस वक़्त बा आसानी गुस्ले मय्यित के लिये जा सकती हैं येह ज़रूर लिखवा दें।

मदनी फूल : दिन, वक़्त और मक़ाम ए'लान में बता दिया जाए।

बारिश के क़त़रों जितने अंगारे

मन्क़ूल है : जिस ने अपने वालिदैन को गाली दी उस की क़ब्र में आग के इतने अंगारे उतरते हैं जितने (बारिश के) क़त़रे आस्मान से ज़मीन पर आते हैं। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ۲/۱۳۹)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ علٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

माहाना अ़लाक़ा कारकर्दगी फ़ॉर्म (मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन)

अ़लाक़ा	अ़लाक़ा ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

निगरान अ़लाक़ा मुशावरत	डिवीज़न ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

बराए मदनी माह व सिन : ____ बराए ईसवी माह व सिन : ____

हक़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से इस्लामी भाइयों में अ़मल का जज़्बा पैदा हो और आख़िरत की बरकतें मिलें। (फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

1	कितने मक़ामात पर बेनर आवेज़ां हुवे ?				
2	मुकम्मल बेनर्ज़				
3	कितने तजहीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत मिली ?				
4	कितने इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनी ?				
5	कितने मक़ामात पर तक़्सीमे रसाइल की तरकीब बनी ?				
6	ता'दादे तक़्सीम	रसाइल ?		कुतुब ?	V.C.D
7	इस माह ता'दाद तजहीज़ो तक्फ़ीन	D.V.D		मदनी ख़बरें	
8	इस माह कितने टेस्ट हुवे ?				
9	ख़ुद्दामुल मसाजिद की तरकीब	रक़्म		प्लॉट	
10	कितने लवाहिक़ीन को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करवाया ?	3 दिन	12 दिन	30 दिन	
11	कितने लवाहिक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाई ?				
12	शो'बे के तह़्त कितने मदनी इन्आ़मात के रसाइल	तक़्सीम हुवे		वुसूल हुवे	

इनफ़िरादी कारकर्दगी अ़लाक़ा ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम		रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की कारकर्दगी				रसाइल व VCD फ़रोख़्त / तक़्सीम किये ?				अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े में शिर्कत की ?	अक्सर रातें जल्द सोने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखा ?	मजलिस / काबीना के मदनी मश्वरे में शिर्कत की ?	इस माह शो'बे में	
			गुज़श्ता माह	आइन्दा तारीख़	अ़त्तार का दोस्त	अ़त्तार का प्यारा	अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	महबूबे अ़त्तार	रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	VCD फ़रोख़्त	VCD तक़्सीम					आमदन	ख़र्च

बराए करम ! येह कारकर्दगी फ़ॉर्म हर मदनी माह की 2 तारीख़ तक निगराने अ़लाक़ा / शहर मुशावरत और डिवीज़न ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन को मेल / जम्अ़ करें। दस्तख़त अ़लाक़ा मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन:.................... कारकर्दगी फ़ॉर्म जम्अ़ करवाने की तारीख़ :....................

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

(मजलिसे कारकर्दगी फ़ॉर्म और मदनी फूल)

www.dawateislami.net

فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

जै़ली ह़ल्क़ा कारकर्दगी

जै़ली ह़ल्क़ा______

ह़ल्क़ा________

मदनी माह व सिन ____________

ह़क़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से इस्लामी बहनों में अ़मल का जज़्बा पैदा हो

क्या इजतिमाअ़ में बेनर आवेज़ां हुवे ? ____________

	1	2	3	4			5
हफ़्ता नम्बर	कितनी मय्यितों के ग़ुस्ल की तरकीब बनी ?	कितने मक़ामात पर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनी ? (ता'दाद)	कितने मक़ामात पर लंगरे रसाइल की तरकीब बनी ? (ता'दाद)	ता'दादे लंगर			कितनी लवाहिक़ीन से ता'ज़िय्यत की तरकीब की ? ज़िम्मेदारान इस्लामी बहनों के ज़रीए़
				रसाइल	कुतुब	VCD	
1							
2							
3							
4							
5							
मजमूई़ कारकर्दगी							

इनफ़िरादी	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल की ?	अक्सर दिन अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरे और मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा बयानात सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की कारकर्दगी
तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (जै़ली सत़ह़)				(अजमेरी/बग़दादी/मक्की/मदनी)

मदनी फूल : (1) हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करने वालियों के नाम ह़ल्क़ा ज़िम्मेदार को और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) में दाख़िला लेने वालियों के नाम मुतअ़ल्लिक़ा शो'बा ज़िम्मेदार (अ़लाक़ा सत़ह़) को पेश कर दिये गए ? ____________

(2) गिनती उर्दू आ'दाद के बजाए अंग्रेज़ी आ'दाद में लिखी जाए मसलन "٢٦" के बजाए "26" लिखा जाए।

(3) येह फ़ोर्म मअ़ "तक़ाबुली जाइज़ा"[1] हर मदनी माह की 1 तारीख़ तक ग़ुस्ले मय्यित ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत़ह़) को जम्अ़ करवाएं।

1 "तक़ाबुली जाइज़ा" फ़ोर्म की पुश्त पर मौजूद है

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ

तजहीज़ो तक्फ़ीन

बराए मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

माह व सिन (मदनी) ______ (ईसवी) ______

तजहीज़ो तक्फ़ीन ज़िम्मेदार इस्लामी बहन

(ज़ैली ह़ल्क़ा सत़ह़) (उम्मे/बिन्ते) ______

ईसवी माह व सिन

और आख़िरत की बरकतें मिले। (फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

6	7	8	9
कितनी लवाह़िक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाई ?	कितनी लवाह़िक़ीन मदनी इन्आ़मात की आ़मिला बनी ?	कितनी लवाह़िक़ीन ने मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में दाख़िला लिया ?	कितनी इस्लामी बहनों ने तजहीज़ो तक्फ़ीन की तरबिय्यत ह़ासिल की ?
	ता'दाद	ता'दाद	ता'दाद

रसाइल व केसिट फ़रोख़्त/तक़्सीम किये ?				इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए कितनी इस्लामी बहनों को मदनी कामों की तरग़ीब दिलाई ?	वोह इस्लामी बहनें जो पहले आती थी अब नहीं आतीं ख़ुद कितनी इस्लामी बहनों से राबित़ा किया ?	मदनी मश्वरे में शिर्कत की ?	अपने मह़ारिम में से कितनों को		
रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	केसिट फ़रोख़्त	केसिट तक़्सीम				मदनी इन्आ़मात की तरग़ीब दिलाई ?	मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाया ?	हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत ?

www.dawateislami.net

डिवीज़न

निगराने डिवीज़न

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

माहाना डिवीज़न कारकर्दगी फ़ॉर्म

बराए मदनी माह व सिन :

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।

------------------------------------			1	2	3	4	5	6		
नम्बर शुमार	अ़लाक़ा	ता'दाद हल्क़ा	कितने मक़ामात पर बेनर आवेज़ां हुवे ?	मुकम्मल बेनर्ज़	कितने तजहीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत मिली ?	कितने इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनी ?	कितने मक़ामात पर तक़्सीमे रसाइल की तरकीब बनी ?	ता'दादे तक़्सीम		
								रसाइल	कुतुब	V.C.D
1										
2										
3										
4										
5										
6										
7										
8										
9										
10										
11										
12										
13										
14										
मजमूई कारकर्दगी		-	-	-	-	-	-	-	-	-

इनफ़िरादी कारकर्दगी डिवीज़न ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम		रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की कारकर्दगी			
			गुज़श्ता माह	आइन्दा तारीख़	अ़त्तार का प्यारा	अ़त्तार का दोस्त	अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	महबूबे अ़त्तार

बराए करम ! येह कारकर्दगी फ़ार्म हर मदनी माह की 4 तारीख़ तक निगराने डिवीज़न और काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन को मेल करें।

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

(मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन)

बराए ईसवी माह व सिन :

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

डिवीज़न ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

7		8	9		10	11			12		13	
इस माह ता'दाद तजहीज़ो तक्फ़ीन		इस माह कितने टेस्ट हुवे ?	ख़ुद्दामुल मसाजिद की तरकीब		कितने लवाहिक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाई ?	कितने लवाहिक़ीन को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करवाया ?			शो'बे के तहत कितने मदनी इन्आ़मात के रसाइल		इस माह शो'बे में	
D.V.D	मदनी ख़बरें		रक़म	प्लॉट		3दिन	12 दिन	30 दिन	तक़्सीम हुवे	वुसूल हुवे	आमदन	ख़र्च
-		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

रसाइल व VCD फ़रोख़्त / तक़्सीम किये ?				अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत की ?	अक्सर रातें जल्द सोने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखा ?	कितने मदनी मश्वरे किये	
रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	फ़रोख़्त VCD	तक़्सीम VCD				डिवीज़न	मजलिस

दस्तख़त़ डिवीज़न ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन :............................ कारकर्दगी फ़ार्म जम्अ़ करवाने की तारीख़ :............................

(मजलिसे कारकर्दगी फ़ार्म और मदनी फूल)

www.dawateislami.net

काबीना

निगराने काबीना

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

माहाना काबीना कारकर्दगी फ़ॉर्म

बराए मदनी माह व सिन :

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।

----------------------------------			1	2	3	4	5	6		
नम्बर शुमार	डिवीज़न	ता'दाद हल्क़ा	कितने मक़ामात पर बेनर आवेज़ां हुवे ?	मुकम्मल बेनर्ज़	कितने तजहीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत मिली ?	कितने इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनी ?	कितने मक़ामात पर तक़्सीमे रसाइल की तरकीब बनी ?	ता'दादे तक़्सीम		
								रसाइल	कुतुब	V.C.D
1										
2										
3										
4										
5										
6										
7										
8										
9										
10										
11										
12										
13										
14										
मजमूई कारकर्दगी		-	-	-	-	-	-	-	-	-

इनफ़िरादी कारकर्दगी काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम		रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की कारकर्दगी			
			गुज़श्ता माह	आइन्दा तारीख़	अ़त्तार का प्यारा	अ़त्तार का दोस्त	अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	महबूबे अ़त्तार

बराए करम ! येह कारकर्दगी फ़ार्म हर मदनी माह की 6 तारीख़ तक निगराने काबीना और निगराने काबीनात ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन को मेल करें।

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

(मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन)

बराए ईसवी माह व सिन :

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

काबीनात ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

7		8	9		10	11			12		13	
इस माह ता'दाद तजहीज़ो तक्फ़ीन		इस माह कितने टेस्ट हुवे ?	ख़ुद्दामुल मसाजिद की तरकीब		कितने लवाहिक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाई ?	कितने लवाहिक़ीन को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करवाया ?			शो'बे के तहत कितने मदनी इन्आमात के रसाइल		इस माह शो'बे में	
D.V.D	मदनी ख़बरें		रक़म	प्लॉट		3 दिन	12 दिन	30 दिन	तक़्सीम हुवे	वुसूल हुवे	आमदन	ख़र्च
-		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

रसाइल व VCD फ़रोख़्त/तक़्सीम किये ?				अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत की ?	अक्सर रातें जल्द सोने वाले मदनी इन्आम पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखा ?	कितने मदनी मश्वरे किये	
रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	फ़रोख़्त VCD	तक़्सीम VCD				काबीना	मजलिस

दस्तख़त़ काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन:........................ कारकर्दगी फ़ार्म जम्अ़ करवाने की तारीख़ :........................

(मजलिसे कारकर्दगी फ़ार्म और मदनी फूल)

www.dawateislami.net

काबीनात

निगराने काबीनात

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

माहाना काबीनात कारकर्दगी फ़ॉर्म

बराए मदनी माह व सिन :

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।

------------------------------------				1	2	3	4	5	6		
नम्बर शुमार	काबीना	ता'दाद		कितने मक़ामात पर बेनर आवेज़ां हुवे ?	मुकम्मल बेनर्ज़	कितने तजहीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत मिली ?	कितने इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनी ?	कितने मक़ामात पर तक़्सीमे रसाइल की तरकीब बनी ?	ता'दादे तक़्सीम		
		डिवीज़न	अ़लाक़ा						रसाइल	कुतुब	V.C.D
1											
2											
3											
4											
5											
6											
7											
8											
9											
10											
11											
12											
13											
14											
मजमूई कारकर्दगी			-	-	-	-	-	-	-	-	-

इनफ़िरादी कारकर्दगी काबीनात ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम		रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की कारकर्दगी			
			गुज़श्ता माह	आइन्दा तारीख़	अ़त्तार का प्यारा	अ़त्तार का दोस्त	अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	मह़बूबे अ़त्तार

बराए करम ! येह कारकर्दगी फ़ार्म हर मदनी माह की 6 तारीख़ तक निगराने काबीनात और निगराने मजलिस तजहीज़ो तक्फ़ीन को मेल करें।

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

(मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन)

बराए मदनी माह व सिन :

اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

काबीनात ज़िम्मेदार तजहीज़ो तक्फ़ीन

निगराने मजलिस तजहीज़ो तक्फ़ीन

7		8	9		10	11			12		13	
इस माह ता'दाद तजहीज़ो तक्फ़ीन		इस माह कितने टेस्ट हुवे ?	ख़ुद्दामुल मसाजिद की तरकीब		कितने लवाहिक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाई ?	कितने लवाहिक़ीन को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करवाया ?			शो'बे के तहत कितने मदनी इन्आमात के रसाइल		इस माह शो'बे में	
D.V.D	मदनी ख़बरें		रक़म	प्लॉट		3 दिन	12 दिन	30 दिन	तक़्सीम हुवे	वुसूल हुवे	आमदन	ख़र्च
-		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

रसाइल व VCD फ़रोख़्त / तक़्सीम किये ?				अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्के़ में शिर्कत की ?	अक्सर रातें जल्द सोने वाले मदनी इन्आम पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखा ?	कितने मदनी मश्वरे किये	
रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	फ़रोख़्त VCD	तक़्सीम VCD				काबीनात	मजलिस

दस्तख़त़ काबीना ज़िम्मेदार मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन.................................... कारकर्दगी फ़ार्म जम्अ़ करवाने की तारीख़ :....................................

(मजलिसे कारकर्दगी फ़ार्म और मदनी फूल)

www.dawateislami.net

मुल्क

निगराने मुल्क

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

माहाना मुल्क कारकर्दगी फ़ॉर्म

बराए मदनी माह व सिन :

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।

--					1	2	3	4	5	6		
नम्बर शुमार	काबीनात	ता'दाद			कितने मक़ामात पर बेनर आवेज़ां हुवे ?	मुकम्मल बेनर्ज़	कितने तजहीज़ो तक्फ़ीन की सआ़दत मिली ?	कितने इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब की तरकीब बनी ?	कितने मक़ामात पर तक़्सीमे रसाइल की तरकीब बनी ?	ता'दादे तक़्सीम		
		काबीना	डिवीज़न	अ़लाक़ा						रसाइल	कुतुब	V.C.D
1												
2												
3												
4												
5												
6												
7												
8												
9												
10												
11												
12												
13												
14												
मजमूई कारकर्दगी				-	-	-	-	-	-	-	-	-

इनफ़िरादी कारकर्दगी निगराने मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम		रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की कारकर्दगी			
			गुज़श्ता माह	आइन्दा तारीख़	अ़त्तार का प्यारा	अ़त्तार का दोस्त	अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	मह़बूबे अ़त्तार

बराए करम ! येह कारकर्दगी फ़ार्म हर मदनी माह की 7 तारीख़ तक निगराने मुल्क और रुक्ने शूरा मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन को मेल करें।

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

(मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन)

बराए ईसवी माह व सिन :

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

निगराने मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

रुक्ने शूरा तजहीज़ो तक्फ़ीन

7		8	9		10	11			12		13	
इस माह ता'दाद तजहीज़ो तक्फ़ीन		इस माह कितने टेस्ट हुवे ?	ख़ुद्दामुल मसाजिद की तरकीब		कितने लवाहिक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाई ?	कितने लवाहिक़ीन को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करवाया ?			शो'बे के तहत कितने मदनी इन्आमात के रसाइल		इस माह शो'बे में	
D.V.D	मदनी ख़बरें		रक़म	प्लॉट		3 दिन	12 दिन	30 दिन	तक़्सीम हुवे	वुसूल हुवे	आमदन	ख़र्च
-		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

रसाइल व VCD फ़रोख़्त / तक़्सीम किये ?				अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत की ?	अक्सर रातें जल्द सोने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट मदनी चैनल देखा ?	कितने मदनी मश्वरे किये	
रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	फ़रोख़्त VCD	तक़्सीम VCD				काबीनात	पाकिस्तान मजलिस

दस्तख़त़ निगराने मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन:.................................... कारकर्दगी फ़ार्म जम्अ़ करवाने की तारीख़:....................................

www.dawateislami.net

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

तक़ाबुली

तजहीज़ो तक्फ़ीन कारकर्दगी (ह़ल्क़ा

नम्बर शुमार	मदनी काम	रबीउन्नूर	इज़ाफ़ा कमी	फ़ीसद %	रबीउ़ल ग़ौस	इज़ाफ़ा कमी	फ़ीसद %	जमादल ऊला	इज़ाफ़ा कमी	फ़ीसद %	जमादल सानी	इज़ाफ़ा कमी	फ़ीसद %	रजबुल मुरज्जब	इज़ाफ़ा कमी	फ़ीसद %	शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
1	ता'दादे गुस्ले मय्यित																
2	ता'दादे इजतिमाए ज़िक्रो ना'त बराए ईसाले सवाब																
3	ता'दादे रसाइल (लंगर)																
4	ता'दादे कुतुब (लंगर)																
5	ता'दादे VCD's (लंगर)																
6	ता'दादे बज़रीए फ़ोन ता'ज़ियत																
7	ता'दाद बिल मुशाफ़ा ता'ज़ियत																
8	लवाहिक़ीन को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत (ता'दाद)																
9	लवाहिक़ीन मदनी इन्आ़मात की आ़मिलात बनी (ता'दाद)																
10	लवाहिक़ीने मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) में दाखि़ला लिया																

मदनी फूल : इज़ाफ़ा या कमी के कॉलम को पुर करते वक़्त कमी की सूरत में ता'दाद से क़ब्ल ''तफ़रीक़'' (''–'') की अ़लामत लगा दी जाए मसलन : –40

कमी बेशी की वुजूहात : हैरत अंगेज़ इज़ाफ़े की वज्ह : ____________________

हैरत अंगेज़ कमी की वज्ह : ____________________

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

जाइज़ा फ़ॉर्म

माह व सिन (मदनी)_____________ (ईसवी)_____________

सत्ह़) रबीउ़न्नूर ता सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद	रमज़ानुल मुबारक	इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद	शव्वालुल मुकर्रम	इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद	ज़िल का'दा	इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद	ज़िल हिज्जा	इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद	मुहर्रमुल ह़राम	इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद	सफ़रुल मुज़फ़्फ़र	इज़ाफ़ा कमी	% फ़ीसद

फ़ीसद निकाल ने का त़रीक़ा येह है कि मौजूदा माह में जो इज़ाफ़ा या कमी हुई उसे पिछले माह की कारकर्दगी से तक़्सीम कर के 100 से ज़र्ब देदिया जाए। फ़ीसद निकल आएगा।

फ़ोर्मूला = $\frac{\text{इज़ाफ़ा या कमी x 100}}{\text{माह की कारकर्दगी}}$ = फ़ीसद

www.dawateislami.net

सिन मदनी 1436 हि. (ईसवी) 2015 ई.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

माहाना

अ़लाक़ा ____________

डिवीज़न____________

काबीना ____________

काबीनात____________

तारीख़ मदनी	ईसवी तारीख़	दिन	मसरूफ़िय्यत की नोइ़य्यत
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			
29			
30			

मदनी फूल :☆ मजलिस की त़रफ़ से मिलने वाले जदवल (जो कि 3 दिन का है) की मदद से माहाना पेशगी जदवल बनाया जाए।

☆ जदवल के मुक़र्ररा 3 दिन के इ़लावा बक़िय्या अय्याम में भी किसी न किसी मदनी काम में मसरूफ़िय्यत की तरकीब बनाई जाए मसलन फ़र्ज़ उ़लूम मुत़ालआ़ बयानात की केसीटें सुनना,

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ اَمَّا بَعْدُ

पेशगी जदवल

माह व सिन (मदनी)__________(ईसवी)__________

ज़िम्मेदार इस्लामी बहन (उम्मे/बिन्ते)__________

तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी__________

मसरूफ़िय्यत की नोइय्यत	मक़ाम	दौरानिय्या

तह़रीरी काम (कारकर्दगी पुर करना, कारकर्दगी चेक करना, बयानात की तय्यारी वग़ैरा) मुमकिना सूरत में इनफ़िरादी कोशिश व इजतिमाए ज़िक्रो ना'त की तरकीब वग़ैरा

www.dawateislami.net

सूरतुल बक़रह का इब्तिदाई रुकूअ़

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم

मैं अल्लाह तआ़ला की पनाह में आता हूं शैत़ान मर्दूद से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रह़मत वाला

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ

वोह बुलन्द रुत्बा किताब (कुरआन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को वोह जो

يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾

बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं

وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ

और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और आख़िरत पर

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

यक़ीन रखें वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

मुराद को पहुंचने वाले।

www.dawateislami.net

सूरतुल बक़रह का आख़िरी रुकूअ़

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓىٕكَتِهٖ

रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों

وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ

और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते हुवे कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अ़र्ज़ की, कि हम ने सुना और माना

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا

तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर उस का फ़ाइदा है जो

كَسَبَتْ وَعَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें ऐ रब हमारे

وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا

और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल

مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٚ وَاغْفِرْ لَنَا ٚ وَارْحَمْنَا ٚ اَنْتَ مَوْلٰىنَا

जिस की हमें सहार (त़ाक़त) न हो और हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर महर (रह़्म) कर तू हमारा मौला है

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

तो काफ़िरों पर हमें मदद दे।

www.dawateislami.net

सूरए यासीन के फ़ज़ाइल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है : नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी ख़्वाहिश है कि सूरए यासीन मेरी उम्मत के हर इन्सान के दिल में हो।

(درمنثور، ج۷، ص۳۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त सूरए यासीन की तिलावत करे उस दिन की आसानी उसे शाम तक अ़त़ा की गई और जिस शख़्स ने रात की इब्तिदा में इस की तिलावत की उसे सुब्ह़ तक उस रात की आसानी दी गई।

(درمنثور، ج۷، ص۳۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : जिस ने सूरए यासीन की तिलावत की उस की मग़फ़िरत हो जाएगी और जिस ने खाने के वक़्त उस के कम होने की ह़ालत में तिलावत की तो वोह उसे किफ़ायत करेगा और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (उस पर) मौत के वक़्त नर्मी फ़रमाएगा और जिस ने किसी औ़रत के पास उस के बच्चे की विलादत की तंगी पर सूरए यासीन की तिलावत की उस पर आसानी होगी और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने ग्यारह मरतबा क़ुरआने पाक की तिलावत की और हर चीज़ के लिये दिल है और क़ुरआन का दिल सूरए यासीन है।

(درمنثور، ج۷، ص۳۹)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रह़मत वाला

یٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَ الۡقُرۡاٰنِ الۡحَکِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّکَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ۙ﴿۳﴾ عَلٰی صِرَاطٍ

हिक्मत वाले क़ुरआन की क़सम बेशक तुम सीधी राह पर भेजे

مُّسۡتَقِیۡمٍ ؕ﴿۴﴾ تَنۡزِیۡلَ الۡعَزِیۡزِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۵﴾ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اُنۡذِرَ

गए हो इ़ज़्ज़त वाले मेहरबान का उतारा हुवा ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ जिस के

اٰبَآؤُہُمۡ فَہُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۶﴾ لَقَدۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ عَلٰۤی اَکۡثَرِہِمۡ فَہُمۡ لَا

बाप दादा न डराए गए तो वोह बे ख़बर हैं बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है तो वोह

یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا فِیۡۤ اَعۡنَاقِہِمۡ اَغۡلٰلًا فَہِیَ اِلَی الۡاَذۡقَانِ فَہُمۡ

ईमान न लाएंगे हम ने उन की गर्दनों में तौक़ कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब

مُّقۡمَحُوۡنَ ﴿۸﴾ وَ جَعَلۡنَا مِنۡۢ بَیۡنِ اَیۡدِیۡہِمۡ سَدًّا وَّ مِنۡ خَلۡفِہِمۡ سَدًّا

ऊपर को मुंह उठाए रह गए और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और उन के पीछे एक दीवार

فَاَغۡشَیۡنٰہُمۡ فَہُمۡ لَا یُبۡصِرُوۡنَ ﴿۹﴾ وَ سَوَآءٌ عَلَیۡہِمۡ ءَاَنۡذَرۡتَہُمۡ اَمۡ لَمۡ

और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न

تُنۡذِرۡہُمۡ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا تُنۡذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّکۡرَ وَ خَشِیَ

डराओ वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो जो नसीहत पर चले और

www.dawateislami.net

الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَیۡبِ ۚ فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّ اَجۡرٍ کَرِیۡمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡیِ

रह़मान से बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इ़ज़्ज़त के सवाब की बिशारत दो बेशक हम

الۡمَوۡتٰی وَ نَکۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَ اٰثَارَهُمۡ ؕ وَ کُلَّ شَیۡءٍ اَحۡصَیۡنٰهُ فِیۡۤ اِمَامٍ

मुर्दों को जिलाएं (ज़िन्दा करें) गे और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा और जो निशानियां पीछे छोड़ गए और हर चीज़ हम ने गिन रखी है

مُّبِیۡنٍ ﴿۱۲﴾ وَ اضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡیَةِ ۘ اِذۡ جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۳﴾

एक बताने वाली किताब में और उन से मिसाल बयान करो उस शहर वालों की जब उन के पास फ़िरिस्तादे आए

اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡهِمُ اثۡنَیۡنِ فَکَذَّبُوۡهُمَا فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ

जब हम ने उन की त़रफ़ दो भेजे फिर उन्हों ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया अब उन सब ने कहा कि बेशक हम

اِلَیۡکُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾ قَالُوۡا مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَ مَاۤ اَنۡزَلَ

तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रह़मान ने

الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَیۡءٍ ۙ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَکۡذِبُوۡنَ ﴿۱۵﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا یَعۡلَمُ اِنَّاۤ

कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम

اِلَیۡکُمۡ لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَ مَا عَلَیۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِیۡنُ ﴿۱۷﴾ قَالُوۡۤا اِنَّا

तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना बोले हम तुम्हें

تَطَیَّرۡنَا بِکُمۡ ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّکُمۡ وَ لَیَمَسَّنَّکُمۡ مِّنَّا عَذَابٌ

मन्ह़ूस समझते हैं बेशक तुम अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे और बेशक हमारे हाथों तुम पर

www.dawateislami.net

اَلِيْمٌ ﴿۱۸﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

दुख की मार पड़ेगी उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए बल्कि तुम

مُّسْرِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ

ह़द से बढ़ने वाले लोग हो और शहर के परले किनारे से एक मर्द दौड़ता आया बोला ऐ मेरी क़ौम

اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۰﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۱﴾

भेजे हुओं की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नहीं मांगते और वोह राह पर हैं

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۲﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنْ

और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूं जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की त़रफ़ तुम्हें पलटना है क्या अल्लाह के सिवा

دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّ

और ख़ुदा ठहराऊं कि अगर रह़मान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और

لَا يُنْقِذُوْنِ ﴿۲۳﴾ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ

न वोह मुझे बचा सकें बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं मुक़र्रर (यक़ीनन) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया

فَاسْمَعُوْنِ ﴿۲۵﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ بِمَا

तो मेरी सुनो उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो कहा किसी त़रह़ मेरी क़ौम जानती जैसी

غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿۲۷﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ

मेरे रब ने मेरी मग़्फ़िरत की और मुझे इ़ज़्ज़त वालों में किया और हम ने इस के बा'द उस की क़ौम पर

www.dawateislami.net

بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ۝۲۸ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً

आस्मान से कोई लश्कर न उतारा और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था वोह तो बस एक

وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ۝۲۹ يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ

ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए और कहा गया कि हाए अफ़्सोस उन बन्दों पर जब उन के पास कोई

رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۳۰ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ

रसूल आता है तो उस से ठठ्ठा ही करते हैं क्या उन्हों ने न देखा हम ने उन से पहले कितनी संगतें

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝۳۱ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا

हलाक फ़रमाईं कि वोह अब उन की त़रफ़ पलटने वाले नहीं और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर ह़ाज़िर

مُحْضَرُوْنَ ۝۳۲ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا

लाए जाएंगे और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है हम ने उसे ज़िन्दा किया और फिर उस से अनाज

حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝۳۳ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا

निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हम ने

فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝۳۴ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا

उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं

يَشْكُرُوْنَ ۝۳۵ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ

तो क्या ह़क़ न मानेंगे पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े बनाए उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है

www.dawateislami.net

وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ

और ख़ुद उन से और उन चीज़ों से जिन की उन्हें ख़बर नहीं। और उन के लिये एक निशानी रात है हम उस पर से दिन

النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ

खींच लेते हैं जभी वोह अन्धेरे में हैं और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये येह

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ

हुक्म है ज़बरदस्त इ़ल्म वाले का और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी

الْقَدِيْمِ ﴿۳۹﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ

डाल (टहनी) सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले और न रात दिन पर

النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي

सब्क़त ले जाए और हर एक एक घेरे में पैर रहा है और उन के लिये एक निशानी येह है कि उन्हें उन के बुज़ुर्गों की पीठ में हम

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۴۱﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِنْ نَّشَاْ

ने भरी कश्ती में सुवार किया और उन के लिये वैसी ही कश्तियां बना दीं जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो

نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا

उन्हें डबो दें तो न कोई उन की फ़रयाद को पहुंचने वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी त़रफ़ की रह़मत और एक वक़्त

اِلٰى حِيْنٍ ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

तक बरतने देना और जब उन से फ़रमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है इस उम्मीद पर

www.dawateislami.net

تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ مَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फेर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास आती है तो उस से मुंह

مُعْرِضِیْنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِیْنَ

ही फेर लेते हैं और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उस की राह में ख़र्च करो तो काफ़िर

كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ یَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ

मुसलमानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता तुम तो नहीं

اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۷﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۸﴾

मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा अगर तुम सच्चे हो

مَا یَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ یَخِصِّمُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَا

राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की, कि उन्हें आ लेगी जब वोह दुन्या के झगड़े में फंसे होंगे तो न

یَسْتَطِیْعُوْنَ تَوْصِیَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ

वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं और फूंका जाएगा सूर

فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ یَنْسِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ قَالُوْا یٰوَیْلَنَا مَنْۢ

जभी वोह क़ब्रों से अपने रब की त़रफ़ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किस ने

بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ٜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۲﴾

हमें सोते से जगा दिया येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया

www.dawateislami.net

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़ जभी वोह सब के सब हमारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हो जाएंगे

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾

तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُمْ وَ أَزْوَاجُهُمْ فِيْ

बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं वोह और उन की बीबियां

ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿۵۶﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿۵۷﴾

सायों में हैं तख़्तों पर तक्या लगाए उन के लिये उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾

उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अ़ह्द न लिया था कि शैत़ान को न पूजना बेशक वोह तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ﴿۶۰﴾ وَّ أَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ

दुश्मन है और मेरी बन्दगी करना येह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ

से बहुत सी ख़ल्क़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अ़क़्ल न थी येह है वोह जहन्नम जिस का तुम से

www.dawateislami.net

تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اِصْلَوْهَا الْیَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾ اَلْیَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤی

वा'दा था आज इस में जाओ बदला अपने कुफ़्र का आज हम उन के मूंहों पर मोहर

اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَیْدِیْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾

कर देंगे और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤی اَعْیُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰی یُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَ

और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते फिर लपक कर रस्ते की त़रफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता और

لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰی مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِیًّا وَّ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۶۷﴾ ع

अगर हम चाहते तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते कि न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते

وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِی الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَ مَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ

और जिसे हम बड़ी उ़म्र का करें उसे पैदाइश में उल्टा फेरें तो क्या वोह समझते नहीं और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया और

مَا یَنْۢبَغِیْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِیْنٌ ﴿۶۹﴾ لِّیُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَیًّا

न वोह उन की शान के लाइक़ है वोह तो नहीं मगर नसीह़त और रौशन क़ुरआन कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो

وَّ یَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَی الْكٰفِرِیْنَ ﴿۷۰﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ

और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के

اَیْدِیْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿۷۱﴾ وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ

बनाए हुवे चौपाए उन के लिये पैदा किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें इन के लिये नर्म कर दिया तो किसी पर सुवार होते हैं और

www.dawateislami.net

مِنْهَا يَأْكُلُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ

किसी को खाते हैं और इन के लिये उन में कई त़रह़ के नफ़्अ़ और पीने की चीज़ें हैं तो क्या शुक्र न करेंगे और

اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۷۴﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ

उन्हों ने अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये कि शायद उन की मदद हो वोह उन की मदद नहीं कर सकते

وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

और वोह उन के लश्कर सब गिरिफ़्तार ह़ाज़िर आएंगे तो तुम उन की बात का ग़म न करो बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۶﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

और ज़ाहिर करते हैं और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह़

مُّبِيْنٌ ﴿۷۷﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَ

झगड़ालू है और हमारे लिये कहावत कहता है और अपनी पैदाइश भूल गया बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे

هِيَ رَمِيْمٌ ﴿۷۸﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ

जब वोह बिल्कुल गल गईं तुम फ़रमाओ उन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश

عَلِيْمُ ۙ﴿۷۹﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ

का इ़ल्म है जिस ने तुम्हारे लिये हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से

تُوْقِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى

सुलगाते हो और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए इन जैसे

www.dawateislami.net

اَنْ یَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰی ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِیْمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ

और नहीं बना सकता क्यूं नहीं और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

اَرَادَ شَیْـًٔا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۸۲﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ

किसी चीज़ को चाहे तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की त़रफ़ फेरे जाओगे

दुआ़ की क़बूलिय्यत का नुस्ख़ा

किसी मरीज़ को शिफ़ा न होती हो तो पहले कुछ ख़ैरात कर दीजिये फिर ग़ैर मकरूह वक़्त में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांगिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुआ़ क़बूल होगी। फ़ज़ाइले दुआ़ सफ़ह़ा 59 ता 60 पर है : (क़बूलिय्यते दुआ़ के आदाब में से) **अदब** 5 : दुआ़ से पहले कोई अ़मले सालेह़ (या'नी नेक अ़मल) करे कि ख़ुदाए करीम की रह़मत उस (दुआ़ करने वाले) की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, सदक़ा ख़ुसूसन पोशीदा, इस अम्र में असरे तमाम रखता है (या'नी बिल ख़ुसूस छुपा कर ख़ैरात करना दुआ़ की क़बूलिय्यत में बहुत मुअस्सिर है)। **अदब** 9 : वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ ख़ुलूसे क़ल्ब से पढ़े कि जालिबे रह़मत (या'नी रह़मत का सबब) है और रह़मत मूजिबे ने'मत। (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब नेकी की दा'वत, 2/254)

www.dawateislami.net

सूरए मुल्क के फ़ज़ाइल

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने एक आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक ह़दीस तोह़्फ़े के तौ़र पर न दूं जिस के साथ तू खुश हो जाए, उस ने अ़र्ज़ की : बेशक ! तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह सूरह पढ़ो : تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ और येह सूरत अपने अहलो इ़याल, अपने तमाम बच्चों, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (इस की उन्हें ता'लीम दो) क्यूंकि येह नजात दिलाने वाली है और क़ियामत के दिन अपने क़ारी के लिये अपने रब के पास झगड़ने वाली है, और येह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अ़ज़ाब से नजात दिलाए और इस के सबब इस का क़ारी अ़ज़ाब से भी नजात पा जाएगा। (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج٨ ص٢٣١)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था, फिर अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था, फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था।" तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम

www.dawateislami.net

सूरए मुल्क है जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।" (مستدرك حاكم،٣/٣٢٢،حديث ٣٨٩٢)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरी ख़्वाहिश है कि تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ हर मोमिन के दिल में हो।

(كنز العمال،١/٢٩١،حديث ٢٦٤٥)

चांद देख कर इस सूरह को पढ़ा जाए तो महीने के तीस दिनों तक वोह सख़्तियों से اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ रहेगा, इस लिये कि येह तीस आयतें हैं और तीस दिन के लिये काफ़ी हैं। (روح المعانی،سورة الملك،١٥/٤)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रह़मत वाला

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْ

बड़ी बरकत वाला है वोह जिस के क़ब्ज़े में सारा मुल्क और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोह जिस

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है और वोही इ़ज़्ज़त वाला

الْغَفُوْرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ

बख़्शिश वाला है जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर दूसरा तो रह़मान के बनाने में क्या फ़र्क़

مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارْجِعِ

देखता है तो निगाह उठा कर देख तुझे कोई रख़्ना (ख़राबी व ऐ़ब) नज़र आता है फिर दोबारा

www.dawateislami.net

الْبَصَرَ كَرَّتَیْنِ یَنْقَلِبْ اِلَیْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِیْرٌ ﴿۴﴾ وَ لَقَدْ زَیَّنَّا

निगाह उठा नज़र तेरी त़रफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदी और बेशक हम ने

السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ وَ جَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّیٰطِیْنِ وَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ

नीचे के आस्मान को चराग़ों से आरास्ता किया और उन्हें शैत़ानों के लिये मार किया और उन के लिये भड़कती आग

عَذَابَ السَّعِیْرِ ﴿۵﴾ وَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ

का अ़ज़ाब तय्यार फ़रमाया और जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही

الْمَصِیْرُ ﴿۶﴾ اِذَاۤ اُلْقُوْا فِیْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِیْقًا وَّ هِیَ تَفُوْرُ ۙ﴿۷﴾ تَكَادُ

बुरा अन्जाम जब उस में डाले जाएंगे उस का रेंकना (चिंघाड़ना) सुनेंगे कि जोश मारती है मा'लूम होता है कि

تَمَیَّزُ مِنَ الْغَیْظِ ؕ كُلَّمَاۤ اُلْقِیَ فِیْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمْ یَاْتِكُمْ

शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गुरोह उस में डाला जाएगा उस के दारोग़ा उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर

نَذِیْرٌ ﴿۸﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِیْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا وَ قُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ

सुनाने वाला न आया था कहेंगे क्यूं नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ

مِنْ شَیْءٍ ۖۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ كَبِیْرٍ ﴿۹﴾ وَ قَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ

नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में और कहेंगे अगर हम सुनते या

نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِیْۤ اَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ﴿۱۰﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا

समझते तो दोज़ख़ वालों में न होते अब अपने गुनाह का इक़रार किया तो फिटकार

www.dawateislami.net

لِاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ

हो दोज़ख़ियों को बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं

مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۲﴾ وَ اَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वोह तो

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۴﴾ ع

दिलों की जानता है क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया और वोही है हर बारीकी जानता ख़बरदार

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَ كُلُوْا مِنْ

वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (ताबेअ़) कर दी तो उस के रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में

رِّزْقِهٖ ؕ وَ اِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ

से खाओ और उसी की त़रफ़ उठना है क्या तुम उस से निडर हो गए जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि तुम्हें ज़मीन में

الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ

धंसा दे जभी वोह कांपती रहे या तुम निडर हो गए उस से जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि

عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿۱۷﴾ وَ لَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ

तुम पर पथराव भेजे तो अब जानोगे कैसा था मेरा डराना और बेशक उन से अगलों ने

مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّ

झुटलाया तो कैसा हुवा मेरा इन्कार और क्या उन्हों ने अपने ऊपर परन्दे न देखे पर फैलाते

www.dawateislami.net

يَقْبِضْنَ ؔ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ﴿۱۹﴾

और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता सिवा रह़मान के बेशक वोह सब कुछ देखता है

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ

या वोह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रह़मान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे

الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾ ۚ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ

काफ़िर नहीं मगर धोके में या कौन सा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वोह अपनी रोज़ी

رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ

रोक ले बल्कि वोह सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुवे हैं तो क्या वोह जो अपने मुंह के बल औंधा चले

اَهْدٰۤى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۲﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْۤ

ज़ियादा राह पर है या वोह जो सीधा चले सीधी राह पर तुम फ़रमाओ वोही है जिस ने

اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आंख और दिल बनाए कितना कम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

ह़क़ मानते हो तुम फ़रमाओ वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें फैलाया और उसी की त़रफ़ उठाए जाओगे

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ

और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ येह इ़ल्म

www.dawateislami.net

اللّٰهِ ۠ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓــٴَتْ

तो अल्लाह के पास है और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला फिर जब उसे पास देखेंगे

وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ قِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ

काफ़िरों के मुंह बिगड़ जाएंगे और उन से फ़रमाया जाएगा येह है जो तुम मांगते थे तुम फ़रमाओ

اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ

भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को हलाक कर दे या हम पर रह़्म फ़रमाए तो वोह कौन सा है जो काफ़िरों को

مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

दुख के अ़ज़ाब से बचा लेगा तुम फ़रमाओ वोही रह़मान है हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

तो अब जान जाओगे कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह़ को

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿۳۰﴾ ع

तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता।

क़ब्र पस्लियां तोड़ देती है

मन्क़ूल है : जब मां बाप के ना फ़रमान को दफ़्न किया जाता है तो क़ब्र उसे दबाती है यहां तक कि उस की पस्लियां (टूट फूट कर) एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، ۲/۱۳۹)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

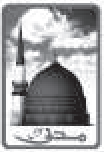

मदनी चैनल देखते रहिये

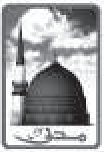

मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

(दा'वते इस्लामी)

इस्लामी भाइयों के गुस्ले मय्यित के लिये

इस नम्बर पर राबिता़ करें

अ़लाक़ा : ______________________

नम्बर : ______________________

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

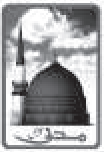

मदनी चैनल देखते रहिये

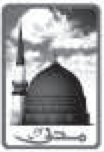

मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन

(दा'वते इस्लामी)

इस्लामी बहनों के ग़ुस्ले मय्यित के लिये

इस नम्बर पर राबिता करें

अ़लाक़ा : ____________________

नम्बर : ____________________

www.dawateislami.net

आह ! हर लम्हा गुनह की कसरत और भरमार है

आह ! हर लम्हा गुनह की कसरत और भरमार है
ग़लबए शैत़ान है और नफ़्से बद अत़वार है

मुजरिमों के वासिते़ दोज़ख़ भी शो'लाबार है
हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है

हाए ! ना फ़रमानियां बद कारियां बे बाकियां
आह ! नामे में गुनाहों की बड़ी भरमार है

छुप के लोगों से गुनाहों का रहा है सिलसिला
तेरे आगे या ख़ुदा हर जुर्म का इज़्हार है

ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स
गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है

या ख़ुदा ! रह़मत तेरी ह़ावी है तेरे क़हर पर
फ़ज़्लो रह़मत के सहारे जी रहा बदकार है

बन्दए बदकार हूं बेह़द ज़लीलो ख़्वार हूं
मग़फ़िरत फ़रमा इलाही ! तू बड़ा ग़फ़्फ़ार है

मौत के झटकों पे झटके आ रहे हैं अल मदद
सख़्त बे चैनी के आ़लम में घिरा बीमार है

अब सरे बालीं ख़ुदारा मुस्कुराते आइये
जां बलब शाहे मदीना त़ालिबे दीदार है

ग़ुस्ल देने के लिये ग़स्साल भी अब आ चुका
ग़ुस्ले मय्यित हो रहा है और कफ़न तय्यार है

या नबी ! पानी से सारा जिस्म मेरा धुल गया
नामए आ'माल को भी ग़ुस्ल अब दरकार है

लाद कर कन्धों पे अह़बाब आह ! क़ब्रिस्तां चले
वासिते़ तदफ़ीन के गहरा गढ़ा तय्यार है

क़ब्र में मुझ को लिटा कर और मिट्टी डाल कर
चल दिये साथी न पास अब कोई रिश्तेदार है

ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था
जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है

या रसूलल्लाह ! आ कर क़ब्र रौशन कीजिये
ज़ात बेशक आप की तो मम्बए अन्वार है

क़ब्र में शाहे मदीना आ चुके मुन्कर नकीर
हो करम ! लिल्लाह बन्दा बे कसो नाचार है

या नबी ! जन्नत की खिड़की क़ब्र में खुलवाइये
फिर तो फ़ज़्ले रब से अपनी क़ब्र भी गुल्ज़ार है

तू ने दुन्या में भी ऐ़बों को छुपाया या ख़ुदा
ह़श्र में भी लाज रख लेना कि तू सत्तार है

नेकियां पल्ले नहीं आक़ा शफ़ाअ़त कीजिये
आप की नज़्रे करम होगी तो बेड़ा पार है

या नबी ! "अ़त्तार" को जन्नत में दे अपना जवार
वासित़ा सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

काश ! हो ऐसी मदीने में कभी तो ह़ाज़िरी
येह ख़बर आए वत़न में मर गया "अ़त्तार" है

www.dawateislami.net

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद
त़यबा के शम्सुद्दुहा तुम पे करोरों दुरूद
शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोरों दुरूद
दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोरों दुरूद
और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद
दिल करो ठन्डा मेरा वोह कफ़े पा चांद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद
ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुवे ला जवाब
नाम हुवा मुस्त़फ़ा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो ह़फ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वोह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद
वोह शबे मे'राज राज वोह सफ़े मह़शर का ताज
कोई भी ऐसा हुवा तुम पे करोरों दुरूद
गर्चे हैं बेह़द क़ुसूर तुम हो अ़फ़ुव्वो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़त़ा तुम पे करोरों दुरूद
बे हुनरो बे तमीज़ किस को हुवे हैं अ़ज़ीज़
एक तुम्हारे सिवा तुम पे करोरों दुरूद
आस है कोई न पास एक तुम्हारी है आस
बस है येही आसरा तुम पे करोरों दुरूद
आह वोह राहे सिरात़ बन्दों की कितनी बिसात़
अल मदद ऐ रहनुमा तुम पे करोरों दुरूद
सीना कि है दाग़ दाग़ कह दो करे बाग़ बाग़
त़यबा से आ कर सबा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो जव्वादो करीम तुम हो रऊफ़ो रह़ीम
भीक हो दाता अ़त़ा तुम पे करोरों दुरूद
ख़ल्क़ के ह़ाकिम हो तुम रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद
इक त़रफ़ आ'दाए दीं एक त़रफ़ ह़ासिदीं
बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोरों दुरूद
गन्दे निकम्मे कमीन महंगे हों कोड़ी के तीन
कौन हमें पालता तुम पे करोरों दुरूद
ऐसों को ने'मत खिलाओ दूध के शरबत पिलाओ
ऐसों को ऐसी ग़िज़ा तुम पे करोरों दुरूद
अपने ख़त़ावारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे येह भला तुम पे करोरों दुरूद
कर के तुम्हारे गुनाह मांगें तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोरों दुरूद
कर दो अ़दू को तबाह ह़ासिदों को रू बराह
अहले विला का भला तुम पे करोरों दुरूद
हम ने ख़त़ा में न की तुम ने अ़त़ा में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोरों दुरूद
काम ग़ज़ब के किये इस पे है सरकार से
बन्दों को चश्मे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद
आंख अ़त़ा कीजिये उस में ज़िया दीजिये
जल्वा क़रीब आ गया तुम पे करोरों दुरूद
काम वोह ले लीजिये तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे "रज़ा" तुम पे करोरों दुरूद

www.dawateislami.net

मय्यित का ए'लान

फुलां बिन फुलां का इन्तिक़ाल हो गया है اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رٰجِعُوْن.
اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्हूम / मर्हूमा की नमाज़े जनाज़ा बा'द नमाज़े ________
फुलां मक़ाम पर अदा की जाएगी, शिर्कत फ़रमा कर सवाबे दारैन ह़ासिल करें।

बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

मर्हूम के अ़ज़ीज़ व अह़बाब तवज्जोह फ़रमाएं ! मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या ह़क़ तलफ़ी की हो, या आप के मक़रूज़ हों तो इन को रिज़ाए इलाही के लिये मुआ़फ़ कर दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा। नमाज़े जनाज़ा की निय्यत और इस का त़रीक़ा भी सुन लीजिये। "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासिते़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये पीछे इस इमाम के।" अगर येह अल्फ़ाज़ याद न रहें तो कोई ह़रज नहीं, आप के दिल में येह निय्यत होनी ज़रूरी है कि "मैं इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहा हूं" जब इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहें तो कानों तक हाथ उठाने के बा'द "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहते हुवे फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और सना पढ़िये, सना में وَتَعَالٰی جَدُّكَ के बा'द وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ का इज़ाफ़ा कीजिये। दूसरी बार इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहिये, फिर नमाज़ वाला दुरूदे इब्राहीम पढ़िये। तीसरी बार इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहिये और बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ पढ़िये(1) जब चौथी बार इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَکْبَر" कहें तो आप "اَللّٰهُ اَکْبَر" कह कर दोनों हाथों को खोल कर लटका दीजिये और इमाम साह़िब के साथ क़ाइदे के मुत़ाबिक़ सलाम फेर दीजिये। (नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा, स. 19)

1......अगर ना बालिग़ या ना बालिग़ा का जनाज़ा हो तो उस की दुआ़ पढ़ने का ए'लान कीजिये।

www.dawateislami.net

तिलावत से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अब कुरआने करीम की सूरतें पढ़ी जाएंगी इन्हें कान लगा कर ख़ूब तवज्जोह से सुनिये, फिर अज़ान दी जाएगी, इस का जवाब दीजिये। फिर दुआ मांगी जाएगी। मर्हूम (मर्हूमा) की क़ब्र की पहली रात है, येह सख़्त आज़माइश की घड़ी होती है, मर्दूद शैतान क़ब्र में बहकाने की कोशिश करता है, जब मय्यित से सुवाल होता है مَنْ رَّبُّکَ؟ या'नी तेरा रब कौन है ? तो शैतान अपनी त़रफ़ इशारा कर के कहता है कि कह दे : "येह मेरा रब है।" ऐसे मौक़अ़ पर अज़ान मय्यित के लिये निहायत नफ़्अ़ बख़्श होती है क्यूंकि अज़ान की बरकत से मय्यित को शैतान के शर से पनाह मिलती है, अज़ान से रह़मत नाज़िल होती, मय्यित का ग़म ख़त्म होता, इस की घबराहट दूर होती, आग का अ़ज़ाब टलता और अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात मिलती है नीज़ मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद आ जाते हैं।

ग़ीबत नेकियों को जला देती है

मन्क़ूल है : आग भी ख़ुश्क लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी ग़ीबत बन्दे की नेकियों को जला कर रख देती है। (احیاء العلوم،۳/۱۸۳)

मदनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से शरफ़े बैअ़त की बरकत से लाखों मुसलमान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाह** रह़मान عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के प्यारे ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त हमारा मदनी मश्वरा है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुवे तो शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीद होने के लिये उन से बैअ़त हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में कामयाबी व सुर्ख़रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को मुरीद या त़ालिब बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वलदिय्यत व उ़म्र लिख कर "मक्तब मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त़्त़ारिय्या, आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना मह़ल्ला सौदा गरान पुरानी सब्ज़ी मन्डी बाबुल मदीना (कराची)" के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त़्त़ारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता अंग्रेज़ी के केपिटल हुरूफ़ में लिखें)

﴾1﴿ नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं।

﴾2﴿ एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें

﴾3﴿ अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द / औरत	बिन / बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

E.Mail : Attar@dawateislami.net

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

کتب	مصنفین	مطبوعات
قرآنِ مجید	کلامِ الٰہی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
در منثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
مدارک التنزیل	امام عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفّٰی ۷۱۰ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۰۵ھ
تفسیر بغوی	امام ابو محمد الحسین بن مسعود فراء بغوی، متوفّٰی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
عجائب القرآن	مولانا عبد المصطفےٰ اعظمی متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
موطا امام مالک	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	باب المدینہ کراچی
مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف ۱۴۱۹ھ
ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
ابو داؤد	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
ترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۴ھ
مستدرک حاکم	ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
دار قطنی	امام علی بن عمر دار قطنی، متوفی ۳۸۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۲۰ھ
معجم کبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

معجم اوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
کنزالعمال	علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
جامع صغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
فردوس الاخبار	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
الفردوس	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۶ھ
مسند بزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبدالخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ ۱۴۲۴ھ
مسند ابی یعلی	شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
مسند طیالسی	امام سلیمان بن داؤد بن جارود طیالسی، متوفی ۲۰۴ھ	دارالمعرفہ بیروت
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
حلیۃ الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
الادب المفرد	امام ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ایران ۱۳۹۰ھ
طبقات کبری	محمد بن سعد بن منیع ھاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۹۹۷ء
المدخل	علامہ محمد بن محمد ابن الحاج، متوفی ۷۳۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
نوادرالاصول	ابوعبد اللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری
الکامل لابن عدی	امام ابواحمد عبد اللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد الیافعی، متوفی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار، متوفی ۶۳۷ھ	انتشارات گنجینہ ۱۳۷۹ھ
القول البدیع	امام محمد بن عبدالرحمن سخاوی شافعی، متوفی ۹۰۲ھ	دارالکتاب العربی بیروت ۱۴۰۵ھ

www.dawateislami.net

مطالع المسرات	محمد مہدی فاسی، متوفی ۱۱۰۹	نوریہ رضویہ مرکز الاولیاء لاہو ۲۰۰۳ء
کشف المحجوب	علی بن عثمان ہجویری المعروف داتا گنج بخش، متوفی ۵۰۰ھ	سنگ میل پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ
المنبہات	امام احمد بن علی ابن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	پشاور
احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ تہران
مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
شرح الصدور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنّت برکات رضا (ہند)
عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی ابن جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
عمدۃ القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
نزہۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور ۲۰۰۰ء
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرؤف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
الاشباہ والنظائر	الشیخ زین الدین بن ابراہیم الشہیر بابن نجیم، متوفی ۹۷۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
کنز الدقائق	ابو البرکات حافظ الدین عبد اللّٰہ بن احمد نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	باب المدینہ، کراچی ۱۴۳۱ھ
بنایہ	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
غنیۃ المستملی	محمد ابراہیم بن حلبی، متوفی ۹۵۶ھ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
منحۃ الخالق	سید محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	کوئٹہ
فتاوی خانیہ	حسن بن منصور قاضی خان، متوفی ۵۹۲ھ	پشاور
صغیری	مولانا ابراہیم بن محمد حلبی، متوفی ۹۵۶ھ	باب المدینہ کراچی
جوہرہ نیرہ	ابو بکر بن علی حداد، متوفی ۸۰۰ھ	باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

درالمختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
ردالمحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
عالمگیری	مولانا شیخ نظام، متوفی ۱۱۶۱ھ و جماعۃ من علماء الہند	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
وقار الفتاوی	مولانا مفتی محمد وقار الدین، متوفی ۱۴۱۳ھ	بزم وقار الدین باب المدینہ کراچی ۲۰۰۱ء
فیضان سنت	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی ضیائی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
نماز کے احکام	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی ضیائی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
قضا نمازوں کا طریقہ	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی ضیائی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
فاتحہ کا طریقہ	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی ضیائی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
جنت کی تیاری	مرکزی مجلس شوری (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
جنت کے طلبگاروں کے لیے مدنی گلدستہ	شعبہ تخریج، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
مدنی وصیت نامہ	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی ضیائی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
مفتیِ دعوت اسلامی	شعبہ اصلاحی کتب، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
محبوب عطار کی ۱۲۲ حکایات	شعبہ اصلاحی کتب، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
بے قصور کی مدد	شعبہ امیر اہلسنّت، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
مردہ بول اٹھا	شعبہ امیر اہلسنّت، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
خوشبودار قبر	شعبہ امیر اہلسنّت، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
وسائل بخشش	ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی ضیائی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ

www.dawateislami.net

याददाश्त

(दौराने मुत़ालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

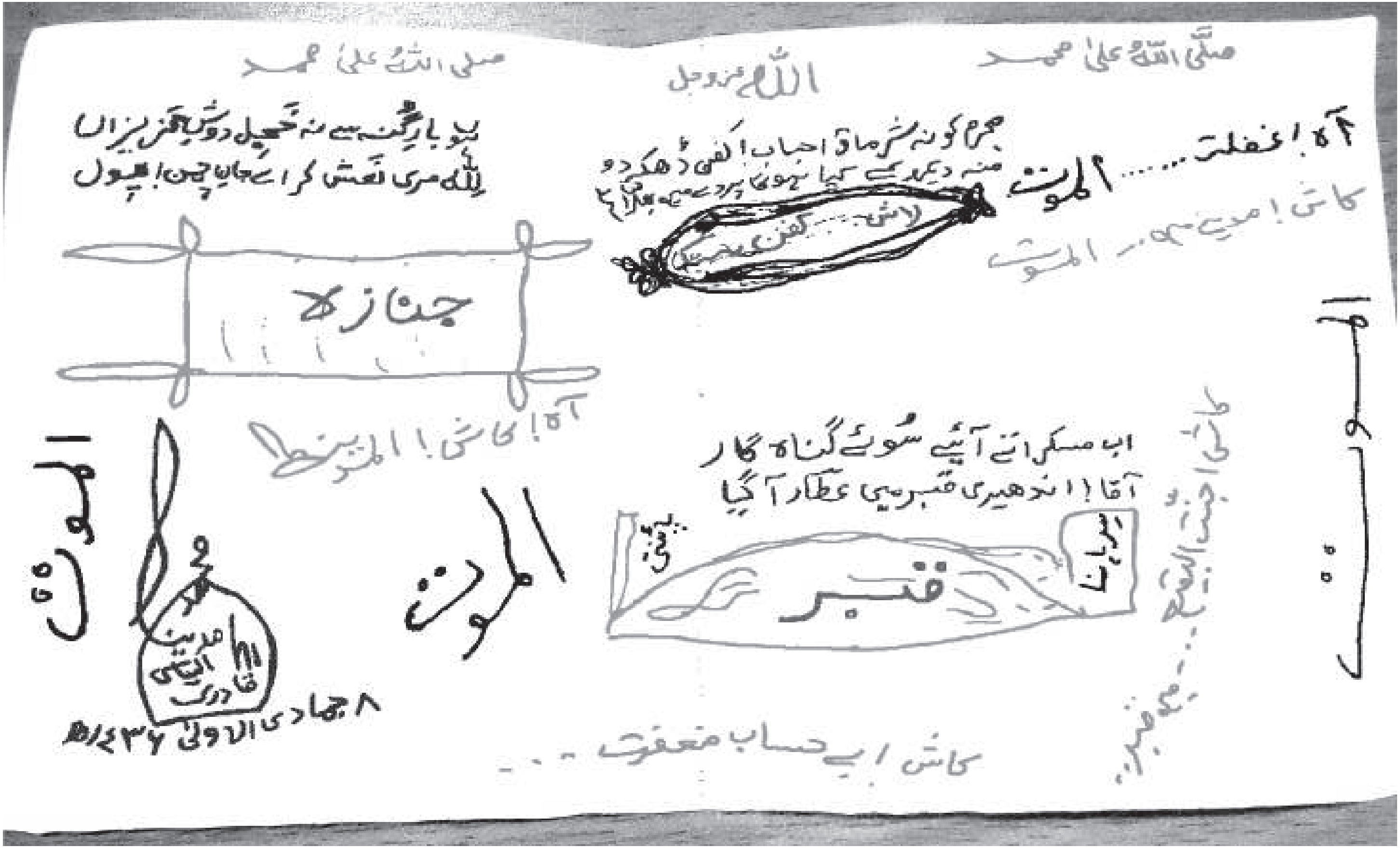

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-631-752-4
0126214

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E-mail : ilmiapak@dawateislami.net